॥ अथ श्री नव पद महिमावर्णनरूप ॥

॥ श्रीश्रीपाल राजानो रास प्रारंभः ॥

श्रीविनयविजयजी तथा यशोविजयजी विरचित

श्रीश्रीपाल राजानो रास

(श्री नव पद महिमावर्णनरूप)

आ पुस्तक श्रीचतुर्विध संघने जणवा वांचवा अर्थे उपयोगी जाणी रंगीन चित्रोनो सुधारो वधारो करी यथाशक्ति शुद्ध करावी

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक भीमसिंह माणेक,

जैन पुस्तक वेचनार तथा प्रसिद्ध करनार.

मांडवी, शाकगल्ली, मुंबइ.



आवृत्ति पांचमी.

वीर संवत् २४४३. विक्रम संवत् १९७३ भादरवा सुदि पंचमी सने १९१७.

॥ प्रस्तावना ॥

एक समये जैन धर्मनी अवर्णनीय जाहोजलालीनो सूर्य मध्याह्नमां प्रकाशमान् हतो, ज्यां महाराजओ जैन धर्मनी आणा शिरोधार्य करता हता अने तन, मन, धन अर्पण करी जैन शासनने शोभाप्रद बनावता हता. खरेखर ते जिनशासनना अलंकारोज हता के जेओनां बनावेल जिन-भुवनो, जैन प्रतिमाओ अने जैन भंडारो आपणने दृष्टिगोचर थाय छे. तदुपरांत तेओश्रीनां आचरणो एवां तो महान्, शुद्ध, दृढ अने शौर्यवान्, हतां के तेओनुं अनुकरण करवा शास्त्रकारो आपणने भलामण करे छे अने ते कारणे तेओनां अद्भुत, अलौकिक चरित्रो सुंदर गद्य अने पद्यमां संस्कृत, मागधी अने गुजराती भाषामां पोतानी विद्वत्ताथी रचता गया छे. जैन धर्म प्रतिपालक राजेंद्र कुमारपाल, महाराजा संप्रति, मंत्रीश्वर वस्तुपाल, तेजपाल अने धर्मचुस्त महाराजा श्रीपाल जेवा श्रावको थयां छे के जेओ जिनशासननी उन्नति माटे शक्ति अनुसार स्वपराक्रमवडे न्यायोपार्जित करेल द्रव्य वापरी वसुंधरा पर लीधेलो जन्म कृतार्थ मानता हता. तेमांना श्रीपाल महाराजानुं आ पद्यरूपे चरित्र छे अने ते चरित्रनी श्रीविनयविजयजीए पहेला बे खंड तथा त्रीजा खंडनी चार पूरी अने पांचमी अधुरी ढाल संवत् १७३८ मां रांदेर करेला चोमासामां लखी अने चरित्र पूरुं कर्या पहेलां ते कालधर्म पाम्या. त्यारपछी तेमनाज कहेवाथी श्रीयशोविजयजीए आ चरित्रनो उत्तरार्ध भाग संपूर्ण कर्यो छे. श्रीविनयविजयजी अने यशोविजयजी समकाले थया हता. विनयविजयजीए आशरे संस्कृतमां पांच अने गुजरातीमां वीशेक ग्रंथ रचेल छे. यशोविजयजीनो जन्म संवत् १६७० नी आसपास होवो जोइए, पण ते संबंधी हकीकत चोकस रीते मली शकती नथी. तेमणे लगभग १०८ ग्रंथो रचेला छे एम कहेवाय छे एटले २००००० (बे लाख) श्लोक बनाव्या छे. एवी रीते गुजराती भाषामां ग्रंथो लखीने गुर्जर बंधुओ उपर मोटो उपकार कर्यो छे. कोइ एम कहेशे के तेमना ग्रंथो जैन धर्मने लगता छे तो कहेवुं

श्रीविनयविजयजी तथा यशोविजयजी विरचित

श्रीश्रीपाळ राजानो रास

(श्री नव पद महिमावर्णनरूप)

आ पुस्तक श्रीचतुर्विध संघने भणवा वांचवा अर्थे उपयोगी जाणी
रंगीन चित्रोनो सुधारो वधारो करी यथाशक्ति शुद्ध करावी

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक भीमसिंह माणेक,

जैन पुस्तक वेचनार तथा प्रसिद्ध करनार.

मांडवी, शाकगल्ली, मुंबइ.



आवृत्ति पांचमी.

वीर संवत् २४४३.   विक्रम संवत् १९७३ भादरवा सुदि पचमी.   सने १९१७.

॥ प्रस्तावना ॥

एक समये जैन धर्मनी अवर्णनीय जाहोजलालीनो सूर्य मध्याह्नमां प्रकाशमान् हतो, ज्यां महाराजाउ जैन धर्मनी आज्ञा शिरोधार्य करता हता अने तन, मन, धन अर्पण करी जैन शासनने शोभाप्रद् बनावता हता. खरेखर ते जिनशासनना अलंकारोज हता के जेउनां बनावेल जिनभुवनो, जैन प्रतिमाउ अने जैन भंडारो आपणने दृष्टिगोचर थाय छे. तदुपरांत तेउश्रीनां आचरणो एवां तो महान्, शुद्ध, दृढ अने शौर्यवान्, हतां के तेउनुं अनुकरण करवा शास्त्रकारो आपणने भलामण करे छे अने ते कारणे तेउनां अद्भुत, अलौकिक चरित्रो सुंदर गद्य अने पद्यमां संस्कृत, मागधी अने गुजराती भाषामां पोतानी विद्वत्ताथी रचता गया छे. जैन धर्म प्रतिपालक राजेंद्र कुमारपाल, महाराजा संप्रति, मंत्रीश्वर वस्तुपाल, तेजपाल अने धर्मचुस्त महाराजा श्रीपाल जेवा श्रावको थयां छे के जेउ जिनशासननी उन्नति माटे शक्ति अनुसार स्वपराक्रमवडे न्यायोपार्जित करेल द्रव्य वापरी वसुंधरा पर लीधेलो जन्म कृतार्थ मानता हता. तेमांना श्रीपाल महाराजानुं आ पद्यरूपे चरित्र छे अने ते चरित्रनी श्रीविनयविजयजीए पहेला बे खंड तथा त्रीजा खंडनी चार पूरी अने पांचमी अधुरी ढाल संवत् १७३८ मां रांदेर करेला चोमासामां लखी अने चरित्र पूरुं कर्या पहेलां ते कालधर्म पाम्या. त्यारपछी तेमनाज कहेवाथी श्रीयशोविजयजीए आ चरित्रनो उत्तरार्ध भाग संपूर्ण कर्यो छे. श्रीविनयविजयजी अने यशोविजयजी समकाले थया हता. विनयविजयजीए आशरे संस्कृतमां पांच अने गुजरातीमां वीशेक ग्रंथ रचेल छे. यशोविजयजीनो जन्म संवत् १६७० नी आसपास होवो जोइए, पण ते संबंधी हकीकत चोकस रीते मली शकती नथी. तेमणे लगभग १०८ ग्रंथो रचेला छे एम कहेवाय छे एटले २००००० (बे लाख) श्लोक बनाव्या छे. एवी रीते गुजराती भाषामां ग्रंथो लखीने गुर्जर बंधुउ उपर मोटो उपकार कर्यो छे. कोइ एम कहेशे के तेमना ग्रंथो जैन धर्मने लगता छे तो कहेवुं

पकशे के जेम प्रेमानंद आदि अन्यना रचेला ग्रंथो वैष्णव या हिंडु धर्मने लगता हता तोपण गुर्जर भाषाना पोषक हता तेम श्रीमद् यशोविजयजीना ग्रंथो जैन धर्मने लगता हता तोपण गुर्जर भाषाना पोषक हता. जैन कविर्ठना गुर्जर भाषापोषक ग्रंथोमां मागधी वा संस्कृत शब्दो आवी जाय छे तेनुं कारण ए छे के जैन साधुर मुनिर्ठने संस्कृत अने मागधी भाषानो अभ्यास करवो पडे छे अने तेमां जैनाचार्योए हजारो ग्रंथो लखेला छे तेना आजे पुरातन भंडारो ठेकाणे ठेकाणे दृष्टिगोचर थाय छे, तेथी मागधी या संस्कृत भाषाना शब्दो आवी जाय ए बनवा योग्य छे.

नव पदनी पूजारूप आ रास (पद्यरूपे चरित्र) छे. नव पदनी उत्तम रीते पूजा करनार तरीके मुख्य उदाहरण श्रीपाल राजानुं छे. तेमनुं चरित्र आ कृतिनी पूर्वे संस्कृतमां अने प्राकृतमां अनेक आचार्योए लखेलुं छे अने ते सर्वनो आधार लइने आ रास रचवामां आव्यो हशे. नव पद ते श्रीअरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, दर्शन, चारित्र, ज्ञान अने तप छे. आ नव पदनो महिमा अगाध छे अने तेथी तेनुं आ रासमां जणाव्या प्रमाणे यथाविधि अनुसरण करवाथी मुक्तिमार्ग साधी शकाय छे.

आ रास शास्त्री गुजराती बंने अक्षरोमां छपाववामां आवेल छे अने बंनेनी मळी कुल दश आवृत्ति थइ छे. आ शास्त्री अक्षरमां छपेल रासनी पांचमी आवृत्ति छे अने तेमां घणो सुधारो वधारो करेल छे. वळी चित्रो पण रंगीन घणा सुधारा वधारा साथे नाखेलां छे. आवा बारीक वखतमां कागल, बोर्ड अने कपडाना भाव बे चार गणा वधी जवाथी आ ग्रंथनी किमतमां रु०-१२-०नो वधारो करेल छे एटले प्रथम किमत रु. २-४-० हती तेने बदले रु.३-०-० राखी छे ते ग्राहक महाशयो सहन करी एवा बीजा ग्रंथो प्रगट करवा अमोने उत्साहवंत करशे. आवा ग्रंथो जैन प्रजामां वधारे प्रगट थाय अने छूटथी वंचाय तो अमारो श्रम सफल थयो मानीशुं.

आ ग्रंथनां प्रुफ तपासवामां नजरदोषथी अथवा मतिदोषथी जे कांइ भूलचुक रही होय ते क्षमा करी लखी जणाववाथी नवी आवृत्तिमां सुधारो करीशुं. किं बहुना ! ली. प्रकाशक.

श्री श्रीपाल राजानो रास.

प्रकाशक—श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबइ

શ્રી સરસ્વતી દેવી અને ઉપાસક વિનયવિજયજી.

शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक १.



ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૧.

"હે સરસ્વતી માતા! તમે મારા ઉપર સુપ્રસાદ એટલે ભલો ઉત્તમ પ્રકારનો પ્રસાદ કરીને સિદ્ધચક્રના ગુણ ગાતા થકી મારા મનોરથ પૂર્ણ કરો"

લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુંબઇ.

॥ श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः ॥

॥ श्रीवीरपरमात्मने नमः ॥ श्रीगौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री नवपद महिमा वर्णनरूप श्रीपाल राजानो रास ॥

प्रथम ग्रंथारंभमां ग्रंथकर्ता मंगलाचरण करता छता श्री तीर्थंकरनी वाणी जे सरस्वती देवी तेनी प्रार्थना करे छे.

॥ दोहा ॥

कल्पवेलि कवियण तणी, सरसति करि सुपसाय ॥
सिद्धचक्र गुण गावतां, पूर मनोरथ माय ॥ १ ॥

अर्थ—जेम कल्पवृक्ष युगलियाने मनोवांछित वस्तु पूरे छे, तेम सरस्वती देवी पण कविजनने मनोवांछित पूरवाने पदानुसारिणी लब्धिरूप छे, माटे कवियण तणी कल्पवेली एटले कविजननी कल्पवेलि एवी हे सरस्वति (माय के०) माता ! तुं मारा उपर सुपसाय एटले रुडो उत्तम प्रकारनो प्रसाद करीने सिद्धचक्रना गुण गावतां थका मारा मनोरथ (पूर के०) पूर्ण कर ॥ १ ॥ अथ सरस्वतीवर्णनम् ॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥ प्रकटपाणितले जपमालिका, कमलपुस्तकवेणुवराधरा ॥ धवलहंससमा श्रुतवाहिनी, हरतु मे दुरितं भुवि भारती ॥ १ ॥

हवे कवि देव गुरुने नमस्कार करे छे.

अलिय विघन सवि उपशमे, जपतां जिन चोवीश ॥
नमतां निज गुरु पयकमल, जगमां वधे जगीश ॥ २ ॥

अर्थ— चोवीश जिननो जाप जपतां थका (अलिय के०) अलीक एटले माठां खोटां एवां

जे पापरूप विघ्नो ते सर्वे उपशमी जाय; नाश पामे अने (निज गुरु के०) पोताना गुरुना पद्-कमलने नमस्कार करतां थका जगत मांहे (जगीश के०) यश अने शोजा वधे ॥ २ ॥ उक्तं च ॥ रसने वसने अशने, परपरिवादे प्रपंचवाचाले ॥ जिन इत्यक्षरयुगलं, न वदति मुग्धे वृथैवास्ति ॥

एवी रीते देव गुरुनुं नमस्काररूप मंगल करीने हवे कथानी उत्पत्ति कहे छे.

गुरु गौतम राजगृही, आव्या प्रजु आदेश ॥ श्रीमुख श्रेणिक प्रमुखने,
इणि परे दे उपदेश ॥ ३ ॥ उपगारी अरिहंत प्रजु, सिद्ध जजो जगवंत ॥
आचारिज उवझाय तिम, साधु सकल गुणवंत ॥ ४ ॥ दरिसण दुर्लज
ज्ञानगुण,चारित्र तप सुविचार ॥ सिद्धचक्र ए सेवतां,पामीजे जवपार ॥ ५ ॥

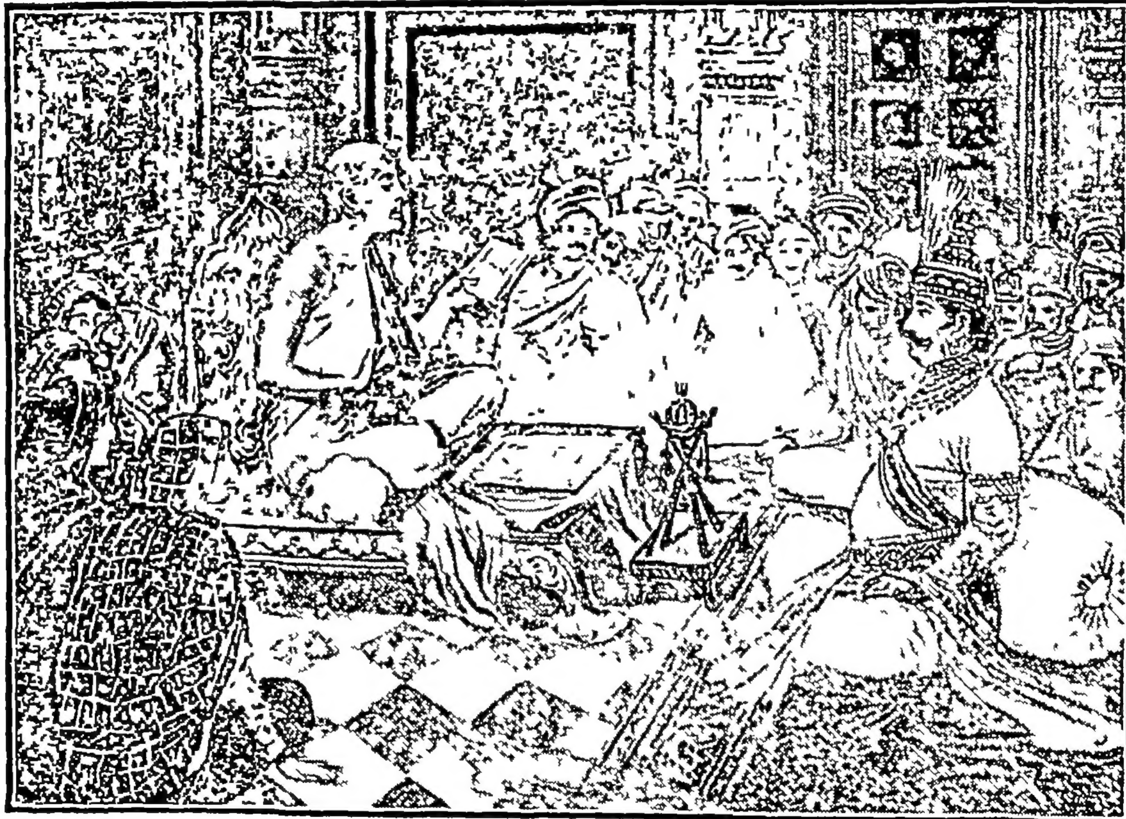
अर्थ–प्रजु श्री वीर जगवाननो आदेश एटले आज्ञा लइने गुरु श्री गौतमस्वामी राजगृही नगरीने विषे पधार्या. तिहां श्रेणिक राजा प्रमुख वांदवा माटे आवेला एवा सर्व सजाजनोने (श्रीमुख के०) पोताना मुख थकी इणि परे एटले आगल कहेवाशे ते प्रमाणे उपदेश देता हवा ॥ ३ ॥ के हे जव्य जनो ! तमे प्रथम पदे उपकारना करनार श्री अरिहंत प्रजुनुं अने बीजे पदे श्रीसिद्ध जगवंतनुं जजन स्मरण करो, त्रीजे पदे आचार्य प्रजु, चोथे पदे श्री उपाध्यायजी तेमज पांचमे पदे (गुणवंत के०) सत्यावीश गुणे करी सहित एवा (सकल के०) सर्व साधु जाणवा ॥ ४ ॥ छठे पदे जे पामवुं महा दुर्लज छे एवुं (दरिसण के०) समकित दर्शन, सातमे पदे ज्ञानगुण, आठमे पदे चारित्र अने नवमे पदे जे (सुविचार के०) रुडा विचारपूर्वक करवुं, एटले कषायरहितपणे करवुं एवुं तप जाणवुं. ए नव पदने सिद्धचक्र कहीए. ए सिद्धचक्रने सेवतां थका जव जे संसार तेनो पार पामीए ॥ उक्तं च ॥ जत्तिजुत्ताण सत्ताण मण कामणं, पूरणे कप्पतरु कप्पधेणूवमं ॥ दुक्ख दोहग्ग दारिद्द निन्नासयं, सिद्धचक्कं सया संथुणे सासयं ॥ १ ॥ इति ॥ ५ ॥

श्री श्रीपाल राजानो रास

प्रकाशक–श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबइ.

ગણધર શ્રી ગૌતમસ્વામીજી અને શ્રેણિક રાજાદિ શ્રોતાજનો.

शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक १.



એવુ સાભળીને શ્રેણિક રાજા શ્રી ગૌતમસ્વામીને પૂછવા લાગ્યો કે "હે પ્રભુ! એ પવિત્ર પુણ્યનો ધરનારો એવો શ્રીપાલ રાજા તે કોણ થયો? તેની કથા અમોને કહી સભળાવો."

ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૨.

લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુબઇ.

इह भव परभव एहथी, सुख संपद सुविशाल ॥ रोग सोग रौरव टले,
जिम नरपति श्रीपाल ॥ ६ ॥ पूछे श्रेणिक राय प्रभु, ते कुण पुण्य
पवित्र ॥ इंद्रभूति तव उपदिशे, श्री श्रीपालचरित्र ॥ ७ ॥

अर्थ–एहथी एटले ए नव पदना सेवनथी आ भवने विषे तथा परभवने विषे सुविशाल एटले अत्यंत मोटां एवां सुख अने (संपद के०) दोलत पामीए, तथा रोग, शोक अने (रौरव के०) महा बिहामणा विकट एवा दुष्काल प्रमुखना भय अथवा रौरव एटले नरक तेनुं दुःख ते टली जाय, जेम श्रीपाल राजा ए नव पदना सेवन थकी ऋद्धि सिद्धि प्रत्ये पाम्यो, तेम तमे पण पामो ॥ ६ ॥ एवुं सांभलीने श्रेणिक राजा श्री गौतमस्वामीने पूछवा लाग्या के हे प्रभु ! ए पवित्र पुण्यनो धरनारो एवो श्रीपाल राजा ते कोण थयो ? तेनी कथा अमोने कही संभलावो. (तव के०) ते वारे इंद्रभूति श्री गौतमस्वामी ते श्रेणिक राजा प्रमुखने (श्री के०) कल्याणरूप लक्ष्मीवंत एवुं श्रीपाल राजानुं चरित्र ते प्रथमथी मांडीने (उपदिशे के०) कहे छे ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ देशी ललनानी ॥

॥ देश मनोहर मालवो, अति उन्नत अधिकार ॥ ललना ॥ देश अवर
मानुं चिहुं दिशे, परवरिया परिवार ॥ ललना ॥ दे० ॥ १ ॥

अर्थ–अत्यंत (उन्नत के०) उंचुं छे अधिकारीपणुं जेनुं एटले सर्व देशोमां मोटो एवो मनोहर सुंदर मालव नामे देश छे, ते देश बीजा सर्व देशोनी मध्यमां आवेलो छे, माटे कवीश्वर कहे छे के ते मालव देशने (अवर के०) बीजा जे चारे दिशाए रहेला देशो छे, ते सर्व (मानुं के०) जाणुं छुं जे मालव देशनो परिवार छे, ते देशोना परिवारे परवर्यो थको, वींट्यो थको शोभे छे. आमां "ललना" ए पद जे छे ते वाक्यालंकारने अर्थे छे. जेम आभूषणे करी माणस शोभे, तेम ललना ए पदे करी वाक्य शोभे छे ॥ १ ॥

तस शिर मुगट मनोहरु, निरुपम नयरी उजेण ॥ ललना ॥ लखमी लीला जेहनी, पार कलीजे केण ॥ ललना ॥ दे० ॥ २ ॥ सरगपुरी सरगे गइ, आणी जस आशंक ॥ ललना ॥ अलकापुरी अलगी रही, जलधि झंपावी लंक ॥ ललना ॥ दे० ॥ ३ ॥ प्रजापाल प्रतपे तिहां, भूपति सवि शिरदार ॥ ललना ॥ राणी सौभाग्यसुंदरी, रूपसुंदरी भरतार ॥ ललना ॥ दे० ॥ ४ ॥ सहेजे सोहगसुंदरी, मन माने मिथ्यात ॥ ललना ॥ रूपसुंदरी चित्तमां रमे, सूधी समकितवात ॥ ललना ॥ दे० ॥ ५ ॥

अर्थ—जेम मस्तकने विषे मुकुट शोभे छे, तेम ते मालव देशना मस्तकने विषे मुकुट समान शोभानी धरनारी तथा जेने कोइ वस्तुनी उपमा आपी तेनी बराबरी करी शकीए एवी चीज जगतमां नथी तेथी निरुपम छे, तथा जेनी लक्ष्मीनी लीलानी कलना करी कोण पार पामी शके? एवी उज्जयणी नामे नगरी छे ॥ २ ॥ ते उज्जयणी नगरीनी शोभा जोइने स्वर्गपुरी नगरीए विचार्युं जे हुं जो अहींयां रहीश तो एनी आगल मने कोइ वखाणशे नहीं, एवी मनमां आशंका लावीने ते स्वर्गने विषे जती रही, तथा अलकापुरी जे धनद लोकपालनी नगरी ते पण आशंका आणीने उज्जयणीथी अलगी एटले वेगली जती रही, अने लंका नगरीथी तो उज्जयणी नगरीनुं तेज खमायुं नहीं, माटे ठंडक करवा सारु जलधि जे समुद्र तेमां (झंपावी के०) झंपापात कर्यो ॥ ३ ॥ तिहां ते उज्जयणी नगरीने विषे सर्व राजाउनो शिरदार एवो प्रजापाल नामे राजा ते (प्रतपे के०) प्रकर्षे करीने तपे तेने प्रतपे कहीए, एटले ते राज्य करे छे. ते राजा एक सौभाग्यसुंदरी अने बीजी रूपसुंदरी ए बे पट्टराणीउनो (भरतार के०) स्वामी छे ॥ ४ ॥ हवे ते बे राणीउमां जे सौभाग्यसुंदरी राणी छे, ते तो सहेजे एटले स्वभावे पोताना मनने विषे मिथ्यात्वीउना धर्मने मानी रहेली छे, अने रूप-

सुंदरीना चित्तने विषे तो (सूधी के०) पाधरी एटले सारी रीते समकितनी वात रमी रही छे ॥ ५ ॥

सुर परे सुख संसारनां, भोगवतां भूपाल ॥ ललना ॥ पुत्री एकेकी पामीये, राणी दोय रसाल ॥ ललना ॥ दे० ॥ ६ ॥ एक अनुपम सुरलता, वाधे वधते रूप ॥ ललना ॥ बीजी बीज तणी परे, इंदुकला अभिरूप ॥ ललना ॥ दे० ॥ ७ ॥ सोहग्ग देवसुता तणुं, नाम ठवे नरनाह ॥ ललना ॥ सुरसुंदरी सोहामणी, आणी अधिक उछाह ॥ ललना ॥ दे० ॥ ८ ॥ रूपसुंदरी राणी तणी, पुत्री पावन अंग ॥ ललना ॥ नाम तास नरपति ठवे, मयणासुंदरी मन रंग ॥ ललना ॥ दे० ॥ ए ॥

अर्थ–(सुर परे के०) देवतानी परे एटले देवताउं जेम पोतानी देवांगनाउंनी साथे सुखविलास भोगवे तेनी पेरे राजाने पण ते बेहु राणीउंनी साथे संसार संबंधी सुखविलास भोगवतां थका ते बेहु राणीउंने (रसाल के०) सुंदर मनोहर एवी एकेकी पुत्री (पामीये के०) प्राप्त थइ ॥ ६ ॥ तेमां एक पुत्री तो अनुपम एवी जे (सुरलता के०) कल्पवृक्षनी वेलि तेनी पेरे दिवसे दिवसे वधते वधते रूपे करी (वाधे के०) वृद्धि पामे छे, एटले कल्पवृक्षनी वेलि जेम दिवसे दिवसे वृद्धि पामती जाय तेम ते कुंवरी पण वधते रूपे करी वृद्धि पामती जाय छे, अने बीजी कुंवरी जे छे, ते बीजना इंदु के०) चंद्रमा तेनी कलानी (अभिरूप के०) तुल्य एवी वृद्धि पामे छे, एटले जेम शुक्लपक्षनी बीजना दिवसथी मांमीने दिन दिन प्रत्ये चंद्रमानी कला वधती जाय, तेम ते कुंवरी पण वृद्धि पामवा लागी ॥ ७ ॥ हवे (सोहग्ग के०) सौभाग्यसुंदरी नामे राणी तेनी पुत्री तो (देवसुता के०) देवतानी सुंदरीना जेवी सोहामणी छे, माटे (नरनाह के०) नरनो नाथ जे राजा ते पोताना मनमां अधिक उत्साह आणी (तणुं के०) तेनुं सुरसुंदरी एवुं नाम (ठवे के०) स्थापे, पाडे ॥ ८ ॥

अने रूपसुंदरी नामे राणीनी जे पुत्री तेनां अंगोपांग सर्व (पावन के०) पवित्र सुलक्षण जोइने (नरपति के०) राजा ते पोताना मनने विषे (रंग के०) हर्ष आनंद आणीने (तास के०) तेनुं मयणासुंदरी एवुं नाम (ठवे के०) स्थापे, पाडे ॥ ए ॥

वेदविचक्षण विप्रने, सोंपे सोहग्ग देवी ॥ ललना ॥ सकल कलागुण
शीखवा, सुरसुंदरीने हेवी ॥ ललना ॥ दे० ॥ १० ॥ मयणाने माता
ठवे, जिनमत पंडित पास ॥ ललना ॥ सार विचार सिद्धांतना, आदरवा
अभ्यास ॥ ललना ॥ दे० ॥ ११ ॥ चतुर कला चोसठ जाणी, ते बहु
बुद्धिनिधान ॥ ललना ॥ शब्दशास्त्र सवि आवड्यां, नाम निघंटु निदान
॥ ललना ॥ दे० ॥ १२ ॥

अर्थ–(सकल के०) सर्व कलागुण शीखवाने अर्थे वेद मांहे विचक्षण एटले डाह्यो एवो जे शिवभूति नामे (विप्र के०) ब्राह्मण, तेने (सोहग्ग देवी के०) सौभाग्यसुंदरी नामे राणीए पोतानी पुत्री जे सुरसुंदरी तेने (हेवी के०) तरत सोंपी, अर्थात् सुरसुंदरीने ब्राह्मण पासे भणवा मोकली ॥ १० ॥ हवे मयणासुंदरीनी माता तो जैनसिद्धांतो संबंधी (सार के०) प्रधान भला एवा जे विचार तेनो अभ्यास आदरवाने अर्थे श्रीजैनमतना जाण एवा सुबुद्धि नामे पंडित जे अध्यापक तेमनी पासे (ठवे के०) स्थापे छे एटले मोकले छे ॥ ११ ॥ ते कुंवरीउं स्त्रीनी चतुराइ संबंधी जे चोसठ कला तेने जाणीने बहु जाणी घणी एवी जे बुद्धि तेनो (निधान के०) भंडार थइ, तेने अनेक प्रकारनां शब्दशास्त्र जे व्याकरण तथा नाममाला, निघंटु, आदान, निदान अने चिकित्सादिक ते सर्व आवड्यां, एटले ते पूर्वोक्त सर्व प्रकारनां शास्त्र जाणी गइ ॥ १२ ॥

कवित कलागुण केलवे, वाजित्र गीत संगीत ॥ ललना ॥ ज्योतिष वैद्यक विधि जाणे, राग रंग रसरीत ॥ ललना ॥ दे० ॥ १३ ॥ सोल कलापूरण शशी, करवा कला अभ्यास ॥ ललना ॥ जगति भमे जस मुख देखी, चोसठ कलाविलास ॥ ललना ॥ दे० ॥ १४ ॥ मयणासुंदरी मति अति भली, जाणे जिनसिद्धांत ॥ ललना ॥ स्याद्वाद तस मन वस्यो, अवर असत्य एकांत ॥ ललना ॥ दे० ॥ १५ ॥

अर्थ—ते कुंवरी कवित करवानी कलारूप गुणने केलवती थकी एटले सुधारती थकी वाजिंत्र वगाडवां गीत ते स्वरबद्ध गीत गावां तथा संगीत ते वाजिंत्र नाटकनां गीत तालबद्ध जाणवां तथा ज्योतिषशास्त्र, वैद्यकशास्त्र तेना विधि जे प्रकार, ते सर्वने जाणे, अने छ राग तेना रंग तथा नव रस तेनी रीत ए सर्वने जाणे एटले ए पूर्वोक्त सर्व शास्त्रना रहस्यनी जाणनारी थइ ॥ १३ ॥ इहां कवि उत्प्रेक्षा करे छे के (जस के०) जे कुंवरीनुं मुख देखीने सोल कलाए करी पूर्ण एवो जे (शशी के०) चंद्रमा ते विचार करवा लाग्यो जे आ मयणासुंदरी तो संपूर्ण चोसठ कलानो विलास छे, अने हुं तो मात्र सोल कलाए करी सहित छुं, माटे हुं पण जो चोसठ कलानो अभ्यास करुं तो एना जेवो थाउं, एवुं चिंतवीने वधारे कलाउनो अभ्यास करवा माटे मयणानुं मुख देखीने जगतमां भ्रमण करवा लाग्यो, एटले आकाशमां भमतोज फरे छे, तोपण ते सोलथी वधती कोइ सत्तरमी कलाने पामतो नथी ॥ १४ ॥ वली मयणासुंदरीनी (मति के०) बुद्धि ते अत्यंत भली छे, श्रीजिनराजना सिद्धांतने ते जाणे छे तथा भगवंते जे स्याद्वादरूप अनेकांत मार्ग प्ररूप्यो छे, ते तेना मनमां वसी रह्यो छे, अने (अवर के०) बीजा जे एकांतवाद मतनी प्ररूपणा करनारा मार्गो छे, ते सर्वने असत्य करी जाण्या छे, एवी ते कुंवरी थइ छे ॥ १५ ॥

नय जाणे नवतत्त्वना, पुग्गल गुण पर्याय ॥ ललना ॥ कर्मग्रंथ कंठे कर्या,
समकित शुद्ध सुहाय ॥ ललना ॥ दे० ॥ १६ ॥ सूत्र अर्थ संघयणीनां,
प्रवचनसारोद्धार ॥ ललना ॥ क्षेत्रविचार खरा धरे, एम अनेक विचार
॥ ललना ॥ दे० ॥ १७ ॥ रास भलो श्रीपालनो, तेहनी पहेली ढाल
॥ ललना ॥ विनय कहे श्रोताघरे, होजो मंगलमाल ॥ ललना ॥ दे० ॥ १८ ॥

अर्थ—वली नवतत्त्वने निश्चय तथा व्यवहार नये करी युक्त जाणे छे, तथा पुग्गल द्रव्यना गुण अने पर्याय सर्व जाणे छे, अने कर्मग्रंथ भणीने जेणे कंठे कर्या छे, एटले मुखपाठे कर्या छे. एवी रीते ते कुंवरी शुद्ध समकिते करी (सुहाय के०) शोभायमान थइ छे ॥ १६ ॥ वली संघयणीनां सूत्र एटले मूलपाठ तथा तेना अर्थ, ते सर्वने जाणे छे, तथा प्रवचनसारोद्धार ग्रंथने जाणे छे. वली क्षेत्रसमास संबंधी जे क्षेत्रना विचार, तेने खरेखरा धारी राख्या छे. ए रीते अनेक प्रकारना विचारोने मयणासुंदरी जाणे छे ॥ १७ ॥ (भलो के०) रुडो एवो जे श्रीपाल राजानो रास, तेनी ए पहेली ढाल संपूर्ण थइ. श्री विनयविजय उपाध्यायजी कहे छे के श्रोता एटले सांभलनाराउनां घरने विषे मांगलिकनी माला होजो ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

इक दिन अवनीपति इस्यो, आण्यो मन उल्लास ॥
पुत्रीनुं जोउं पारखुं, विद्या विनय विलास ॥ १ ॥

अर्थ—हवे एक दिवसे अवनी जे पृथ्वी तेनो पति जे प्रजापाल नामे राजा, तेणे मांहेली सभामां बेठां थका पोताना मनने विषे एवोज उल्लास आण्यो जे हुं मारी बेहु पुत्रीनुं पारखुं तो जोउं जे ए केवी विद्या भणेली छे ? तथा वली विनयनो विलास पण एमनामां केवो छे ? ॥ १ ॥

सभा मांहे शणगार करी, बोलावी बिहु बाल ॥ आवी अध्यापक सहित,
मोहन गुणमणिमाल ॥ २ ॥ अर्थ अगोचर शास्त्रना, पूछे नृपति जेह ॥
बुद्धिबले बेहु बालिका, आपे उत्तर तेह ॥ ३ ॥ अध्यापक आणंदीया,
सज्जन सवे सुख पाय ॥ चतुर लोक चित्त चमकीया, फल्या मनोरथ माय
॥ ४ ॥ विनय वल्लभ निज बालनी, शास्त्र सुकोमल भाख ॥ सरस जिसी
सहकारनी, साकर सरसी साख ॥ ५ ॥

अर्थ—एवो निर्धार करीने ते बेहु बालिकाउने बोलावी एटले तेडावी, ते वारे ते बेहु कुंवरीउ सोल शणगार करीने तेमना पोतपोताना अध्यापक जे भणावनारा गुरु, तेणे सहित सभाने विषे आवी. ते कुंवरीउ केवी छे ? तो के मोहने पमाडनारी एवी गुणरूप मणिनी माला सरखी छे, अने वली रूप लावण्ये करीने शोभावी छे सभा जेणे एवी छे ॥ २ ॥ ॥ हवे जे जे शास्त्रना अगोचर एटले कोइने खबर न पडे एवा अर्थ राजा पूछे छे, तेना उत्तर ते बेहु बालिकाउ पोतपोताना बुद्धिबले करी आपे छे ॥ ३ ॥ ते उत्तर सांभलीने अध्यापक जे भणावनारा ते घणो आनंद पाम्या, तथा सज्जन लोक सर्व सुख पाम्या, अने चतुर लोकनां चित्त चमत्कार पामी गयां, तथा ते बन्ने कुंवरीउनी (माय के०) माताउना मनोरथ पण फल्या, एटले सफल थया ॥ ४ ॥ विनये करी युक्त माटे वल्लभ एवी पोतानी बालिकाउनी शास्त्रे करीने सुकोमल एवी (भाख के०) वाणी, ते केवी मीठी लागे छे ! के जेवी (सरस के०) रसे करीने सहित एवी (सहकार के०) आंबानी ताजी साख तेने विषे जेम साकर भेली होय अने ते जेवी मीठी लागे, तेवी लागे ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ राग धोरणी ॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥

प्रश्नोत्तर पूछे पिता रे, आणी अधिक प्रमोद ॥ मन लागे अति मीठडां रे, बालक वचन विनोद रे ॥ वत्स विचारजो ॥ देइ उत्तर एह रे, सांसो वारजो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कुण लक्षण जीवित तणुं रे, कुण मनमथ घरनारी ॥ कुसुम कुण उत्तम कह्युं रे, परणी शुं करे कुमारी रे ॥ वत्स विचारजो ॥ २ ॥ एके वयणे एहनो रे, उत्तर एणी परे थाय ॥ सुरसुंदरी कहे तातजी रे, सुणजो "सासरे जाय" रे ॥ नृप अवधारजो ॥ अरथ सुणी अम एह रे ॥ मोहत वधारजो ॥ ३ ॥

अर्थ–हवे बालकनां वचननो (विनोद के०) जे आनंद ते माता पितानां मनमां अत्यंत मीठो लागे छे, माटे कुंवरीउनो पिता जे प्रजापाल राजा, ते पोताना मनमां अधिक (प्रमोद के०) हर्ष आणीने प्रश्नना उत्तर पूछे छे के हे वत्सो ! हे पुत्रीउं ! तमे तमारा हृदयने विषे विचारजो, अने अमे जे प्रश्न पूछीए, तेना उत्तर आपीने अमारा मननो संदेह निवारण करजो ॥ उक्तं च ॥ न तथा शशी न सलिलं, न चंदनं नैव शीतला छाया ॥ आह्लादयंति पुरुषं, यथा हि मधुराक्षरा वाणी ॥ १ ॥ इति ॥ हवे राजा पूछे छे जे हे वत्स ! एक तो जीववानुं लक्षण शुं छे ? बीजुं मन्मथ जे कामदेव तेना घरनी स्त्री कोण छे ? त्रीजुं सर्व जातिनां फूलमांहे उत्तम फूल कयुं कहीए ? चोथुं कुमारिका परणीने शुं करे ? एवा चार प्रश्न पूछ्या ॥ २ ॥ पूर्वे कहेला चार प्रश्नना उत्तर ते एक वचने करीनेज आपो, ते वारे प्रथम सुरसुंदरी कहे छे के हे पिताजी ! (सुणजो के०) सांभलजो (सासरे जाय) ए एकज वचनमां चारे प्रश्नना उत्तर समाइ गया छे. ते आवी रीते के (सास) (रे) अने (जाय) ए पूर्वोक्त एक वचनमांथी त्रण पद नीकले छे, तेमां प्रथम

जीवितव्यनुं लक्षण सास एटले श्वास छे, केमके ज्यांसुधी श्वास होय त्यांसुधी ते जीवतुं छे एम कहेवाय. ए पहेला प्रश्ननो उत्तर जाणवो. तथा कामदेवनी स्त्री (रे के०) रति एवे नामे छे. ए बीजा प्रश्ननो उत्तर समजवो. वली सर्व जातिनां पुष्पमां (जाय के०) जाइनां फूल ते उत्तम कहेवाय छे. ए त्रीजा प्रश्ननो उत्तर कह्यो, अने (सासरे जाय) ए संपूर्ण वचने करी कुमारिका परणीने शुं करे ? तो के ते पोताने सासरे जाय. ए चोथा प्रश्ननो उत्तर जाणी लेवो. ए रीते हे पिताजी ! तमे जे अर्थ पूछ्यो, तेनो एकज वचने करीने में उत्तर आप्यो छे. ते हे नरपति ! तमे अवधारजो, एटले मानजो. ए में जे अर्थ कह्यो, ते सांभलीने अमारो (मोहत के०) महत्त्व वधारजो ॥ ३ ॥

मयणाने महीपति कहे रे, अर्थ कहो अम एक ॥ जो तमे शास्त्र संभालतां रे, वाध्यो हृदय विवेक रे ॥ व० ॥ ४ ॥ आदि अक्षर विण जेह छे रे, जग जीवाडणहार ॥ तेहिज मध्याक्षर विना रे, जग संहारणहार रे ॥ व० ॥ ५ ॥

अर्थ—हवे महीपति जे राजा, ते मयणासुंदरीने कहे छे के अमे एक प्रश्न पूछीए छीए ते जो तमे शास्त्र भण्यां छो अने तेने संभालतां थका तमारा हृदयने विषे विवेकनी वृद्धि करी छे, तो अमने एनो अर्थ कहो ॥ ४ ॥ एक शब्दनो (आदि के०) पहेलो जे अक्षर छे, ते अक्षर विना बीजा जे अक्षरो छे, ते सर्व जगतने जीवाडनारा छे, वली तेज शब्दनो मध्याक्षर एटले वचमांनो अक्षर, तेणे करी रहित ते शब्दने जो करीए तो शेष जे अक्षर रहे छे, ते जगतने संहार करनारा छे ॥ ५ ॥

अंत्याक्षर विण आपणुं रे, लागे सहुने मीठ ॥ मयणा कहे सुणजो पिता रे, ते में नयणे दीठ रे ॥ नृप० ॥ ६ ॥ सुगुण समस्या पूरजो रे, नृपति कहे धरी नेह ॥ अर्थ उपाइ अभिनवो रे, पुण्ये पामीजे एह रे ॥व०॥ ७॥

अर्थ—वली तेज शब्दना अंत्यनो अक्षर काढी नाखतां बाकीना जे अक्षर रहे छे ते (आपणुं के०) पोतानुं जे काज ते सहु कोइने मीठुं लागे छे. एवुं राजानुं वचन सांभलीने मयणासुंदरी कहे छे के हे पिताजी ! सांभलजो, ते तो में मारां नयणे दीठ एटले चक्षुने विषे दीठुं छे, एटले चक्षुमां (काजल) अंजाय छे तेमांथी आद्यनो (का) अक्षर काढी नाखीए, ते वारे (जल) ए बे अक्षरो रहे, ते जल एटले पाणी सर्व जगतने जीवाडनारुं छे, अने मध्यनो (ज) अक्षर काढी नाखीए, ते वारे (काल) एवा बे अक्षर रहे, ते काल तो जगतने संहार करनार छे, तथा छेल्लो (ल) अक्षर काढी नाखीए, ते वारे (काज) एवा बे अक्षर रहे, ते काज एटले कार्य ते तो पोतानुं सहु कोइने मीठुं लागे छे. इत्यर्थः ॥ यदुक्तं ॥ किं लवइ सहरहियं, किंच अदिठं च वल्लहं होइ ॥ किंच अदिठं मिठं, जग्गं किं सुंदरं होइ ॥ १ ॥ आ गाथामां लखेला चारे प्रश्नो उत्तर ॥ नाडी, जीव, अमृत अने कोष ॥ इति ॥ उक्तं च ॥ प्रथमाक्षर विण भूपति सोहे, मध्याक्षर विण स्त्रीयां मोहे ॥ अंत्याक्षर विण पंडित प्यारो, ए हरियाली पंडित विचारो ॥ १ ॥ उत्तर ॥ वादल जाणवुं ॥ प्रथमाक्षर विण घर घर दीठी, मध्याक्षर विण सुरा मीठी ॥ अंत्याक्षर विण योगी जाणे, त्रिहुं अक्षर शिर नारी वखाणे ॥ २ ॥ उत्तर ॥ राखडी ॥ प्रथमाक्षर विण सहुने भावे, मध्याक्षर विण जग असुहावे ॥ अंत्याक्षर विण पंखी मेलो, सो साजन मोकलजो वहेलो ॥ उत्तर ॥ कागल जाणवो ॥ ३ ॥ ६ ॥ वली एक (अभिनवो के०) नवो अर्थ उत्पन्न करीने भूपति जे राजा ते (नेह के०) स्नेह धरीने बेहु पुत्रीउने समकाले कहे छे के हे

श्री श्रीपाल राजानो रास

प्रकाशक—**श्रावक भीमसिंह माणेक,**
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबई.

પ્રજાપાળ રાજા, તેની રાણી રૂપસુંદરી, તેની બે દીકરી મયણાસુંદરી તથા સુરસુંદરી અને અધ્યાપકો.



शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक ६.





હે પિતાજી ! એક ધન, બીજુ યૌવન, ત્રીજુ પ્રધાન સુંદર એવું શરીર તથા ચોથો મન વલ્લભ
જે ભર્તાર તેનો મિલાપ, એટલા વાના પુણ્ય થકી પામીએ



ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૯



લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુંબઈ

सुगुण वत्सो ! तमे मारी एक समस्या पूर्ण करजो, जे पुण्य थकी आ अमुक वस्तु पामीए एटले पुण्यथी शी शी वस्तु पामीए ते कहो ॥ ७ ॥

सुरसुंदरी कहे चातुरी रे, धन यौवन वर देह ॥ मनवल्लभ मेलावडो रे, पुण्ये पामीजे एह रे ॥ नृप० ॥ ८ ॥ मयणा कहे मति न्यायनी रे, शीलशुं निर्मल देह ॥ संगति गुरु गुणवंतनी रे, पुण्ये पामीजे एह रे ॥ नृप० ॥ ॥ ए ॥ इणे अवसर नृपति भणे रे, आणी मन अभिमान ॥ हुं तूठो तुम उपरे रे, देउं वांछित दान रे ॥ व० ॥ १० ॥ हुं निर्धनने धन देउं रे, करुं रंकने राय ॥ लोक सकल सुख भोगवे रे, पामी मुज पसाय रे ॥ व० ॥ ११ ॥

अर्थ–एवुं राजानुं वचन सांभलीने प्रथम तो चतुरपणाथी सुरसुंदरी कहे छे के हे पिताजी ! एक धन, बीजुं यौवन, त्रीजो (वर के०) प्रधान सुंदर एवो (देह के०) शरीर तथा चोथो मनवल्लभ जे भर्त्तार तेनो मिलाप, एटलां वानां पुण्य थकी पामीए ॥ ८ ॥ हवे मयणासुंदरी उत्तर कहे छे के हे पिताजी ! एक तो न्यायनी (मति के०) बुद्धि, बीजुं शीले करीने निर्मल (देह के०) शरीर, त्रीजी रुडा गुणवंत गुरुनी संगति एटले समागम, ए वस्तु पुण्यना योगे पामीए ॥ ए ॥ एवा अवसरने विषे राजा मनमां अभिमान आणीने (भणे के०) कहे छे जे हुं तमारा उपर संतुष्ट थयो छुं, माटे तमोने मनोवांछित दान आपुं ॥ १० ॥ हुं केवो छुं ? तो के जे निर्धन पुरुष होय तेने धन आपीने धनवंत करुं, तथा रंकने राजा करुं, अने सर्व लोक जे सुख भोगवे छे, ते मारो पसाय पामीने भोगवे छे ॥ ११ ॥

सकल पदारथ पामीए रे, में तूठे जग मांहि ॥ में रूठे जग रोलीए रे, ऊन्नो न रहे कोइ बांहि रे ॥ व० ॥ १२ ॥ सुंदरी कहे साचुं पिता रे, एहमां किश्यो संदेह ॥ जग जीवाडण दोय छे रे, एक महीपति दूजो मेह रे ॥ नृप० ॥ १३ ॥ साचुं साचुं सहु कहे रे, सकल सन्ना तेणी वार ॥ ए सुरसुंदरी जेहवी रे, चतुर न को संसार रे ॥ नृप० ॥ १४ ॥ राजा पण मन रंजियो रे, कहे सुंदरी वर माग ॥ वांछित वर तुज मेलवी रे, देउं सकल सौन्नाग्य रे ॥ व० ॥ १५ ॥

अर्थ–जगतमां जेनी उपर हुं संतुष्ट थाउं तो तेने सर्व पदार्थनुं पामवापणुं छे, अने जेनी उपर हुं रूठुं, तो तेने रोली नाखुं, तेथी कोइ प्राणी तेनी छायामां पण ऊन्नो रहे नहीं ॥ १२ ॥ एवुं राजानुं वचन सांन्नली सुरसुंदरी कहे छे के हे पिताजी ! तमे जे कहो छो ते साचुं छे. एमां शो संदेह छे ? जगतने जीवाड्नारा बेज छे, तेमां एक तो महीपति एटले राजा अने बीजो मेह एटले वर्षाद ॥ १३ ॥ ते वारे तिहां सहु कोइ सन्नाना लोक ते सर्व साचुं साचुं कहेता हवा, अने एम कहेवा लाग्या के संसारने विषे बीजी कोइ आ सुरसुंदरीना जेवी चतुर स्त्री नथी ॥ यह साची सबहीं कहे, राजा करे सो न्याय ॥ ज्यौं चोपरके खेलमें, पासा परे सो दाय ॥ १ ॥ बनती देख बनाइयें, परत न दीजे खोट ॥ जैसो वाजे वायरो, तैसी लीजे उंट ॥ २ ॥ सन्ना सोहंतु बोलीये, जैसी सन्ना सोहाय ॥ जैसो वानर पेखणो, जैसी शिला तणाय ॥ ३ ॥ १४ ॥ राजा पण मनमा रंजित थइने कहेवा लाग्यो के हे सुरसुंदरि ! तुं वर माग. हुं तुजने मनोवांछित वर मेलवीने सर्व सौन्नाग्य आपुं ॥ १५ ॥

तिहां कुरुजंगल देशथी रे, आव्यो अवनीपाल ॥ सना मांहे सोहे
घणो रे, यौवन रूप रसाल रे ॥ नृप० ॥ १६ ॥ शंखपुरी नयरी धणी रे,
अरिदमन तस नाम ॥ ते देखी सुरसुंदरी रे, अंगे उपनो काम रे ॥
व० ॥ १७ ॥ पृथिवीपति तस उपरे रे, परखी तास सनेह ॥ तिलक
करी अरिदमनने रे, आपी अंगजा तेह रे ॥ व० ॥ १८ ॥ रास रच्यो
श्रीपालनो रे, तेहनी बीजी ढाल ॥ विनय कहे श्रोताघरे रे, होजो मंगल-
माल रे ॥ व० ॥ १९ ॥

अर्थ–एवा अवसरने विषे कुरुजंगल नामे देश थकी दमितारि राजानो पुत्र (अवनी के०) पृथ्वी तेनो (पाल के०) पालनारो एवो ते राजा उज्जयणीना राजानी सेवा करवाने अर्थे त्यां आव्यो छे. ते यौवन अवस्था तथा रूपसौंदर्य तेणे करी (रसाल के०) सुंदर छे, माटे सना मांहे बेठो थको घणुं शोभे छे ॥ १६ ॥ ते शंखपुरी नामे नगरीनो स्वामी छे, अने अरिदमन एवुं तेनुं नाम छे. तेने देखीने सुरसुंदरीना अंगने विषे काम उत्पन्न थयो ॥ १७ ॥ ते वारे पृथिवीपति जे राजा तेणे अरिदमननी उपर सुरसुंदरीनो स्नेह परखीने तिलक करी पोतानी सुरसुंदरी नामे अंगजा जे पुत्री, ते तेने आपी ॥ नयन नयनकी पारसी, नयन नयनको हेत ॥ नयन नयनके नयनमें, नयन नयन कह देत ॥ १ ॥ १८ ॥ ए श्रीपाल राजाना रासनी रचना करी तेनी बीजी ढाल पूर्ण थइ. विनयविजय उपाध्यायजी कहे छे के सांजलनाराने घेर मांगलिकनी माला होजो ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

मयणा मस्तक धूणती, जव निरखी नरराय ॥ पूछे पुत्री वात ए, तुम मन किम न सुहाय ॥ १ ॥ सकल सभाथी सोगुणी, चतुराइ चित्त मांहि ॥ दीसे छे ते दाखवो, आणी अंग उत्साहि ॥ २ ॥ उचित नहीं इहां बोलवुं, मयणा कहे महाराय ॥ मोहे मन माणस तणां, विरुआ विषय कषाय ॥ ३ ॥ निर्विवेक नरपति जिहां, अंश नहीं उपयोग ॥ सभालोक सहु हाजीया, सरिखो मल्यो संयोग ॥ ४ ॥

अर्थ–एवा समयने विषे मस्तक धूणावती एवी मयणासुंदरीने जे वारे प्रजापाल राजाए दीठी, ते वारे राजाए पूछ्युं जे हे पुत्रि ! ए वात तमारा मनने विषे केम सोहाती नथी, एटले गमती नथी ? ॥ १ ॥ आ सर्व सभाथी सोगुणी चतुराइ तमारा चित्त मांहे देखाय छे, तो अंगमां उत्साह आणीने जे असंभव वात होय ते कही देखाडो ॥ २ ॥ एवुं राजानुं बोलवुं सांभलीने मयणासुंदरी कहे छे के हे महाराज ! इहां आ सभाने विषे बोलवुं उचित नथी, संसारमां (विरुआ के०) माठा एवा जे विषय अने कषाय छे, तेना योगे माणसोनां मन मोहने पामे छे॥ चालंतां कुलवट्टडी, बोलंतां कुलन्याय ॥ अहवा लछी सांपजो, अहवा लछी जाउ ॥ १ ॥ अवसर देखी बोलीये, एके अक्षर सार ॥ अवसर विण जे बोलवुं, जण जण कहे गमार ॥ २ ॥ इति ॥ ३ ॥ जे ठेकाणे राजाने विवेक नथी तथा एक अंशमात्र पण शास्त्रनो उपयोग नथी, अने वली सभाना लोक तो सर्व हाजी हाजी करनारा हाजीया छे, एवी रीते सर्व संयोग सरखो मल्यो छे, तेवी सभाने विषे बोलवुं उचित नथी ॥ ४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ राग केदारो ॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

मन मंदिर दीपक जिस्यो रे, दीपे जास विवेक ॥ तास न कहिए परा-
भवे रे, अंग अज्ञान अनेक ॥ पिताजी ॥ म करो जूठ गुमान ॥ ए
ऋद्धि अथिर निदान ॥ पिताजी ॥ जेहवो जलधि उधान ॥ पिताजी ॥ म
करो० ॥ १ ॥ सुख दुःख सहुए अनुभवे रे, केवल कर्म पसाय ॥ अधिक
न उंबुं तेहमां रे, कीधुं कोणे न जाय ॥ पिताजी ॥ म करो० ॥ २ ॥ राजा
कोपे कलकल्यो रे, सांभलतां ते वात ॥ वहाली पण वेरण थइ रे, कीधो वचन-
विघात रे ॥ बेटी ॥ भली रे भणी तुं आज ॥ तें लोपी मुझ लाज रे ॥ बे० ॥
विणासाड्युं निज काज रे ॥ बे० ॥ तुं मूरख शिरताज रे ॥ बे० ॥ भ० ॥ ३ ॥

अर्थ–मनरूप मंदिरने विषे दीपक जेवो जेने विवेक दीपे छे, तेना अंगमां अनेक जातिनुं जे अज्ञान छे ते केवारे पण पराभव करी शके नहीं, माटे हे पिताजी ! तमे जूठुं अभिमान म करो. ए सर्व ऋद्धि जे छे, ते (निदान के०) निश्चे जेवो (जलधि के०) समुद्र तेनो (उधान के०) भरती उंट छे, एटले समुद्रमां पाणी चढे छे अने जेम आवीने पाछुं वली जाय छे, तेनी पेरे अथिर छे ॥ धन जोबनका म करो गुमाना, जानो तरुवर पाकां पानां ॥ लगत वायु अंते जरू परनां, तो ते पर एता क्या करनां ? ॥ १ ॥ संसारने विषे सहु कोइ सुख तथा दुःखने अनुभवे एटले भोगवे छे, ते केवल एकलां पोतानां कर्मना पसायथीज भोगवे छे, तेमां अधिकुं तथा उंछुं एटले न्यूनाधिक कोइथी कीधुं जाय नहीं ॥ २ ॥ एवी मयणासुंदरीनी वातने सांभलतांज राजा क्रोधे करी कलकल्यो थको कहेवा लाग्यो के तुं मने घणी वहाली हती, पण वेरण थइ. जे कारणे तें मारा वचननो विघात कर्यो, माटे हे बेटी ! तुं तो आज भली (भणी के०) बोली

जे तें मारी लाज लोपी अने तारुं पोतानुं कार्य (विणसाड्युं के०) बगाड्युं; तेथी तुं सर्व मूर्ख जनोनी शिरताज छो ॥ ३ ॥

पोषीने पोढी करी रे, भोजन कूर कपूर ॥ रयण हिंडोले हींचती रे, भोग
भला भरपूर रे ॥ बे० ॥ भ० ॥ ४ ॥ पाट पटंबर पहेरणे रे, परिजन सेवे पाय ॥
जगमां सहु जी जी करे रे, ए सवि मुज पसाय रे ॥ बे० ॥ भ० ॥ ५ ॥
तत्त्व विचारो तातजी रे, मत आणो मन रोष ॥ कर्में तुम कुल अवतरी
रे, में किहां जोयो जोष ॥ पि० ॥ म० ॥ ६ ॥ मल्हावो मोटे मने रे, नव
नव करो निवेद ॥ ते सवि कर्म पसाउले रे, ए अवधारो भेद ॥ पि० ॥ म० ॥ ७ ॥
जो हठवाद तुझने घणो रे, कर्म उपर एकंत ॥ तो तुझने परणावशुं
रे, कर्में आणयो कंत रे ॥ बे० ॥ भ० ॥ ८ ॥

अर्थ—कपूर सरखा उजला कूरनां भोजन करावी पाली पोषीने (पोढी के०) मोटी करी छे, तथा रत्ने जडित हिंडोलाखाट मांहे हींचे छे एवा (भला के०) रुडा भरपूर एटले परिपूर्ण भोग भोगवे छे ॥ ४ ॥ वली एक पाटनां (पटंबर के०) रेशमी उंचां चीर पटकूलादि वस्त्रो पहेरवाने मले छे अने परिजन जे चाकर लोक ते तारा पगनी सेवा करे छे, जगतमां ज्यां जाय छे त्यां सर्व कोइ जी जी करीने बोलावे छे, ते सर्व मारा पसायथी जाणजे ॥ ५ ॥ ते सांभली मयणासुंदरी बोली के हे पिताजी ! ए वातनुं तत्त्व विचारो, तमारा मनने विषे रोष म आणो. में तमारा कुलमां उपजवानो क्यां जोष जोयो हतो ? परंतु पूर्वकृत कर्मना संयोगथी तमारा कुलमां आवी अवतरेली छुं ॥ ६ ॥ तमे मने मोटे मने करी मल्हावो छो, अने नवा नवा (निवेद के०) खान पान करावो छो, ते सर्व मारां कर्मना पसायथी छे, ए (भेद के०) तत्त्व ते (अवधारो के०) अवधारण करीने मानो ॥ ७ ॥

ते वारे राजा कहेवा लाग्यो के जो तुजने एकांतपक्षे कर्म उपरज घणोज हठवाद छे, तो कर्म
आणी आपेलो जे (कंत के०) भर्त्तार तेज तुमने परणावशुं ॥ ८ ॥

मान हण्युं जो एणीए रे, माहरुं सभा समक्ष ॥ फल देखाडुं एहने रे,
सकल प्रजा प्रत्यक्ष रे ॥ बे० ॥ भ० ॥ ए ॥ सखीए ए शुं शीखव्युं रे,
अध्यापक अज्ञान ॥ सज्जन लोक लाजे सहु रे, देखी ए अपमान रे ॥ बे०
॥ भ० ॥ १० ॥ नगरलोक निंदे सहु रे, भण्युं एहनुं धूल ॥ जूउ वातनी
वातमां रे, पिता कह्यो प्रतिकूल रे ॥ बे० ॥ भ० ॥ ११ ॥ मिथ्यात्वी कहे
जैननी रे, वात सवे विपरीत ॥ जगतनीति जाणे नहीं रे, अवला ने
अविनीत रे ॥ बे० ॥ भ० ॥ १२ ॥

अर्थ–राजा विचारे छे के जो ए मयणाए सर्व सभा समक्ष मारुं मान हण्युं छे, तो तेनां फल
पण सर्व प्रजा देखतां थका प्रत्यक्ष एहने हुं देखाडुं ॥ यडुक्तं ॥ आज्ञाभंगो नरेंद्राणां, गुरूणां
मानमर्दनम् ॥ पृथक्शय्या च नारीणा,–मशस्त्रवध उच्यते ॥ १ ॥ इति ॥ ए ॥ अरे ! एना सोब-
तीए एने आवुं ते शुं शीखव्युं ? तथा एनो अध्यापक जे भणावनार ते पण अज्ञानी देखाय
छे ! एवी रीते राजानुं अपमान थयेलुं देखीने सज्जन लोक जे सगां संबंधी ते सर्व लज्जा पाम्यां
॥ १० ॥ नगरनिवासी लोक पण सर्व निंदा करवा लाग्यां, अने कहेवा लाग्यां के ए मयणानुं
भण्वुं ते धूल जेवुं थयुं, जूउ तो खरा ? जे सेजसाज वातनी वातमां पोताना पिताने प्रतिकूल
कह्यो ॥ यतः ॥ स्वस्तुतिं परनिंदा वा, कर्त्ता लोकः पदे पदे ॥ परस्तुतिं स्वनिंदा वा, कर्त्ता कोऽपि न
विद्यते ॥१॥११॥ वली मिथ्यात्वी लोको कहेवा लाग्यां के जैननी वात सर्वे विपरीत एटले अवली छे,
जगतनी नीति कांइ पण ए जाणता नथी, तेथी अवला छे अने अविनीत एटले विनयाचार रहित छे १२

अवसर पामी रायनो रे, रोष समावण काज ॥ कहे प्रधान पधारीयें रे,
रयवाडी महाराज रे ॥ बे० ॥ त्र० ॥ १३ ॥ रास भलो श्रीपालनो रे,
तेहनी त्रीजी ढाल ॥ विनय कहे मद परिहरो रे, जेहथी बहु जंजाल रे
॥ बे० ॥ त्र० ॥ १४ ॥

अर्थ–एवा समयने विषे अवसर पामीने राजानो क्रोध शमाववा माटे प्रधान कहे छे के महाराज ! रयवाडीनो अवसर थयो, माटे रयवाडीए पधारो ॥ १३ ॥ भलो श्रीपाल राजानो रास, तेनी ए त्रीजी ढाल पूरी थइ. रासना कर्त्ता विनयविजयजी उपाध्याय कहे छे के जे थकी संसारमां बहु जंजाल थाय छे एवो जे मद एटले अहंकार तेने परिहरो, त्यागो ॥ यतः ॥ जाइ कुल रूव बल सुय, तव लाभ सिरिय अठ मय मत्तो ॥ एआइं चिय बंधेइ, असुहाइं बहु च संसारो ॥१॥ इति ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

राजा रयवाडी चढ्यो, सबल सेन परिवार ॥ मदमाता मयगल घणा, सहस-
गमे असवार ॥ १ ॥ सुभट सिपाइ सामटा, जिस्या पंचायण सिंह ॥
आयुध आडंबर अधिक, अटल अभंग अबीह ॥ २ ॥

अर्थ–हवे बले करी सहित एवुं सैन्य अथवा सबल एटले घणो एवो जे सैन्यनो परिवार, तेने साथे लइने राजा रयवाडीने अर्थे चढ्यो. हवे ते परिवार कहे छे. एक तो मदे करी उन्मत्त थयेला एवा मयगल एटले हाथी घणा छे, अने (सहसगमे के०) हजारोगमे अस्वारो छे ॥ १॥ वली सामटा एटले थोकबंध सुभट तथा सिपाइउ ते जेवा पंचानन सिंह होय नहीं ? तेनी सरखा बलवान् छे, ते सिपाइउ आयुध जे हथियार तेनो अधिक आडंबर तेणे करीने सहित थका चाले छे. ते केवा छे ? तो के अटल एटले कोइथी पाछा टले नहीं, तथा अभंग एटले कोइना

भगाड्या भागी जाय नहीं, अने अबीह एटले कोइना बीवराव्या बीए नहीं अर्थात् कोइना
डराव्या डरे नहीं, एवा सुभटो छे ॥ २ ॥

वाघा केसरिया कीया, रढियाळा रजपूत ॥ मूछाळा मछरायता, योध
जिस्या यमदूत ॥ ३ ॥ पाखरिया पंखी परे, उडे अंबर जाम ॥ पंच वरण
नेजा नवल, गयण चोक चित्राम ॥ ४ ॥ सरणाइ वाजे सरस, घूरे घोर
निसाण ॥ पुर बाहिर नृप आवीया, भालां झलहल भाण ॥ ५ ॥

अर्थ–तथा तेणे केसरीया वाघा करेला छे, अने रढियाळा एटले जे हठ लीधो ते मूके नहीं
एवा ते रजपूत छे, तथा मूछाळा एटले मोटी मूछवाळा छे, वळी मछरायता एटले मत्सर जे पार-
की महत्ता सहन न करी शकवी, एवी ईर्ष्याने धरता थका साक्षात् जेवा यमराजाना दूत होय
तेवा ते योद्धाउ छे ॥ ३ ॥ तथा पाखरीया घोडा ते (जाम के०) जे वखते पंखीउनी पेरे अंबर
जे आकाश तेने विषे उडे छे, ते वखते ते घोडाउनी उपर बेठेला जे अस्वार छे, तेना हाथमां
पांच रंगवाळा (नवल के०) नवा नेजा एटले वावटा रह्या छे, ते वावटाए करीने गयण जे आ-
काश तेरूप चोक, तेने विषे जाणे चित्रामज कर्यां होय नहीं ? एवी शोभा देखाय छे ॥ ४ ॥ वळी
सरस सरणाइउ वाजी रही छे, तथा (घोर के०) गंभीर शब्दे करीने निसाण एटले नगारां
घूरे एटले घोर करी रहेलां छे, एवा आडंबरे करी राजा पुरनी बाहिर आव्या. तिहां बरछीउनां
भालांनो झलहलाट ते जाणीए बीजो (भाण के०) सूर्यज होय नहीं ? एवो देखाइ रह्यो छे ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ रामचंद्रके बाग, चांपो मोरी रह्यो री ॥ ए देशी ॥

मारग सनमुख ताम, उडे खेह घणी री ॥
पूछे भूपति दृष्टि, देइ मंत्री भणी री ॥ १ ॥

अर्थ–हवे आगल मार्गे जतां थका सन्मुख घणी धूल उडती दीठी (ताम के०) ते वारे नृपति जे राजा ते पोताना प्रधान सामी दृष्टि करी पूछे छे ॥ १ ॥

कुण आवे छे एह, एवडां लोक घणां री ॥ कहे मंत्री रहो दूर, दरिसण एह तणां री ॥ २ ॥ ए कुष्ठी सय सात, थाइ एकमणा री ॥ थापी राजा एक, जाचे राय राणा री ॥ ३ ॥ मारग मूकी जाम, नरपति दूर टले री ॥ गलितांगुलि तस दूत, आवी ताम मले री ॥ ४ ॥ उत्तम मारग कांइ; जाये दूर तजी री ॥ उज्जेणीना राय, हारे कीर्त्ति सजी री ॥ ५ ॥ निर्मुख आशाभंग, जाचक जास रह्या री ॥ भारभूत जग मांहि, निर्गुण तेह कह्या री ॥ ६ ॥ शी जाचो छो वस्तु; विगते तेह भणो री ॥ राय कहे अम आज, कीरति कांइ हणो री ॥ ७ ॥

अर्थ–हे प्रधान ! आ एटलां घणां लोक ते कोण आवे छे ? ते वारे प्रधान कहे छे के ए लोको जे आवे छे, तेनां दर्शन थकी तमे दूर रहो ॥ २ ॥ ए सातसें कोढीया ते सर्व एकमना थइ पोतानी उपर एक राजा स्थापीने राजाओ तथा राणाओने याचे छे ॥ ३ ॥ ते सांभली जे वारे राजा मार्ग मूकीने दूर टले एटले बीजे मार्गे चाले, ते वारे (गलितांगुलि के०) गली गयेली एटले खवाइ गइ छे आंगलीओ जेनी एवो ते कोढीयाओनो दूत तिहां आवीने ते राजाने मल्यो ॥ ४ ॥ अने कहेवा लाग्यो के हे उज्जेणीना राजा ! आ उत्तम राजमार्ग तजीने तुं दूर कां जाय छे, एटले बीजे मार्गे केम जाय छे ? अने तारी घणा कालनी सजेली कीर्त्तिने आज तुं केम हारी जाय छे ? ॥ ५ ॥ (जास के०) जेनी पासे याचक आवीने निर्मुख आशाभंग थइ रहे, ते प्राणी जगतमां पृथ्वीने भारभूत जेवा निर्गुणी कह्या छे ॥ ६ ॥ ते वारे राजा दूत प्रत्ये कहेवा लाग्यो के तमे शी वस्तुनी याचना करो छो ? ते

कहो, पण आज अमारी कीर्त्तिने शामाटे हणो बो ? यतः ॥ वरं प्राण-
खंडनम् ॥ मृत्योश्च क्षणिकं दुःखं, मानभंगाद्दिने दिने ॥ १ ॥ इति ॥ ७ ॥
राय, सघली ऋद्धि मली री ॥ राजवट्ट परगट्ट, कीधी अमे
री ॥ ८ ॥ पण सुकुलिणी एक, कन्या कोइ दीये री ॥ तो तस
राणी होय, अम एह हर्ष हिये री ॥ ए ॥ मन चिंते तव राय, मयणा देउं
परी री ॥ जगमां राखुं कीर्त्ति, अविचल एह खरी री ॥ १० ॥ फल पामे
प्रत्यक्ष, मयणा कर्म तणां री ॥ साले हियडा मांहि, वयणां तेह घणां री
॥ ११ ॥ वले रुंख घनवुठ, दाधां जेह दवे री ॥ कुवयण दाधां जेह, न
वले तेह भवे री ॥ १२ ॥

अर्थ–ते सांभली दूत कहे बे के अमारा राजाने सर्व ऋद्धि मली बे, अने राजवट्ट एटले राजकीर्द ते प्रगटपणे अमे सर्वेए एकठा मलीने भेली कीधी बे ॥ ८ ॥ पण अमारा राजाने रूडा कुलमां उत्पन्न थयेली एवी जो एक कन्या कोइ आपे, तो तेनी राणी थाय, अमारा हैयामां ए हर्ष बे, ए उत्कंठा रही बे ॥ ए ॥ ते वारे राजाए मनमां विचार्युं जे मयणाने परी देउं ए शब्द मारवाडी भाषानो बे, एटले ए कोढीयाना राजाने मयणासुंदरी आपीने जगतमां ए मारी अविचल खरेखरी कीर्त्ति राखुं ॥ १० ॥ वली मयणासुंदरी पण प्रत्यक्षपणे कर्मनां फलने पामे, मयणा जे कर्मना पसाय आ-श्रयी कुवचन बोली बे, ते मारा हैयामां आडां अवलां घणां साले बे ॥ यतः ॥ डाढ खटके कांकरो, नयण खटके रेण ॥ वयण खटके वाउलो, गयो खटके सेण ॥ इति ॥ १ ॥ ११ ॥ जेम रुंख जे वृक्ष ते (दव के०) अग्निए करी बल्यां होय ते (घनवुठ के०) मेघवृष्टि थवाथी वले एटले फरी नवपल्लव थाय, पण कुवचने करीने जेनां मन (दाधा के०) बल्यां होय, तो ते फरी आ भवमां नवपल्लव थाय नहीं १२

अर्थ–हवे आगल मार्गे जतां थका सन्मुख घणी धूल उडती दीठी (ताम के०) ते वारे नृपति जे राजा ते पोताना प्रधान सामी दृष्टि करी पूछे छे ॥ १ ॥

कुण आवे छे एह, एवडां लोक घणां री ॥ कहे मंत्री रहो दूर, दरिसण एह तणां री ॥ २ ॥ ए कुष्ठी सय सात, थाइ एकमणा री ॥ थापी राजा एक, जाचे राय राणा री ॥ ३ ॥ मारग मूकी जाम, नरपति दूर टले री ॥ गलितांगुलि तस दूत, आवी ताम मले री ॥ ४ ॥ उत्तम मारग कांइ, जाये दूर तजी री ॥ उज्जेणीना राय, हारे कीर्त्ति सजी री ॥ ५ ॥ निर्मुख आशाभंग, जाचक जास रह्या री ॥ भारभूत जग मांहि, निर्गुण तेह कह्या री ॥ ६ ॥ शी जाचो छो वस्तु, विगते तेह भणो री ॥ राय कहे अम आज, कीरति कांइ हणो री ॥ ७ ॥

अर्थ–हे प्रधान ! आ एटलां घणां लोक ते कोण आवे छे ? ते वारे प्रधान कहे छे के ए लोको जे आवे छे, तेनां दर्शन थकी तमे दूर रहो ॥ २ ॥ ए सातसें कोढीया ते सर्व एकमना थइ पोतानी उपर एक राजा स्थापीने राजाउ तथा राणाउने याचे छे ॥ ३ ॥ ते सांभली जे वारे राजा मार्ग मूकीने दूर टले एटले बीजे मार्गे चाले, ते वारे (गलितांगुलि के०) गली गयेली एटले खवाइ गइ छे आंगलीउ जेनी एवो ते कोढीयाउनो दूत तिहां आवीने ते राजाने मल्यो ॥ ४ ॥ अने कहेवा लाग्यो के हे उज्जेणीना राजा ! आ उत्तम राजमार्ग तजीने तुं दूर कां जाय छे, एटले बीजे मार्गे केम जाय छे ? अने तारी घणा कालनी सजेली कीर्त्तिने आज तुं केम हारी जाय छे ? ॥ ५ ॥ (जास के०) जेनी पासे याचक आवीने निर्मुख आशाभंग थइ रहे, ते प्राणी जगतमां पृथ्वीने भारभूत जेवा निर्गुणी कह्या छे ॥ ६ ॥ ते वारे राजा दूत प्रत्ये कहेवा लाग्यो के तमे शी वस्तुनी याचना करो छो ? ते

विगते करी जणो एटले कहो, पण आज अमारी कीर्त्तिने शामाटे हणो छो ? यतः ॥ वरं प्राण-
परित्यागो, न मानपरिखंडनम् ॥ मृत्योश्च क्षणिकं दुःखं, मानभंगाद्दिने दिने ॥ १ ॥ इति ॥ ७ ॥

दूत कहे अम राय, सघली ऋद्धि मली री ॥ राजवट्ट परगट्ट, कीधी अमे
मिली री ॥ ८ ॥ पण सुकुलिणी एक, कन्या कोइ दीये री ॥ तो तस
राणी होय, अम एह हर्ष हिये री ॥ ९ ॥ मन चिंते तव राय, मयणा देउं
परी री ॥ जगमां राखुं कीर्त्ति, अविचल एह खरी री ॥ १० ॥ फल पामे
प्रत्यक्ष, मयणा कर्म तणां री ॥ साले हियडा मांहि, वयणां तेह घणां री
॥ ११ ॥ वले रुंख घनवुठ, दाधां जेह दवे री ॥ कुवयण दाधां जेह, न
वले तेह भवे री ॥ १२ ॥

अर्थ—ते सांभली दूत कहे छे के अमारा राजाने सर्व ऋद्धि मली छे, अने राजवट्ट एटले राजकीर्द ते प्रगटपणे अमे सर्वेए एकठा मलीने भेली कीधी छे ॥ ८ ॥ पण अमारा राजाने रूडा कुलमां उत्पन्न थयेली एवी जो एक कन्या कोइ आपे, तो तेनी राणी थाय, अमारा हैयामां ए हर्ष छे, ए उत्कंठा रही छे ॥ ९ ॥ ते वारे राजाए मनमां विचार्युं जे मयणाने परी देउं ए शब्द मारवाडी भाषानो छे, एटले ए कोढीयाना राजाने मयणासुंदरी आपीने जगतमां ए मारी अविचल खरेखरी कीर्त्ति राखुं ॥ १० ॥ वली मयणासुंदरी पण प्रत्यक्षपणे कर्मनां फलने पामे, मयणा जे कर्मना पसाय आ-श्री कुवचन बोली छे, ते मारा हैयामां आडां अवलां घणां साले छे ॥ यतः ॥ डाढ खटके कांकरो, नयण खटके रेण ॥ वयण खटके वाल्हो, गयो खटके सेण ॥ इति ॥ १ ॥ ११ ॥ जेम रुंख जे वृक्ष ते (दव के०) अग्निए करी बल्यां होय ते (घनवुठ के०) मेघवृष्टि थवाथी वले एटले फरी नवपल्लव थाय, पण कुवचने करीने जेनां मन (दाधा के०) बल्यां होय, तो ते फरी आ भवमां नवपल्लव थाय नहीं १२

रोष तणे वश राय, सुद्धि बुद्धि सर्व गइ री ॥ कहे दूत तुझ राय, अम घर आण जइ री ॥ १३ ॥ देउं राजकुमारी, रूपे रंभ जिसी री ॥ दूत तणे मन वात, विस्मय एह वसी री ॥ १४ ॥ किस्युं विमासे मूढ, में जे वात कही री ॥ न फरे जगमां तेह, अविचल साची सही री ॥ १५ ॥ श्री श्रीपालनो रास, चोथी ढाल कही री ॥ विनय कहे निरवाण, क्रोधे सिद्धि नहीं री ॥ १६ ॥

अर्थ—रोष जे क्रोध तेना वश थकी राजानी शुद्धि बुद्धि सर्व जती रही छे, तेथी दूतने कहे छे के तुं जइने तारा राजाने अमारे घेर तेडी लाव ॥ १३ ॥ तेने रंभा नामनी जे अप्सरा तेना जेवी रूपवाली एवी राजकुंवरी हुं आपुं. ए वात दूतना मनमां विस्मय जेवी थइ वसी एटले लागी ॥ १४ ॥ दूतनुं विस्मित चित्त जोइ राजा कहेवा लाग्यो के हे मूढ ! तुं तारा मनमां शुं विमासे छे ? जे में वात करी ते जगतमां फरे नहीं, एटले केवारे पण चले नहीं, (सही के०) निश्चे साची जाणवी ॥ १५ ॥ ए श्री श्रीपाल राजानो रास तेनी चोथी ढाल कही. श्री विनयविजयजी कहे छे के (निरवाण के०) निश्चे क्रोध थकी सिद्धि नथी ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

कोप कठिन नृपति हवे, आव्यो निज आवास ॥
सिंहासन बेठो अधिक, अति अभिमान विलास ॥ १ ॥

अर्थ—हवे क्रोधे करी कठिन थयेलुं छे हृदय जेनुं एवो राजा रयवाडीथी पाछो फरी पोताना आवासने विषे आवीने सिंहासन उपर बेठो, पण तेना मनमां अत्यंत अधिक एटले घणो अभि-

माननो विलास छे ॥ यतः ॥ को पइठो देह घर, तिन्नु विकार करेय ॥ आप तपे पर संतपे, धननी हाण करेय ॥ इति ॥ १ ॥

मयणाने तेडी कहे, कर्म तणो फल भोगव ॥ मुज पसाय मन आण जिम,
पूरुं वांछित कोड ॥ २ ॥ मयणा कहे दूरे तजो, ए सवि मिथ्यावाद ॥
सुख दुःख जे जग पामीए, ते सवि कर्मप्रसाद ॥ ३ ॥ बालकने बतलावतो,
हठे चढावे राय ॥ वाद करंतां बालशुं, लघुता पामे न्याय ॥ ४ ॥ कोइ
कहे ए बालिका, जुउ हठीली थाय ॥ अवसर उचित न ओलखे, रीस
चढावे राय ॥ ५ ॥

अर्थ—माटे मयणासुंदरीने तेडीने कहेवा लाग्यो के हजी तुं तारा कर्मनो फल भोगवी आप, अने मारा पसायने विषे मन आण, जेम हुं तारा मनोवांछित कोड सर्व पूर्ण करुं ॥ २ ॥ ते वारे मयणासुंदरी कहेवा लागी के हे पिताजी ! ए सर्व मिथ्यावाद छे, माटे एने तमे दूरे तजो एटले ए तमारुं बोलवुं सर्व दूर राखो, तत्त्व एज छे के जगतमां जे सुख दुःख पामीए छीए, ते कर्मनोज प्रसाद जाणजो ॥ यतः ॥ सेवितोऽपि चिरं स्वामी, विना भाग्यं न तुष्यति ॥ भानोराजन्मभक्तोऽपि, नित्यं निश्चरणोऽरुणः ॥ १ ॥ इति ॥ ३ ॥ हवे केटलाएक लोक एम कहे छे के बालकने वारंवार बतलावतो एटले कहेतो थको राजा हठे चढावे छे, बालकनी साथे वाद करतां थका न्याय लघुताने पामे छे, अथवा बालकनी साथे वाद करतां लघुता पामीए एवो न्याय छे ॥ यतः ॥ निर्दयत्वमहंकार,—स्तृष्णा कर्कशभाषणम् ॥ नीचपात्रप्रियत्वं च, पंच स्त्रीसहचारिणः ॥१॥ इति ॥ ४ ॥ वली कोइक एम पण कहे छे के आ बालिका जुउ केवी छे ? के जेम जेम एने

घटे छे एवी योग्यताने ओलखती नथी, उलटी राजाने रीस चढावे छे ॥ ५ ॥ राजा कहे छे तेम तेम वधारे हठीली थाय छे, पण आ अवसरे आमज बोलवुं उचित छे,

॥ ढाल पांचमी ॥ इडर आंबा आंबली रे, इडर दाडिम द्राख ॥ ए देशी ॥

राणो उंबर तिणे समे रे, आव्यो नयरी मांहि ॥ सडित करण सूपड
जिस्यो रे, छत्र धरे शिर छांहि ॥ चतुर नर ॥ कर्म तणी गति जोय ॥
कर्मे सुख दुःख होय ॥ चतुर० ॥ कर्म न छूटे कोय ॥ च० ॥ कर्म० ॥ ए
आंकणी ॥ १ ॥ श्वेतांगुलि चामर धरे रे, अविगत नास खवास ॥ घोर
नाद घोघर स्वरे रे, अरज करे अरदास ॥ च० ॥ कर्म० ॥ २ ॥

अर्थ–एवा अवसरने विषे उंबर जे कोढीयाओनो राणो ते पण नगरी मांहे आव्यो. ते केवो छे ? तो के जेनो (करण के०) कान ते (सडित के०) सडीने सूपडा जेवो मोटो थइ गयो छे एवो पुरुष ते उंबर राणाना मस्तक उपर छांयडो करवाने अर्थे छत्र धरी रह्यो छे, माटे हे चतुर पुरुषो ! तमे कर्मनी गति तो जुओ, आ संसारमां कर्मे करीनेज जीवने सुख दुःख थाय छे, पण कर्मथी कोइ छूटी शकतो नथी ॥ यतः ॥ भगति करिय वडानी सेव कीजे जी कांइ, अधिक फल न आपे कर्मथी तेति कांइ ॥ जलधि तरिय लंका सीत संदेश लावे, हनुमत करमें ते राम कछोट पावे ॥ १ ॥ इति ॥ १ ॥ तथा धोला कोढना रोगे करीने श्वेत एटले सफेद थइ गयेली छे अंगुलीओ जेमनी तेने श्वेतांगुलि कहीए एवो पुरुष चामरधारक थको चामर धरी रह्यो छे, एटले चामर वींजे छे, तथा जेनी रोगे करीने (खवास के०) खवाइ (अविगत के०) गयेली जे (नास के०) नासिका, तेथी (घोर के०) भयंकर छे (नाद के०) शब्द जेनो एवो पुरुष घोघरे स्वरे करी छडीदार थको आगल नेकी पोकारे छे, आगल ऊभो थको अरज करवाने अरदास करे छे.

रोगनां अवगत एटले माठां गातेना सुखनो वास छे एवो अर्थ करलो छे ॥ २ ॥
केटलेक ठेकाणे अवगत एटले माठां गातेना सुखनो वास छे एवो अर्थ करेलो छे ॥ २ ॥

वेसर असवारी करी रे, रोगी सवि परिवार ॥ बले बावलीये परिवर्यो रे,
जिस्यो दग्ध सहकार ॥ च० ॥ कर्म० ॥ ३ ॥ केइ टुंटा केइ पांगला रे,
केइ खोरुा केइ खीण ॥ केइ खसिया केइ खासिया रे, केइ दद्दुर केइ
दीण (हीण) ॥ च० ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ एक मुखे माखी बणबणे रे,
एक मुख पडती लाल ॥ एक तणे चांदां चगे रे, एक शिर नाठा वाल
॥ च० ॥ कर्म० ॥ ५ ॥

अर्थ—जेणे वेसर एटले खच्चर तेनी उपर असवारी करी छे तथा जेनो परिवार सर्व रोगी छे एवो उंबर राणो कोढीयाना परिवारे परिवर्यो थको केवो शोभे छे ? तो के जेम (बले बावलीये के०) वन मांहे घणां बावलनां वृक्षो होय ते सर्व बलीने ठुंठां थइ गयां होय, तेवां घणां बावलनां वृक्षोए करी परिवर्यो एटले वींट्यो थको (दग्ध के०) बलेलो एवो सहकार एटले आंबानुं वृक्ष जेवुं शोभे, तेवो उंबर राणो कोढीयाने परिवारे परिवर्यो थको शोभे छे ॥ ३ ॥ ते उंबरनो परिवार केवो छे ? ते कहे छे. केटलाएक ठुंठा छे, केटलाएक पांगला छे, केटलाएक खोरुा छे, केटलाएक क्षीण थइ गया छे, केटलाएक खसिया एटले अंग उपर खस थयेली छे एवा छे, माटे खाजीयारा छे, केटलाएकने खांसी थयेली छे, केटलाएकने दद्दुर एटले दादर थइ छे अने केटलाएक तो रोगने प्रभावे करी (दीण के०) रांक जेवा थइ गयेला छे ॥ पाठांतरे (हीण के०) रोगे करीने हीण शरीरवाला थइ गया छे ॥ ४ ॥ एकना मुख उपर तो माखीउं बणबणाट करी रही छे, एकना मुखमांथी लाल पडे छे, एकना शरीर उपर चांदां एटले चाठां चगचगी रह्यां छे अने एकना शिर उपरना वाल जे मोवाला ते पण रोगना प्रभावे नासी गया छे ॥ ५ ॥

राजा कहे ठे तेम तेम वधारे हठीली थाय ठे, पण आ अवसरे आमज बोलवुं उचित ठे, घटे ठे एवी योग्यताने उंलखती नथी, उलटी राजाने रीस चढावे ठे ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ इडर आंबा आंबली रे, इडर दाडिम डाख ॥ ए देशी ॥

राणो उंबर तिणे समे रे, आव्यो नयरी मांहि ॥ सटित करण सूपड जिस्यो रे, ठत्र करे शिर ठांहि ॥ चतुर नर ॥ कर्म तणी गति जोय ॥ कर्मे सुख दुःख होय ॥ चतुर० ॥ कर्मे न बूटे कोय ॥ च० ॥ कर्म० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ श्वेतांगुलि चामर धरे रे, अविगत नास खवास ॥ घोर नाद घोघर स्वरे रे, अरज करे अरदास ॥ च० ॥ कर्म० ॥ २ ॥

अर्थ–एवा अवसरने विषे उंबर जे कोढीयाउनो राणो ते पण नगरी मांहे आव्यो. ते केवो ठे ? तो के जेनो (करण के०) कान ते (सटित के०) सडीने सूपडा जेवो मोटो थइ गयो ठे एवो पुरुष ते उंबर राणाना मस्तक उपर ठांयडो करवाने अर्थे ठत्र धरी रह्यो ठे, माटे हे चतुर पुरुषो ! तमे कर्मनी गति तो जुउ, आ संसारमां कर्मे करीनेज जीवने सुख दुःख थाय ठे, पण कर्मथी कोइ बूटी शकतो नथी ॥ यतः ॥ जगति करिय वडानी सेव कीजे जी कांइ, अधिक फल न आपे कर्मथी तेति कांइ ॥ जलधि तरिय लंका सीत संदेश लावे, हनुमत करमें ते राम कठोट पावे ॥ १ ॥ इति ॥ १ ॥ तथा धोला कोढना रोगे करीने श्वेत एटले सफेद थइ गयेली बे अंगुलीउ जेमनी तेने श्वेतांगुलि कहीए एवो पुरुष चामरधारक थको चामर धरी रह्यो ठे, एटले चामर वींजे ठे, तथा जेनी रोगे करीने (खवास के०) खवाइ (अविगत के०) गयेली जे (नास के०) नासिका, तेथी (घोर के०) जयंकर ठे (नाद के०) शब्द जेनो एवो पुरुष घोघरे स्वरे करी ठडीदार थको आगल नेकी पोकारे ठे, आगल उन्नो थको अरज करवाने अरदास करे ठे.

केटलेक ठेकाणे अवगत एटले माठी गतिना सुखनो वास छे एवो अर्थ करेलो छे ॥ २ ॥
केटलेक ठेकाणे अवगत एटले माठी गतिना सुखनो वास छे एवो अर्थ करेलो छे ॥ २ ॥

वेसर असवारी करी रे, रोगी सवि परिवार ॥ बले बावलीये परिवर्यो रे,
जिस्यो दग्ध सहकार ॥ च० ॥ कर्म० ॥ ३ ॥ केइ टुंटा केइ पांगला रे,
केइ खोरुा केइ खीण ॥ केइ खसिया केइ खासिया रे, केइ दद्दुर केइ
दीण (हीण) ॥ च० ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ एक मुखे माखी बणबणे रे,
एक मुख पडती लाल ॥ एक तणे चांदां चगे रे, एक शिर नाठा वाल
॥ च० ॥ कर्म० ॥ ५ ॥

अर्थ—जेणे वेसर एटले खच्चर तेनी उपर असवारी करी छे तथा जेनो परिवार सर्व रोगी छे एवो उंबर राणो कोढीयाना परिवारे परिवर्यो थको केवो शोभे छे ? तो के जेम (बले बावलीये के०) वन मांहे घणां बावलनां वृक्षो होय ते सर्व बलीने ठुंठां थइ गयां होय, तेवां घणां बावलनां वृक्षोए करी परिवर्यो एटले वींट्यो थको (दग्ध के०) बलेलो एवो सहकार एटले आंबानुं वृक्ष जेवुं शोभे, तेवो उंबर राणो कोढीयाने परिवारे परिवर्यो थको शोभे छे ॥ ३ ॥ ते उंबरनो परिवार केवो छे ? ते कहे छे. केटलाएक ठुंठा छे, केटलाएक पांगला छे, केटलाएक खोरुा छे, केटलाएक क्षीण थइ गया छे, केटलाएक खसिया एटले अंग उपर खस थयेली छे एवा छे, माटे खाजीयारा छे, केटलाएकने खांसी थयेली छे, केटलाएकने दद्दुर एटले दादर थइ छे अने केटलाएक तो रोगने प्रभावे करी (दीण के०) रांक जेवा थइ गयेला छे ॥ पाठांतरे (हीण के०) रोगे करीने हीण शरीरवाला थइ गया छे ॥ ४ ॥ एकना मुख उपर तो माखीउं बणबणाट करी रही छे, एकना मुखमांथी लाल पडे छे, एकना शरीर उपर चांदां एटले चाठां चगचगी रह्यां छे अने एकना शिर उपरना वाल जे मोवाला ते पण रोगना प्रभावे नासी गया छे ॥ ५ ॥

चहुटा मांहे चालतां रे, सोर करे सय सात ॥ लोक लाख जोवा मल्यां रे, एह किस्यो उतपात ॥ च० ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ ढोर धसे कूतर भसे रे, धिक धिक कहे मुख वाच ॥ जन पूछे तुमे कोण छो रे, भूत के प्रेत पिशाच ॥ च० ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ कहे रोगी तुम रायनी रे, पुत्री रूपनिधान ॥ ते अम राणो परणशे रे,एह जाये तस जान ॥ च० ॥ कर्म०॥८॥ नगरलोक साथे थयां रे, कौतुक जोवा काज ॥ उंबर राणो आवीयो रे, जिहां बेठा महाराज ॥च०॥ कर्म० ॥९॥ मयणाने भूपति कहे रे, ए आव्यो तुम नाह ॥ सुख संपूरण अनुभवो रे, कर्मे कस्यो विवाह ॥ च० ॥ कर्म० ॥ १० ॥

अर्थ—एवा (सय सात के०) सातसें जण कोढीया ते चौटा मांहे चालतां थका सोर बकोर करे छे. तेने लाखोगमे लोक जोवा मल्यां छे, एकठां थयां छे, ते जोवावालां कहे छे के आ ते श्यो उत्पात छे ? ॥ ६ ॥ ढोर धसे छे एटले सामां शिंगडां मांडे छे, अने कुतरां भसवा लाग्यां छे, तथा धिक्कार छे, धिक्कार छे, एवी मुख थकी वाणी कहेतां थका लोक तेमने पूछे छे के तमे ते कोण छो ? भूत छो ? के प्रेत छो ? के पिशाच छो ? ते अमने कहो ॥७॥ तेने रोगीया उत्तर आपे छे जे तमारा राजानी पुत्री जे रूपनुं निधान छे, खजानो छे, तेने अमारो राणो परणशे, तेनी आ जान जाय छे ॥ ८ ॥ ते सांभली नगरनां लोक पण कौतुक जोवा माटे तेमनी साथे थयां. एम करतां उंबर राणो पण जिहां प्रजापाल राजा बेठो छे, तिहां आव्यो ॥ ९ ॥ ते वारे मयणासुंदरीने राजा कहे छे के ए तमारो (नाह के०) नाथ आव्यो. हवे एनी साथे संपूर्ण सुखनो अनुभव करो. तमारे कर्मे विवाह कस्यो छे, माटे कर्मनो पसाय जोइ ल्यो ॥ १० ॥

मयणा मुख नवि पालटे रे, अंश न आणे खेद ॥ ज्ञानीनुं दीठुं हुवे रे, तिहां नहीं किस्यो विभेद ॥ च० ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ जेह पिताए पांचनी रे, साखे दीधो कंत ॥ देव परे आराधवो रे, उत्तम मन ए खंत ॥ च० ॥ कर्म० ॥ १२ ॥ करी प्रमाण निज तातनुं रे, वयण विमल मुख रंग ॥ आवीने ऊभी रही रे, उंबरने वामंग ॥ च० ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ तव उंबर एणी परे भणे रे, अनुचित ए भूपाल ॥ न घटे कंठे कागने रे, मुक्ताफलनी माल ॥ च० ॥ कर्म० ॥ १४ ॥

अर्थ—एवां पितानां वचन सांभलीने मयणाना मुखनो रंग कांइ पण पलटाणो नहीं, तथा अंश मात्र लगार मात्र खेद पण मनमां आणती नथी, अने विचारे छे जे ज्ञानीए दीठुं छे तेज (हुवे के०) थाय छे, बने छे, तेमां कांइ पण भेद नथी ॥११॥ जे पिताए पांचनी साखे भर्त्तार आप्यो ते राजानो जायो होय, किंवा रंकनो जायो होय तोपण तेने देवनी परे आराधवो. उत्तम कुलनी स्त्रीना मनमां एज खंत होय छे ॥ यतः ॥ संतो न यांति वैवर्ण्यं,—मापत्सु पतिता अपि ॥ दग्धोऽपि वह्निना शंखः, शुभ्रत्वं नैव मुंचति ॥ १ ॥ १२ ॥ एम विचारी मयणासुंदरी पोताना पितानुं वयण जे वचन, ते प्रमाण करीने पोताना मुखनो रंग ते शरद् पूनमना चंद्रनी पेरे (विमल के०) उज्ज्वल निर्मल छे एवी थकी पोते शास्त्रने बले जे वखते शुभ लग्ननी वेला जाणवामां आवी, ते वखते उंबर राणाना वामंग एटले डाबी बाजुए आवीने ऊभी रही, अने पोतेज पोताने हाथे हाथमेलावो कर्यो ॥ १३ ॥ ते वारे उंबर राणो आवी रीते कहे छे के हे भूपाल! हे राजन्! आ वात उचित नथी एटले अनुचित छे, केमके कागडाने कंठे कांइ मुक्ताफल जे मोती तेनी माला शोभे नहीं, तो आ कन्यारूप रत्ननी माला ते हुं जेवा वायसने गले शोभे नहीं. हुं एक तो पूर्वलुं कीधुं कर्म

आ कोढ रोगनी पीडा पामीने भोगवुं छुं. वली आ तमारी पुत्रीनो जन्म रुबावीने कर्म बांधुं नहीं, माटे मने मारा रूप जेवी कोइ दासी प्रमुखनी कन्या होय तो ते परणावी आपो, नहीं कां कल्याण छे, अमे जता रहीशुं. तेमज एक तरफ कन्यानो मामो अश्रुपात करतो समजावे छे, एक तरफ एनी माता रूपसुंदरी अश्रुपात करती समजावे छे, एक तरफ कुटुंब परिवारनां लोक सर्व मली समजावे छे, रोवे छे, खेद करे छे, एक बीजाने कहे छे के आ पुत्रीनो संबंध जुउ, केवो अयोग्य थयो छे ! ! ! तोपण राजा पोताना क्रोधथी चल्यो नहीं. घणुंज कठण मन करी बेठो छे. तेमज मयणा पण तत्त्वनी जाणनारी छे, माटे धैर्य मूकती नथी ॥ १४ ॥

राय कहे कन्या तणे रे, कर्मे ए बल कीध ॥ घणुं कह्युं में एहने रे, दोष
न को में लीध ॥ च० ॥ कर्म० ॥ १५ ॥ रोगी रलियायत थया रे, देखी कन्या
पास ॥ परमेसर पूरण करी रे, आज अमारी आश ॥ च० ॥ कर्म० ॥ १६ ॥
सुगुण रास श्रीपालनो रे, तिहां ए (तेहनी) पांचमी ढाल ॥ विनय
कहे श्रोताघरे रे, होजो मंगलमाल ॥ च० ॥ कर्म० ॥ १७ ॥

अर्थ–ते सांभली राजा कहेवा लाग्यो के हे उंबर ! आ कन्याना कर्मे ए बल कर्युं छे, में तो एने घणुंए कह्युं, पण ए कांइ मारुं कह्युं माने छे ? ए तो निश्चय पोताना कर्मनेज माने छे, माटे में कोइ वातनो दोष मारे माथे लीधो नथी ॥ १५ ॥ उंबरनी पासे कन्याने देखीने रोगी पुरुष सर्व रलियायत थया एटले खुशी थया अने विचारवा लाग्या जे परमेश्वरे आज अमारी आशा पूर्ण करी ॥ १६ ॥ रुडा गुणे करी शोभित एवो श्रीपालनो रास तिहां ए पांचमी ढाल थइ. विनयविजयजी कहे छे के श्रोताने घेर मांगलिकनी माला होजो ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कोइ कहे धिक रायनो, एवडो रोष अगाध ॥ कोइ कहे कन्या तणो, ए
सघलो अपराध ॥ १ ॥ उतारे आव्या सहु, सुणतां इम जन वात ॥
अनुचित देखी आथम्यो, रवि प्रगटी तव रात ॥ २ ॥ यथाशक्ति उत्सव
करी, परणावी ते नार ॥ मयणा ने उंबर मली, बेठां भवन मझार ॥ ३ ॥

अर्थ—हवे एवुं कृत्य जोइने कोइक तो कहे छे के पोताना फरजंद उपर एटलो अगाध रोष राखे छे माटे ए राजाना रोषने धिक्कार छे, वली कोइक तो एवुं कहे छे के ए सर्व अपराध कन्यानोज छे ॥ यतः ॥ उत्तमस्य क्षणं क्रोधो, द्वियामं मध्यमस्य तु ॥ अधमस्य त्वहोरात्रं, चिरक्रोधोऽधमाधमः ॥ १ ॥ १ ॥ एम (जन० के०) लोकोना मुखथी वातो सांभलतां थका सर्व पोताने उतारे एटले स्थानके आव्या. ते वखते (रवि के०) सूर्य पण ए अनुचित एटले अणघटतुं कार्य थयुं देखीने (आथम्यो के०) अस्त पाम्यो, ते वारे रात्रि प्रगट थइ ॥ २ ॥ राजाए हर्ष विना ते कन्या कोढीयाउने भलावी, अने कोढीयाउए पण यथाशक्तिए उत्सव करीने ते कन्या पोताना उंबर राजाने परणावी दीधी. पछी मयणा अने उंबर ए बेहु स्त्री भर्त्तार मलीने उतारानुं भवन जे घर, तेमां जइ बेठां ॥ ३ ॥

॥ ढाल छठी ॥ कोइलो पर्वत धुंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

उंबर मनमां चिंतवे रे लो, धिक धिक मुज अवतार रे ॥ छबीली ॥
मुज संगतथी विणसशे रे लो, एहवी अद्भुत नार रे ॥ रंगीली ॥ १ ॥

अर्थ—हवे उंबर राणो पोताना मनमां चिंतवे छे के धिक्कार छे, धिक्कार छे, मारा अवतारने ! आ

छबीली सुंदर अद्भुत रूपवाली रंगीली एवी स्त्री जे छे ते मारी संगतिथी विणसशे एटले विनाश पामशे, एनुं शरीर बगडशे ॥ १ ॥

सुंदरी हजीय विमासजो रे लो, ऊंडो करी आलोच रे ॥ छ० ॥ काज
विचारी कीजीए रे लो, जेम न पडे फरी शोच रे ॥ रंगी० ॥ सुं० ॥ २ ॥
मुज संगे तुज विणसशे रे लो, सोवन सरखी देह रे ॥ छ० ॥ तुं रूपे रंभा
जिसी रे लो, कोढीशुं श्यो नेह रे ॥ रंगी० ॥ सुं० ॥ ३ ॥ लाज इहां मन
नाणीए रे लो, लाजे विणसे काज रे ॥ छ० ॥ निज माता चरणे जइ रे
लो, सुंदर वर कर राज रे ॥ रंगी० ॥ सुं० ॥ ४ ॥

अर्थ–एम पोताना मनमां चिंतवीने सुंदरीने कहेवा लाग्यो जे तमे ऊंडो आलोच एटले विचार करीने विमासी जुओ, केमके जे कांइ काम करवुं ते विचारीने करवुं,जेम फरीने ते काम मांहे कांइ शोच करवो पडे नहीं, तेवी रीते करवुं ॥२॥ तारी सोना सरखी देह छे, ते मारी संगति थकी विनाश पामशे. तुं तो रूपे करीने रंभा जेवी छो, माटे तारे मारा जेवा कोढीयानी साथे श्यो स्नेह करवो ? यतः ॥ कुसंगात्संगदोषेण, परं वैराग्यकारणं ॥ एकरात्रिप्रसंगेन, काष्ठघंटाविटंबना ॥ १ ॥ ३ ॥ माटे आ ठेकाणे मनमां लाज आणवी नहीं. जो लाज करीए तो तेथी पोतानुं कार्य बगडे छे, अने तारे तो तारा पितानी साथे बिगाड थयेलो छे; तो हवे तुं तारी माताने चरणे जइने जे सुंदर रूपवंत राजा होय, तेने (वर के०) भर्त्तार कर ॥ यतः ॥ गीते नृत्ये पठे वादे, संग्रामे वैरिघातने ॥ आहारे व्यवहारे च, लज्जामष्टसु वर्जयेत् ॥ १ ॥ ४ ॥

मयणा तस वयणां सुणी रे लो, हियडे दुःख न माय रे ॥ वालेसर ॥
ढलक ढलक आंसु पडे रे लो, विनवे प्रणमी पाय रे ॥ वालेसर ॥ वचन
विचारी उच्चरो रे लो, तुमे गे चतुर सुजाण रे ॥ वाले० ॥ वचन० ॥५॥ एह
वचन केम बोलीए रे लो, एणे वचने जीव जाय रे ॥ वाले० ॥ जीवजीवन
तुमे वालहा रे लो, अवर न नाम खमाय रे ॥ वाले० ॥ वचन० ॥ ६ ॥
पछिम रवि नवि उगमे रे लो, जलधि न लोपे सीम रे ॥ वाले० ॥ सती
अवर इछे नहीं रे लो, जां जीवे तां सीम रे ॥ वाले० ॥ वचन० ॥ ७ ॥

अर्थ—एवां उंबर राणानां वचन सांजलीने मयणासुंदरीना हैयाने विषे दुःख समातुं नथी, ते वारे आंखमांथी ढलक ढलक आंसु पडते थके उंबर राजाने पगे लागीने ए रीते विनंति करे छे जे हे वालेसर ! तमे चतुर गे, सुजाण गे, माटे जे वचन (उच्चरो के०) बोलो ते विचारीने बोलो. जे वचन थकी मारो जीव दुःखित न थाय एवुं वचन बोलो तो सारुं ॥ ५ ॥ हे स्वामिन् ! एवां वचन मुखमांथी केम बोलो गे ? ए वचनथी तो माणसनो जीव जाय. हे जीवना जीवन ! मारे तो तमेज वाल्हा गे, परंतु (अवर के०) बीजा पुरुषनुं तो माराथी नाम पण खमाय नहीं ॥ यतः ॥ कमलिनी जलमां वसे, चंदो वसे आकाश ॥ जे जिहांरे मन वसे, ते तिहांरे पास ॥ १ ॥ तथा ॥ गतियुगमथ चाप्नोत्यत्र पुष्पं वरिष्टं, त्रिनयनतनुपूजां, वाऽथ वा जूमिपातम् ॥ विमलकुलजवानामंगनानां शरीरं, पतिकरकमलं वा, सेवते सप्तजिह्वम् ॥ २ ॥ प्रमाणं यो न जानाति, जोजने वचनेषु च ॥ अतिजोक्ता चातिवक्ता, प्राणी स प्राणघातकः ॥ ३ ॥ इति ॥ ६ ॥ जेम रवि जे सूर्य छे, ते कोइ वारे पण पश्चिम दिशाए उगे नहीं, तथा जलधि जे समुद्र छे, ते पोतानी सीम एटले मर्यादा लोपे नहीं, तेम जे सती छे ते पण जिहां लगे आ शरीरमां

जीवती रहे, तिहां लगे पंचनी साखे परणेला जर्त्तार विना (अवर के०) बीजा पुरुषने इछे नहीं ॥ दोहा ॥ जिहां जीवे जीउं अप्पणा, तिहां जीवे सब कोय ॥ दीवे तेल घटी गयुं, तव अंधियारा होय ॥ १ ॥ इति ॥ ७ ॥

उदयाचल उपर चढ्यो रे लो, मानुं रवि परजात रे ॥ वाले० ॥ मयणा-
मुख जोवा जणी रे लो, शील अचल अवदात रे ॥ वाले० ॥ वचन०
॥ ८ ॥ चक्रवाक दुःख चूरतो रे लो, करतो कमल विकास रे ॥ वाले० ॥
जगलोचन जब उगीयो रे लो, पसस्यो पुहवी प्रकाश रे ॥ वाले० ॥
वचन० ॥ए॥ आवो देव जुहारीए रे लो, रुषजदेव प्रासाद रे ॥ वाले० ॥
आदीसरमुख देखतां रे लो, नासे दुःख विषवाद रे ॥ वाले० ॥ वचन० ॥ १० ॥

अर्थ–एम स्त्री जर्त्तारने पोतपोतामां वातो करतां रात्रि वीती गइ, अने प्रजातनो (रवि के०) सूर्य ते उदयाचल पर्वतनी उपर चढी आव्यो. इहां कवीश्वर उत्प्रेक्षा करे बे के सूर्य जे उदयाचल उपर चढ्यो, ते हुं एम मानुं बुं के जेना चलायमान न थाय एवा अचल शीलनां (अवदात के०) वखाण बे एवी जे मयणासुंदरी, तेनुं मुखरूप जोवाने अर्थेज जाणे चढ्यो होय नहीं? ॥ ८ ॥ (चक्रवाक के०) चकवा चकवीना विरहदुःखने चूरतो अने सूर्यविकासी कमलने विकस्वर करतो एवो जगतना लोचन सरखो सूर्य जे वारे उग्यो ते वारे पृथ्वीने विषे (प्रकाश के०) अजवालुं सर्वत्र पसर्युं ॥ ए ॥ त्यारे मयणासुंदरी उंबर राणाने कहेवा लागी के हे स्वामिन् ! तमे मारी साथे (आवो के०) चालो तो आपणे श्रीरुषजदेवजीना प्रासादने विषे जइने देव जुहारीए. त्यां श्रीआदीश्वर जगवाननुं मुख देखतां थकाज दुःख अने विषवाद सर्व नाश पामे ॥ यतः ॥ धर्मारंजे रुणछेदे, कन्यादाने धनागमे ॥ शत्रुघाताग्निरोगे च, कालक्षेपं न कारयेत् ॥ १ ॥ इति ॥ १० ॥

मयणावयणे आवीयो रे लो, उंबर जिनप्रासाद रे ॥ जिणेसर ॥ आदी-
श्वर अवलोकतां रे लो, उपनो मन आह्लाद रे ॥ जिणेसर ॥ तिहुअण-
नायक तुं वडो रे लो, तुम सम अवर न कोय रे ॥ जिणेसर ॥ तिहु० ॥
११ ॥ मयणाए जिन पूजीया रे लो, केसर चंदन (कुसुम) कपूर
रे ॥ जिणे० ॥ लाखीणो कंठे ठव्यो रे लो, टोडर परिमल पूर रे ॥
जिणे० ॥ तिहु० ॥ १२ ॥ चैत्यवंदन करी भावना रे लो, भावे करी
काउस्सग्ग रे ॥ जिणे० ॥ जय जय जगचिंतामणि रे लो, दायक शिव-
पुर मग्ग रे ॥ जिणे० ॥ तिहु० ॥ १३ ॥ इह भव परभव तुज विना रे
लो, अवर न को आधार रे ॥ जिणे० ॥ दुःख दोहग दूरे करो रे लो,
अम सेवक साधार रे ॥ जिणे० ॥ तिहु० ॥ १४ ॥

अर्थ–एवां मयणासुंदरीनां वचने करी उंबर राणो श्रीजिनराजना प्रासादने विषे आव्यो. तिहां जिन जे सामान्य केवलीना ईश्वर, श्रीआदीश्वर भगवान् तेने अवलोकतां एटले जोतां थका मनने विषे (आह्लाद के०) हर्ष उपन्यो तेथी कहेवा लाग्यो के हे जिनेश्वर! हे (तिहुअण-नायक के०) त्रण भुवनना नायक ! तुं मोटो छो, तारा सरखो बीजो कोइ देव नथी ॥ ११ ॥ केसर, चंदन अने कपूरे करी मयणाए जिनेश्वरने पूज्या, अने परिमल जे सुगंध तेना पूरे करी सहित एवो लाखीणो एटले लाख फूलनो (टोडर के०) हार प्रभुने कंठे ठव्यो एटले स्थाप्यो ॥१२॥ ते वार पछी चैत्यवंदन करी, भावना भावीने, भावे करी काउस्सग्ग कर्यो, तेमां एम चिंतव्युं जे जय जय हे स्वामिन् ! तमे जगतमां चिंतामणि रत्न समान छो. वली मोक्षमार्गना दायक एटले देवावाला

छो ॥१३॥ आ जव तथा परजवने विषे तुज विना बीजो कोइ आधार नथी, माटे अम सेवकने आधार सहित थइने अमारां डुःख दौर्जाग्य दूरे करो ॥ १४ ॥

कुसुममाल निज कंठथी रे लो, हाथ तणुं फल दीध रे ॥ जिण० ॥
प्रजुपसाय सहु देखतां रे लो, उंबरे ए बेहु लीध रे ॥ जिण० ॥ तिहु०
॥१५॥मयणा काउस्सग्ग पारीयो रे लो, हियडे हर्ष न माय रे॥ जिण०॥
ए सही शासनदेवता रे लो, कीधो अम्ह सुपसाय रे ॥ जिण० ॥ तिहु०
॥ १६ ॥ सुगुण रास श्रीपालनो रे लो, तिहां ए छठी ढाल रे ॥ जिण० ॥
विनय कहे श्रोताघरे रे लो, होजो मंगलमाल रे ॥ जिण० ॥ तिहु०॥१७॥

अर्थ–ते वारे प्रजुना कंठ थकी फूलनी माला तथा प्रजुना हाथ तणुं फल एटले प्रजुना हाथ मांहे रहेलुं जे बीजोरुं फल ए बे वस्तु, ते शासनदेवताए परमेश्वरना पसायथी सर्व लोकने देखतां उंबर राजाने दीधी, एटले बे वस्तु उंबर राजाना हाथ नजीक आवी, तेने उंबरे लीधी. इहां प्रजुनो पसाय जे कह्यो छे, ते उपचारथी कह्यो छे ॥ १५ ॥ मयणाए पण काउस्सग्ग पार्या, तेना हैयामां हर्ष समातो नथी, अने मनमां एम चिंतवे छे जे ए निश्चयथी शासनदेवताए अमने रुडो पसाय कर्यो ॥ १६ ॥ रुडा गुणे करी सहित एवो ए श्रीपालनो रास, तेने विषे ए छठी ढाल पूर्ण थइ. इहां श्रीविनयविजयजी उपाध्यायजी कहे छे के श्रोता जनोना घरने विषे मांगलिकनी माला होजो ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

पासे पोसहशालमां, बेठा गुरु गुणवंत ॥
कहे मयणा दीये देशना, आवो सुणीए कंत ॥ १ ॥

अर्थ—हवे मयणा कहे छे के देरासरनी पासे पोसहशालामां गुणवंत गुरु बेठा छे, ते देशना आपे छे, माटे हे (कंत के०) भर्त्तार! तिहां मारी साथे आवो तो आपणे धर्मोपदेश सांभलीए ॥१॥

नर नारी बेहु जणां, आव्यां गुरुने पाय ॥ विधिपूर्वक वंदन करी, बेठां बेसणठाय ॥ २ ॥ धर्मलाभ देइ धुरे, आणी धर्मसनेह ॥ योग जीव जाणी हवे, धर्म कहे गुरु तेह ॥ ३ ॥

अर्थ—पछी स्त्री अने भर्त्तार ए बेहु जण गुरुना पग आगल आवी, विधिपूर्वक वंदन करीने बेसवाने स्थानके जइ बेठां ॥ २ ॥ गुरुए पण तेमने प्रथम धर्मलाभ देइ धर्मस्नेह लावी, योग्य जीव जाणी हवे धर्मोपदेश कहेवा मांड्यो ॥ ३ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ वात म काढो हो व्रत तणी ॥ ए देशी ॥

भमतां एह संसारमां, दुलहो नरभव लाधो रे ॥ छांडी निंद प्रमादनी, आप सवारथ साधो रे ॥ चेतन चेतो रे चेतना, आणी चित्त मझार रे ॥१॥

अर्थ—हे भव्यप्राणीओ ! आ पारावार संसारमां चोराशी लाख जीवने उपजवानी योनिओ छे, तेने विषे भमतां थकां दोहेलो मनुष्यनो भव पामीने निद्रा तथा प्रमाद जे आलस अथवा प्रमादनी माता जे निद्रा, तेने छांडी धर्ममार्ग आदरीने पोतानो स्वार्थ साधो; कारण के मनुष्यभव सिवाय वली अन्य तिर्यंचादिकना भवमां धर्मसामग्री मलवी तमोने दुर्लभ थशे; माटे प्राप्त थयेला मनुष्यभवने व्यर्थ न गुमावो, ए वात तमारा चित्तने विषे लावीने चेतननी चेतनाने चेतो, अथवा हे चेतन! तमे तमारी चेतनाने चेतो. इहां "मद्य विसय कसाया" ए गाथा कहेवी ॥ तथा ॥ निद्रा प्रमादः परमं द्वेषी, प्रमादः परमं विषं ॥ प्रमादो मुक्तिदस्युश्च, प्रमादो नरकायनम् ॥ १ ॥

मूलमनर्थानां, निद्रा श्रेयोविघातिनी ॥ निद्रा प्रमादजननी, निद्रा संसारवर्द्धिनी ॥ २ ॥ १ ॥

सामग्री सवि धर्मनी, आले जे नर खोइ रे ॥ माखीनी परे हाथ ते, घसतां आप विगोइ रे ॥ चेतन० ॥ २ ॥ जान लइ बहु युक्तिशुं, जेम कोइ परणवा जाय रे ॥ लगनवेला गइ उंघमां, पछे घणुं पछताय रे ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ एणी पेरे देइ देशना, करे भविक उपगार रे ॥ गुरु मयणाने उलखी, बोलावे तेणी वार रे ॥ चेतन० ॥ ४ ॥

अर्थ–जे (नर के०) मनुष्य धर्मनी सर्व सामग्री पामीने (आले के०) मिथ्या फोगट खोइ नाखे छे ते प्राणी मधपुडानी माखीनी पेरे हाथ घसतो पोताने विगोवे छे, एटले छेवट पश्चात्ताप करे छे ॥ यतः ॥ पप्पासूं परचो नहीं, दद्दो रहियो दूर ॥ लल्लासूं लागी रह्यो, नन्नो रह्यो हजूर ॥ १ ॥ हाथ घसे मुंइ आहणे, जीभे तालुं दीध ॥ मरणवेलाए सांभरे, हा ! में धर्म न कीध ॥ २ ॥ पांचे भूलो चारे चूको, त्रिहुं न जाण्युं नाम ॥ जग ढंढेरो फेरव्यो, श्रावक महारुं नाम ॥ ३ ॥ २ ॥ तेनी उपर दृष्टांत कहे छे. जेम कोइक पुरुष घणी मोटी युक्तिथी जान लइने परणवा माटे जाय, तिहां जे वारे लग्ननी वेला आवे, ते वारे तेने उंघ आवी जाय, तेथी तेनी लग्नवेला तो उंघमां जती रही, पछी जे वखत जाग्रत थाय, ते वखत घणोज पश्चात्ताप करे. तेम जे प्राणी मनुष्यभवरूप सामग्री पामीने प्रमादमां पड्यो थको धर्मकरणी नहीं करे तो पछी तेने पश्चात्ताप करवो पडे ॥ ३ ॥ ए रीते गुरुए धर्मदेशना आपी भव्यजीवोनो उपकार कर्यो, अने देशना समाप्त थया पछी जे वारे गुरुए मयणाने उलखी, ते वारे तेणीने बोलावता हवा ॥ यतः ॥ जलदो भास्करो वृक्ष,–श्चंद्रमा धर्मदेशकः ॥ एतेषामुपकाराणां, नास्ति सीमा महीतले ॥ १ ॥ ४ ॥

रे ! कुमरी तुं रायनी, साथे सबल परिवार रे ॥ अम उपासरे आवती, पूछण अर्थ विचार रे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ आज किस्युं इम एकली, ए कुण पुरुषरतन्न रे ॥ धुरथी वात सवे कहे, मयणा स्थिर करी मन्न रे ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ मन मांहे नथी आवतुं, अवर किस्युं दुःख पूज्य रे ॥ पण जिन-शासन हेलना, साले लोक अबुज रे ॥ चेतन० ॥ ७ ॥ गुरु कहे दुःख न आणजो, ऊंबुं अंश न भावे रे ॥ चिंतामणि तुज कर चढ्यो, धर्म तणे परभावे रे ॥ चेतन० ॥ ८ ॥

अर्थ—रे इति संबोधने एटले रे एवा संबोधने बोलावे छे के तुं तो राजानी कुमारिका छो, माटे घणा परिवारे परवरी थकी अमारे उपाश्रये सूत्रनो अर्थ विचार पूछवा सारु आवती हती ॥ ५ ॥ ते आजे तुं एम एकलीज केम आवी ? अने आ उत्तम लक्षणे लक्षित, पुण्यवंत, रत्न समान पुरुष तारी साथे कोण छे ? एवुं गुरुनुं बोलवुं सांभलीने मयणासुंदरीए पोतानुं मन स्थिर करीने जे वात बनी हती, ते सर्व धुरथी एटले प्रथमथी मांडीने गुरुने कही ॥ ६ ॥ हे पूज्य ! हे प्रभु ! मारा मनमां (अवर के०) बीजुं तो (किस्युं के०) कांइ पण लगार मात्र पण दुःख आवतुं नथी; पण अबुज जे मिथ्यादृष्टि मूर्ख लोक छे, ते जिनशासननी हेलना एटले निंदा करे छे, अने शिवधर्मनी प्रशंसा करे छे, ते दुःख मारा हृदयमां साले छे, एटले साल जेवुं खुंची रह्युं छे ॥ यतः ॥ एयं चिय महदुक्खं, जं मिछादिठ्ठिणो इमे लोआ ॥ निंदंति जिणह धम्मं, सिवधम्मं चेव संसंति ॥ १ ॥ इति ॥ ७ ॥ ते सांभली गुरु कहे छे के तमे कोइ वातनुं दुःख लावशो नहीं, भावे करी एक अंश मात्र पण ऊंबुं लावशो नहीं, एटले कोइ वाते अभाव लावशो नहीं, धर्मने प्रभावे आ चिंतामणि रत्न सरिखो पुरुष तारा (कर के०) हाथे चढ्यो छे ॥ ८ ॥

वरू वखती वर एह छे, होशे रायां राय रे ॥ शासन सोह वधारशे, जग नमशे जस पाय रे ॥ चेतन० ॥ ए ॥ मयणा गुरुने विनवे, देइ आगम उपयोग रे ॥ करी उपाय निवारीए, तुम श्रावक तनुरोग रे ॥ चेतन० ॥ १० ॥ सूरि कहे ए साधुनो, उत्तम नहीं आचार रे ॥ यंत्र जडी मणि मंत्र जे, उंसड ने उपचार रे ॥ चेतन० ॥ ११ ॥ पण ए सुपुरुष एहथी, थाशे धर्म उद्योत रे ॥ तेणे एक यंत्र प्रकाशशुं, जस जग जागती ज्योत रे ॥ चेतन० ॥ १२ ॥ श्रीमुनिचंद गुरे तिहां, आगमग्रंथ विलोइ रे ॥ माखणनी पेरे उद्धर्यो, सिद्धचक्रयंत्र जोइ रे ॥ चेतन० ॥ १३ ॥

अर्थ—ए तारो वर ते (वरू वखती के०) मोटा वखतनो धणी छे, ए राजाउनो पण राजा थशे, जैनशासननी शोन्ना वधारशे, अने जेना पगने सर्व जगत नमशे एवो थशे ॥ ए ॥ एवुं सांन्नलीने मयणा गुरुने विनंति करे छे के हे स्वामिन् ! मारा उपर प्रसाद करी (देइ आगम उपयोग के०) सिद्धांतमां उपयोग दइ कोइक उपाय करी आ श्रावकना (तनु के०) शरीरनो जे रोग छे तेनुं निवारण करो के जेथी आ मारा स्वामीनो व्याधि मटी जाय तो लोकनिंदा टले ॥ १० ॥ ते वारे सूरि जे आचार्य, ते मयणाने कहे छे के हे न्नद्रे ! यंत्र, जडी, मणि, मंत्र, औषध अने उपचार करवा, ए साधुनो उत्तम आचार नथी ॥ ११ ॥ पण ए सुपुरुष छे, एथी घणो धर्मनो उद्योत थशे, माटे जेनी जगतमां जागती ज्योति छे एटले जागतो प्रकाश छे, एवो एक यंत्र (प्रकाशशुं के०) देखाडशुं ॥ १२ ॥ एवुं कहीने श्रीमुनिचंद्र सूरिए जेम छाशने वलोवी तेमांथी माखण उद्धरी काढीए तेनी पेरे आगमग्रंथोने वलोवीने तेमांथी सिद्धचक्रनो यंत्र जोइ काढ्यो ॥ १३ ॥

अरिहंतादिक नव पदे, ॐ ह्रीं पद संयुत्त रे ॥ अवर मंत्राक्ष
नवा, लहीए गुरुगम तत्त रे ॥ चेतन० ॥ १४ ॥ सिद्धादिक पद चिहुं दिशे,
मध्ये अरिहंत देव रे ॥ दरिसण नाण चरित्त ते, तप चिहुं विदिशे सेव
रे ॥ चेतन० ॥ १५ ॥ अष्ट कमलदल इणी परे, यंत्र सकल शिरताज रे ॥
निर्मल तन मन सेवतां, सारे वांछित काज रे ॥ चेतन० ॥ १६ ॥ आशो सुदि
मांहे मांडीए, सातमथी तप एह रे ॥ नव आंबिल करी निर्मलां, आराधो
गुणगेह रे ॥ चेतन० ॥ १७ ॥ विधिपूर्वक करी धोतीयां, जिन पूजो त्रण
काल रे ॥ पूजा आठ प्रकारनी, कीजे थइ उजमाल रे ॥ चेतन० ॥ १८ ॥

अर्थ–ते केवो यंत्र ? तो के अरिहंतादिक नव पदने विषे ॐ ह्रीं ए बीज अक्षरपदे सहित तेमज (अवर के०) बीजा पण (अभिनवा के०) नवा नवा मंत्राक्षर घणा छे, तेमनुं (तत्त के०) तत्त्व ते गुरुगमथी लहीए एटले पामीए ॥ १४ ॥ एमां सिद्ध पद आदे देइने एटले सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु, ए चारे पदने चार दिशाउने विषे स्थापवां, अने मध्य भागमां श्री अरिहंत देवने स्थापन करवा तथा दरिसण, (नाण के०) ज्ञान, चारित्र अने तप, ए चार पद ते चार विदिशाउने विषे स्थापन करीने सेववां ॥ १५ ॥ ए रीते आठ पांखडीनां जे आठ दल, तद्वत् ए यंत्र ते सर्व यंत्रमां (शिरताज के०) मोटो छे, एने (निर्मल के०) शुद्ध एवां तन अने मन तेणे करी सेवतां थका सेवनारनां मनोवांछित कार्यने (सारे के०) पूर्ण करे ॥ १६ ॥ आशो सुदि मांहे सातमना दिवसथी ए तपने मांडीए एटले प्रारंभीए, तिहांथी नव दिवस पर्यंत निर्मल एवां नव आयंबिल करीने सर्व उत्तम प्रकारना गुणनुं घर एवो जे श्रीसिद्धचक्रयंत्र, तेने आराधो ॥ १७ ॥ विधिपूर्वक शुद्ध धोतीयां करी पहेरीने प्रभात, मध्याह्न अने सांज, ए त्रण

ने पूजो. तिहां उजमाल थइने अष्ट प्रकारी पूजा करीए अथवा विधिपूर्वक शब्द जोडी अर्थ करीए तो विधिपूर्वक अष्ट प्रकारी पूजा उजमाल थइने करीए ॥१८॥

भूमि संथारीए, धरीए शील जगीश रे ॥ जपीए पद एकेकनी, वीश रे ॥ चेतन० ॥ १९ ॥ आठे थोइए वांदीए, देव सदा त्रण रे ॥ पडिक्कमणां दोय कीजीए, गुरु वेयावच्च सार रे ॥ चेतन० ॥ २० ॥ या वश करी राखीए, वचन विचारी बोल रे ॥ ध्यान धर्मनुं धारीए, नसा कीजे अडोल रे ॥ चेतन० ॥ २१ ॥ पंचामृत करी एकठां, परिगल कीजे पखाल रे ॥ नवमे दिन सिद्धचक्रनी, कीजे भक्ति विशाल रे ॥ चेतन० ॥ २२ ॥

अर्थ—नव दिवस पर्यंत (निर्मल के०) चोखी जीवाकुलरहित भूमिने विषे संथारो करीए, एटले निःकेवल भूमि उपर सुइए, तथा (जगीश के०) जगतमां मोटाइने धारण करनारुं अथवा जगतमां यश अने शोभाकारक एवुं शीयलव्रत धारण करीए, अथवा (जगीश० के) मननी हौंशे करी शीयलव्रत धारण करीए, अने ए नव पद मांहेला अनुक्रमे एकेका पदनी वीश वीश नोकरवाली प्रतिदिवस जपीए एटले जाप करीए ॥ १९ ॥ वली (सदा के०) सर्वदा एटले नवे दिवस पर्यंत आठे थुइए करीने प्रभात, मध्याह्न अने सांज, ए त्रण वार देव वांदीए एटले देववंदन करीए, तथा सवारना अने सांजना ए बे वखतनां बेहु पडिक्कमणां करीए, अने (सार के०) श्रेष्ठपणे श्रीगुरुनुं वेयावच्च करीए ॥ २० ॥ वली पोतानी कायाने वश करी राखवी, अने मुखमांथी जे वचन बोलवुं पडे ते विचारीने योग्य बोलवुं, पण यद्वा तद्वा न बोलवुं, तथा ध्यान मात्र एक धर्मनुंज धरवुं, अने मनने अडोल करवुं, परंतु डामाडोल न करवुं ॥ २१ ॥ दुध, दहीं, साकर, घृत अने जल, ए पंचामृत एकठां करीने (परिगल के०) बहु विधिए करी

परिपूर्णताए करी प्रभुनी प्रतिमाने पखाल करीए. एम आठ दिवस अष्ट प्रकारी पूजापूर्वक भक्ति करीए, अने नवमे दिवसे तो वली श्रीसिद्धचक्रनी (विशाल के०) मोटी भक्ति करीए ॥ २२ ॥

सुदि सातमथी इणी परे, चैत्री पूनम सीम रे ॥ ओली एह आराधीए,
नव आंबिलनी नीम रे ॥ चेतन० ॥ २३ ॥ एम एकाशी आंबिले, ओली
नव निरमाय रे ॥ साढे चार संवत्सरे, ए तप पूरण थाय रे ॥ चेतन०
॥ २४ ॥ उजमणुं पण कीजीए, शक्ति तणे अनुसार रे ॥ इह भव पर-
भव सुख घणां, पामीजे भवपार रे ॥ चेतन० ॥ २५ ॥ आराधन फल
एहनां, इह भवे आण अखंड रे ॥ रोग दोहग दुःख उपशमे, जिम घन
पवन प्रचंड रे ॥ चेतन० ॥ २६ ॥

अर्थ–(इणी परे के०) एज रीते एटले जेम आशो सुदि सातमना दिवसथी नव आंबिल करवां, तेमज चैत्र शुक्ल सप्तमीथी मांडीने पूर्णिमा लगे (सीम के०) मर्यादा छे त्यांसुधी एज आयंबिलनी ओलीने नियमे करी आराधीए ॥ २३ ॥ एम एक वर्षमां आशो अने चैत्र मली बे ओलीमां अढार आयंबिल थाय. तेवां एकाशी आयंबिल (निरमाय के०) कपटरहितपणे करवे करीने जे वारे नव ओली संपूर्ण थाय, ते वारे सर्वत्र साढा चार वर्षे ए आयंबिल तप पूर्ण थाय ॥ २४ ॥ पूर्ण थया पछी पोतानी शक्तिने अनुसारे उजमणुं पण करीए के जे थकी आ भव अने परभवने विषे घणां सुख पामीए. यावत् (भव के०) संसार तेनो पार पण पामीए ॥ २५ ॥ हवे ए सिद्धचक्रनुं आराधन करवाथी शुं फल थाय ? ते कहे छे. एक तो आ भवमां तेनी आण अखंड रहे, कोइ लोपी शके नहीं. वली रोग अने दौर्भाग्य तथा दुःख ते सर्व (उपशमे के०)

शांत थाय. जेम (घन के०) मेघ ते (प्रचंरु के०) घणो आकरो पवन लागवाथी नाश पामे ने, तेनी पेरे डुःख दौर्जाग्य पण नाश पामे ॥ २६ ॥

नमणजले सिद्धचक्रने, कुष्ठ अढारे जाय रे ॥ वाय चोराशी उपशमे, रूझे गुंबड घाय रे॥ चेतन० ॥ २७ ॥ जीम जगंदर जय टले, जाय जलो-दर दूर रे ॥ व्याधि विविध विषवेदना, ज्वर थाये चकचूर रे ॥ चेतन० ॥ २८ ॥ खास खयन खस चक्षुना, रोग मिटे सन्निपात रे ॥ चोर चरड डर डाकिणी, कोइ न करे उपघात रे ॥ चेतन० ॥ २९ ॥ हीक हरस ने हेडकी, नारां ने नासूर रे ॥ पाठां पीडा पेटनी, टले डुःख दंतनां सूर रे ॥ चेतन० ॥ ३० ॥

अर्थ–ए श्रीसिद्धचक्रजीनुं न्हवणजल गंटवे करी अढार जातना कोढ रोग जता रहे, तथा चोराशी जातिना वायु संबंधी रोग थाय ने ते सर्व उपशम पामी जाय, तेमज शरीरमां गुंबरुां थयां होय, (घाय के०) जाटका लाग्या होय, ते सर्व रूजे एटले रूजाइ जाय ॥ २७ ॥ वली (जीम के०) बीहामणा एवा जे जगंदर रोग संबंधी जय, ते टली जाय, तथा जलोदर रोग दूर जतो रहे, वली व्याधि जे बाह्य शरीरनी पीरुा तथा अंतरनी मन संबंधी पीरुा अने विविध प्रकारनां (विष के०) केर तेनी वेदना, तेमज सात प्रकारना (ज्वर के०) ताप ते सर्व चकचूर थइ जाय ॥ २८ ॥ तथा खांसीनो रोग, खेननो रोग अने खसनो रोग, वली (चक्षुना के०) नेत्रोना रोग तेमज सन्निपात रोग, ए सर्व रोगो मटी जाय. श्रीसिद्धचक्रना प्रजाव थकी चोर अने (चररु के०) जूत तथा रुर राकिणी ए मांहेलो कोइ पण उपघात करी शके नहीं ॥ २९ ॥ तथा हीकनो रोग, हरसनो रोग, हेरुकीनो रोग, नारां पड्यां होय ते रोग अने ...

रोग, पाठानुं दरद अने पेटनी पीरूा तथा दांतनां सूर ए सर्व रोग टली जाय ॥ ३० ॥

निर्धनियां धन संपजे, अपुत्र पुत्रीया होय रे ॥ विण केवली सिद्धयंत्रना,
गुण न शके कही कोय रे ॥ चेतन० ॥ ३१ ॥ रास रच्यो श्रीपालनो,
तिहां ए सातमी ढाल रे ॥ विनय कहे श्रोताघरे, होजो मंगलमाल
रे ॥ चेतन० ॥ ३२ ॥

अर्थ–वली जे निर्धन पुरुषो होय ते धनवंत थाय तथा अपुत्रीया होय तेमने पुत्र थाय, घणुं शुं कहीए ? ए श्रीसिद्धचक्रजीना गुणोने केवली भगवान् विना बीजो कोइ कही शके नहीं ॥३१॥ श्री श्रीपाल राजानो रास रच्यो तेनी ए सातमी ढाल संपूर्ण थइ. रासना कर्ता श्रीविनयविजयजी उपाध्याय कहे छे के श्रोताउने घेर मांगलिकनी माला होजो ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

श्री मुनिचंद मुनीश्वरे, सिद्धयंत्र करी दीध ॥ इह भव परभव एहथी,
फलशे वांछित सिद्ध ॥ १ ॥ श्री गुरु श्रावकने कहे, ए बेहु सुगुणनिधान ॥
कोइक अवसर पामीए, सेवो थइ सावधान ॥ २ ॥

अर्थ–एम श्रीमुनिचंद्र नामे मुनीश्वरे ए श्रीसिद्धचक्रनो यंत्र करी दीधो, एना माहात्म्यथी आ भवे अने परभवे मनोवांछित सिद्धि फलशे ॥ १ ॥ पछी पासे बेठेला श्रावकसमुदायने श्री गुरु कहे छे के आ बेहु स्वामीभाइ छे, ते रूडा गुणोना (निधान के०) खजानारूप छे, एनां उत्तम लक्षणे करी जाणीए छीए जे ए मनुष्य निश्चे थोडा दिवसोमां श्रीजिनधर्मना प्रभावक थशे. एवा साधर्मीनी वात्सल्यता भक्ति करवी ए योगवाइ कोइक अवसरे पामीए छीए, माटे सावधान थइने एमने सेवो ॥ यतः ॥ एएहिं उत्तमेहिं, लक्खिज्जइ लक्खणेहिं एस नरो ॥ जिण-

सासणस्स नूणं, अचिरेण पत्नावगो होइ ॥ १ ॥ छप्पय ॥ अवसर घनहर घुरे, फूल पण अवसर फूले ॥ अवसर वारत वल, गुहीर निसाण गहले ॥ अवसर सज्जन मले, गीत पण अवसर गावे ॥ अवसर चूके मूढ, पिछे यह बहु पछतावे ॥ अवसर शृंगार कामिनी करे, अवसर मित्त परखिये ॥ कवि गद्द कहे रे ठाकुरो, अवसर कबहु न चूकीए ॥ २ ॥ गाथा ॥ उत्तमपत्तं साहू, मझिमपत्तं च सावया नणिया ॥ अविरय सम्मद्दिठी, जहन्नपत्तं मुणेयव्वं ॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टिसहस्त्रेषु, वरमेको ह्यणुव्रती ॥ अणुव्रतिसहस्त्रेषु वरमेको महाव्रती ॥ ४ ॥ महाव्रतिसहस्त्रेषु, वरमेको हि तात्त्विकः ॥ तत्तात्त्विकसमं पात्रं, न नूतं न नविष्यति ॥ ५ ॥ इत्यर्थः ॥ २ ॥

साहमीना सगपण समुं, सगपण अवर न कोय ॥ नक्ति करे साहमी तणी, समकित निर्मल होय ॥ ३ ॥ पधरावे आदर करी, साहमी निज आवास ॥ नक्ति करे नव नव परे, आणी मन उल्लास ॥ ४ ॥ तिहां सघलो विधि साचवे, पामी गुरु उपदेश ॥ सिद्धचक्रपूजा करे, आंबिल तप सुविशेष ॥ ५ ॥

अर्थ–जे माटे नगवंते कह्युं छे के स्वामीना सगपण [illegible]
सांधर्मीनी नक्ति करवाथी पोतानुं समकित [illegible]
नला श्रावको संतोषवंत थइ [illegible]
विषे पधरावता [illegible]

॥ ढाल आठमी ॥ चोपाइनी देशी ॥

ऊजली मांडी स्त्री भरतार ॥ अष्ट प्रकारी
आशो सुदि सातम सुविचार, ऊजली मांडी स्त्री भरतार ॥ अष्ट प्रकारी
पूजा करी, आंबिल कीधां मन संवरी ॥ १ ॥ पहेले आंबिल मन अनु-
कूल, रोग तणुं तिहां दाधुं मूल ॥ अंतरदाह सयल उपशम्यो, यंत्रनमण-
महिमा मन रम्यो ॥ २ ॥ बीजे आंबिल बाहिर तचा, निर्मल थइ जपतां
जिन रुचा ॥ एम दिन दिन प्रत्ये वाध्यो वान, देह थयो सोवन्न समान ॥३॥

अर्थ—हवे तिहां साधर्मिकने घेर रहेतां थका जे वारे आशो सुदि सातमनो दिवस आव्यो,
ते वारे भला विचारपूर्वक शुभ मुहूर्त्त जोइने ते स्त्री भर्त्तार बेहु जणे आयंबिल तपनी ऊजली
मांडी. तिहां ॥ यतः ॥ न्हवण विलेपन कुसुमनी, धूप दीप जलकार ॥ अक्षत नैवेद्य फल तणी,
पूजा अष्ट प्रकार ॥ १ ॥ ए दोहामां कहेली आठ प्रकारनी श्रीसिद्धचक्रजीनी पूजा करी, तथा
मनने संवरीने एटले मनमां संवरभाव आणीने निरिच्छिकपणे आयंबिल तपनां पच्चक्खाण कर्यां
॥ १ ॥ तिहां पहेलेज आयंबिले मनने अनुकूल लागे तेवी रीते श्रीपालना शरीरे जे कोढ रोग
हतो तेनुं मूल दाधुं एटले बली भस्म थयुं, तेना योगे अंतरमां जे (दाह के०) दाज एटले
बलतरा थती हती ते सर्व उपशमी थइ. ते जोइ श्रीसिद्धचक्रजी संबंधी यंत्रना नमणनो महिमा
तेमना मनमां रमी रह्यो, जे ए न्हवणना प्रभावथी बलतरा शमी गइ, एवुं जाणवामां आव्युं
॥ २ ॥ पछी बीजे आयंबिले (रुचा के०) रुचिवंत थइ वधता भावे करी श्रीजिनराजने जपतां
थका बाहेरनी जे (तचा के०) चामडी ते निर्मल थइ. एम दिवस दिवस प्रत्ये शरीरनो वान
वधवा लाग्यो. ते वधतां वधतां अनुक्रमे कोढीयानुं (देह के०) शरीर सोना सरखुं थयुं ॥ ३ ॥

नवमे आंबिल थयो नीरोग, पामी यंत्रनमणसंयोग ॥ सिद्धचक्रनो महिमा जुउ, सकल लोक मन अचरिज हुउ ॥ ४ ॥ मयणा कहे अवधारो राय, ए सवि सद्गुरु तणो पसाय ॥ मात पिता बंधव सुत होय, पण गुरु सम हितुउ नहीं कोय ॥ ५ ॥ कष्ट निवारे गुरु इह लोक, दुर्गतिथी वारे परलोक ॥ सुमति होय सद्गुरु सेवतां, गुरु दीवो ने गुरु देवता ॥ ६ ॥ धन गुरु ज्ञानी धन ए धर्म, प्रत्यक्ष दीठो जेहनो मर्म ॥ जैनधर्म परशंसे सहु, बोधबीज पाम्यां तिहां बहु ॥ ७ ॥

अर्थ—एम नवमे आयंबिले यंत्रना न्हवणनो संयोग पामीने तेनुं सर्व शरीर रोग रहित थयुं, माटे हे नव्यो ! श्रीसिद्धचक्रनो महिमा जुउ के जे देखीने समस्त जे लोक तिहां हतां, तेमनां मनमां आश्चर्य पेदा थयुं ॥ ४ ॥ ते वारे मयणासुंदरी कहे छे के हे राजन् ! (अवधारो के०) जुउ, विचारो के आ तमे रोग रहित थया, ए सर्व सद्गुरुनो पसाय जाणवो. संसारमां माता, पिता, बंधव जे नाइ अने छोकरा, ए सर्व हेतु होय छे खरां, पण गुरु समान हितनो करनार कोइ पण जाणवो नहीं ॥ यतः ॥ अन्न पखे नाट नहीं, वाणी पखे नाट नहीं ॥ गरथ पखे हाट नहीं, गुरु पखे वाट नहीं ॥ १ ॥ इति ॥ ५ ॥ गुरु जे छे ते आ लोकने विषे पण कष्टनुं निवारण करे अने परलोके दुर्गतिमां पमवाथी वारी राखे एटले माठी गतिमां पमवा दीये नहीं, सद्गुरुने सेवतां थका (सुमति के०) नली बुद्धि होय, माटे गुरु दीवा समान तथा देवता समान जाणवा ॥ यतः ॥ गुरुः कल्पवृक्षो गुरुः कामधेनु,—र्गुरुः कामकुंनो गुरुर्देवरत्नम् ॥ गुरुश्चित्रवल्लिर्गुरुः कल्पवल्लि,—र्गुरुर्दक्षिणावर्त्तशंखः पुनश्च ॥ इति ॥ १ ॥ ६ ॥ धन्य छे ए ज्ञानी गुरुने ! तथा धन्य छे ए धर्मने ! के जेनो (मर्म के०) रहस्य सार ते प्रत्यक्षपणे दीठो. एवी रीते सहु कोइ श्रीजैन-

श्री श्रीपाल राजानो रास

प्रकाशक–श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुबइ

શ્રીપાળ તથા તેની માતા કમળપ્રભા અને પત્ની મયણાસુંદરી.

शास्त्री अक्षरना पृष्ठांक २४.

ગુજરાતી અક્ષરના પૃષ્ઠાંક ૩૪.



એક દિવસે બેહુ સ્ત્રી ભર્તાર તે શ્રી જિનરાજના પગને પ્રણામ કરી પાછા વળતા માર્ગમાં કુંઈએ (શ્રીપાળે) પોતાની માતાને દીઠી તે વારે હર્ષ ધરીને તેના ચરણને નમ્યો.

લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુંબઈ.

धर्मनी प्रशंसा करता थका (बहु के०) घणा जनो तिहां बोध जे सम्यग्ज्ञान तेना बीजने पाम्या ॥ ७ ॥

सातसें रोगीना रोग, नाठा यंत्रनमणसंयोग ॥ ते सातसें सुखीया थया, हर्ष्या निज निज थानक गया ॥ ८ ॥ इक दिन जिनवर प्रणमी पाय, पाछां वलतां दीठी माय ॥ हर्ष धरीने चरणे नमे, मयणा पण आवी तिण समे ॥ ९ ॥ सासु जाणी पाये पडे, विनय करंतां गिरुअरि चडे ॥ सासु वहूने दे आशीष, अचरिज देखी धूणे शीश ॥ १० ॥ कहे कुंवर माताजी सुणो, ए पसाय सहु तुम वहू तणो ॥ गयो रोग ने वाध्यो रंग, वली लह्यो जिनधर्मप्रसंग ॥ ११ ॥

अर्थ—वली सातसें रोगी पुरुषोना जे रोग हता ते सर्व यंत्रना न्हवणनो संयोग पामीने नाठा. ते सातसें कुष्ठीओ जे एनी साथे हता, तेमनो रोग जवाथी सुखी थइने धर्मने विषे रुचिवंत होता हर्षवंत थया थका पोतपोताने स्थानके गया ॥ ८ ॥ एक दिवसे स्त्री अने भर्त्तार बेहु जण श्रीजिनराजना पगने प्रणाम करी पाछा वलतां मार्गमां कुष्ठीए पोतानी माताने दीठी, ते वारे हर्ष धरीने तेना चरणने नम्यो. ते समये मयणासुंदरी पण तिहां आवी ॥ ९ ॥ ते पण पोतानी सासु जाणीने पगे पडी, ए रीते विनय करतां (गिरुअरि चडे के०) मोटाइ पामे, सासुए वहूने आशीष दीधी अने आश्चर्य देखीने मस्तक धूणाव्युं ॥ १० ॥ कुंवर कहे छे के हे माताजी! सांभलो. आ मारो रोग गयो, अने शरीरनो रंग वध्यो, वली जैनधर्मनो प्रसंग (लह्यो के०) पाम्यो, ए सर्व पसाय तमारी वहूनो जाणजो ॥ यतः ॥ स्त्रीणां दोषसहस्रेऽपि, गुणत्रयं मनोरमम् ॥ गृहाचारः सुतोत्पत्ति,—र्विपत्तिः पतिना सह ॥ इति ॥ ११ ॥

सुगुण वहू निर्मल निज नंद, देखी माय अधिक आनंद ॥ पूनम परे वहू तें जश लीध, सकल कला पूरण पियु कीध ॥ १२ ॥ सुणो पुत्र कोसंबी सुण्यो, वैद्य एक वैद्यक बहु जाण्यो ॥ तेह जाणी तिहां जाउं जाम, ज्ञानी गुरु मुज मलीया ताम ॥ १३ ॥ में पूछ्युं गुरुचरणे नमी, कर्म कदर्थन में बहु खमी ॥ पुत्र एक छे मुज वालहो, ते पण कर्मे रोगे ग्रह्यो ॥ १४ ॥

अर्थ–रूडी गुणवंती वहू अने निर्मल शरीरवालो पोतानो (नंद के०) पुत्र, तेने देखीने माताने अत्यंत आनंद उपज्यो. ते वारे वहूने कहेवा लागी के हे वहू ! तें तो पूनमनी पेरे यश लीधो, एटले जेम पूर्णिमानो दिवस चंद्रमाने सोल कलाए करी संपूर्ण करे छे, अर्थात् बीजना दिवसथी मांडीने दिन दिन प्रत्ये कलाए वधतो वधतो पूनमने दिवसे सोल कलाए संपूर्ण थाय, तेम तें पण तारा (पियु के०) भर्त्तारने सर्व कलाए करी संपूर्ण कर्यो ॥ १२ ॥ हवे माताजी पोतानी वीतेली वात कहे छे के हे पुत्र ! सांभलो. में कोसंबी नगरीने विषे एक (बहु के०) घणां वैद्यक संबंधी शास्त्रोनो जाणनार एवो वैद्य सांभल्यो. पछी (जाम के०) जे वारे कोसंबी नगरीमां ते वैद्य जाणी जाउं छुं, (ताम के०) ते वारे मार्गमां जतां मुजने एक ज्ञानी गुरु मल्या ॥ १३ ॥ ते गुरुने चरणे नमीने में पूछ्युं के हे स्वामिन् ! कर्मनी (कदर्थन के०) पीडा ते तो में बहु (खमी के०) सहन करी, अने मारे एकज पुत्र वहालो छे, ते पण माठां कर्मना योगे करीने कोढ रोगे करी ग्रसाणो छे ॥ यतः ॥ चंदनं शीतलं लोके, चंदनादपि चंद्रमाः ॥ चंद्रचंदनयोर्मध्ये, शीतलः साधुसंगमः ॥ १ ॥ साधूनां दर्शनं पुण्यं, तीर्थभूता हि साधवः ॥ तीर्थं फलति कालेन, सद्यः साधुसमागमः ॥ २ ॥ १४ ॥

तेह तणो किम जाशे रोग, के नहीं जाये पापसंयोग ॥ दया करी मुज दाखो तेह, हुं बुं तुम चरणानी खेह ॥ १५ ॥ तव बोल्या ज्ञानी गुणवंत, म कर खेद सांजल विरतंत ॥ ते तुज पुत्र कुष्ठीए ग्रह्यो, उंबर राणो करी जश लह्यो ॥ १६ ॥ मालवपतिपुत्रीए वस्यो, तस विवाह कुष्ठीए कस्यो ॥ घरणीवयणे तप आदस्युं, सिद्धचक्र आराधन कस्युं ॥१७॥ तेथी तुज सुत थयो नीरोग, प्रगट्यो पुण्य तणो संयोग ॥ वली एहथी वधशे लाज, जीती घणां जोगवशे राज ॥१८॥ गुरुवचने हुं आवी आज, तुम दीठे मुज सरियां काज ॥ त्रणे जण हवे रहे सुखवास, लील करे साहमी आवास ॥ १९ ॥

अर्थ—तो हे स्वामिन् ! ते मारा पुत्रनो रोग केम जशे ? के कोइ पापना संयोगथी नहींज जाय ? ते दया करीने मुजने (दाखो के०) देखाडो, हुं तमारा चरणनी (खेह के) रज बुं ॥ १५ ॥ ते वारे गुणवंत ज्ञानी गुरु ज्ञान प्रयुंजीने बोल्या के हे बाइ ! तुं कांइ पण खेद म कर, अने हुं वृत्तांत कहुं बुं ते सांजल, के ते तारो पुत्र जे कोढीयाउए ग्रहण कस्यो हतो, ते उंबर राणो एवे नामे करी जगतमां यश पाम्यो ॥ १६ ॥ तेने मालव देशना राजानी पुत्रीए वस्यो एटले परण्यो बे, तेनो विवाह कोढीयाउए मलीने कस्यो बे, तेणे पोतानी (घरणी के०) स्त्री तेना वचने आयंबिलनुं तप आदस्युं अने श्री सिद्धचक्रनुं आराधन कस्युं ॥ १७ ॥ तेथी तारो पुत्र नीरोगी थयो बे, एणे जे पूर्व जवमां पुण्य कस्युं हतुं, तेनो संयोग प्रगट थयो. वली पण ए श्रीसिद्धचक्रना आराधनथी एनी घणी लाज अने शोजा वधशे, तथा वली ते घणा राजाउने जीतीने राज्य जोगवशे ॥ १८ ॥ तो हे पुत्र ! ते गुरुने वचने हुं आज इहां आवी ने तमने दीठा, तेथी मारां कार्य सस्यां. हवे त्रणे जण साहमीजाइना (आवास के०) घरमां सुखे लीला करतां थका रहे बे, वसे बे ॥१९॥

सिद्धचक्रनो उत्तम रास, ज्ञणतां सुणतां पूगे आश ॥
ढाल आठमी इणी परे सुणी, विनय कहे चित्त धरजो गुणी ॥ २० ॥

अर्थ—नो नव्यो ! ए श्रीसिद्धचक्रजीना माहात्म्यनो उत्तम रास छे, ते नणतां तथा सांन्नलतां थका मननी आशा पहोंचे. ए रीते ए आठमी ढाल सांन्नलीने हे गुणिजनो ! तमे चित्तमां धरजो. एम श्रीविनयविजय उपाध्यायजी कहे छे ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

इक दिन जिनपूजा करी, मधुर स्वरे इक चित्त ॥ चैत्यवंदन कुंअर करे, सासु वहू सुणंत ॥ १ ॥ मयणानी माता घणुं, डुहवाणी नृप साथ ॥ जब मयणा मत्सर धरी, दीधी उंबर हाथ ॥ २ ॥ पुण्यपाल नामे नृपति, निज बंधव आवास ॥ रीसावी आवी रही, मूके मुख निसास ॥ ३ ॥ जिनवाणी हियडे धरी, विसारी डुःख दंद ॥ आवी देव जुहारवा, तिण दिन तिहां आनंद ॥ ४ ॥

अर्थ—हवे एक दिवसे श्रीजिनेश्वरनी पूजा करी सासु तथा वहू ए बेहु जणीए सांन्नलतां थका मधुर स्वरे, एकाग्र चित्ते श्रीपाल कुंवर चैत्यवंदन करे छे ॥ १ ॥ जे वारे (मत्सर के०) ईर्ष्या धारण करीने राजाए मयणासुंदरीने कोढीयाना हाथमां दीधी हती, ते वारे मयणानी माता जे रूपसुंदरी छे ते राजानी साथे घणुंज डुहवाणी ॥ २ ॥ ते दिवसे तिहांथी रीसावीने एज नगरमां पोतानो (बंधव के०) नाइ पुण्यपाल नामे राजा रहे छे, तेना (आवास के०) घरमां मुख थकी निसासा मूकती पुत्रीनो शोक करती थकी आवी रही छे ॥ ३ ॥ ते पण श्रीजिनेश्वरनी वाणी हियडामां धरीने एटले जिनवचन उपर सद्दहणाए विचार्युं जे केहना पुत्र अने केहनी पुत्री, जगतमां कोइ कोइनुं नथी. एवो चित्तमां विवेक लावीने शोकथी प्राप्त थयेला जे डुःखरूपी दंद,

तेने विसारीने ते पण ते दिवसे तिहां आनंदे करी श्रीरुषजदेवने देहरे देव जुहारवाने आवी छे ॥४॥

माये मयणा उलखी, अनुसारे निज बाल ॥ आगल नर दीठो अवर,
यौवन रूप रसाल ॥ ५ ॥ कुलखंपण ए कुंवरी, कां दीधी किरतार ॥ जिणे
कुष्ठी वर परहरी, अवर कीयो जरतार ॥ ६ ॥ वज्र पमो मुज कुखने, धिक
धिक मुज अवतार ॥ रूपसुंदरी इणी परे घणुं, रुदन करे तेणी वार
॥ ७ ॥ रोती दीठी डुःखजरे, मयणाए निज माय ॥ तव आवी उतावली,
लागी जननी पाय ॥ ८ ॥

अर्थ–तिहां मयणानी (माये के०) माताए पोतानी (बाल के०) पुत्रीने अंगचेष्टादिकने अनुसारे उलखी, जे आ मारी दीकरी मयणासुंदरी छे, पण तेनी आगल तो कोइ (अवर के०) बीजो पुरुष युवान, सुंदर, अत्यंत रूपवंत अने प्रत्यक्ष देवकुंवर सरखो, चतुराइथी देववंदन स्तुति करतो दीठो, तेनी पूंठे पोतानी पुत्रीने बेठेली देखीने ॥ ५ ॥ रूपसुंदरी विचारे छे जे हे किरतार! कुलने खोट लगामनारी एवी ए कुंवरी तें मुजने कां दीधी ? के जेणे कोढीउं वर त्यागीने बीजो जर्तार कीधो ? एणे सतीनो मार्ग मूकी दीधो, जुउ, आ कुंवरी जिनमतमां चतुर छे, माटे एने अकार्य करवुं असंजवित छे, ते उतां विषयविकार केवो बलवान् छे के जेणे एने पण जूलावी नाखी ? माटे रे रे दैव ! आ संसारमां नहीं संजवे एवां नाटक थाय छे ! ! ॥ ६ ॥ एणी परे चिंतवती डुःखना समूहे जरी थकी रूपसुंदरी ते वखते दयामणे स्वरे घणुंज रुदन करती थकी चिंतवे छे के धिक्कार छे, धिक्कार छे, मारा अवतारने ! के आ अकार्यनी करनार कुंवरी मारी कुखने विषे आवी उपनी, माटे मारी कुखनी उपर वज्र पमो ॥ ७ ॥ एम डुःखजरे रोती एवी

पोतानी माताने मयणासुंदरीए दीठी, ते वारे मातानो अतिशय जाणती थकी उतावली माता पासे आवी पगे लागीने विकस्वर वदने कहे छे ॥ ८ ॥

हर्ष तणे स्थानक तुमे, कां दुःख आणो माय ॥ दुःख दोहग दूरे गयां, श्रीजिनधर्मपसाय ॥ ए ॥ निसिही कहीने आवीयां, जिणहर मांहे जेण ॥ करतां कथा संसारनी, आशातन होये तेण ॥ १० ॥ हवणां रहीए छे जिहां, आवो तिणे आवास ॥ वात सयल सुणजो तिहां, होशे हिये उल्लास ॥ ११ ॥ तिहां आवी बेठां मली, चारे चतुर सुजाण ॥ जे दिन स्वजन मिलावडो, धन ते दिन सुविहाण ॥१२॥ मयणाना मुखथी सुणी, सघलो ते अवदात ॥ रूपसुंदरी सुप्रसन्न थइ, हियडे हर्ष न मात ॥ १३ ॥

अर्थ—के हे माताजी ! आ हर्षने स्थानके तमे दुःख केम आणो छो ? आपणां तो दुःख अने दौर्भाग्य सर्व श्रीजिनधर्मना पसायथी दूरे गयां ॥ ए ॥ (जेण के०) जे माटे संसारनी कथा वार्त्ता करवा संबंधी (निसिही के०) नैषेधिकी कहीने जिणघर मांहे आव्यां छीए, तेथी इहां संसारनी कथा करतां थका आशातना लागे, निसिहीनो भंग थाय ॥ १० ॥ तो हमणां जे स्थानके अमे रहीए छीए, ते (आवास के०) घर मांहे माताजी ! तमे आवो. तिहां सर्व वात सांभलजो, जेथी तमारा हैयाने विषे उल्लास थशे ॥११॥ पछी जिहां मयणा रहे छे, तिहां ते चारे चतुर सुजाण मलीने आवी बेठां. जे दिवसे स्वजनोनो मेलावडो थाय, ते दिवस धन्य (सुविहाण के०) भलुं वहाणुं वहायुं जाणवुं ॥ १२ ॥ तिहां मयणासुंदरीना मुख थकी ते सर्व (अवदात के०) संबंध सांभलीने रूपसुंदरी घणी सुप्रसन्न थइ, अने तेना हैयाने विषे हर्ष समातो नथी ॥ १३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ अर्ध मंकित गोरी नागिला रे ॥ ए देशी ॥

वर वहू बेहु सासु मली रे, करे वेवाइण वात रे ॥ कमला रूपाने कहे रे, धन तुम कुल विख्यात रे ॥ जुर्ज अगम गति पुण्यनी रे ॥ पुण्ये वंछित थाय रे ॥ सवि दुःख दूर पलाय रे॥ १॥ जुर्ज अगम गति पुण्यनी रे ॥ ए आंकणी ॥ वहूए अम कुल उद्धर्युं रे, कीधो अम उपगार रे ॥ अमने जिनधर्म बुझव्यो रे, ॥ उतार्यां दुःखपार रे ॥ जुर्ज० ॥ २ ॥ सूइ जिम दोरा प्रते रे, आणे कसीदे ठाम रे ॥ तिम वहूए मुज पुत्रनी रे, घणी वधारी माम रे ॥ जुर्ज० ॥ ३ ॥

अर्थ–हवे वर तथा वहू ए बेहुनी सासुर्ज मली बन्ने वेवाणो मांहोमांहे वातो करे छे, ते वारे कमलप्रभा जे श्रीपालनी माता ते रूपसुंदरीने कहे छे के (विख्यात के०) प्रसिद्धि पामेला एवा तमारा कुलने धन्य छे. कवीश्वर कहे छे के हे भव्यो ! तमे जुर्ज के पुण्यनी गति केवी अगम्य छे ? पुण्ये करी मनोवांछित कार्य सर्व सिद्ध थाय तथा रोगादि सर्व प्रकारनां दुःख ते पलायन करी दूर जतां रहे, माटे पुण्यनी गतिनी ज्ञानी विना बीजाने गम पडे नहीं ॥ १ ॥ वहूए अमारा कुलनो उद्धार कर्यो, अमने श्रीजिनधर्म (बुझव्यो के०) शीखव्यो–पमाड्यो, अने अमे दुःख-रूप समुद्रमां पड्यां हतां तेमांथी पार उतार्यां, मारो पुत्र नीरोगी थयो ते एना प्रभावथी थयो, ए सर्व अमारी वहूए अमारा उपर उपकार कर्यो, ए तमारी पुत्रीनो प्रभाव चिंतामणि रत्न सरखो छे, माटे धन्य छे तमने ! जे तमारी कुखमां आवुं स्त्रीरत्न उत्पन्न थयुं ॥ यतः ॥ कार्ये दासी रतौ रंभा, भोजने जननीसमा ॥ विपत्तौ बुद्धिदात्री च, सा भार्या भुवि दुर्लभा ॥ १ ॥ इति ॥ २ ॥

जेम सोइ दोराने कसीदाना जरतमां ठेकाणे आणे, तेम वहूए पण मारा पुत्रनी आबरु अने शोना घणी वधारीने अमने ठेकाणे आण्यां ॥ ३ ॥

रूपा कहे जाग्ये लह्यो रे, अमे जमाइ एह रे ॥ रयण चिंतामणि सारिखो रे, सुंदर तनु ससनेह रे ॥ जुर्ज० ॥ ४ ॥ सुणवा अम इछा घणी रे, एहनां कुल घर वंश रे ॥ प्रेमे तेह प्रकाशीए रे, जिम हींसे अम हंस रे ॥ जुर्ज० ॥ ५ ॥ कहे कमला रूपा सुणो रे, अंग अनोपम देश रे ॥ तिहां चंपा नगरी जली रे, जिहां नहीं पाप प्रवेश रे ॥ जुर्ज० ॥ ६ ॥ तेह नगरीनो राजीयो रे, राजा गुण अजिराम रे ॥ सिंह थकी रथ जोडीए रे, प्रगट हुवे तस नाम रे ॥ जुर्ज० ॥ ७ ॥

अर्थ–एवुं सांजलीने रूपसुंदरी कहेवा लागी के चिंतामणि रत्न सरखो प्रजाव छे जेनो अने वली सस्नेह एवुं सुंदर छे (तनु के०) शरीर जेनुं एवा आ जमाइने अमे पण जाग्ययोगे पाम्या छीए ॥ यतः ॥ शर्वरीदीपकश्चंद्रः, प्रजातदीपको रविः ॥ त्रिलोकीदीपको धर्मः, सुपुत्रः कुल-दीपकः ॥ १ ॥ इति ॥ ४ ॥ तो हवे एनां कुल, घर अने वंश संबंधी कथा सांजलवानी अमोने घणी इछा रहे छे, माटे ते तमे प्रेमे करी प्रकाशो के जेम अमारो (हंस के०) आत्मा ते (हींसे के०) प्रसन्न थाय ॥ ५ ॥ ते सांजली कमलप्रजा जे श्रीपालनी माता ते रूपसुंदरीने कहे छे के हे वेवाण ! तमे सांजलो. (अनोपम के०) उपमा रहित एवो अंग नामे देश, तेने विषे जेमां पापनो रंचमात्र प्रवेश नथी एवी (जली के०) रुमी चंपा नामे नगरी छे ॥ ६ ॥ ते नगरीनो राजा ते राजा संबंधी जे गुण तेणे करीने (अजिराम के०) मनोहर एवो अने सिंह थकी रथ जोमतां एटले रथमां

सिंहने जोरूतां जे नाम थाय ते नामे करी राजानुं नाम प्रगट थाय, एटल शत्रुरूप हाथीउने सिंह समान एवो सिंहरथ नामे राजा जाणवो ॥ ७ ॥

राणी तस कमलप्रन्ना रे, अंग धरे गुण सेण रे ॥ कोंकण देश नरिंदनी
रे, जे सुणीए लघु बहेन रे ॥ जुउं० ॥ ८ ॥ राजा मन चिंता घणी रे,
पुत्र नहीं अम कोय रे ॥ राणी पण आरति करे रे, निशिदिन जूरे दोय
रे ॥ जुउं० ॥ ए ॥ देव देहरमां मानता रे, इछतां पूछतां एक रे ॥ राणी
सुत जनम्यो यथा रे, विद्या जणे विवेक रे ॥ जुउं० ॥ १० ॥

अर्थ–हवे ते राजानी स्त्री अंगने विषे गुणोनी श्रेणीने धरनारी अथवा पाठांतरे अंगने विषे गुणनी सेनाने धारण करनारी एवी कमलप्रन्ना नामे राणी छे, ते कोंकण देशना राजानी (लघु के०) नानी बहेन (सुणीए के०) जाणीए ॥ ८ ॥ ते राजा घणां वर्ष अपुत्रीयो रहेवाथी निरंतर तेना मनमां घणी चिंता रहेती हती जे अमारे कोइ पुत्र नथी तेमज राणी पण पुत्रने माटे (आरति के०) दुःख कर्या करे, एम ते बेहु जण रात्रि दिवस जूरतां रहे छे. यतः ॥ एकेन वनवृक्षेण, पुष्पितेन सुगंधिना ॥ वासितं तद्वनं सर्वं, सुपुत्रेण कुलं यथा ॥ १ ॥ यस्य पुत्रो न विद्वांश्च, न शूरो न च पंडितः ॥ अंधकारः कुले तस्य, नष्टचंद्रेव शर्वरी ॥ २ ॥ चोसठ दीवा जो बले० ॥ अपुत्रस्य गृहं शून्यं० ॥ अपुत्रस्य गतिर्नास्ति० ॥ ए सर्व काव्य उदाहरणमां कहेवां तथा ॥ विना स्तंभं यथा गेहं, यथा देहं विनात्मता ॥ यथा तरुर्विना मूलं, तथा पुत्रं विना कुलम् ॥ ३ ॥ इति ॥ ए ॥ पछी देव, देहरांनी मानताउं करतां इछतां पूछतां थका (यथा के०) जे प्रकारे विद्या जे छे ते जेम विवेकने जणे छे, एटले विद्या थकी जेम विवेक प्रगटे छे, तेम राणी थकी पुत्र प्रगट्यो. एटले एक पुत्रने राणीए जन्म आप्यो ॥ १० ॥

नगर लोक सवि हरषीयां रे, घर घर तोरण त्राट रे ॥ आवे घणां वधामणां रे, शणगार्‍यां घर हाट रे ॥ जुर्ज० ॥ ११ ॥ राजा मन उलट घणे रे, दान दीये लख कोडी रे ॥ वैरी पण संतोषीया रे, बंदिखाना छोडी रे ॥ जुर्ज० ॥ १२ ॥ धवल मंगल दीये सुंदरी रे, वाजे ढोल निसाण रे ॥ नाटक होवे नव नवां रे, महोत्सव अधिक मंडाण रे ॥ जुर्ज० ॥ १३ ॥ न्याति सज्जन सहु नोतर्‍यां रे, भोजन षट् रस पाक रे ॥ पार नहीं पकवाननो रे, शालि सुरहां घृत शाक रे ॥ जुर्ज० ॥ १४ ॥

अर्थ–तेथी नगरनां लोक सर्व हर्षित थयां, घरोघर तोरणने खेंची ताट करी बांध्यां, घणां वधामणां आववा लाग्यां, घर, हाट, डुकान सर्व शणगार्‍यां ॥ ११ ॥ राजा मननी घणीज उलटे करीने लाखो करोडोनुं दान दीए छे. जे वैरी हता तेने पण दान आपी संतोषित कर्‍या, बंदिखानामां पडेला गुनेगारोने बंदिखानेथी छोडी मूक्या ॥ यतः ॥ आनंदाश्रूणि रोमांचो, बहुमानः प्रियं वचः ॥ किंचानुमोदना पात्र,–दानभूषणपंचकं ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥ ते वारे सुंदरी जे सौभाग्यवती स्त्रीउं ते धवल मंगल गीत गाय छे, ढोल, निशान वागी रह्यां छे, नवां नवां नाटक थाय छे. ए रीते अधिक मंडाणे मोटो महोत्सव करे छे ॥ यतः ॥ विवाहे पुण्यकार्यादौ, मंगलं सधवाः स्त्रियः ॥ विधवा गर्हिता लोके, प्राप्नुवंति पराभवम् ॥ १ ॥ इति ॥ १३ ॥ पछी बारमे दिवसे ज्ञाति, सज्जन सर्वने नोतरीने षट् रस पाक भोजन निपजाव्यां, तेमां पक्वान्न कराव्यां तेनो तो पारज नथी, वली (शालि के०) लापसी, (सुरहां के०) सारां दाल तथा घृत अने शाक, ए सर्व निपजावीने जमाड्यां ॥ १४ ॥

॥ केशर तिलक भूषण अंबर पहेरामणी रे, श्रीफल कुसुम तंबोल रे ॥ राजरमणी वली बांटणां रे, चंदन चूआ रंगरोल रे ॥ जुओ० ॥ १५ ॥ सज्जन भूआ मली तेहनुं रे, अम पालशे रे, पुण्ये लह्यो ए बाल रे ॥ जुओ० ॥ १६ ॥ रास रुडो श्रीपालनो रे, तेहनी नाम ठव्युं श्रीपाल रे ॥ नवमी ढाल रे ॥ विनय कहे श्रोताघरे रे, होजो मंगलमाल रे ॥ जुओ० ॥ १७ ॥

अर्थ–वली आभूषण तथा वस्त्रनी पहेरामणी करी, उपर श्रीफल, फूल, पान, सोपारी आपी, केशरनां तिलक करी वस्त्र बांटणां कीधां. तथा चूआ अने चंदने करी रंगरोल करीने घणा खुशी कर्यां ॥ १५ ॥ हवे आ पुत्र अमे पुण्ये करी पाम्या छीए अने अमो अनाथनी राज्यरूप जे (रमणी के०) स्त्री अथवा लक्ष्मी छे तेनुं ए पालन करशे, माटे सज्जन तथा (भूआ के०) फइ तेओए मलीने बालकनुं 'श्रीपाल' एवुं नाम स्थाप्युं ॥ १६ ॥ ए श्रीपाल राजानो रुडो रास तेनी नवमी ढाल पूर्ण थइ. श्रीविनयविजय कहे छे के श्रोता जनोने घेर मांगलिकनी माला होजो ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

पांच वरसनो जब हुवो, ते कुंवर श्रीपाल ॥ ताम शूल रोगे करी, पिता पहोतो काल ॥ १ ॥ शिर कूटे पीटे हियुं, रुवे सकल परिवार ॥ स्वामी तें माया तजी, कुण करशे अम सार ॥ २ ॥

अर्थ–ते श्रीपाल कुंवर जे वारे पांच वर्षनो थयो, ते वारे ते कुंवरनो पिता शूलना रोगे करी कालधर्म पाम्यो, एटले मरण पाम्यो ॥ १ ॥ तेना दुःखथी माथुं कूटतां, हैयुं पीटतां थका परिवारनां सर्व लोक रुदन करे छे, वली कहे छे के हे स्वामिन् ! तमे अमारा उपरथी माया तजी तो

हवे अमारी सार संजाल कोण करशे ? ॥ सुख गयुं जेने सासरे, पीयर टलीयुं मान ॥ कंत-विहूणी कामिनी, जिहां जाये तिहां रान ॥ १ ॥ इति ॥ २ ॥

गया विदेशे बाहुमे, वाल्हा कोइक वार ॥ इण वाटे वोलावीया, न मले बीजी वार ॥ ३ ॥ हेजे हसी बोलावता, जे क्षणमां केइ वार ॥ नजर न मंमे ते सज्जन, फूटे न हिया गमार ॥ ४ ॥ नेह न आण्यो माहरो, पुत्र न थाप्यो पाट ॥ एवमी उतावल करी, शुं चाल्या इण वाट ॥ ५ ॥

अर्थ—जे विदेश एटले परदेश गया होय ते वाल्हा कोइक वार (बाहुडे के०) मले, पण ए वाटे जेने वोलावी आव्या ते बीजी वार मले नहीं ॥ ३ ॥ हे हृदय ! अमने हेजे करी सहित हसीने एक क्षणवारमां केटलीएक वखत बोलावता एवा (सज्जन के०) वहाला, ते आज सामी नजर पण मांमता नथी, ते माटे हे मारा गमार हैयमा ! तुं फाटीने बे जाग केम थतुं नथी ? ॥ यतः ॥ केहशुं कीजे वत्तडी, केहशुं कीजे कब ॥ जेहवा सज्जन वीछड्या, तेहवा नावे हब ॥ १ ॥ हुं कुमलाणी कंत विण, जिम जल विहूणी वेल ॥ वणजारानी आग ज्युं, गयो धखंती मेल ॥ २ ॥ वालमीया मंदिर रह्या, उमण लागी खेह ॥ हैयडे वादल पूरीयां, नयणे वूठा मेह ॥ ३ ॥ विसार्या नहीं विसरे, संजार्या न समाय ॥ वालम तणा सनेहमा, हियडे वलगा जाय ॥ ४ ॥ इति ॥ ४ ॥ वली हे स्वामिन् ! तमे मारा उपर स्नेह आण्यो नहीं ते तो रह्युं, परंतु पुत्रने तमारे पाट एटले तखते पण बेसाड्यो नहीं ! एटली बधी उतावल करीने (वाट के०) ए मार्गे शुं चाल्या ? ॥ यतः ॥ में जाण्युं मन मांय, आतम रहेशे एकलो ॥ वालम तुम दिल कोय, माने को मालुम नहीं ॥ १ ॥ मालीया महोटी खोड, माणसने मरवा तणी ॥ बीजी छे लख कोम, ए सरखी एके नहीं ॥ २ ॥ इति ॥ ५ ॥

रोती हियफे फाटते, कमला करे विलाप ॥ मतिसागर मंत्री तिसे, इम समजावे आप ॥ ६ ॥ हवे हियडुं काठुं करी, सकल संबाहो काज ॥ पुत्र तुमारो नानडो, रोतां न रहे राज ॥ ७ ॥ कमला कहे मंत्री प्रते, हवे तुमे आधार ॥ राज्य देइ श्रीपालने, सफल करो अधिकार ॥ ८ ॥

अर्थ–ए रीते फाटते हैयडे रूती थकी कमलप्रन्ना विलाप करे बे, तेने मतिसागर प्रधान आवीने एवी रीते समजावे बे, ते आगल कहे बे ॥ ६ ॥ हवे तमे तमारुं हैयुं कठिण करीने सर्व राजकाज पोताने हाथे राखो, केमके तमारो पुत्र हजी नानो बे, माटे रोतां थका राज्य रहेशे नहीं ॥ ७ ॥ एवुं सांनलीने कमलप्रन्ना राणी प्रधानने कहे बे के हवे तमेज अमारा आधार-नूत बो, माटे श्रीपालने राज्य आपीने तमारो अधिकार सफल करो ॥ ८ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ राग रामग्री अथवा मारु ॥ जगद्गुरु हीरजी रे ॥ ए देशी ॥

मृतकारज करी रायनां रे, सकल निवारी शोक ॥ मतिसागर मंत्रीसरे रे, थिर कीधां सवि लोक ॥ देखो गति दैवनी रे ॥ दैव करे ते होय, कुणे चाले नहीं रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ राज ठवी श्रीपालने रे, वरतावी तस आण ॥ राज काज सवि चालवे रे, मंत्री बहु बुद्धिखाण ॥ देखो० ॥ २ ॥

अर्थ–पढी राजानां मृतकार्य करी, सर्व शोक निवारीने, मतिसागर प्रधाने सर्व लोकने स्थिर कर्यां, माटे हे वेवाण ! दैव जे कर्म तेनी गति तो जुउ, केवी विषम बे ? जे दैव करे बे, तेज वात जगतमां थाय बे, पण दैवनी उपर कोइनुं चालतुं नथी ॥ १ ॥ पढी श्रीपालने राज्यपाटे स्थापी तेनी आण वर्त्तावी अने राजनुं जे (काज के०) कारन्नार ते सर्व बहु बुद्धिनी खाणरूप जे मतिसागर नामे प्रधान बे तेज चलावे बे ॥ २ ॥

इण अवसर श्रीपालनो रे, पीतरीयो मतिमूढ ॥ परिकर सघलो पालटी रे, गूऊ करे इम गूढ ॥ देखो० ॥ ३ ॥ मतिसागरने मारवा रे, वली हणवा श्रीपाल ॥ राज लेवा चंपा तणुं रे, डुष्ट थयो उजमाल ॥ देखो० ॥ ४ ॥ किमहीक मंत्रीसर लही रे, ते वैरीनी घात ॥ राणीने आवी कहे रे, नासो लेइ अध रात ॥ देखो० ॥ ५ ॥ जो जाशो तो जीवशो रे, सुत जीवाऋण काज ॥ कुंवर जो कुशलो हशे रे, तो वली करशो राज ॥ देखो० ॥ ६ ॥ राणी नाठी एकली रे, पुत्र चडावी केड ॥ उवटे उजाती पऋे रे, विषमी जिहां वे वेड ॥ देखो० ॥ ७ ॥

अर्थ—एवा अवसरने विषे मतिए करीने मूढ एवो श्रीपालनो पीतरीयो काको, तेणे सघलो परिकर जे लश्कर, सामंत प्रमुखने लांच विगेरे आपी नेद पाडी फोऋीने पलटाव्या, एटले फेरवी नाख्या. एम (गूढ के०) गुप्तपणे तेणे गुह्य कर्म कर्युं ॥ ३ ॥ मतिसागर प्रधानने मारवाने, वली श्रीपालने पण हणवाने तथा चंपानगरीनुं राज्य लेवाने ते डुष्ट उजमाल थयो ॥ ४ ॥ हवे ते डुश्मने करेली गुह्य वातने कोइक रीते कोइकना मुखथी मतिसागर प्रधाने जाणी ते वारे राणी पासे आवीने कहेवा लाग्यो जे तमे इहांथी अर्ध रात्रि लइने नासी जाउं ॥ कह्युं वे के ॥ शकटं पंच हस्तेन, दश हस्तेन वाजिनं ॥ कुंजरं शत हस्तेन, देशत्यागेन डुर्जनम् ॥ ५ ॥ जो नासी जशो तो जीवता रहेशो अने तमारा पुत्रने जीवाऋवा काजे ए काम करो, केमके तमारो कुंवर जो कुशल क्षेम हशे तो फरी राज करशे ॥ यतः ॥ नानुश्च मंत्रा दयिता सरस्वती, मतंगनाशान्नृप कौतुकेन ॥ गंगातटेऽनूत्पुनरेव लानो, जीवन्नरो नद्रशतानि पश्यति ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥ एवुं मंत्रीनुं वचन सांनलीने राणी एकली पुत्रने केऋ उपर चऋावीने नाठी. तेणे (उवट के०) अवली वाटे एटले

धारतीने हीधे सरल मार्ग मूकीने उजम जंगलमां जिहां विषम मार्ग छे ते रस्ते चालवा मांड्यु ॥ ७॥

जास जडो जड ऊांखरां रे, खाखर जाखर खोह ॥ फणिधर मणिधर
जिहां फरे रे, अजगर उंदर गोह ॥ देखो० ॥ ८ ॥ उजड अबला रडवडे
रे, रयणी घोर अंधार ॥ चरणे खूंचे कांकरा रे, वहे लोहीनी धार ॥
देखो० ॥ ए ॥ वरु वाघ ने वरघमां रे, सोर करे शीयाल ॥ चोर चरम
ने चीतरा रे, दीये उछलती फाल ॥ देखो० ॥ १० ॥ घू घू घू घूअड
करे रे, वानर पामे हीक ॥ खलहल परवतथी पमे रे, नदी निऊरणां
नीक ॥ देखो० ॥ ११ ॥

अर्थ-(जास के०) जे मार्गमां (जडो के०) जडुं, (जम के०) जोथां अने ऊांखरां घणां पड्यां छे. वली खाखरानां ऊाम, (जाखर के०) पथरा कांकरा तथा (खोह के) खामा पड्या छे. वली जे मार्गमां फणिना धरनार अने जेना मस्तकने विषे मणि रहेलां छे, तेवा सर्प घणा अहीं तहीं भ्रमण करी रह्या छे. तेमज अजगर, उंदर अने गोह नामनां जनावर घणां विचरी रह्यां छे ॥ ८ ॥ एवी घोर अंधारी रात्रिए उजम मार्गे चालतां अबला जे स्त्री, ते रमवडे छे अने तेना पगमां कांकरा खूंची जाय छे, तेने योगे पगमांथी लोहीनी धारा ऊरे छे ॥ ए ॥ वली जे मार्गमां (वरु के०) वरु, वाघ अने (वरघमां के०) चराख तथा शीयालीयां ते सोर बकोर करे छे. तथा चोर अने (चरम के०) छल, चोर फासीगरा अथवा जूत तथा चीतरा जनावर तो उछलतां थका मोटी फालो मारी रह्या छे ॥ १० ॥ तथा घूवम पक्षी ते घू घू घू एवो जयंकर शब्द करी रह्या छे, अने वानरा (हीक के०) चीसो पामी रह्या छे, तथा पर्वत उपरथी खलहलाट शब्द करती नदीना पाणीनां निर्झरणांनी (नीक के०) धाराउ पर्वत उपरथी नीचे आवी पडे छे ॥ ११ ॥

वलीयुं बेहुनुं आउखुं रे, सत्य शीयल संघात ॥ वखत बली कुंवर वडो रे, तिणे न करे कोइ घात ॥ देखो० ॥ १२ ॥ रयणहिंडोले हींचती रे, सुती सोवन खाट ॥ तस शिर इम वेला पडी रे, पडो दैव शिर दाट ॥ देखो० ॥ १३ ॥ रडवडतां रयणी गइ रे, चढी पंथ शिर शुद्ध ॥ तव बालक भूख्यो थयो रे, मागे साकर दुध ॥ देखो० ॥ १४ ॥ तव रोती राणी कहे रे, दुध रह्यां वत्स दूर ॥ जो लहीए हवे कूकशा रे, तो लह्यां कूर कपूर ॥ देखो० ॥ १५ ॥

अर्थ–पण माता तथा पुत्र ए बेहुनुं आयुष्य बलवान् छे, तथा एक सत्य अने बीजुं शील ए बे जणनो राणीने संघात एटले सथवारो छे, वली कुंवरनो वखत मोटो बलवान् छे, तेथी कोइ तेमने उपघात करतुं नथी ॥ १२ ॥ अरे ! जे राणी रत्ननी हिंडोलाखाटे हींचती हती अने सोनाना पलंग उपर शयन करती हती, तेने माथे आवी वेला आवी पडी, माटे दैव जे कर्म, तेनुं शिर जे मस्तक, तेनी उपर (दाट के०) धूल पडो, एटले ए कर्मना माथा उपर धूल पडो जे आवी रीते प्राणीने दुःखी करे छे ॥ यतः ॥ कर्मे परवे कलंक्यो चंद, मरण लह्यो जालोडे मुकुंद ॥ कर्मे नावी कुल नवे नंद, नीच वहे राजा हरिचंद ॥ १ ॥ राजा कुलवधुर्विप्रा, नियोगी मंत्रिणस्तथा ॥ स्थानभ्रष्टा न शोभंते, दंताः केशा नखा नराः ॥ २ ॥ पूगीफलानि पत्राणि, राजहंसास्तुरंगमाः ॥ स्थानभ्रष्टास्तु शोभंते, सिंहाः सत्पुरुषा गजाः ॥ ३ ॥ १३ ॥ ए रीते रझवमतां थका रात्रि व्यतिक्रमी अने प्रभाते शुद्ध मार्गे चढी, ते वारे बालक भूख्यो थयो, तेणे दुध अने साकर खावा सारु माग्यां ॥ यतः ॥ वासुदेवजरा कष्टम् , कष्टं धनविपर्ययः ॥ वैधव्यं च महाकष्टं, कष्टात्कष्टतरी क्षुधा ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥ तेने राणी रुदन करती थकी कहेवा लागी के हे वत्स !

दुध अने साकर तो दूर रह्यां, पण जो हवे आपणने कूकशा खावाने मळे, तोपण जाणीए जे आपणने कूर कपूरनां भोजन मळ्यां ॥ १५ ॥

हवे जातां मार्गे मळी रे, एक कुष्ठीनी फोज ॥ रोगी मळीया सातसें रे,
हींडे करता मोज ॥ देखो० ॥ १६ ॥ कुष्ठीए पूछ्या पछी रे, सयल सुणावी
वात ॥ वळतुं कुष्ठी इम कहे रे, आरति म करो मात ॥ देखो० ॥ १७ ॥
आवी अम शरणे हवे रे, मन राखो आराम ॥ ए कोइ अम जीवतां रे,
कोइ न ले तुम नाम ॥ देखो० ॥ १८ ॥ वेसर आपी बेसवा रे, ढांकी
सघळुं अंग ॥ बाळक राखी सोडमां रे, बेठी थइ खडंग ॥ देखो० ॥ १९ ॥
एहवे आव्या शोधता रे, वैरीना असवार ॥ कोइ स्त्री दीठी इहां रे,
पूछे वारोवार ॥ देखो० ॥ २० ॥

अर्थ—हवे आगळ मार्गे जतां थका एक कुष्ठी एटले कोढीयानी फोज मळी, ते रोगी सर्व सातसें जण एकठा मळ्या, मोज करतां थका (हींडे के०) फरे छे ॥ १६ ॥ ते कुष्ठीए मुजने पूछ्या पछी में पण मारी सर्व वात तेमने संभळावी, ते वारे वळतुं कोढीयाउंए एम कह्युं के हे माताजी ! तमे आरति म करो एटले चिंता न करो ॥ १७ ॥ हवे तमे तमारा मनमां आराम राखीने अमारे शरणे आवी रहो. ए अमो सर्व जनोमांथी कोइ एक पण जिहांसुधी जीवतो हशे, तिहांसुधी तमारुं कोइ नाम लेशे नहीं ॥ १८ ॥ एम कहीने ते कोढीयाउंए तेमने एक (वेसर के०) खच्चर बेसवा माटे आप्युं. पछी ते राणी पण पोताना बाळकनुं सर्व अंग ढांकी तेने पोतानी सोडमां राखी (खडंग के०) खडांग सावधान थइने खच्चर उपर बेठी ॥ १९ ॥ एवा अवसरेज तेमने

वलीयुं बेहुनुं आउखुं रे, सत्य शीयल संघात ॥ वखत बली कुंवर वडो रे, तिणे न करे कोइ घात ॥ देखो० ॥ १२ ॥ रयणहिंडोले हींचती रे, सुती सोवन खाट ॥ तस शिर इम वेला पडी रे, पडो दैव शिर दाट ॥ देखो० ॥ १३ ॥ रडवडतां रयणी गइ रे, चढी पंथ शिर शुरू ॥ तव बालक भूख्यो थयो रे, मागे साकर दुध ॥ देखो० ॥ १४ ॥ तव रोती राणी कहे रे, दुध रह्यां वत्स दूर ॥ जो लहीए हवे कूकशा रे, तो लह्यां कूर कपूर ॥ देखो० ॥ १५ ॥

अर्थ–पण माता तथा पुत्र ए बेहुनुं आयुष्य बलवान् छे, तथा एक सत्य अने बीजुं शील ए बे जणनो राणीने संघात एटले सथवारो छे, वली कुंवरनो वखत मोटो बलवान् छे, तेथी कोइ तेमने उपघात करतुं नथी ॥ १२ ॥ अरे ! जे राणी रत्ननी हिंमोलाखाटे हींचती हती अने सोनाना पलंग उपर शयन करती हती, तेने माथे आवी वेला आवी पडी, माटे दैव जे कर्म, तेनुं शिर जे मस्तक, तेनी उपर (दाट के०) धूल पडो, एटले ए कर्मना माथा उपर धूल पडो जे आवी रीते प्राणीने दुःखी करे छे ॥ यतः ॥ कर्म पखे कलंक्यो चंद, मरण लह्यो भालोडे मुकुंद ॥ कर्मे नावी कुल नवे नंद, नीच वहे राजा हरिचंद ॥ १ ॥ राजा कुलवधुर्विप्रा, नियोगी मंत्रिणस्तथा ॥ स्थानभ्रष्टा न शोभंते, दंताः केशा नखा नराः ॥ २ ॥ पूगीफलानि पत्राणि, राजहंसास्तुरंगमाः ॥ स्थानभ्रष्टास्तु शोभंते, सिंहाः सत्पुरुषा गजाः ॥ ३ ॥ १३ ॥ ए रीते रमवमतां थका रात्रि व्यतिक्रमी अने प्रभाते शुरू मार्गे चमी, ते वारे बालक भूख्यो थयो, तेणे दुध अने साकर खावा सारु माग्यां ॥ यतः ॥ वासुदेवजरा कष्टम् , कष्टं धनविपर्ययः ॥ वैधव्यं च महाकष्टं, कष्टात्कष्टतरी क्षुधा ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥ तेने राणी रुदन करती थकी कहेवा लागी के हे वत्स !

दुध अने साकर तो दूर रह्यां, पण जो हवे आपणने कूकशा खावाने मळे, तोपण जाणीए जे आपणने कूर कपूरनां नोजन मळ्यां ॥ १५ ॥

हवे जातां मार्गे मळी रे, एक कुष्ठीनी फोज ॥ रोगी मळीया सातसें रे,
हींडे करता मोज ॥ देखो० ॥ १६ ॥ कुष्ठीए पूछ्या पछी रे, सयल सुणावी
वात ॥ वळतुं कुष्ठी इम कहे रे, आरति म करो मात ॥ देखो० ॥ १७ ॥
आवी अम शरणे हवे रे, मन राखो आराम ॥ ए कोइ अम जीवतां रे,
कोइ न ले तुम नाम ॥ देखो० ॥ १८ ॥ वेसर आपी बेसवा रे, ढांकी
सघळुं अंग ॥ बाळक राखी सोडमां रे, बेठी थइ खडंग ॥ देखो० ॥ १९ ॥
एहवे आव्या शोधता रे, वैरीना असवार ॥ कोइ स्त्री दीठी इहां रे,
पूछे वारोवार ॥ देखो० ॥ २० ॥

अर्थ–हवे आगळ मार्गे जतां थका एक कुष्ठी एटले कोढीयानी फोज मळी, ते रोगी सर्व सातसें जण एकठा मळ्या, मोज करतां थका (हींडे के०) फरे छे ॥ १६ ॥ ते कुष्ठीए मुजने पूछ्या पछी में पण मारी सर्व वात तेमने संनळावी, ते वारे वळतुं कोढीयाउंए एम कह्युं के हे माताजी ! तमे आरति म करो एटले चिंता न करो ॥ १७ ॥ हवे तमे तमारा मनमां आराम राखीने अमारे शरणे आवी रहो. ए अमो सर्व जनोमांथी कोइ एक पण जिहांसुधी जीवतो हशे, तिहांसुधी तमारुं कोइ नाम लेशे नहीं ॥ १८ ॥ एम कहीने ते कोढीयाउंए तेमने एक (वेसर के०) खच्चर बेसवा माटे आप्युं. पछी ते राणी पण पोताना बाळकनुं सर्व अंग ढांकी तेने पोतानी सोडमां राखी (खडंग के०) खडांग सावधान थइने खच्चर उपर बेठी ॥ १९ ॥ एवा अवसरेज तेमने

शोधवाने माटे वेरीना असवार त्यां आवी पहोंच्या. ते कोढीयाउने वारंवार पूछे छे के कोइ स्त्रीने जती थकी तमे इहां दीठी ? ॥ २० ॥

कोइ इहां आव्युं नथी रे, जूठ म ऊंखो आल ॥ वचन न मानो अम तणुं रे, नयणे जुउ नीहाल ॥ देखो० ॥ २१ ॥ जो जोशो तो लागशे रे, अंगे रोग असाध्य ॥ नाठा बीहीता बापडा रे, वलगे रखे विराध ॥ देखो० ॥ २२ ॥ कुष्ठीसंगतथी थयो रे, सुतने उंबर रोग ॥ माडी मन चिंता घणी रे, कठिन करमना नोग ॥ देखो० ॥ २३ ॥

अर्थ–तेने कोढीयाउ कहेवा लाग्या जे इहां तो कोइ पण आव्युं नथी. तमे जूठुं आल (म ऊंखो के०) म बोलो, अने जो अमारुं वचन न मानो तो तमे तमारी नजरे नीहालीने जुउ ॥ २१ ॥ पण एटलुं छे के जो तमे अमारा समूहमां आवीने जोशो तो तमारा अंगमां पण असाध्य रोग लागी जशे, तेथी तमे पण अमारा जेवा थशो. एवुं सांनलीने रखेने ए (विराध के०) रोगनो व्याधि आपणा अंगे आवी वलगे ! एम विचारीने ते बापरूा बीता थका तिहांथी नासी गया ॥ २२ ॥ हवे कुष्ठीउनी संगति थकी पुत्रने अंगे पण (उंबर के०) कोढ रोग थयो. इहां उंबर रोग ते जेम उंबरनुं जारू तेमां उंबरा नामे गांठा जेवां फल थाय छे, ते फल जे वारे पाके, ते वारे पोतानी मेले फाटीने तेमांथी परु पाच जेवो रस नीकले छे, ते उंबरानां फलनी परे रोगे करी शरीर फाटेलुं होय तेमांथी परु पाच नीकले तेने उंबर रोग कहीए. ते रोग देखीने माताना मन मांहे वली घणीज चिंता थइ पम्ी अने विचारवा लागी के मारां कर्मना नोग महा कठिन छे ॥ यतः ॥ चिंतया नश्यते रूपं, चिंतया नश्यते बलं ॥ चिंतया नश्यते ज्ञानं, व्याधिर्भवति चिंतया ॥ १ ॥ २३ ॥

पुत्र जलावी तेहने रे, माता चाली विदेश ॥ वैद्य उंसड जोवा भणी रे, सहेती घणा किलेश ॥ देखो० ॥ २४ ॥ ज्ञानीने वचने करी रे, सयल फली मुज आश ॥ तेहज हुं कमलप्रभा रे, आ बेठी तुम पास ॥ देखो० ॥ २५ ॥ रास रुडो श्रीपालनो रे, तेहनी दशमी ढाल ॥ विनय कहे पुण्ये करी रे, दुःख थाये विसराल ॥ देखो० ॥ २६ ॥

अर्थ—एम विचारी पोतानो पुत्र ते कोढीयाउने (जलावी के०) सोंपीने वैद्य, औषध जोवाने अर्थे माता घणा क्लेशने सहन करती (विदेश के०) परदेशे चाली ॥ २४ ॥ आगल मार्गे जतां ज्ञानी गुरु मळ्या, तेमनां वचने करीने मारी सर्व आशा फली. तेज हुं कमलप्रभा आ तमारी पासे बेठी छुं ॥ २५ ॥ आ उत्तम रुडो श्रीपाल राजानो रास, तेनी ए दशमी ढाल कही. श्रीविनयविजय उपाध्यायजी कहे छे के पुण्ये करीने सर्व प्रकारनां दुःख विसराल थाय ॥ यतः ॥ अन्नपानं च वस्त्रं च, आलयः शयनासनं ॥ शुश्रूषा वंदनं तुष्टिः, पुण्यं नवविधं स्मृतं ॥ १ ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

रूपसुंदरी श्रवणे सुणी, विमल जमाइवंश ॥ हर्षे हियडे गहगही, इणी परे करे प्रशंस ॥ १ ॥ वखतवंत मयणा समी, नारी न को संसार ॥ जिणे बेहु कुल उद्धर्यां, सती शिरोमणि सार ॥ २ ॥

अर्थ—हवे रूपसुंदरी पोताना जमाइनो (विमल के०) निर्मल पवित्र वंश तेने काने सांभलीने हैडाने विषे हर्षे करी गहगहाट थइ थकी एटले हर्षनो उभरो आव्यो ते वारे इणी परे एटले आगल कहेशे ते रीते प्रशंसा करती हवी ॥ १ ॥ वखतवंत एटले मोटा वखतवाली भाग्य-

वंत ते आ मयणासुंदरी समान बीजी कोइ स्त्री संसारमां नथी, जेणे मावितर तथा श्वशुर बन्ने केहु कुलनो उद्धार कर्यो, माटे ए सर्व सतीउं मांहे सारजूत शिरोमणिरूप छे ॥ २ ॥

वर पण पुण्ये पामीयो, नरपति निर्मल वंश ॥ पुत्र सिंहरथ रायनो, क्षत्रिय-
कुल अवतंस ॥ ३ ॥ रूपसुंदरी रंगे जइ, वात सुणावी सोय ॥ निज
बंधव पुण्यपालने, ते पण हर्षित होय ॥ ४ ॥ चतुरंगी सेना सजी, साथे
सबल परिवार ॥ तेजी तुरिय नचावता, अवल वेष असवार ॥ ५ ॥
रतनजडित ऊलके घणां, धर्यां सूरियांपान ॥ ढोल नगारां गमगमे,
नेजा फुरे निशान ॥ ६ ॥ जाणेजी वर जिहां वसे, तिहां आव्या ततकाल ॥
निज मंदिर पधरावबा, पुण्यवंत पुण्यपाल ॥ ७ ॥

अर्थ—ए एना पुण्ये करीने (वर के०) जर्त्तार पण नरपति जे राजाउंनो निर्मल वंश, तेने विषे (अवतंस के०) मुकुट समान एवो प्रगट क्षत्रियकुलनो सिंहरथ नामे राजा तेना पुत्र प्रत्ये पामी, अथवा क्षत्रियकुलने विषे (अवतंस के०) मुकुट समान एवो सिंहरथ नामे जे राजा, तेना पुत्र प्रत्ये पामी ॥ ३ ॥ ए प्रमाणे रूपसुंदरी राणीए (रंगे के०) हर्षे करीने आनंद सहित घेर जइ ते वात पोताना जाइ पुण्यपालने संजलावी. ते वारे ते पण घणोज हर्षवंत थयो ॥ ४ ॥ पछी चार छे अंग जेनां एवी चार प्रकारनी सेना सज्ज करी साथे (सबल के०) घणो परिवार लइने, तेजवंता एवा (तुरिय के०) घोमाउंने नचावता एवा अने अवल वेषना पहेरनारा एटले घणोज सुंदर छे वेष जेमनो एवा असवारोने साथे तेमीने ॥ ५ ॥ रत्ने जडेल ऊलकतां एवां घणां (सूरियांपान के०) सूर्यमुखां धर्यां छे, तथा ढोल नगारांनो गमगमाट थते थके वली जेनां निशानो फरकी रहेलां छे ॥ ६ ॥ एवा आमंबर सहित ज्यां पोतानी जाणेजी अने वली तेनो (वर के०)

श्री श्रीपाल राजानो रास

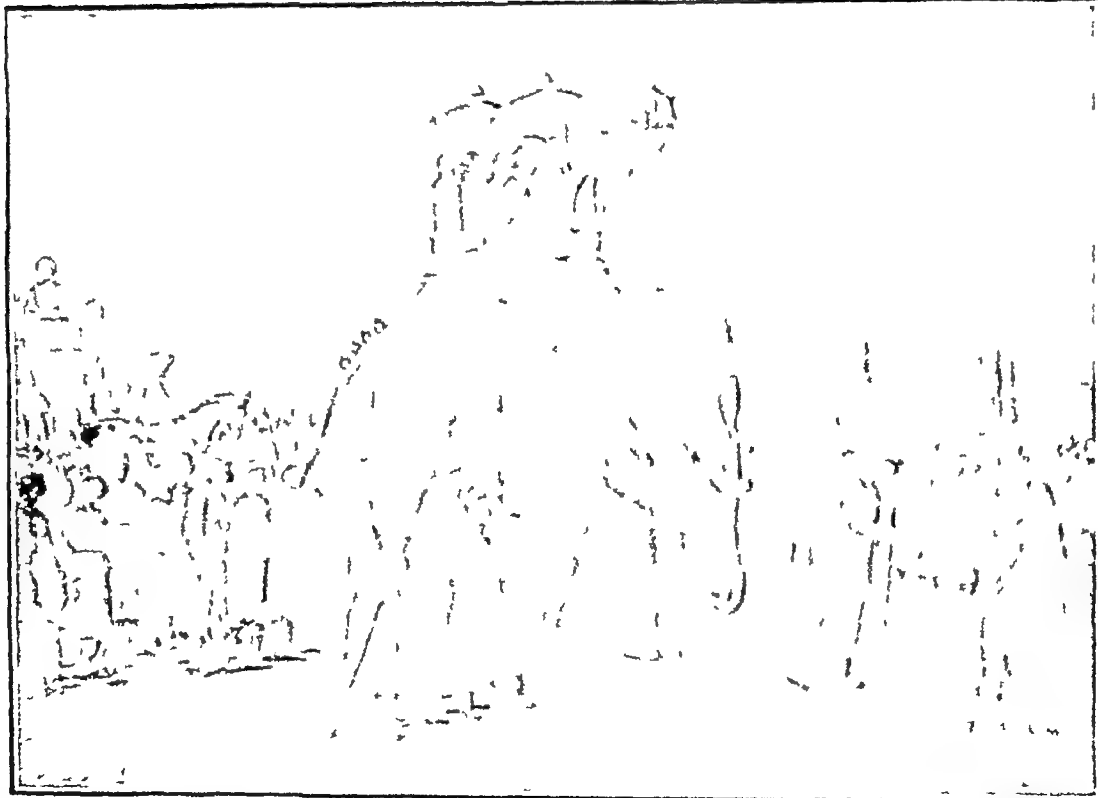
प्रकाशक-श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबई

મહોત્સવની સ્વારી.



शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक ३४







ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠ- ૮૮.



એમ કહી શ્રીપાળને હાથી ઉપર બેસાડીને મોટા મહોત્સવે મામા મનગએ પોતાને ઘેર પધરાવ્યા.

લક્ષ્મી આર્ટ છાપખાના મુંબઇ

भर्तार वसे छे, रहे छे, तिहां तत्काल तेज वखते पोताना मंदिरे तेडी जवाने माटे पुण्यवंत एवो पुण्यपाल नामे राजा आव्यो ॥ ७ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ राय कहे राणी प्रते ॥ सुण कामिनी ॥ ए देशी ॥

आवो जमाइ प्राहुणा ॥ जयवंता जी ॥ अम घर करो पवित्र ॥ गुणवंता जी ॥ सहुने अचरिज उपजे ॥ जयवंता जी ॥ सुणतां तुम्ह चरित्र ॥ गुणवंता जी ॥ १ ॥ गज वेसारी उत्सवे ॥ जय० ॥ पधराव्या निज गेह ॥ गुण० ॥ माउलससरो पूरवे ॥ जय० ॥ भोग भला धरी नेह ॥ गुण० ॥ २ ॥ इक दिन वेठां मालीये ॥ जय० ॥ मयणा ने श्रीपाल ॥ गुण० ॥ वाजे छंदे नव नवे ॥ जय० ॥ मादल भुंगल ताल ॥ गुण० ॥ ३ ॥ राय राणी रंगे जुवे ॥ जय० ॥ थेइ थेइ नाचे पात्र ॥ गुण० ॥ भरह भेद भावे भला ॥ जय० ॥ वाले परि परि गात्र ॥ गुण० ॥ ४ ॥

अर्थ—अने श्रीपालने कहेवा लाग्यो के हे परोणा जमाइ ! तमे जयवंता छो, माटे आवीने अमारुं घर पवित्र करो. हे गुणवंता जमाइ ! तमारुं चरित्र सांभलतां थका सर्व लोकने अचरिज उपजे छे ॥ १ ॥ एम कही श्रीपालने हाथी उपर वेसाडीने मोटा उत्सवे करी मामा ससराए पोताने घेर पधराव्या. तिहां स्नेह धरीने (भला के०) रुडा उत्तम प्रकारना भोग तेने पूरवा लाग्यो छे ॥ २ ॥ हवे एक दिवसे मयणासुंदरी अने श्रीपाल कुमर वेहु जण मलीने मालीया उपर गोंखमां वेठां छे, तिहां नव नवा छंदे करी मादल, भुंगल अने ताल वाजे छे ॥ ३ ॥ तथा थेइ थेइकार करीने नाटकोनां पात्र नाचे छे, अने ते पात्रो (भरह के०) समूह एटले नाटकना बत्रीश भेद तेणे करी सहित भला भावे करी नाटक करे छे, (परि परि के०) जूदी जूदी रीते

पोतानां (गात्र के०) शरीरने वाले छे, एवी रीतनुं नाटक थाय छे. ते राजा अने राणी बेहु जण (रंगे के०) हर्षे करी जुवे छे ॥ ४ ॥

इण अवसर रयवाडीथी ॥ जय० ॥ पाछो वलीयो राय ॥ गुण० ॥ नृत्य
सुणी उभो रह्यो ॥ जय० ॥ प्रजापाल तिण ठाय ॥ गुण० ॥ ५ ॥ सुख
भोगवतां स्वर्गनां ॥ जय० ॥ दीठां स्त्री भरतार ॥ गुण० ॥ नयणे लाग्यो
निरखवा ॥ जय० ॥ चित्त चमक्यो तिणी वार ॥ गुण० ॥ ६ ॥ ततक्षण
मयणा ओलखी ॥ जय० ॥ मन उपन्यो संताप ॥ गुण० ॥ अवर कोइ वर
पेखीयो ॥ जय० ॥ है है प्रगट्युं पाप ॥ गुण० ॥ ७ ॥ धिक धिक क्रोध
तणे वशे ॥ जय० ॥ में अविचार्युं कीध ॥ गुण० ॥ मयणा सरखी सुंदरी
॥ जय० ॥ कोढीने कर दीध ॥ गुण० ॥ ८ ॥

अर्थ–एवा अवसरने विषे प्रजापाल राजा रयवाडीथी रमीने पाछो वल्यो छे, ते पण ते स्थानके (नृत्य के०) नाटकनो शब्द सांभलीने उभो रह्यो ॥ ५ ॥ तिहां स्वर्गनां सुख भोगवतां थकां स्त्री भर्त्तारने दीठां, तेने राजा पोताने नयणे करी जोवा लाग्यो, ते जोतां वारज पोताना चित्तमां चमकी गयो ॥ ६ ॥ राजाए तेज वखते पोतानी पुत्री जे मयणासुंदरी तेने ओलखी, परंतु तेनी पासे पोते परणावेला कोढीया वरने स्थानके बीजो कोइ वर बेठेलो जोयो, ते वारे है है इति खेदे, अरे ! आ ते शुं पूर्वकृत पाप प्रगट थयुं ? एम तेना मनमां मोटो संताप उपज्यो ॥ ७ ॥ तेथी मनमां चिंतवे छे के धिक्कार छे, धिक्कार छे मुजने ! जे में पण क्रोधने वश थइने आ मयणा सरखी सुंदरी ते कोढीयाने हाथे जइ दीधी, ए केवुं अविचार्युं काम कर्युं ? के जेमांथी आ अकार्य

थयुं ॥ यतः ॥ लवणसमो नत्थि रसो, विन्नाणसमो वंधवो नत्थि ॥ धम्मसमो नत्थि निहि, कोह-समो वयरिउं नत्थि ॥ १ ॥ इति ॥ ७ ॥

ए पण हुइ कुलखंपणी ॥ जय० ॥ मुज कुल भरीयो गार ॥ गुण० ॥ परणयो प्रीतम परहरी ॥ जय० ॥ अवर कीयो भरतार ॥ गुण० ॥ ए ॥ इणी परे उभो झूरतो ॥ जय० ॥ जव दीठो ते राय ॥ गुण० ॥ पुण्यपाल अवसर लही ॥ जय० ॥ आवी प्रणमे पाय ॥ गुण० ॥ १० ॥ राज पधारो मुज घेर ॥ जय० ॥ जुउ जमाइ रूप ॥ गुण० ॥ सिद्धचक्रसेवा फली ॥ जय० ॥ ते कह्युं सकल स्वरूप ॥ गुण० ॥ ११ ॥ राये आवी उलख्यो ॥ जय० ॥ मुख इंगित आकार ॥ गुण० ॥ मन चिंते महिमा-निलो ॥ जय० ॥ जैनधर्म जग सार ॥ गुण० ॥ १२ ॥

अर्थ—तेम वली ए कुमरी पण मारा कुलमां खंपण एटले कलंक लगाडनारी, काली टीली जेवो माघ लगाडनारी थइ, जेणे मारा कुल मांहे (गार के०) राख भरी, एटले मारुं कुल मलिन कर्युं, कारण के एणे परणेलो भर्त्तार त्यागीने वीजो भर्त्तार कर्यो, ए मारा कुलने खोट लगाडी ॥ ए ॥ एवी रीते चिंतवतो प्रजापाल राजा तिहां झूरतो थको उभो छे, तेने जे वारे पुण्यपाल राजाए दीठो, ते वारे ते अवसर पामीने तेना पगने विषे आवी प्रणम्यो एटले नम्यो ॥ १० ॥ नमीने कहेवा लाग्यो के हे राजन् ! मारे घेर पधारो, अने आपना जमाइनुं रूप जुउ, तथा गुरुवचने सिद्धचक्र आराध्या, तेनी सेवा फलीभूत थइ, ते संबंधी जे कांइ (स्वरूप के०) वृत्तांत हतुं, ते सर्व कही संभलाव्युं ॥ ११ ॥ ते वारे राजाए आवीने मुखना (इंगित के०) निशानी

गंधाणीने आकारे जोइने उंलख्यो जे एज मारो जमाइ छे. एवुं जाणीने मनमां चिंतववा लाग्यो जे महिमावंत जे श्रीजैनधर्म तेज जगतमां सारभूत छे ॥ १२ ॥

मयणा तें साची कही ॥ जय० ॥ सभा मांहे सवि वात ॥ गुण० ॥ में अज्ञानपणे कह्युं ॥ जय० ॥ ते सघळुं मिथ्यात ॥ गुण० ॥ १३ ॥ में तुज दुःख देवा भणी ॥ जय० ॥ कीधो एह उपाय ॥ गुण० ॥ दुःख टळीने सुख थयुं ॥ जय० ॥ ते तुज पुण्यपसाय ॥ गुण० ॥ १४ ॥ मयणा कहे सुणो तातजी ॥ जय० ॥ इहां नहीं तुम वांक ॥ गुण० ॥ जीव सयल वश कर्मने ॥ जय० ॥ कुण राजा कुण रांक ॥ गुण० ॥ १५ ॥ मान तजी मयणा तणी ॥ जय० ॥ राये मनावी माय ॥ गुण० ॥ सज्जन थयां सवि इकमनां ॥ जय० ॥ उलट अंग न माय ॥ गुण० ॥ १६ ॥

अर्थ—एम विचारी राजा मयणाने कहेवा लाग्यो के तें जे कांइ सभा मांहे वात करी ते सर्व साची थइ, अने में अज्ञानपणे जे तुजने कह्युं ते सर्व (मिथ्यात के०) जूठुं हतुं ॥ १३ ॥ जे माटे में तो तुजने दुःख देवा सारु ए उपाय कर्यो हतो, परंतु ते दुःख टळीने जे सुख थयुं ते सर्व तारा पुण्यना पसायथी जाणवुं ॥ १४ ॥ ते सांभळी मयणासुंदरी विनय सहित कहेवा लागी के हे पिताजी ! तमे सांभळो. इहां तमारो वांक कांइ पण नथी. कोण राजा अने कोण रांक ? एटले राजा हो अथवा रांक हो, गमे ते हो, पण आ संसारमां सर्व जीव कर्मने वश छे, सहु कोइ पोतपोतानां करेलां कर्मोने भोगवे छे ॥ १५ ॥ एवां मयणानां वचन सांभळीने राजाने जे प्रथम स्वकर्त्तापणानो अहंकार हतो तेने त्यागी श्रीजिनेश्वरनो धर्म अंगीकार करीने तेणे मयणासुंदरी-नी माताने मनावी. ते वखत सज्जन ते सगां संबंधीनां मन जे जूदां पडी गयां हतां, ते सर्व

एकमनां थयां, तेथी तेमनां मनमां एटलो तो उलट एटले हर्ष उपन्यो के ते तेमनां अंगमां समाइ शकतो नथी ॥ १६ ॥

नयर सयल शणगारीयुं ॥ जय० ॥ चहुटां चोक विशाल ॥ गुण० ॥
घर घर गूडी उछले ॥ जय० ॥ तोरण झाकझमाल ॥ गुण० ॥ १७ ॥
घरे जमाइ महोत्सवे ॥ जय० ॥ तेडी आव्या राय ॥ गुण० ॥ संपूरण
सुख नोगवे ॥ जय० ॥ सिद्धचक्र सुपसाय ॥ गुण० ॥ १८ ॥ नयर मांहे
प्रगट थइ ॥ जय० ॥ मुख मुख एहीज वात ॥ गुण० ॥ जिनशासन
उन्नति थइ ॥ जय० ॥ मयणाए राखी ख्यात ॥ गुण० ॥ १९ ॥ रास
रुडो श्रीपालनो ॥ जय० ॥ तेहनी अग्यारमी ढाल ॥ गुण० ॥ विनय
केहे सिद्धचक्रनी ॥ जय० ॥ सेवा फले ततकाल ॥ गुण० ॥ २० ॥

अर्थ–पछी राजाए समस्त नगरने शणगार्युं, तेमां मोटां चोटां अने चोकने विशालपणे शणगार्यां. घर घरने विषे गुडीउं उछली रही छे, तोरण झाकझमाल बांध्यां छे ॥ १७ ॥ एम मोटे उत्सवे करी राजा पोताने घेर जमाइने तेडी आव्यो. तिहां श्रीपाल कुमर सिद्धचक्रना सुपसाय थकी संपूर्ण सुख नोगवे छे ॥ १८ ॥ पछी उज्जयणी नगरीमां रहेनारां लोकोनां मुख मुखने विषे एहीज वात प्रगट थइ, एटले विस्तार पामी, जे श्री जैनधर्मज जगतमां श्रेयस्कर छे. एवी श्रीजिनशासननी उन्नति थइ. एम मयणाए पोताना मुखमांथी जे वात काढी हती के जीव जे सुख दुःख पामे छे ते सहु पोतानां कर्मानुसारे पामे छे, तेज वातनी ख्याति राखी एटले प्रख्याति करी ॥ १९ ॥ (रुडो के०) रमणीय मनोहर एवो श्रीपाल राजानो रास तेनी अगीयारमी ढाल पूर्ण थइ. श्री विनयविजय उपाध्यायजी कहे छे के श्रीसिद्धचक्रनी सेवा तत्काल फलीभूत थाय छे ॥ २० ॥

॥ चोपाइ ॥

खंड खंड मीठो जिम खंम, श्री श्रीपाल चरित्र अखंड ॥
(श्री) कीर्त्तिविजय वाचकथी लह्यो, प्रथम खंम इम विनये कह्यो ॥ १ ॥

अर्थ—जेम (खंम के०) खांमना (खंम के०) कटका मांहे मीठाश घणी होय, तेम आ रासना खंममां पण मीठाश घणी छे अने आ श्रीपाल राजानुं चरित्र तो अखंम एटले संपूर्ण छे, तेमां ए पहेलो खंम श्रीकीर्त्तिविजय नामा (वाचक के०) उपाध्याय तेमना मुखथी जे प्रमाणे (लह्यो के०) पाम्यो—सांजल्यो, (इम के०) ए प्रमाणेज श्रीविनयविजयजी उपाध्याये कह्यो ॥ १ ॥

॥ इति श्रीमन्महोपाध्यायश्रीकीर्त्तिविजयगणिशिष्योपाध्यायश्रीविनयविजयगणिविरचिते श्रीश्रीपालचरित्रे प्राकृतप्रबंधे श्रीसिद्धचक्रमहिमाधिकारे श्रीपालकुमरमयणासुंदरीपाणिग्रहणे श्रीसिद्धचक्राराधनात् नीरोगत्वप्राप्तिश्रीकमलप्रनामिलनस्वरुयतिकरकथनेत्यादिवर्णनो नाम प्रथमः खंमः समाप्तः ॥ १ ॥ ३०२

॥ इति श्रीश्रीपालचरित्रे बालावबोधे प्रथमः खंमः समाप्तः ॥ १ ॥



॥ श्रीसद्‌गुरुभ्यो नमः ॥

॥ अथ द्वितीयः खंडः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

सिद्धचक्र आराधतां, पूगे वांछित कोड ॥ सिद्धचक्र मुज मन वस्युं, विनय कहे कर जोड ॥१॥ शारद सार दया करी, दीजे वचन विलास ॥ उत्तर कथा श्रीपालनी, कहेवा मन उल्लास ॥ २ ॥ एक दिन रमवा नीकळ्यो, चहुटे कुंवर श्रीपाल ॥ सबल सैन्यशुं परवर्यो, यौवन रूप रसाल ॥ ३ ॥ मुख सोहे पूरण शशी, अर्ध चंद्र सम भाल ॥ लोचन अमिय कचोलडां, अधर अरुण परवाल ॥ ४ ॥

अर्थ—श्रीसिद्धचक्रनुं आराधन करतां थका मनना वांछित कोड सर्व पूर्ण थाय, माटे श्रीविनयविजयजी बे हाथ जोडीने कहे छे के तेज सिद्धचक्र मारा मनमां वस्या ॥ १ ॥ हवे श्रीपाल राजानी (उत्तर के०) आगल कथा कहेवाने मारुं मन उल्लसित थयुं छे, माटे हे (शारद के०) शारदा माता ! तमे मारी उपर (सार के०) प्रधान श्रेयस्कारी दया करीने वचनरचनानुं विलासपणुं आपो ॥ २ ॥ एक दिवसे (सबल के०) मोटा सैन्ये करी परवर्यो थको, यौवन अवस्थावंत तथा रसाल रूप छे जेनुं एवो श्रीपाल कुमर रमवाने माटे चौटामांथी (नीकळ्यो के०) जाय छे ॥ ३ ॥ संपूर्ण पूर्णिमाना चंद्रमा सरखुं तो जेनुं मुख शोभे छे अने अष्टमीना अर्द्ध चंद्रमा समान जेनुं (भाल के०) कपाल शोभे छे, वली लोचन जे नेत्र ते अमृतनां कचोलां सरखां शोभे छे तथा अधर जे होठ ते परवाला सरखा (अरुण के०) लाल वर्णे करी सहित थका शोभे छे ॥ ४ ॥

दंत जिस्या दाडिम कली, कंठ मनोहर कंबु ॥ पुरकपाट परि हृदयतट, भुज भोगल जिम लंबु ॥ ५ ॥ केड लंक केहरि समो, सोवन वन्न शरीर ॥ फूल खरे मुख बोलतां, ध्वनि जलधर गंभीर ॥ ६ ॥ चोक चोक चहुटे मिल्यां, रूपे मोह्यां लोक ॥ महेल गोंख मेडी चडे, नर नारीनां थोक ॥ ७ ॥ मुग्धा पूछे मायने, मा ए कुण अभिराम ॥ इंद चंद के चक्कवी, श्याम राम के काम ॥ ८ ॥ माय कहे महोटे स्वरे, अवर म ऊंखे आल ॥ जाय जमाइ रायनो, रमवा कुंवर श्रीपाल ॥ ९ ॥

अर्थ—तथा जेवी दाडिमनी कलीओ शोभे ते सरखा दांत शोभे छे, कंठ तो मनोहर (कंबु के०) शंखना जेवो शोभे छे, (पुरकपाट के०) नगरना दरवाजाना कमाडनी पेरे जेनुं हृदयतट शोभे छे तथा भोगल सरखी लांबी एवी बे भुजाओ शोभे छे ॥ ५ ॥ केडनो लंक ते केसरी सिंह सरखा शोभे छे, शरीरनो वान सोना सरखो शोभे छे, मुखे बोलतां जाणीए फूल खरी नीचे पडतां होय नहीं ? तेवां वचन मुखमांथी नीकलतां शोभे छे. वली (जलधर के०) मेघ तेना सरखो गंभीर छे (ध्वनि के०) स्वर जेनो एवो श्रीपाल कुमर चौटामांथी चाल्यो जाय छे ॥ ६ ॥ ते श्रीपालना रूप उपरे मोह पाम्यां थकां तेने जोवा माटे चोक चोकने विषे चौटा मांहे घणां लोक एकठां मल्यां छे. वली कोइ एक महेल उपर, कोइ एक गोंख उपर, कोइ मेडी उपर चडीने, एम श्रीपालने जोवा माटे मनुष्य तथा स्त्रीओनां थोके थोक तिहां एकठां थयां छे ॥ ७ ॥ ते समये कोइक (मुग्धा के०) बालिका श्रीपालने जोइने पोतानी माताने पूछे छे के हे माताजी ! आ (अभिराम के०) मनोहर रूपवंत पुरुष ते कोण छे ? इन्द्र छे ? के चंद्र छे ? के चक्रवर्ती छे ? के (श्याम के०) श्रीकृष्ण छे ? के रामचंद्रजी छे ? के कामदेव छे ? ॥ ८ ॥ एवी पोतानी पुत्रीनी वाणी

सांभलीने तेनी माता मोटे स्वरे करी कहेवा लागी के हे वत्स! तुं (अवर के०) वीजां आलपंपाल (म झंखे के०) म बोल, ए तो आपणा राजानो जमाइ श्रीपाल कुमर छे ते रमवाने जाय छे ॥ ए॥

वचन सुणी श्रीपालने, चित्तमां लागी चोंक ॥ धिक सुसरा नामे करी,
मुज ओलखावे लोक ॥ १० ॥ उत्तम आप गुणे सुण्या, मध्यिम वाप
गुणेण ॥ अधम सुण्या माउल गुणे, अधमाधम ससुरेण ॥ ११ ॥

अर्थ–तेनां वचन सांभलीने श्रीपालने पोताना चित्तमां (चोंक के०) चोक लागी, चमक लागी एटले बाण लाग्यानी पेरे विलखो थइ गयो, अने विचारवा लाग्यो जे धिक्कार छे मने के जे ससराना नामे करीने मुजने जगतमां लोक ओलखावे छे ॥ उक्तं च ॥ श्वशुरगृहनिवासः स्वर्गतुल्यो नराणां, यदि वसति विवेकी वासराणि त्रि पंच ॥ दधिमधुघृतलोभा,–न्मासयुग्मं वसेच्चे,–त्स भवति खरतुल्यो मानवो मानहीनः ॥ १ ॥ इति ॥ १० ॥ नीतिशास्त्रमां तो जे पोताने गुणे ओलखाय ते उत्तम कह्या छे; अने जे बापने गुणे करी ओलखाय ते मध्यम कह्या छे; तथा जे (माउल के०) मामाने गुणे करी ओलखाय ते अधम जातिना सांभल्या छे; वली जे श्वशुरने गुणे ओलखाय ते पुरुष अधममां अधम जाणवा ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग जेतश्री ॥ चतुर सनेही मोहना ॥ ए देशी ॥

क्रीडा करी घर आवीयो, चपलचित्त श्रीपालो रे ॥
उच्चक मन देखी करी, वोलावे पुण्यपालो रे ॥ क्रीडा० ॥ १ ॥

अर्थ–एम चपलचित्त थको श्रीपाल कुंवर क्रीडा करीने पोताने घेर आव्यो, तेनुं (उच्चक के०) उदास मन देखी करीने पुण्यपाल नामे मामो ससरो वोलावे छे ॥ १ ॥

राज कोणे आज रीसव्या, कोणे लोपी तुम आण रे ॥ दीसो गे कांइ दूमणा, तुम चरणे अम प्राण रे ॥ क्रीडा० ॥ २ ॥ चित्त चाहो तो आपणुं, लीजे चंपाराज रे ॥ गम प्रयाणे चालीए, सबल सैन्य लइ साज रे ॥ क्रीडा० ॥ ३ ॥ कुंवर कहे सुसरा तणे, बले न लीजे राज रे ॥ आप पराक्रम जिहां नहीं, ते आवे कुण काज रे ॥ क्रीडा० ॥ ४ ॥ तेह जणी अमे चालशुं, जोशुं देश विदेश रे ॥ ज्जुजाबले लखमी लही, करशुं सकल विशेष रे ॥ क्रीडा० ॥५॥ माय सुणी आवी कहे, हुं आवीश तुज साथ रे ॥ घडीय न धीरुं एकलो, तुंहीज एक मुज आथ रे ॥क्रीडा०॥६॥

अर्थ–के हे राजन् ! आज तमने कोइए रीसव्या छे ? अथवा कोइए तमारी आज्ञा लोपी छे के जे थकी तमे कांइक दूमणा देखाओ छो ? पण तमारे चरणे अमारा प्राण छे, माटे जे होय ते खरेखरुं अमोने कहो ॥ २ ॥ जो तमारा चित्तमां चाहना होय तो इहांथी सबल एटले मोटा सैन्यनो साज लइने चढे प्रयाणे चालीए, अने आपणुं चंपानगरीनुं राज्य लइ लइए ॥ ३ ॥ ते सांजली कुंवर बोल्यो के ससराने बले राज्य लइए नहीं, कारण के जिहां पोतामां पराक्रम न होय तिहां पारकुं पराक्रम ते शा काममां आवे ? ॥ दोहा ॥ जा नरमें पराक्रम नहीं, ता नर पशु समान ॥ बाल खेलावे ताहकुं, जैसे लिखित चित्राम ॥ १ ॥ खेती पांती विनति, वांसा केरी खज्ज ॥ हाथे तुरि न पलाणिया, ए पांचे नावे कज्ज ॥ २ ॥ ४ ॥ ते जणी अमे इहांथी चालशुं, ते देश विदेश जोशुं, अने तिहां पोतानी ज्जुजाना बलथी लक्ष्मी पेदा करीने पछी चित्त मांहे जे धार्युं छे ते सर्व कार्यविशेष करशुं ॥ ५ ॥ ते वात श्रीपालनी माताए सांजली, ते वारे आवीने

रास रच्यो श्रीपालनो, तेहने बीजे खंडे रे ॥
प्रथम ढाल विनये कही, धर्म उदय थिति मंडे रे ॥ क्रीडा० ॥ १२ ॥

अर्थ—ए श्रीपालना रासनी रचना करी, तेनी बीजा खंडने विषे पहेली ढाल श्रीविनयविजय उपाध्यायजीए कही. कवीश्वर कहे छे के हे भव्यजीवो! जे वारे स्थितिनो परिपाक थाय, ते वारे ते स्थितिपरिपाकना उदयथी जीव धर्ममां मंडे एटले जोडाय, धर्ममां प्रवर्त्ते ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

हवे मयणा इम विनवे, तुमशुं अविहड नेह ॥ अलगी क्षण एक नवि रहुं, जिहां गया तिहां देह ॥ १ ॥ अग्नि सहेतां सोहिलो, विरह दोहिलो होय ॥ कंत विछोही कामिनी, जलण जलंती जोय ॥ २ ॥

अर्थ—हवे मयणासुंदरी आवीने आवी रीते विनंति करे छे जे हे स्वामिन् ! तमारी साथे मारे अविचल स्नेह छे, माटे एक क्षणमात्र पण हुं तमाराथी अलगी रहुं नहीं. जेम जे स्थानके छाया होय ते स्थानके शरीर पण होय. ए दृष्टांते जिहां तमारो देह हशे, तिहांज तमारा देहनी छायारूप हुं रहीश ॥यतः॥ यत्र त्वं तत्र मे प्राणाः, शरीरं मम केवलं ॥ धारितं प्रेमयोगेन, वारिणा कमलं यथा ॥ १ ॥ १ ॥ हे स्वामिन् ! स्त्रीउने अग्नि सहन करवो पडे ते सुलभ छे, परंतु स्वामीनो विरह खमवो पडे ते महा दोहिलो होय छे. कंत जे भर्त्तार तेथी विछोह पामेली एवी जे (कामिनी के०) स्त्री ते (जलण जलंती के०) बलता अग्नि सरखी (जोय के०) जोवी, एटले अग्निनी परे बलती होय एवी जाणवी ॥ यतः ॥ गिरिको गिरनो विषथें मरनो, बरनो सखि पावकको जरनो ॥ दरिया परनो हरिसें लरनो, असिधार भलो जियको हरनो ॥ करीशुं अरनो धरनी गिरनो, हरसें करनो रनमें जरनो ॥ कवि मान कहे सबही सुभलो, पण एक बुरो पियु वीछरनो ॥ १ ॥ इति ॥ २ ॥

में सचित्त वस्तु खावानो परिहार कर्यो, तथा सुवाने माटे संथारो पण निःकेवल एक पृथ्वी उपरज करीश, परंतु गोदडा आदिक बिछाना उपर नहीं सुउं. वली स्नान करवुं तथा शणगार सजवो, ते पण में आजथी तज्यां एटले तेनो हुं आजथी त्याग करुं छुं ॥ यतः ॥ कुंकुमं कज्जलं कामः, कुसुमं कंकणं तथा ॥ गते भर्त्तरि नारीणां, ककाराः पंच दुर्लभाः ॥ १ ॥ इति ॥ २ ॥

ते दिन वली कदी आवशे, जिहां देखीश पियु पाय रे॥ विरहनी वेदना वारशुं, सिद्धचक्र सुपसाय रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ सज्जन बोलावी इणी परे, लेइ ढाल कृपाण रे ॥ चंद्र नाडी स्वर पेसते, कुंवरे कीध प्रयाण रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ देश पुर नगरनां नवनवां, जोतो कौतुक रंग रे ॥ एकलो सिंह परे म्हालतो, चढ्यो एक गिरिशृंग रे ॥ वा० ॥ ५ ॥

अर्थ—हे प्रभु ! ते दिवस वली क्यारे आवशे ? के जे दिवसे हुं मारा स्वामीनां चरणकमल देखीश ! पण ए सर्व मारी विरहरूप वेदनाने श्री सिद्धचक्रना सुपसाय थकी (वारशुं के०) निवारण करशुं ॥ ३ ॥ एवी रीते सज्जनने बोलावी एटले तेमनी पासेथी रजा लइ पाछां वालीने हाथमां ढाल तथा कृपाण एटले तरवार लइने चंद्र नाडीनो स्वर पाछो पेसते एटले सूर्य नाडी वहेते थके श्रीपाल कुमरे परदेशे प्रयाण कीधुं ॥ उक्तं च ॥ पूजाद्रव्यार्जनोद्वाहे, दुर्गादिसरिदाक्रमे ॥ गमागमे जीविते च, गृहे क्षेत्रादिसंग्रहे ॥ १ ॥ क्रयविक्रयणे वृष्टौ, सेवाकृषिविशेषयोः ॥ विद्यापट्टाभिषेकादौ, शुभार्थे च शुभः शशी ॥ २ ॥ प्रश्ने प्रारंभणे वापि, कार्याणां वामनासिका ॥ पूर्णवायोः प्रवेशश्चे,—त्तदा सिद्धिरसंशयम् ॥ ३ ॥ तक्रं तैलं गुडं क्षारं, क्षुद्रं दुग्धस्य भोजनं ॥ मुंडनं मैथुनं मद्यं, वर्जयेत् गमनेऽहनि ॥ ४ ॥ इति ॥ ४ ॥ हवे आगल चालतां मार्गमां जे जे देश, पुर, नगर आवे छे तेना नवनवा (रंग के०) प्रकारनां कौतुक जोतो थको अथवा नव-

करीने मने एक विद्या आपी छे तेने साधवानो में घणोए उद्यम कर्यो, पण कार्य सिद्ध न थयुं ॥ ए ॥

उत्तरसाधक नर विना, मन रहे नहीं ठाम रे ॥ तिणे तुम ए करुं विनति, अवधारीए स्वाम रे ॥ वा० ॥ १० ॥ कुंवर कहे साध विद्या सुखे, मन करी थिर थोभ रे ॥ उत्तरसाधक मुज थका, करे कोण तुज खोभ रे ॥ वा० ॥ ११ ॥ कुंवरना सहायथी ततखिणे, विद्या थइ तस सिद्ध रे ॥ उत्तम पुरुष जे आदरे, तिहां होये नव निद्ध रे ॥ वा० ॥ १२ ॥ कुंवरने तेणे विद्याधरे, दीधी औषधि दोय रे ॥ एक जलतरणी अवरथी, लागे शस्त्र नहीं कोय रे ॥ वा० ॥ १३ ॥

अर्थ—कारण के उत्तरसाधक मनुष्य कोइ मारी पासे न होवाथी मारुं मन स्थिर रहेतुं नथी, माटे तमने एक विनंति करुं छुं ते हे स्वामिन्! तमे अवधारो ॥ यतः ॥ यंत्रमेको द्वयोर्मंत्रं, त्रिभिर्गीतं चतुःपथं ॥ कृषिं च पंचभिः कुर्या,—त्संग्रामो बहुभिर्जनैः ॥ १ ॥ इति ॥ १० ॥ कुमर कहेवा लाग्यो के तारुं मन स्थिर थोभ करीने सुखे विद्या साधन कर. हुं उत्तरसाधक थका कोण तुजने क्षोभ करनार छे ? ॥ यतः ॥ यदुत्साही सदा मर्त्यः, पराभवति यज्जनान् ॥ यदुद्धतं वदेद्वाक्यं, तत्सर्वं वित्तजं बलं ॥ १ ॥ विजेतव्या लंका चरणतरणीयो जलनिधिः, विपक्षः पौलस्त्यो रणभुवि सहायाश्च कपयः ॥ तथाप्याजौ रामः सकलमवधीद्राक्षसकुलं, क्रियासिद्धिः सत्त्वे वसति महतां नोपकरणे ॥ २ ॥ इति ॥ ११ ॥ हवे कुमरनी सहाय थकी तत्क्षण एटले तेज क्षणमां ते विद्या तेने सिद्ध थइ. जे माटे उत्तम पुरुष जे कार्य आदरे, तिहां नवे निधि प्रगट थाय ॥ १२ ॥ पछी ते विद्याधरे प्रसन्न थइने कुमरने बे औषधिओ आपी. तेमां एक जलतरणी एटले अगाध पाणीमां पडे तोपण बूडे नहीं, अने बीजी (अवर के०) बीजा पुरुषथी कोइ शस्त्र लागे नहीं ॥ १३ ॥

करीने मने एक विद्या आपी छे तेने साधवानो में घणोए उद्यम कर्यो, पण कार्य सिद्ध न थयुं ॥ ए ॥

उत्तरसाधक नर विना, मन रहे नहीं ठाम रे ॥ तिणे तुम ए करुं विनति, अवधारीए स्वाम रे ॥ वा० ॥ १० ॥ कुंवर कहे साध विद्या सुखे, मन करी थिर थोन्न रे ॥ उत्तरसाधक मुज थका, करे कोण तुज खोन्न रे ॥ वा० ॥ ११ ॥ कुंवरना सहायथी ततखिणे, विद्या थइ तस सिद्ध रे ॥ उत्तम पुरुप जे आदरे, तिहां होये नव निद्ध रे ॥ वा० ॥ १२ ॥ कुंवरने तेणे विद्याधरे, दीधी औपधि दोय रे ॥ एक जलतरणी अवरथी, लागे शस्त्र नहीं कोय रे ॥ वा० ॥ १३ ॥

अर्थ—कारण के उत्तरसाधक मनुष्य कोइ मारी पासे न होवाथी मारुं मन स्थिर रहेतुं नथी, माटे तमने एक विनंति करुं छुं ते हे स्वामिन्! तमे अवधारो ॥ यतः ॥ यंत्रमेको द्वयोर्मंत्रं, त्रिभिर्गीतं चतुःपथं ॥ कृपिं च पंचभिः कुर्या,—त्संग्रामो बहुभिर्जनैः ॥ १ ॥ इति ॥ १० ॥ कुमर कहेवा लाग्यो के तारुं मन स्थिर थोन्न करीने सुखे विद्या साधन कर. हुं उत्तरसाधक थका कोण तुजने क्षोभ करनार छे ? ॥ यतः ॥ यद्युत्साही सदा मर्त्यः, पराभवति यज्जनान् ॥ यद्युद्धतं वदेद्वाक्यं, तत्सर्वं वित्तजं बलं ॥ १ ॥ विजेतव्या लंका चरणतरणीयो जलनिधिः, विपक्षः पौलस्त्यो रणभुवि सहायाश्च कपयः ॥ तथाप्याजौ रामः सकलमवधीद्राक्षसकुलं, क्रियासिद्धिः सत्त्वे वसति महतां नोपकरणे ॥ २ ॥ इति ॥ ११ ॥ हवे कुमरनी सहाय थकी तत्क्षण एटले तेज क्षणमां ते विद्या तेने सिद्ध थइ. जे माटे उत्तम पुरुष जे कार्य आदरे, तिहां नवे निधि प्रगट थाय ॥ १२ ॥ पछी ते विद्याधरे प्रसन्न थइने कुमरने बे औषधिउं आपी. तेमां एक जलतरणी एटले अगाध पाणीमां पडे तोपण बूडे नहीं, अने बीजी (अवर के०) बीजा पुरुषथी कोइ शस्त्र लागे नहीं ॥ १३ ॥

कुंवर कहे छे के मारे तो एनो खप नथी, फोकट भार कोण उपाडे ? तोपण तेणे घणी (मनोहार के०) आजीजी करीने अल्पमात्र थोडुंक कुंवरना (अंचल के०) छेडामां बांध्युं ॥ १८ ॥

अनुक्रमे कुंअर आवीयो, भरुअच नयर मझार रे ॥ हेम खरची सजाइ करी, भलां वस्त्र हथियार रे ॥ वा० ॥ १९ ॥ सोवने मढीय ते औषधि, बांधी दोय निज बांहि रे ॥ बहुविध कौतुक देखतो, फरे भरुअच मांहि रे ॥ वा० ॥ २० ॥ खंड बीजो एह रासनो, बीजी ए तस ढाल रे ॥ विनय कहे धर्मथी सुख हुए, जेम राय श्रीपाल रे ॥ वा० ॥ २१ ॥

अर्थ—हवे कुंवर तिहांथी आगल चाल्यो. ते अनुक्रमे भरुअच नगरने विषे आव्यो. तिहां (हेम के०) सुवर्ण वेच्युं, तेमांथी पोतानी खरचीनी सजाइ सर्व करी सुंदर वस्त्र तथा हथियारो वेचातां लीधां ॥ १९ ॥ तथा सोनानुं तावित करावी तेमां ते बन्ने औषधिउ मढीने पोतानी (बांहि के०) भुजाए बांधीने देवकुमरनी परे स्वेच्छाए घणा प्रकारनां कौतुक देखतो थको भरुअच नगरमां फरे छे ॥ २० ॥ ए श्रीपालना रासनो बीजो खंड तेनी ए बीजी ढाल पूर्ण थइ. श्रीविनयविजय उपाध्यायजी कहे छे के धर्मना प्रभावथी जीवने सुख थाय. जेम श्रीपाल राजाने सुख थयुं तेम जाणी लेवुं ॥ यतः ॥ ग्रामो नास्ति कुतः सीमा, भार्या नास्ति कुतः सुतः ॥ प्रज्ञा नास्ति कुतो विद्या, धर्मो नास्ति कुतः सुखम् ॥ १ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

कोसंबी नयरी वसे, धवल शेठ धनवंत ॥
लोक अनर्गल धन भणी, नाम कुबेर कहंत ॥ १ ॥

अर्थ—हवे अन्य अधिकार कहे छे. एवा अवसरने विषे कोसंबी नगरीनो वसनारो महा धन-

वंत एवो धवल नामे एक शेठ छे, तेनी पासे अनर्गल द्रव्य छे, माटे लोक तेने इंद्रनो भंडारी कुबेर एवे नामे करी प्रसिद्धपणे (कहंत के०) कहे छे ॥ १ ॥

शकट ऊंट गाडां भरी, करियाणां बहु जोडी ॥ ते भरुअचे आवीयो, लाभ लहे लख कोडि ॥ २ ॥ वस्तु सकल वेची तिणे, अवर वस्तु बहु लीध ॥ जलवट प्रवहण पूरवा, सबल सजाइ कीध ॥ ३ ॥ एक जुंग वाहण कीयुं, कुआ थंभ जिहां सठ ॥ कुआ थंभ सोले सहित, अवर जुंग अडसठ ॥ ४ ॥ वडसफरी वाहण घणां, वेडा वेगड द्रोण ॥ शिल्ल खुर्प आवर्त्त इम, भेद गणे तस कोण ॥ ५ ॥

अर्थ–ते शेठ (शकट के०) मोटां गाडां, ऊंटनी पोठो अने गाडां गाडलां भरी तेमां (बहु के०) घणी जातिनां करियाणां (जोडी के०) लावीने भरुअच बंदरमां आव्यो छे. तिहां लावेली वस्तुउं सर्वे वेचीने तेमां लाखो क्रोडोनो लाभ लेतो हवो ॥ २ ॥ एम ते शेठे सर्व वस्तुउं वेचीने फरी बीजी बहु प्रकारनी वस्तुउं लीधी. वली पण धन पामवाना लोभे करी परद्वीपे जवा माटे जलमार्गे प्रवहण पूरवा माटे (सबल के०) मोटी वहाणो बनाववानी सामग्री कीधी ॥ ३ ॥ तेणे एक जुंग जातिनुं मोटुं वहाण तैयार कीधुं, जेना साठ कुआ थंभा छे, तथा सोल सोल कुआ थंभाए करी सहित एवां (अवर के०) बीजां जुंग जातिनां अडसठ वहाण कराव्यां ॥ ४ ॥ वली (वडसफरी के०) मोटी सफरना करनारां एवां घणां एटले एकसो वहाण कराव्यां, तथा (वेगड के०) वेगडी जातिनां (वेडा के०) वहाण एकसो आठ कराव्यां, तथा द्रोणमुख जातिनां चोराशी वहाण कराव्यां, तथा शिल्प जातिनां चोपन वहाण कराव्यां, तथा खुर्प जातिनां खुरपाने आकारे होय तेवां पांत्रीश वहाण कराव्यां छे, तथा आवर्त्त जातिनां जे भमरीमां पडे

तोपण नावे नहीं एवां पचास वहाणो कराव्यां छे, एम अनेक जातिनां वहाण कराव्यां छे. तेना भेद कोण गणी शके ? अर्थात् ते वहाणोनुं वर्णन करी शकाय नहीं ॥ ५ ॥

इणी परे प्रवहण पांचसें, पूर्यां वस्तु विशेष ॥ बंदर मांहे आणीयां, पामी नृपआदेश ॥ ६ ॥ मालिम पट पुस्तक जुए, सुखाणी सुखाण ॥ ध्रू अधिकारी ध्रू तणी, दोरी भरे निसाण ॥ ७ ॥ करे किराणी साचवण, नाखुदा ले न्याउं ॥ वायु परखे पंजरी, नेजामा निज दाउं ॥ ८ ॥ खरी मसागति खारुआ, सज्ज करे सढ दोर ॥ हलक हलेसां हालवे, बहु बेठा बिहुं कोर ॥ ९ ॥ पंचवर्ण ध्वज वावटा, शिर करे चामर छत्र ॥ वाहण सवि शणगारीयां, मांहे विविध वाजित्र ॥ १० ॥

अर्थ–ए रीते श्रीपालना चरित्रमां एकंदर पांचसें वहाणनो मेल कह्यो छे, ते विशेष वस्तुए करी (पूर्यां के०) भर्यां. पछी राजानो आदेश पामीने वहाणोने बंदरमां लाव्या ॥ ६ ॥ वली ते वहाणने विषे जे मालिम लोक छे ते पांजरीए बेठा बेठा पट तथा पुस्तक जुवे छे, वली सुखाणी लोक सुखाणने संभाले छे, ध्रू तारो जोवाना अधिकारी ते ध्रू तारानीज खबर राखे छे, तथा निशानी पुरुषो छे ते निशान तपासे छे, एटले वहाणना मुख आगल दोरी बांधी भरुदा नाखीने निशानी भरे छे, ते धरतीनी माटीनी शुद्धि तपासवा सारु तथा पाणी तागुं छे के उंडुं छे तेनो थाग पामवा माटे पाणीनो सुमार काढी रह्या छे ॥ ७ ॥ कराणीउं मालनी साचवण करे छे, तथा जे नाखुदा लोक छे ते सढ प्रमुख अनेक कामना न्याय लीए छे, वली पांजरीउं वायुनी परीक्षा करे छे, अने (नेजामा के०) पोरायत जे छे ते (निज दाउं के०) पोताने योग्य काम करी रह्या छे ॥ ८ ॥ वली (खरी मसागति के०) खरेखरी महेनतना करनारा एवा खारुआ लोक

जे छे ते सढ तथा दोरडाने सज्ज करे छे, अने (हलक के०) हलकारा लोक जे छे ते हलेसां हलावता थका (बहु के०) घणा जनो (विहुं कोर के०) बेहु बाजुए कौतुके बेठा छे ॥ ए ॥ वली वहाणना शिर उपर पंचरंगी ध्वजाउ अने वावटाउ उभी रह्या छे, त्यां कवि उत्प्रेक्षा करे छे के जाणीए वहाणोनां मस्तक चामर छत्रे करी विराजित थयां होय नहीं ! एवां थकां ते वहाण शोभे छे. एवी रीते सर्वे वहाण शणगार्यां. वली ते वहाण मांहे विविध प्रकारनां वाजित्र वागी रह्यां छे ॥ १० ॥

सात भूंइ वाहण तणी, निविड नालिनी पंति ॥ वयरीनां वाहण तणी, करे खोखरी खंति ॥ ११ ॥ सुभट सनूरा सहस दश, वडा वडा झूंझार ॥ बेठा चिहुं दिशि मोरचे, हाथ विविध हथियार ॥ १२ ॥ इंधण जल संबल ग्रही, बहु व्यापारी लोक ॥ सोहे बेठा गोंखडे, भूर दीये धन रोक ॥ १३ ॥ हवे नांगर उपाडवा, वडा जुंगनी जाम ॥ नाल धडूकी नाल सवि, हुइ धडोधड ताम ॥ १४ ॥

अर्थ–हवे वहाणमां सात भूमि छे, तिहां एकेकी भूमिए बराबर सरखे सरखी (निविड के०) घट एवी (नालिनी के०) तोपो एटले नालोनी (पंति के०) हारो मूकेली छे. ते केवी छे ? तो के (वयरीनां के०) शत्रुनां वहाण एटले चोरीयानां वहाण तेमनां मननी (खंति के०) होंश तेने खोखरी करी नाखे छे ॥ ११ ॥ वली ते वहाणोमां (सनूरा के०) नूरे एटले तेजे करी सहित एवा दश हजार सुभट छे, ते सर्वे मोटा मोटा झूंझार पुरुषो छे, ते सहु वहाणोनी चार दिशाए मोरचाउ उपर हाथमां विविध प्रकारनां हथियारो लइ तेणे करी शोभता थका बेठा छे ॥ १२ ॥ तेमज (इंधण के०) लाकडां एटले सरपण, (जल के०) पाणी अने (संबल के०)

नानुं लइने घणा व्यापारी लोक ते वहाणोना गोंखने विषे बेठा थका (सोहे के०) शोभे छे, ते सर्वे नूरनुं धन धवल शेठने रोकडुं चूकवी आपे छे ॥ १३ ॥ हवे वहाणनां नांगर उपाडवाने अर्थे (जाम के०) जे वारे मोटा जुंग नामे वहाणनी (नाल के०) तोप (धडूकी के०) बूटी, ते वारे सर्वे वहाणोनी तोपो बूटी, तेथी तिहां नालोनो समकाले धडोधड शब्द थयो ॥ १४ ॥

सवि वाहणना नांगरी, करे खराखर जोर ॥ पण नांगर हाले नहीं, सबल
मच्यो तव सोर ॥ १५ ॥ धवल शेठ झांखो थयो, चिंता चित्त न माय ॥
शीकोतर पूछण गयो, हवे किम करवुं माय ॥ १६ ॥ शीकोतर कहे शेठ
सुण, वाहण थंभ्यां देवि ॥ छोडे बत्रीश लक्षणा, पुरुष तणो बलि लेवि ॥ १७ ॥

अर्थ—तिहां सर्वे वहाणोना नांगरी, जे नांगरना उपाडनारा पुरुषो, ते नांगरो उपाडवा माटे खरेखरुं जोर करे छे, परंतु नांगरो लगार मात्र पण हालतां नथी, तेथी तिहां (सबल के०) घणो मोटो सोर बकोर मची रह्यो ॥ १५ ॥ ते जोइ धवल शेठ झांखो थयो, तेना चित्त मांहे चिंता समाती नथी एवी अगणित चिंता उपनी. ते वारे शीकोतर माताने पूछवा गयो के हे माताजी ! हवे मारे केम करवुं ? ॥ १६ ॥ ते वारे शीकोतर माताना पूजारा दाव जोइने कहेवा लाग्या के हे शेठ ! तुं सांभल, आ तारां वहाण कोइ देवताए थंभाव्यां छे, ते ज्यारे बत्रीश लक्षणा पुरुषनुं बलिदान लेशे, त्यारे तारां वहाणने बूटां करशे ॥ १७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ श्रेणिक मन अचरिज थयो, हुं वडभागी राजा रे ॥ ए देशी ॥

धवल शेठ लेइ भेटणुं, आव्यो नरपति पाय रे ॥
कहे एक नर मुजने दीयो, जेम बलि बाकुल थाय रे ॥ धवल० ॥ १ ॥

अर्थ—ते सांभली धवल शेठ अमूल्य भेटणुं लइने भरुअचना राजा पासे आवी कहेवा लाग्यो

के मुजने एवो एक बत्रीश लक्षणो पुरुष आपो के जेम तेनो वलि वाकुल देवीनी आगल थाय, एटले देवीने हुं बलि बाकुल आपुं ॥ १ ॥

राय कहे नर ते दीयो, सगो नहीं जस कोय रे ॥ बलि करजो ग्रही तेहने,
जे परदेशी होय रे ॥ धवल० ॥ २ ॥ सेवक चिहुं दिशि शेठना, फरे
नयरमां जोता रे ॥ कुंवर देखी शेठने, वात कहे समहोता रे ॥ धवल०
॥३॥ दीठो बत्रीश लक्षणो, पुरुष एक परदेशी रे ॥ कहो तो झाली आणीए,
शुद्धि न को तस लेशी रे ॥ धवल० ॥ ४ ॥ धवल कहे आणो इहां, म करो
घडीय विलंब रे ॥ बलि देइने चालीए, वहार नहीं तस बुंब रे ॥ धवल० ॥५॥
सुभट सहस दश सामटा, आवे कुंवरनी पासे रे ॥ अभिमानी उद्धतपणे,
कडुआं कथन प्रकाशे रे ॥ धवल० ॥ ६ ॥

अर्थ–ते सांभली राजाए कह्युं के हे शेठ ! जेनो कोइ सगो संबंधी मारा नगरमां न होय तथा वली जे परदेशी होय ते पुरुष में तमने (दीयो के०) दीधो, माटे तेने (ग्रही के०) पकडीने तेनुं बलिदान करजो ॥ २ ॥ एवी राजानी आज्ञा पामीने धवल शेठना सेवक भरुअच नगरमां चारे दिशाए तेवा माणसने जोता फरे छे. एटलामां श्रीपाल कुमरने देखीने सेवक पुरुष (समहोता के०) हर्ष पामता थका आवीने शेठ प्रत्ये वात कहेता हवा ॥ ३ ॥ के हे शेठ ! अमे एक बत्रीश लक्षणो परदेशी पुरुष दीठो छे, तेनी शुद्धि लेनार कोइ पण नथी, माटे तमे कहो तो तेने पकडी लावीए ॥ ४ ॥ एवुं सांभली धवल शेठ सेवकोने कहेवा लाग्यो के जाओ, तेने अहीं पकडी लावो. ए काममां एक घडीनो पण विलंब म करो, केमके आपणे ते पुरुषनुं बलिदान आपीने तुरत इहांथी चालीए. तेनी (वहार के०) वहार करनार एटले संभाल लेनार पण कोइ नथी, तथा बुंब पण कोइ सांभलनार

नथी ॥ ५ ॥ एवो शेठनो हुकम थवाथी दश हजार सुभटो सामटा मलीने कुंवरनी पासे आव्या. ते अभिमाने करी (उद्धतपणे के०) उल्लंठपणे कटुक वचन कुंवर आगल प्रकाशवा लाग्या ॥ ६ ॥

ठठ आव्युं तुज आउखुं, धवल धिंग तुज रूठो रे ॥ बलि करशे तुजने
हणी, म कर मान मन जूठो रे ॥ धवल० ॥ ७ ॥ बलि नवि थाये सिंहनो,
मूरख हैये विमासो रे ॥ धवल पशुनो बलि थशे, वचने कांइ विरांसो रे ॥
धवल० ॥ ८ ॥ वचन सुणी तस वांकडां, शेठने सुभट सुणावे रे ॥ शेठ
विनवी रायने, वहोलुं कटक अणावे रे ॥ धवल० ॥ ९ ॥ एकलडो दोय
सैन्यशुं, जव अतुली बल जूझे रे ॥ चहुटा वच्चे धूंखल मच्यो, कायर
हियडां ध्रूजे रे ॥ धवल० ॥ १० ॥

अर्थ—के अरे ! ठठ, हवे तारुं आयुष्य आवी पहोंच्युं छे, केमके अमारो स्वामी जे धवल धिंग ते तारा उपर रूठ्यो छे, माटे तुजने हणीने बलिदान करशे. ए वातमां जूठुं मानवापणुं तुं तारा मनमां कांइ पण म करजे. एम म कहेजे के मने कह्युं नहीं. अमे क्षत्री जाणी तुजने कह्युं छे ॥ ७ ॥ ते वचन सांभली कुंवर कहेवा लाग्यो के अरे मूर्खाओ ! तमारा हैयामां कांइ विमासण करो के केसरी सिंहनुं कोइ ठेकाणे बलिदान थतुंज नथी, पण तमे जे तमारो स्वामी धवल कहो छो ते पशु जाति छे, माटे तेनुं बलिदान थशे. एमां कांइ संदेह आणशो नहीं. फोकट वचने करीने कां (विरांसो के०) बिगाडो छो ? ॥ ८ ॥ एवां कुंवरनां वांकां वचन सांभलीने ते सर्व वचन सुभटोए जइ शेठने संभलाव्यां, ते वारे शेठे वली राजाने विनंति करीने राजानुं (वहोलुं के०) घणुं मोटुं कटक (अणावे के०) अणाव्युं एटले मंगाव्युं ॥ ९ ॥ हवे अतुल बलनो धरनारो एवो कुंवर एकलोज जे वारे बेहु सैन्यनी साथे जूझवा लाग्यो, ते वारे तिहां चौटानी वचमां

धूंखल धींगाणुं मची रह्युं. ते समये कायर पुरुषोनां हैयां तो थर थर धूजवा लाग्यां ॥ १० ॥

कुंत तीर तरवारना, जे जे घाले घाय रे ॥ कुंवर अंगे लागे नहीं, औषधिने महिमाय रे ॥ धवल० ॥ ११ ॥ कुंवर ताकी जेहने, मारे लाठी लोढे रे ॥ लहबहता लांबा थइ, ते पुहवीए पोढे रे ॥ धवल० ॥१२॥ जेंसा परे रणखेतमां, चिहुं दिशि धिंगरू धाय रे ॥ जूडया जोन्ह वेला जिस्या, शिंगे विलगा जाय रे ॥ धवल० ॥१३॥ मस्तक फूटां केइनां, पड्या केइना दांत रे ॥ केइ मुखे लोही वमे, पडी सुन्नटनी पांत रे ॥ धवल० ॥ १४ ॥ केइ पेठा हाटमां, केइ पोलमां पेठा रे ॥ केइ दांते तरणां दइ, गलिया थइने बेठा रे ॥ धवल० ॥ १५ ॥

अर्थ–हवे ते सुन्नटो तिहां (कुंत के०) जालां, तीर कामठां अने तरवारना जे जे घाव (घाले के०) नाखे छे, ते सर्व औषधिना महिमा थकी कुंवरने अंगे लागता नथी ॥ ११ ॥ हवे कुंवर जे पुरुषने ताकीने लाठी अने लोढे करी मारे, ते वारे ते (लहवहता के०) लथडता लवता लवता लांबा थइने पृथ्वीने विषे पोढी जाय ॥ १२ ॥ जेम (जेंसा के०) पाडाउ क्षेत्रमां लडे, ते वारे चारे दिशाए दोडादोड करे, तेथी ठवर प्रमुखना वेला तेना शिंगडांमां वलगता जाय, तेम आ रणक्षेत्रमां पण पाडानी परे चारे दिशाए (धिंगरू के०) जोरावर योद्धा (धाय के०) दोडे छे. ते वेला सरखा हलका योद्धाने जुडी नाखे छे, एटले ठवरना वेला जेम पाडाना शिंगडांमां वलगता जाय, तेम इहां जोरावर योद्धानी आगल हलका योद्धाना हवाल थाय छे ॥ १३ ॥ त्यां केटलाएक सुन्नटोनां मस्तक फूट्यां, केटलाएकना दांत पडी गया, कोइना मुख थकी लोही वमवा लाग्युं. ए रीते सुन्नटोनी (पांत के०) हार पडती हवी ॥ १४ ॥ केटलाक सुन्नट नासीने हाटमां

नासी गया, कोइएक पोलमां पेठा, केटलाएक दांते (तरणां के०) तृण प्रमुख देइने बूव्या, केटलाएक गलिया बलदनी पेरे थइने बेसी रह्या ॥ १५ ॥

केइ कहे कायर अमे, केइ कहे अमे रांक रे ॥ केइ कहे मारो रखे, नथी अमारो वांक रे ॥ धवल० ॥ १६ ॥ केइ कहे पेटारथी, अशरण अमे अनाथ रे ॥ मुखे दीये दश अंगुली, दे वली आडा हाथ रे ॥ धवल० ॥ १७ ॥ धवल शेठ ते देखतां, आवी लाग्यो पाय रे ॥ देवसरूपी दीसो तुमे, करो अमने सुपसाय रे ॥ धवल० ॥ १८ ॥ महिमानिधि महोटा तुमे, तुम बल शक्ति अगाध रे ॥ अविनय कीध अजाणते, ते खमजो अपराध रे ॥ धवल० ॥ १९ ॥ अवधारो अम विनति, करो एक उपगार रे ॥ थंभ्यां प्रवहण तारवो, उतारो दुःख पार रे ॥ धवल० ॥ २० ॥

अर्थ—केइक सुभट कहेवा लाग्या के हे स्वामिन् ! अमे कायर छीए, केइक कहे छे के अमे रांक छीए, केइक कहे छे के रखे अमने मारता, अमारो कांइ वांक नथी ॥ १६ ॥ केइक कहे छे के अमे पेटार्थी छीए, अमने कोइनुं शरण नथी, अमे अनाथ छीए. केइके तो मुखे दश आंगलीउं दीधी, वली केइके आडा हाथ दीधा ॥ १७ ॥ धवल शेठ ते कृत्य देखतो थको आवीने कुमरने पगे लाग्यो, अने कहेवा लाग्यो के हे स्वामिन् ! तमे तो कोइ देवस्वरूपी देखाव छो, माटे अमने रुडो पसाय करो ॥ १८ ॥ हे महाराज ! तमे तो मोटा महिमाना (निधि के०) भंडार छो, तमारुं बल अने शक्ति तेनो पार आवे नहीं एवी अगाध छे, माटे हे स्वामिन् ! में जे अजाणतां थका तमारो अविनय कीधो ते मारो अपराध तमे खमजो ॥ १९ ॥ अमारी विनंति

अवधारीने एक उपकार करो, जे अमारां वहाण थंभ्यां पड्यां छे तेने तारी आपो. ए दुःखरूप समुद्रथी अमने पार उतारो ॥ २० ॥

कुंअर कहे ए कामनुं, शुं देशो मुज भाडुं रे ॥ शेठ कहे लख सोनैया, खूतुं काढो गाडुं रे ॥ धवल० ॥ २१ ॥ सिद्धचक्र चित्तमां धरी, नव पद जाप न चूके रे ॥ वरु वाहण उपर चढी, सिंहनाद ते मूके रे ॥ धवल० ॥ २२ ॥ जे देवी दुशमन हती, दुष्ट गइ ते दूर रे ॥ वहाण तर्यां कारज सर्यां, वाजे मंगल तूर रे ॥ धवल० ॥२३॥ बीजे खंडे ढाल ए, त्रीजी चित्तमां धरजो रे ॥विनय कहे वाहण परे,भवियण भवजल तरजो रे॥धवल०॥२४॥

अर्थ—एवां शेठनां वचन सांभळीने कुंवर कहेवा लाग्यो के ए काम तमारुं अमे करी आपीए तो तेनुं अमने शुं भाडुं आपशो ? ते वारे शेठे कह्युं के लाख सोनैया आपीश. तमे मारुं गाडुं खूतुं छे ते बहार काढी आपो ॥ यतः ॥ सुजनो न याति विकृतिं, परहितनिरतो विनाशकालेऽपि ॥ छेदेऽपि चंदनतरुः, सुरभयति मुखं कुठारस्य ॥ १ ॥ इति ॥ २१ ॥ एवो ठराव करी सिद्धचक्रने पोताना चित्तमां धारण करी नव पदनो जाप चूकतो नथी, एवो श्रीपाल ते मोटा वहाण उपर चढीने सिंहनादने (मूके के०) करतो हवो ॥ यतः ॥ कृशोऽपि सिंहो न समो गजेंद्रः, सत्त्वं प्रधानं न च मांसराशिः ॥ अनेकवृन्दानि वने गजानां, सिंहस्य नादेन मदं त्यजंति ॥ १ ॥ इति ॥ २२ ॥ तेणे करीने जे देवी दुश्मन हती ते दुष्ट दूर जती रही, ते वारे वहाण तर्यां, तेथी सर्वेनां कार्य सर्यां. ते वखत मांगलिकनां वाजां वाग्यां ॥ २३ ॥ ए बीजा खंडने विषे त्रीजी ढाल चित्तमां धरजो. श्रीविनयविजय उपाध्यायजी कहे छे के हे भव्यो ! वहाणनी परे तमे पण संसारसमुद्रने तरजो ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

ते देखी चिंते धवल, चढ्युं चिंतामणि हाथ ॥ वडो वखत जो मुज हुवे, तो ए आवे साथ ॥ १ ॥ एक लाख दीनार तस, देइ लाग्यो पाय ॥ कर जोडीने विनवे, वात सुणो एक भाय ॥ २ ॥ वरस प्रत्ये एकेकने, सहस दीउं दीनार ॥ सेवा सारे सहस दश, जोध भला जूंझार ॥ ३ ॥ तुमने मुह माग्युं दीउं, आवो अमारी साथ ॥ ए अवधारो विनति, अमने करो सनाथ ॥ ४ ॥ कुंवर कहे हुं एकलो, लेउं सर्वनुं मोल ॥ ए सर्वेनुं एकलो, कारज करुं अमोल ॥ ५ ॥ ते धननुं लेखुं करी, शेठ कहे कर जोड ॥ अमे वणिकजन एकने, किम देवाये कोड ॥ ६ ॥

अर्थ–हवे एवो बनाव बनेलो देखीने धवल शेठ पोताना मनमां चिंतववा लाग्यो के मारे हाथे चिंतामणि रत्न चढ्युं छे, माटे जो मारो वडो वखत होय एटले मोटुं भाग्य होय तो आ पुरुष मारी साथे आवे ॥ १ ॥ एम चिंतवी एक लाख (दीनार के०) सोनामोहोर तेने आपी पगे लागीने विनंति करवा लाग्यो के हे भाइ ! तमे एक मारी वात सांभलो ॥ २ ॥ हुं एकेका सुभटने एकेक वर्षे एकेक हजार सोनामोहोरो आपुं छुं, एवा दश हजार सेवक छे, ते मारी सेवा (सारे के०) करे छे, ते सर्व सेवको भला योद्धा जूंझार पुरुषो छे ॥ ३ ॥ पण तमोने मुखे मागो ते हुं आपुं, अने तमे मारी साथे आवो, एटली विनंति अवधारीने अमने (सनाथ के०) नाथ सहित करो ॥ ४ ॥ एवां शेठनां वचन सांभलीने श्रीपाल कुंवर कहेवा लाग्या के हुं एकलो आ सर्व दशे हजार सेवकोना पगारनी जेटली रकम थाय तेटली लउं, अने ए सर्व दशे हजार मलीने जे काम करे छे ते सर्वनुं काम पण हुं एकलोज अडोलपणे करुं ॥ ५ ॥

एवुं श्रीपालनुं बोलवुं सांभली ते दश हजार सेवकने जे पगार आपाय छे तेना धननुं लेखुं करीने धवल शेठ बे हाथ जोडी कहेता हवा के हे महाराज! अमे वणिकजन एटले वाणीया लोक छीए, माटे अमाराथी एकज जणने क्रोड सोनैया केम आपी शकाय ? ॥ ६ ॥

कुंवर कहे सेवक थइ, दाम न झालुं हाथ ॥ पण देशांतर देखवा, हुं
आवुं तुम साथ ॥ ७ ॥ भाडुं लेइ वहाणमां, द्यो मुज बेसण ठाम ॥
मास प्रते दीनार शत, भाडुं परठ्युं ताम ॥ ८ ॥

अर्थ—ते सांभली कुंवर कहेवा लाग्यो के हे शेठजी! हुं पण सेवक थइने तमारो (दाम के०) पैसो हाथमां झालुं नहीं, परंतु देशांतर देखवानी मने इच्छा छे माटे ते जोवाने अर्थे हुं तमारी साथे आवुं छुं ॥ ७ ॥ ते माटे तमे मारी पासेथी भाडुं लइने मने वहाणमां बेसवानी जग्या आपो. पछी शेठे मास प्रत्ये सो सो सोनामोहोर भाडुं लेवानुं परठ्युं एटले ठराव कर्यो ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग मल्हार ॥ जीहो जाण्युं अवधि प्रयुंजीने ॥ ए देशी ॥

जीहो कुंवर बेठो गोंखडे, जीहो महोटा वाहण मांहि ॥ जीहो चिहुं
दिशि जलधि तरंगनां, जीहो जोवे कौतुक त्यांहि ॥ सुगुण नर, पेखो
पुण्य प्रभाव ॥ जीहो पुण्ये मनवांछित मले, जीहो दूर टले दुःख दाव ॥
सुगुण नर, पेखो० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥

अर्थ—हवे श्रीपाल कुंवर मोटा वहाणना गोंखने विषे बेठो थको चारे दिशाए (जलधि के०) समुद्र तेना कल्लोल उछले छे ते संबंधी कौतुकने तिहां जोतो हवो, माटे हे सुगुण पुरुषो ! तमे पुण्यनो प्रभाव तो जुओ ! के जेने पुण्य सखायी होय तेने सर्व मनोवांछित मली आवे छे, अने वली ते प्राणीना दुःखना दाव सर्व दूर टली जाय छे, एवुं पुण्यनुं माहात्म्य छे ॥ १ ॥

जीहो सढ हंकार्या सामटा, जीहो पूर्या घण पवणेण ॥ जीहो वरू
वेगे वाहण वहे, जीहो जोयण जाये खणेण ॥ सु० ॥ २ ॥ जीहो जल-
हस्ती पर्वत जिस्या, जीहो जलमां करे हल्लोल ॥ जीहो मांहोमांहे जूझता,
जीहो उगाले कल्लोल ॥ सु० ॥ ३ ॥ जीहो मगरमत्स्य महोटा फिरे,
जीहो सुसुमार केइ कोडि ॥ जीहो नक्र चक्र दीसे घणा, जीहो करता
दोडादोडी ॥ सु० ॥ ४ ॥ जीहो इम जातां कहे पंजरी, जीहो आज
पवन अनुकूल ॥ जीहो जल इंधण जो जोइए, जीहो आव्युं बब्बर-
कूल ॥ सु० ॥ ५ ॥

अर्थ—हवे समकाले ते सर्वे वहाणोना सढ सायेज हंकार्या. ते सढ घणा पवने करी पूराणा. तेना योगथी (वरू वेगे के०) मोटी उतावलथी सर्व वहाणो समुद्रमां (वहे के०) चालवा लाग्यां. ते केवां चाले छे ? तो के एक क्षणमात्रमां एक योजनपंथने अतिक्रमी जाय छे, एवां चाले छे ॥ यतः ॥ थल उपनी जलमां वसी, जलना जीव न खाय ॥ जीवह कारण बापडी, क्षण आवे क्षण जाय ॥ १ ॥ इति ॥ २ ॥ तिहां समुद्रमां जलहस्तीउं जे मोटा पर्वत सरखा जलचर जीवो छे ते पाणीमां हल्लोल करी रह्या छे, वली ते मांहोमांहे जूझतां थका पाणीना कल्लोल प्रत्ये उंचा उछाले छे ॥ ३ ॥ तेमज मोटा मोटा मगरमत्स्य फरी रह्या छे, वली सुसुमार जातिना मत्स्य ते कुतराथी कांइक मोटा थाय छे, तेवा मत्स्य पण कोइ क्रोडो गमे विचरी रह्या छे, तथा नक्र जातिना, चक्र जातिना जे जलचर जीवो छे ते पण समुद्रमां घणी दोडादोड करी रह्या छे ॥ ४ ॥ एम जतां थका वायरानो परीक्षक जे पंजरी छे ते कहेवा लाग्यो के आज पवन

अनुकूल छे, सांसतो छे, माटे जो मीठुं जल तथा इंधण जे लोकमां प्रमुख वस्तु तेनो जो खप होय तो बब्बरकोट नजीक आव्युं छे ॥ ५ ॥

जीहो तस बंदर मांहि ऊतरी, जीहो जल इंधण लीए लोक ॥ जीहो धवल शेठ कांठे रह्या, जीहो साथे सुन्नटना थोक ॥ सु० ॥ ६ ॥ जीहो कोलाहल ते सांनली, जीहो आव्या अति सपराण ॥ जीहो दाणी बब्बर रायना, जीहो मागे बंदर दाण ॥ सु० ॥ ७ ॥ जीहो शेठ सुन्नटने गारवे, जीहो दाण न दीए अबूझ ॥ जीहो तव तिहां लाग्युं तेहने, जीहो मांहो-मांहे जूझ ॥ सु० ॥ ८ ॥ जीहो शेठ तणे सुन्नटे हण्या, जीहो दाणी नाठा रे जाय ॥ जीहो सैन्य सबल तव सज करी, जीहो आव्यो बब्बर राय ॥ सु० ॥ ९ ॥

अर्थ—पछी बब्बरकोटना बंदर मांहे ऊतरीने सहु लोको पाणी तथा सरपण लेवा लाग्या, अने जेनी साथे सेवाना करनारा सुन्नटोना (थोक के०) समूह छे एवा धवल शेठ पण त्रिठानां नाखी कांठे आवी रह्या ॥ ६ ॥ तिहां बंदर मांहे घणा लोक ऊतर्या, तेनो मोटो कोलाहल शब्द थइ रह्यो, ते सांनलीने बब्बर राजाना दाणी पुरुषो जे हता ते (अति सपराण के०) अत्यंत उतावला आवीने बंदरनुं दाण मागवा लाग्या ॥ ७ ॥ परंतु (अबूझ के०) मूर्ख एवो जे शेठ, तेणे पोताना सुन्नटोना गर्वे करी एटले मारा आटला सीपाइओ छे तो आ दाणी लोकोने दाण शा वास्ते आपुं ? एवा अहंकारथी ते अबूझ एटले मूर्ख शेठे दाण दीधुं नहीं, तेथी तिहां दाणी अने शेठना सेवकोने मांहोमांहे युद्ध थवा लाग्युं ॥ ८ ॥ तिहां शेठना सुन्नटोए दाणी लोकोने मार मार्यो, तेने लीधे ते दाणीओ नासी गया, अने पोताना महाकाल नामे राजाने जाण करता हवा.

ते सांनली वळी करी सहित एवुं सैन्य तैयार करी बब्बर देशनो राजा पोते तिहां चढी आव्यो ॥ ए ॥

जीहो राजतेज न शक्या सही, जीहो दीधी सुन्नटे रे पूंठ ॥ जीहो मार
पडी तव नासतां, जीहो बाण नरी नरी मूठ ॥ सु० ॥ १० ॥ जीहो
बांध्यो झाली जीवतो, जीहो रुंख सरिसो शेठ ॥ जीहो बांह बेहु ऊंची
करी, जीहो मस्तक कीधुं हेठ ॥ सु० ॥ ११ ॥ जीहो रखवाला मूकी तिहां,
जीहो वलीयो बब्बर राय ॥ जीहो तव बोलावे शेठने, जीहो कुंवर करीय
पसाय ॥ सु० ॥ १२ ॥ जीहो सुन्नट सवे तुम किहां गया, जीहो बांध्या
बांह मरोम ॥ जीहो एवडुं डुःख न देखता, जीहो जो देता मुज कोम
॥ सु० ॥ १३ ॥ जीहो शेठ कहे तुमे कां दीयो, जीहो दाधा ऊपर लूण ॥
जीहो पड्या पछी पाहु किसी, जीहो हणे मुआने कूण ॥ सु० ॥ १४ ॥

अर्थ–ते वारे राजतेज ते वाणीयाना सुन्नटो सहन करी शक्या नहीं, तेथी शेठना सुन्नटोए पूंठ दीधी, ते जोइने राजाना सुन्नटोए बाणोनी मुठीउं नरी नरीने मारवा मांमी. ते जे वारे सारी पेठे मार पड्यो, ते वारे शेठना सुन्नट नासी गया ॥ १० ॥ सुन्नटो सर्वे नासी गया पछी एकला धवल शेठने जीवतो झालीने रुंख सरिसो एटले जेम वृक्ष ऊगे नहीं तेम बेहु बाहु ऊंचा करीने मस्तक नीचुं करी मरमीने टाट बांध्यो ॥ ११ ॥ तेनी पासे रखवाला मूकीने जे वारे बब्बरनो राजा पाछो वळ्यो, ते वारे कुंवर आवी पसाय करीने शेठने बोलावे छे ॥ १२ ॥ के अरे रे शेठजी ! तमारा सुन्नट सर्वे किहां जता रह्या जे तमे बाहु मरमीने बांध्या पड्यो छो ? परंतु जो मुजने क्रोड सोनामहोरो दीधी हते तो आज एटलुं डुःख तमे देखत नहीं ॥ १३ ॥ ते सांनली

शेठ कहेवा लाग्या के हे कुंवर ! तमे बळ्या उपर वली लूण कां लगाडो ठो ? पमी गया पठी (पाटु के०) लात ते वली शी मारवी ? तथा मुवेलाने वली कोण मारे ? ॥ १४ ॥

जीहो कहे कुंवर वैरी ग्रह्युं, जीहो जो वालुं ए वित्त ॥ जीहो तो मुजने देशो किशुं, जीहो न्नाखो थिर करी चित्त ॥ सु० ॥ १५ ॥ जीहो शेठ कहे सुण साहिबा, जीहो ए मुज कारज साध ॥ जीहो वहेंची वाहण पांचसें, जीहो लेजो आधो आध ॥ सु० ॥ १६ ॥ जीहो बोलबंध साखी तणो, जीहो कुंवर पामी तंत ॥ जीहो धनुष तीर तरकस ग्रही, जीहो चाल्यो तेज अनंत ॥ सु० ॥ १७ ॥ जीहो जइ बब्बर बोलावीयो, जीहो वल पाठो वरु वीर ॥ जीहो शस्त्र सेन न्नुजवल तणो, जीहो नाद उतारुं नीर ॥ सु० ॥ १८ ॥

अर्थ–ते सांन्नली कुंवर कहेवा लाग्यो के हे शेठ ! जो आ तमारा वैरीए (ग्रह्युं के०) ग्रहण कर्युं जे द्रव्य एटले जे तमारुं द्रव्य एना कवजामां आवी गयुं ठे ते (वित्त के०) द्रव्य जो हुं पाठुं वाली आपुं तो तमे मुजने शुं आपशो ? ते तमे तमारुं चित्त स्थिर राखीने (न्नाखो के०) बोलो ॥ १५ ॥ ते सांन्नली शेठ कहेवा लाग्या के हे साहेब ! तमे सांन्नलो के जो ए मारुं कार्य तमे साधी आपो तो मारां जे पांचसें वहाण ठे ते अरूधो अरूध तमे वहेंजी लेजो. जगतमां कहेवत ठे के सारा जाता देखीए, तो आधा लीजे बांट ॥ इति ॥ १६ ॥ पठी ते वातनां कुंवरे (बोलबंध के०) खतपत्र लखीने वचमां साक्षीनो (तंत के०) ताली पामीने पोते धनुष्य तथा तीरनो (तरकस के०) न्नाथो साथे लइने अत्यंत तेजवंत थको महाकाल राजानी पठवाडे चाल्यो ॥ १७ ॥ जइने बब्बर राजाने बोलाव्यो के हे मोटा वीर पुरुष ! तुं पाठो वल, एटले

फरीने मारा सामो आव. हुं तारां जे शस्त्र तथा सैन्य अने भुजाछेनुं बल, तेनो (नाद के०) जे अहंकार छे तेनुं (नीर के०) पाणी तेने उतारुं ॥ १८ ॥

जीहो तुज सरिखो जे प्राहुणो, जीहो पहोतो अम घर आय ॥ जीहो
सुखडली मुज हाथनी, जीहो चाख्या विण किम जाय ॥ सु० ॥ १९ ॥
जीहो महाकाल जूए फरी, जीहो दीठो एक जुवान ॥ जीहो झाझानी
परे जूझतो, जीहो लक्षण रूप निधान ॥ सु० ॥ २० ॥ जीहो तुं सुंदर
सोहामणो, जीहो दीसे यौवनवेष ॥ जीहो विण खुटे मरवा त्रणी, जीहो
कांइ करे उद्देश ॥ सु० ॥ २१ ॥ जीहो कहे कुंवर संग्राममां, जीहो वचन
किश्यो व्यापार ॥ जीहो जोधे जोध मल्या जिहां, जीहो तिहां शस्त्रे
व्यवहार ॥ सु० ॥ २२ ॥

अर्थ—वली हे वीर पुरुष ! तारा सरखो प्राहुणो पुरुष जे अमारे घेर आवी पहोंच्यो ते मारा हाथनी सुखडी चाख्या विना पाछो केम जाय ? ॥ १९ ॥ एवां वचन सांभली महाकाल राजा पाछो फरी जुए छे तो तेणे लक्षण तथा रूपना निधान सरिखो अने (झाझा के०) घणा पुरुषोनी परे जूझतो एवो एक युवान पुरुष दीठो ॥ २० ॥ तेने जोइने महाकाल राजा कहेवा लाग्यो के तुं तो घणो सुंदर, सोहामणो छो, अने संपूर्ण नवयौवन वेषे देखाय छे, तेम छतां तारुं आयुष्य खुट्या विना फोकट मरवानो उद्देश शामाटे करे छे ? ॥ २१ ॥ एवां राजानां वचन सांभली कुंवर कहेवा लाग्यो के संग्रामने विषे वचननो व्यापार शो करवो ? जिहां योद्धाए योद्धा मले तिहां तो शस्त्रनोज व्यापार होय ॥ २२ ॥

जीहो महाकाल कोप्यो तिसे, जीहो हलकारे निज सेन ॥ जीहो मूके शस्त्र झडोझडे, जीहो राता रोषरसेन ॥ सु० ॥ २३ ॥ जीहो वूठा तीखा तीरना, जीहो गोलाना केइ लाख ॥ जीहो पण अंगे कुंवर तणे, जीहो लागे नहीं सराख ॥ सु० ॥ २४ ॥ जीहो आकर्षी जे जे दिशे, जीहो कुंवर मूके बाण ॥ जीहो समकाले दश वीशना, जीहो तिहां छंडावे प्राण ॥ सु० ॥ २५ ॥ जीहो सैन्य सकल महाकालनुं, जीहो नागी गयुं दह वट्ट ॥ जीहो नृप एकाकी कुंवरे, जीहो बांध्यो बंध निघट्ट ॥ सु० ॥ २६ ॥ जीहो बांधीने निज साथमां, जीहो पासे आण्यो जाम ॥ जीहो बंधन छोड्यां शेठनां, जीहो रळक नाठा ताम ॥ सु० ॥ २७ ॥

अर्थ—एवां कुंवरनां वचन सांभली महाकाल राजाए (तिसे के०) तेनी साथे कोप्यो थको पोतानी सेनाने हलकारो कर्यो. ते वारे ते सुभटो पण (रोष के०) क्रोधना (रसेन के०) रसे करीने (राता के०) तपायमान थया थका कुंवरनी उपर झपोझप शस्त्र नाखवा लाग्या ॥ २३ ॥ तिहां (तीखा के०) तीक्ष्ण एटले आकरा एवा तीरना समूह तथा केइक लाखो गमे गोलाना मेहुला कुंवरनी उपर (वूठा के०) वरसवा लाग्या, पण कुंवरने अंगे एक (सराख के०) फांस जेटलुं पण लागे नहीं ॥ २४ ॥ अने कुंवर तो जे जे दिशाए आकर्षीने एटले ताकी करीने अथवा खेंचीने बाण मूके छे ते ते दिशाए तिहां समकाले दश वीश सुभटोना प्राण छंडावे छे ॥ २५ ॥ एम करतां महाकाल राजानुं सर्व सैन्य (दह वट्ट के०) दशे दिशानी वाटे नागी गयुं. पछी महाकाल राजा एकलो रह्यो, तेने श्रीपाल कुंवरे (निघट्ट के०) आकरां बंधने करी बांध्यो ॥ २६ ॥ ते बांधीने (जाम के०) जे वारे पोताना सथवारानी पासे आण्यो अने धवल शेठनां बंधन कुंवरे

छोडी नाख्यां, (ताम के०) ते वारे रक्षक पुरुषो जे शेठनी पासे ऊना हता ते पण नासी गया ॥२७॥

जीहो खम्ग लेइ महाकालने, जीहो मारण धायो रे शेठ ॥ जीहो कहे कुंवर बेसी रहो, जीहो बल दीठुं तुम ठेठ ॥ सु० ॥ २८ ॥ जीहो बंधन बब्बर रायनां, जीहो छोडावे तेणी वार ॥ जीहो नूषण वस्त्र पहेरामणी, जीहो करे घणो सत्कार ॥ सु० ॥ २९ ॥ जीहो सुन्नट जिके नाठा हता, जीहो ते आव्या सहु कोय ॥ जीहो नांजे तस आजीविका, जीहो शेठ कोप करी सोय ॥ सु० ॥ ३० ॥

अर्थ–ते वारे शेठ घणी ऊतावलथी तरवार हाथमां लइने महाकाल राजाने मारवा माटे (धायो के०) दोड्यो. तेने श्रीपाल कुंवरे कह्युं के हां हां शेठजी ! तमे बेसी रहो, केमके तमारुं बल तो अमे ठेठथी दीठुं छे. वली एक तो जे पोताने घेर चाली आव्यो होय, बीजो आपणे शरणे आव्यो होय, त्रीजो बांध्यो थको पड्यो होय, चोथो जे रोगथी पीडा पामतो होय, पांचमो जे नासी जतो होय, छठो जे बुढो होय एटले वृद्ध होय, अने सातमो जे बालक होय, ए साते जण जो पण आपणा शत्रु होय तोपण तेने मारवा नहीं, एवो न्याय छे ॥ २८ ॥ पछी श्रीपाल कुंवरे जे बब्बरना राजाने बंधने बांध्या हता, ते पण तेज वखते छोडाव्या, एटले पोताने हाथेज बंधन छोड्यां, अने पोताना नागमां आवेलां अढीसें वहाणमांथी घणां आनूषण वस्त्र मगावी पहेरामणी करीने राजानो घणो आदर सत्कार कर्यो ॥२९॥ हवे शेठना सुन्नटो जे कोइ प्रथम बब्बर राजाना सुन्नटोथी बीक पामीने नासी गया हता ते पण सहु कोइ पाछा फरी आव्या, (सोय के०) तेना ऊपरे शेठे कोप करीने तेमनी आजीविका नांगी नाखी, पगार आपवानो बंध कर्यो, पोतानी चाकरीमांथी दूर कर्या ॥ ३० ॥

हाट सज्यां हीरागले, घर घर तोरण माल ॥ चहुटे चहुटे चोकमां, नाटक गीत रसाल ॥ ७ ॥ फूल बिछायां फूटरां, पंथ करी छंटकाव ॥ गज तुरंग शणगारीया, सोवन रूपे साव ॥ ८ ॥

अर्थ–राजाए पण नगरीनां हाट सर्व हीरागल एटले रेशमी वस्त्रे करी (सज्यां के०) शणगार्यां, घर घरने विषे तोरण मालाओ बांधी, चौटा चौटाना चोकमां विविध प्रकारनां नाटक कराव्यां, (रसाल के०) रसे करी सहित एवां घणां सुंदर गीतो गवराव्यां ॥ ७ ॥ राजमार्गमां ताजां फूटरां फूल बिछाव्यां, पंथ जे मार्ग तेमां पाणीनो छंटकाव कराव्यो, तथा सामैयुं करवाने घणा हाथी अने घोडाओने (साव के०) मात्र एक सोना तथा रूपाना साजे करीने शणगार्या ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग सिंधूडो ॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥

विनति अवधारे रे, पुर मांहे पधारे रे, महोत वधारे बब्बर रायनुं रे ॥
कुंवर वडभागी रे, देखी सोभागी रे, जोवा रढ लागी पग पग लोकने
रे ॥ १ ॥ घर तेडी आव्या रे, साजन मन भाव्या रे, सोवन मंडाव्यां
आसण बेसणां रे ॥ मीठाइ मेवा रे, पकवान्न कलेवा रे, भगति करे
सेवा बब्बर बहु परे रे ॥ २ ॥

अर्थ–हवे बब्बरकोटना महाकाल राजानुं महत्त्व वधारवा माटे तेनी विनंति अवधारीने ते पुर मांहे पधार्या. ते कुंवर केवा छे ? तो के (वडभागी के०) मोटा भाग्यना धणी छे. तेने सोभाग्यवंत देखीने लोकोने पगले पगले जोवानी (रढ के०) होंश एटले उत्कंठा लागी ॥ १ ॥ एवी रीते मोटा उत्सव सहित महाकाल राजा पोताने घेर कुंवरने तेडी आव्या, ते सर्व सज्जनना मनमां (भाव्या के०) गम्या. पछी कुंवरने बेसवाने माटे सोनानां आसन मंडाव्यां, तेनी उपर बेसाडीने जमवा

के हे महाराज ! मारा उपर महेरबानी करीने नगरमां आवी तमारा पगे करी मारा मंदिरने (पावन के०) पवित्र करो तो अमे पण तमारी कांइक नक्ति करीए, अमे जे पूर्वेला नवमां पुण्य कस्यां हतां ते अमारां पुण्य आज प्रगट थयां, एटले उदय आव्यां के जेना योगथी तमारां दर्शन थयां, एम अमे मानीए डीए ॥ २ ॥

तुम सरिखा सुपुरुष तणां, अम दरशन डुर्लन ॥ जिम मरुधरनां लोकने,
सुरतरु कुसुम सुरंन ॥३॥ वोलावा विण एकलो, चाली न शके दीन ॥ धवल
शेठ तव विनवे, इणी परे थइ आधीन ॥४॥ प्रनु तुमने वंछे सहु, देखी पुण्य-
पडूर ॥ पण विलंब थाये घणो, रतनद्वीप छे दूर ॥५॥ कुंवर कहे नररायनुं,
दाखिण किम छंडाय ॥ तिणे नयरी जोवा नणी, कुंवर कीयो पसाय ॥६॥

अर्थ—केमके तमारा जेवा सुपुरुषनां दर्शन मलवां ते अमारा जेवा नाग्यहीन जनोने घणां डुर्लन छे. जेम मरुधर जे मारवाड देश, तेना रहेवासी लोकोने सुरतरु जे कल्पवृक्ष, तेनां (कुसुम के०) फूलनो सुरंन जे सुगंध, ते पामवो डुर्लन होय छे. ए दृष्टांते जाणी लेवुं ॥ ३ ॥ एवुं बब्बरना राजानुं वचन सांनलीने जे वारे श्रीपाल कुंवरे ते वात मान्य करी (तव के०) ते वारे धवल शेठ (आधीन के०) कुंवरने वश थइने आवी रीतनी विनंति करे छे के जेम (दीन के०) रांक पुरुष होय ते वोलावा विना एकलो मार्गमां चाली शके नहीं, तेम तमारा आव्या विना अमाराथी पण अमारे घेर जवाय नहीं ॥ ४ ॥ माटे हे प्रनु ! तमारां पुण्यनो पडूर एटले समूह अर्थात् घणुं पुण्य देखीने सहु कोइ तमने वांछे छे, पण हवे आपणने रत्नद्वीपे जवुं छे, ते इहांथी घणो दूर छे, माटे तेमां विलंब घणो थाय छे ॥ ५ ॥ ते सांनली कुंवर बोल्या के हे शेठजी ! राजानुं दाक्षिण्यवचन केवी रीते छांड्युं जाय ? ते माटे नगरी जोवानो कुंवरे पसाय कर्यो ॥ ६ ॥

हाट सज्यां हीरागले, घर घर तोरण माल ॥ चहुटे चहुटे चोकमां, नाटक
गीत रसाल ॥ ७ ॥ फूल बिछायां फूटरां, पंथ करी छंटकाव ॥ गज तुरंग
शणगारीया, सोवन रूपे साव ॥ ८ ॥

अर्थ–राजाए पण नगरीनां हाट सर्व हीरागल एटले रेशमी वस्त्रे करी (सज्यां के०) शणगार्‍यां, घर घरने विषे तोरण मालाओ बांधी, चौटा चौटाना चोकमां विविध प्रकारनां नाटक कराव्यां, (रसाल के०) रसे करी सहित एवां घणां सुंदर गीतो गवराव्यां ॥ ७ ॥ राजमार्गमां ताजां फूटरां फूल बिछाव्यां, पंथ जे मार्ग तेमां पाणीनो छंटकाव कराव्यो, तथा सामैयुं करवाने घणा हाथी अने घोडाओने (साव के०) मात्र एक सोना तथा रूपाना साजे करीने शणगार्‍या ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग सिंधूडो ॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥

विनति अवधारे रे, पुर मांहे पधारे रे, महोत वधारे बब्बर रायनुं रे ॥
कुंवर वडनागी रे, देखी सोनागी रे, जोवा रढ लागी पग पग लोकने
रे ॥ १ ॥ घर तेडी आव्या रे, साजन मन नाव्या रे, सोवन मंडाव्यां
आसण बेसणां रे ॥ मीठाइ मेवा रे, पकवान्न कलेवा रे, नगति करे
सेवा बब्बर बहु परे रे ॥ २ ॥

अर्थ–हवे बब्बरकोटना महाकाल राजानुं महत्त्व वधारवा माटे तेनी विनंति अवधारीने ते पुर मांहे पधार्‍या. ते कुंवर केवा छे ? तो के (वडनागी के०) मोटा नाग्यना धणी छे. तेने सौनाग्यवंत देखीने लोकोने पगले पगले जोवानी (रढ के०) होंश एटले उत्कंठा लागी ॥ १ ॥ एवी रीते मोटा उत्सव सहित महाकाल राजा पोताने घेर कुंवरने तेडी आव्या, ते सर्व सज्जनना मनमां (नाव्या के०) गम्या. पछी कुंवरने बेसवाने माटे सोनानां आसन मंडाव्यां, तेनी उपर बेसाडीने जमवा

माटे मीठाइ, मेवा तथा पक्वान्नने (कलेवा के०) केलवतो भोजन कराववानी सामग्री करतो हवो. एम (बहु परे के०) घणे प्रकारे वव्वरकोटनो राजा श्रीपाल कुंवरनी भक्ति सेवा करतो हवो ॥ २ ॥

भोजन घृत गोल रे, उपर तंबोल रे, केसर रंगरोल करे वली छांटणां रे ॥ सवि साजन साखे रे, मुखे मधुरुं भाखे रे, अंतर नवि राखे कांइ प्रेममां रे ॥ ३ ॥ दीए कन्यादान रे, देइ बहु मान रे, परणी अम वान वधारो वंशनो रे ॥ तव कुंवर भाखे रे, कुल जाण्या पाखे रे, किम चित्तनी साखे दीजे दीकरी रे ॥ ४ ॥ कहे नृप अवतंस रे, छानो नहीं हंस रे, जाण्यो तुम उत्तम वंश गुणे करी रे ॥ जाणे सहु कोइ रे, जे नजरे जोइ रे, हीरो नवि होइ विण वेरागरे रे ॥ ५ ॥

अर्थ—हवे घृत गोलनां भोजन करावी उपर (तंबोल के०) पाननां बीडां आपी, पछी केसरना रंगरोले करी छांटणां कर्यां, तिहां सर्व साजननी साखे करी मुखथी मधुरुं एटले मीठी वाणी भाखतो थको राजा पोताना प्रेममां कांइ पण अंतर न राखतां ॥ ३ ॥ बहु मान आपीने कन्यादान देतो हवो, अने कहेतो हवो के आ कन्या परणीने अमारा वंशनुं (वान के०) तेज वधारो. ते सांभली कुंवर भाखता हवा के हे स्वामिन् ! हुं परदेशी छुं, माटे मारुं कुल, शील जाण्या विना मात्र चित्तनी साखे करीनेज पोतानी दीकरी केम दीजीए ? एटले आपीए ? जे कार्य करीए ते विचारीने करीए तो रुडुं देखाय ॥ यतः ॥ कुलं च शीलं च सनाथता च, विद्या च वित्तं च वपुर्वयश्च ॥ वरे गुणाः सप्त विलोकनीया,—स्ततः परं भाग्यवशा हि कन्या ॥ १ ॥ मूर्खनिर्धनदूरस्थ,—बहुभार्याशिवार्थिनां ॥ त्रिगुणाधिकवर्षाणां, चापि देया न कन्यका ॥ २ ॥ कार्येषु मंत्री गृहकर्मदासी, स्नेहेषु माता क्षमया धरित्री ॥ धर्मेषु धुर्या रमणेषु रंभा, स्मराम्यहं लक्ष्मण !

जानकीगुणान् ॥ ३ ॥ इति स्त्रीगुणाः ॥ ४ ॥ ते सांभली राजा कहेवा लाग्यो के (अवतंस के०) सर्व पक्षीउंमां मुकुट समान एवुं जे हंस पक्षी छे ते छानुं रहेज नहीं, तेम तमारां वंश, कुल, शील, ए सर्व तमारा उत्तम गुणे करीनेज अमे जाणी लीधां. अथवा तमारो उत्तम वंश तमारा गुणे करीने जाणी लीधो, केमके जेणे नजरे जोयो होय ते तो जाणेज छे के (विण वेरागरे के०) खाण विना हीरो होयज नहीं, माटे अमारी प्रार्थना तमे सफल करो ॥ ५ ॥

महोत्सव मंडावे रे, साजन सहु आवे रे, धवल गवरावे मंगल नरवरू
रे ॥ रूपे जिसी मेना रे, गुणपार न जेना रे, मदनसेना परणावी इणी
परे रे ॥ ६ ॥ मणि माणिक कोडी रे, मुगताफल जोडी रे, नरपति कर
जोडी दीए दायजो रे ॥ परे परे पहिरावे रे, मणि भूषण भावे रे, पार न
आवे जस गुण बोलतां रे ॥ ७ ॥ नाटक नव दीधां रे, तिहां पात्र प्रसिद्धां
रे, जाणे ए लीधां मोले सरगथी रे ॥ बहु दासी दास रे, सेवक सुवि-
लास रे, दीधां उल्लासे सेवा कारणे रे ॥ ८ ॥

अर्थ—एम कही राजाए महोत्सव मंमाव्यो. तिहां सहुए सज्जन आव्यां, राजाए धवल मंगल गीत गवराव्यां, अने रूपे करी मेना अप्सरा सरखी, जेना गुणनो पार नथी एवी मदनसेना नामे पोतानी पुत्रीने ए रीते श्रीपाल साथे परणावी ॥ ६ ॥ मणि, रत्न तथा कोमी गमे माणिक, तेनी साथे मुगताफल जे मोती, तेने (जोमी के०) मेलावीने नरपति जे राजा, ते हाथमेलाप मूकती वखते हाथ जोमीने दायजामां देतो हवो. वली जेना गुण बोलतां थका पार आवे नहीं एवां अनेक जातिनां मणिरत्नमय आभूषण ते भावे करीने (परे परे के०) वारंवार दायजामां पहेरावे छे ॥ ७ ॥ वली नव पेडां नाटकनां दायजामां आप्यां. ते पेमां केवां छे? तो के (तिहां

के०) तेमां (पात्र के०) गणिका प्रसिद्धपणे छे, एवां ते जाणीए ए स्वर्ग लोकमांथीज (मोले के०) नाणां आपीने वेचातां लीधां होय नहीं ? एवां छे, तेमज (बहु के०) घणां दासी दास प्रमुख सेवक लोक पण (सुविलास के०) जला विलास सहित महाकाल राजाए सेवा करवाने अर्थे आप्यां ॥ ८ ॥

रसजर दिन केता रे, तिहां रहे सुख वेता रे, दान याचकने देता बहु परे रे ॥ अमने वोलावो रे, हवे वार न लावो रे, कहे कुंवर जावो अम देशांतरे रे ॥ ए ॥ नृप मन दुःख आणे रे, केम राखुं पराणे रे, घर इम जाणे न वसे प्राहुणे रे ॥ पुत्री जे जाइ रे, ते नेट पराइ रे, करे सजाइ हवे वोलाववा रे ॥ १० ॥ एक जुंग अलंज रे, जे देखी अचंज रे, चोसठ कुआ थंजे सुंदर सोहतुं रे ॥ कारीगरे घडीया रे, मणि माणिक जडीया रे, थंज ते अडीया जइ गयणांगणे रे ॥ ११ ॥

अर्थ–एम केटलाएक दिवस (रसजर के०) आनंदजर सुखने जोगवता थका याचक जनने घणा प्रकारे दान देतां थका तिहां श्रीपाल कुंवर रह्या. पछी कुंवर कहेवा लाग्या के अमने देशांतरे जवुं छे, माटे वोलाववाने हवे वार लगाको नहीं ॥ ए ॥ एवां कुंवरनां वचन सांजल्याथी राजाए पोताना मनमां घणुं दुःख आण्युं, अने विचार्युं जे हवे हुं एने पराणे केम राखुं ? राजाए एम जाण्युं जे प्राहुणे कांइ घर वसे नहीं. वली पुत्री जे जाइ छे ते तो (नेट के०) निश्चे पारकीज थाय, एवो विचार करीने हवे वोलाववानी सजाइ करवा तत्पर थयो ॥ चोपाइ ॥ आश छाश ने जींत जाजरी, बेटी धन जोजन बाजरी ॥ छार त्रेह ने स्त्रीनो नेह, वहेलो देव देखावे छेह ॥ १ ॥ दोहा ॥ छाशज केरो आफरो, दासी केरो नेह ॥ धावल केरुं पहेरणुं, धबकी दिखावे छेह ॥ २ ॥

॥ इति ॥ १० ॥ हवे जेने देखतां थका अचंबो थाय एवुं एक अलंभ एटले अद्वितीय जुंगी वहाण अथवा जुंग जातिनुं वहाण, ते सुंदर चोसठ कुआ थंभे करी शोभतुं छे, ते थंभने कारीगर लोकोए घड्या छे, अने मणि तथा माणके करी जड्या छे, एवा कुआ थंभ छे ते जइने (गयणांगण के०) आकाशने विषे अड्या छे एटला उंचा देखाय छे ॥ ११ ॥

सोवन चित्राम रे, चित्रित अभिराम रे, देखीए ठाम ठाम तिहां गोंखडा
रे ॥ धज महोटा झलके रे, मणि तोरण चलके रे, चंचल ढलके चामर
चिहुं दिशे रे ॥ १२ ॥ भूंइ सातमीए रे, तिहां चढी विशमीए रे, वेसीने
रमीए सोवन सोगठे रे ॥ बहु छंदे गाजे रे, वाजां घणां वाजे रे, वाहण
गाजे रह्युं समुद्रमां रे ॥ १३ ॥ पूरे ते रतने रे, राजा बहु जतने रे,
सासरवासो मन महोटे करे रे ॥ वोलावी बेटी रे, हियडा भरि भेटी रे,
शीख गुण पेटी दीधी बहु परे रे ॥ १४ ॥

अर्थ—वली ते वहाणमां सोनाना चित्रामणे चित्रित करेला अभिराम एटले मनोहर एवा गोंखडा ते तिहां ठाम ठामने विषे देखीए एटले देखाय छे, वली कुआ थंभनी उपरे मोटी ध्वजा तथा नेजा झलकी रह्यां छे, अने मणिउनां तोरण बांधेलां छे ते चलकाट करी रह्यां छे, वली (चंचल के०) हालतां एवां चामरो ते चारे दिशाए ढलकी रह्यां छे॥ १२ ॥ वली ते वहाणनी सातमी भूमि जिहां छे, तिहां चढीने विश्राम पामीए अने तिहां वेसीने सोनाने सोगठे (रमीए के०) रमत करीए, एवी रमणिक छे. एम ते वहाण घणा (छंदे के०) कारणे करी गाजे छे, शोभे छे, वली तेमां घणा प्रकारनां वाजित्र वाजी रह्यां छे, तेना शब्दथी ते वहाण समुद्रमां रह्युं थकुं पण गाजी रह्युं छे, गर्जारव करी रह्युं छे ॥ १३ ॥ ते वहाण राजा बहु यत्ने करीने रत्नोथी

शेठने आपे छे ॥ १ए ॥ जेम श्रीजिनधर्मना पसाय थकी (नरज्जव के०) मनुष्यनो जव पामीए, तेम अनुक्रमे ते वहाण पण सर्व रत्नद्वीपे आवी खेम कुशले पहोतां, ते वारे वहाणोनां नांगर पाणीमां मूक्यां, सढ तथा दोर सर्वे संकेली लीधा, अने हलवे हलवे सर्व लोक वहाणमांथी तिहां कांठे आवी उतस्यां ॥ २० ॥

बीजे इम खंमे रे, जुर्ज पुण्य अखंडे रे, एकण पिंमे उपार्जन करी रे ॥ कुंवर श्रीपाल रे, लह्या जोग रसाल रे, पांचमी ढाल इसी विनये कही रे ॥२१॥

अर्थ–एम बीजा खंमने विषे जुर्ज के जेना पुण्यमां कांइ खंडना थइ नथी एवा अखंड पुण्ये करीने (एकण पिंडे के०) एकलाज श्रीपाल कुंवरे पोते लक्ष्मीने (उपार्जन करी के०) पेदा करीने (रसाल के०) महा मनोहर एवा जोग (लह्या के०) पाम्या. एवी पांचमी ढाल श्रीविनयविजय उपाध्यायजीए कही ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

दाण वलावी वस्तुनां, जरी अनेक वखार ॥ व्यापारी व्यापारना, उद्यम करे अपार ॥ १ ॥ लाल किनायत जरकसी, चंदरुआ चोसाल ॥ उंचा तंबु ताणीया, पंचरंग पटशाल ॥ २ ॥

अर्थ–हवे वहाण मांहेली सर्व वस्तुर्ज उतारी तेनां दाण (वलावी के०) आपीने अनेक वखारो जरी. जे व्यापारी छे ते (अपार के०) पार विनाना अनेक व्यापार संबंधी उद्यम कस्या करे ॥ १ ॥ श्रीपाले समुद्रने किनारे आवीने पंचरंगी (पटशाल के०) रेशमी वस्त्र तेना उंचा तंबु ताणीने बांध्या, ते मांहे (जरकसी के०) जरीना बुटावाला एवा लाल किनायत एटले लाल किनखाप तेना चोसाल चंद्रुआ बांध्या ॥ २ ॥

जुओ तो खरा ! आ ते शुं थइ गयुं ! में तो फोकट वेठज कीधी, अने आ समुद्रनो व्यापार तो (ठेठ के०) प्रथमथीज (एहने के०) ए श्रीपालनेज फलीभूत थयो छे. अरे ! जे खाली हाथे मारी साथे आव्यो हतो, जेनी पासे एक पैसो पण न हतो, अने मारा सेवक जेवो हतो ते आजे तो (आथे के०) लक्ष्मीए करीने संपूर्ण एटले परिपूर्ण थयो ! ॥ १७ ॥

जल इंधण माटे रे, आव्या इण वाटे रे, परण्यो रण साटे जुओ सुंदरी रे ॥ लखमी मुज आधी रे, इणे मुहियां लाधी रे, दोलत वाधी देखो पलकमां रे ॥ १८ ॥ किम मागुं भाडुं रे, खतपत्र देखाडुं रे, देशे के आडुं अवलुं बोलशे रे ॥ कुंवर ते जाणी रे, मुख मीठी वाणी रे, भाडुं तस आणी आपे दशगणुं रे ॥ १९ ॥ पाम्या अनुकरमे रे, नरभव जिन-धरमे रे, वाहण रयणदीवे खेमे सहु रे ॥ नांगर जल मेल्यां रे, सढ दोर संकेल्या रे, हलवे हलवे लोक सहु तिहां उतर्यां रे ॥ २० ॥

अर्थ—जुओ के मात्र पाणी अने लाकडां लेवा माटे सेजसाज आ बब्बरकोटनी वाटे अमे आव्या, तिहां रणसंग्रामनी साटे आ सुंदरी पण ए परण्यो, वली मारी लक्ष्मी पण अडधो अरुध मुहियां एटले सहेजमां एणे (लाधी के०) पामी. आ रीते जुओ के एक पल वारमां एने केटली दोलत वधी पडी ? ॥ १८ ॥ अने हवे तो ए जोरावर थयो छे, माटे मारुं एक महीनानुं भाडुं एनी उपर चढी गयेलुं छे, ते पण शी रीते मागुं ? मारी पासे कांइ खतपत्र तो नथी, जे एने जइ देखाडुं. शुं जाणीए भाडुं आपशे ? किंवा नहीं आपवा माटे आडुं अवलुं बोलशे तो माराथी शुं थवानुं छे ? एम चिंतवी श्रीपाल पासे जइने गया महीनानुं भाडुं मागवा लाग्यो, ते वारे कुंवर पण तेना मननी वात जाणीने मुखथी मीठी वाणीए बोलतो थको चडेला भाडाथी दशगणुं भाडुं आणीने

शेठने आपे छे ॥ १९ ॥ जेम श्रीजिनधर्मना पसाय थकी (नरभव के०) मनुष्यनो भव पामीए, तेम अनुक्रमे ते वहाण पण सर्व रत्नद्वीपे आवी खेम कुशले पहोतां, ते वारे वहाणोनां नांगर पाणीमां मूक्यां, सढ तथा दोर सर्वे संकेली लीधा, अने हलवे हलवे सर्व लोक वहाणमांथी तिहां कांठे आवी उतर्यां ॥ २० ॥

बीजे इम खंडे रे, जुओ पुण्य अखंडे रे, एकण पिंडे उपार्जन करी रे॥ कुंवर श्रीपाल रे, लह्या भोग रसाल रे, पांचमी ढाल इसी विनये कही रे ॥२१॥

अर्थ–एम बीजा खंडने विषे जुओ के जेना पुण्यमां कांइ खंडना थइ नथी एवा अखंड पुण्ये करीने (एकण पिंडे के०) एकलाज श्रीपाल कुंवरे पोते लक्ष्मीने (उपार्जन करी के०) पेदा करीने (रसाल के०) महा मनोहर एवा भोग (लह्या के०) पाम्या. एवी पांचमी ढाल श्रीविनयविजय उपाध्यायजीए कही ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

दाण वलावी वस्तुनां, भरी अनेक वखार ॥ व्यापारी व्यापारना, उद्यम करे अपार ॥ १ ॥ लाल किनायत जरकसी, चंदरुआ चोसाल ॥ उंचा तंबु ताणीया, पंचरंग पटशाल ॥ २ ॥

अर्थ–हवे वहाण मांहेली सर्व वस्तुओ उतारी तेनां दाण (वलावी के०) आपीने अनेक वखारो भरी. जे व्यापारी छे ते (अपार के०) पार विनाना अनेक व्यापार संबंधी उद्यम कर्या करे ॥ १ ॥ श्रीपाले समुद्रने किनारे आवीने पंचरंगी (पटशाल के०) रेशमी वस्त्र तेना उंचा तंबु ताणीने बांध्या, ते मांहे (जरकसी के०) जरीना बुटावाला एवा लाल किनायत एटले लाल किनखाप तेना चोसाल चंद्रुआ बांध्या ॥ २ ॥

श्री श्रीपाल राजानो रास

प्रकाशक—श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबई

શ્રીપાળ અને ધવળ શેઠ.



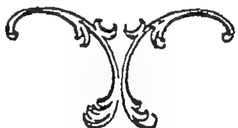
शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक ५७.







ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૮૦.



એવામાં ધવળ શેઠ આવી કહેવા લાગ્યો કે હે કુંવર! વસ્તુઓનું મૂલ્ય આજે બહુ આકરું છે

લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુંબઈ

सोवन पट मंरूप तले, रयणहिंडोला खाट ॥ तिहां बेठा कुंवर जुवे, रसभर नवरस नाट ॥ ३ ॥ धवल शेठ आवी कहे, वस्तु मूल्य बहु आज ॥ ते वेचावो कां नहीं, भर्यां अढीसें ऊहाज ॥ ४ ॥ कुंवर पभणे शेठने, घडो वस्तुनां दाम ॥ अवर वस्तु विणजो वली, करो अमारुं काम ॥ ५ ॥ काम भलाव्युं अम भले, हर्ष्यो दुष्ट किराड ॥ आरत ध्याने जिम पड्यो, पामी दुध बिलाड ॥ ६ ॥

अर्थ–ते (पट के०) वस्त्रना मंरूपने तलीये रत्ने जराव एवी सोनानी हिंमोलाखाट बांधी. तिहां बेसीने श्रीपाल कुंवर (रसभर के०) रसना समूहवालुं एवुं नवरसमय नाटक थाय छे, ते जुवे छे ॥ ३ ॥ एवामां धवल शेठ आवी कहेवा लाग्यो के हे कुंवर ! वस्तुउनुं मूल्य आजे बहु आकरुं छे, माटे घणो लाभ थाय छे, तेथी तमारां अढीसें ऊहाज भर्यां छे, तेनां करियाणां तमे केम वेचावता नथी ? ॥ ४ ॥ ते सांभली कुंवर शेठने कहे छे के हे पिताजी ! अमारी वस्तुउनां दाम तमेज (घडो के०) उपजावो. वली (अवर के०) बीजी जे वस्तु लेवा योग्य होय ते (विणजो के०) लेजो. एटलुं अमारुं काम तमे करो. अमारे तमारे कांइ जुदाइ नथी ॥५॥ ते सांभलीने शेठे विचार्युं जे भले (अम के०) अमने एणे काम (भलाव्युं के०) सोंप्युं. ए रीते दुष्ट बुद्धिनो धणी शेठ ते जेम वनमां (किराड के०) भिल्ल होय, तेम इहां पापरूप वनमां किराड एटले वाणीयो समजवो, माटे ते दुष्ट वाणीयो पोताना हैयामां हरख पाम्यो थको जेम बिलाडो दुध पामीने आर्त्त ध्यानमां पडे, तेम शेठ पण आर्त्त ध्यानमां पडी गयो, अने चिंतववा लाग्यो के हवे ठीक थयुं. जेम मारी मरजीमां आवशे तेम हुं करीश, जे सारो माल हशे ते मारा मालनी साथे मेलवीश, अने हलको उतरतो माल हशे ते एनो करी वेची नाखीश. हुं

मारा जाणवा प्रमाणे करीश, केमके लेवा वेचवानी खबर तो अमने वाणीयानेज होय, एने शी खबर ने? ए एमां शुं समजे ठे? यडुक्तं ॥ वृश्चिकानां कंटकानां, दुर्जनानां च वेधसां ॥ विज्ञज्य निगतं न्यस्तं, विषं पुछे मुखे हृदि ॥१॥ वणिजा चोदरस्थेन, मातुर्मांसं न नद्यते ॥ न तत्र करुणाहेतु,–स्तत्र हेतुरदंतता ॥ २ ॥ दोहा ॥ लेतां डंसे देतां डंसे, ऊपर चमावे पाड ॥ वैरी विसरने वीससे, पण म वीससे किराम ॥ ३ ॥ इति ॥ ६ ॥

इण अवसर आव्यो तिहां, अवल एक असवार ॥ सुगुण सुरूप सुवेष
जस, आप समो परिवार ॥७॥ कुंवरे तेडी आदरे, बेसाड्यो निज पास ॥
अद्भुत नाटक देखतां, ते पाम्यो उल्लास ॥ ८ ॥ हवे नाटक पूरे थये, कुंवर
पूछे तास ॥ कुण कारण कुण गामथी, पाउ धार्या अम पास ॥ ९ ॥

अर्थ–एवा अवसरने विषे तिहां एक (अवल के०) उत्तम एवो घोडेस्वार ते कुंवरना तंबुने दरवाजे आव्यो, (जस के०) जेना सुगुण एटले रुडा गुण ठे, रुडुं स्वरूप ठे अने नलो वेष ठे. ते जेवो पोते ठे तेवोज तेनो परिवार पण ठे ॥ ७ ॥ ते तिहां नाटक जोतो उनो ठे, तेने कुंवरे आदर सहित तेमीने पोतानी पासे बेसाड्यो. ते पण अद्भुत आश्चर्यकारक नाटक जोइने उल्लास पाम्यो ॥ ८ ॥ हवे नाटक पूर्ण थया पठी तेने कुंवरे पूछवा मांड्युं के शा कारण माटे अने कया स्थानकथी तमे अमारी पासे पधार्या ठो? तथा कोइ आश्चर्य दीठुं होय तो ते अमने कही संनलावो ॥ ९ ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥ जांजरिया मुनिवर, धन धन तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

तेह पुरुष हवे विनवे जी, रतन ए द्वीप सुरंग ॥ रतनसानु पर्वत इहां
जी, वलयाकार उत्तंग ॥ १ ॥ प्रज्ञु चित्त धरीने अवधारो मुज वात
॥ ए आंकणी ॥

अर्थ–हवे ते पुरुष श्रीपाल कुंवरने विनवे बे के हे महाराज ! आ (सुरंग के०) सुशोभित एवो रत्न नामे द्वीप बे, इहां रत्नसानु नामे पर्वत बे, ते केवो बे ? तो के (वलयाकार के०) गोलाकारे बे, वली (उत्तंग के०) उंचो बे. हे प्रभु ! आ हुं जे वात कहुं बुं ते मारी वात तमे चित्तमां धरीने एकाग्र चित्ते (अवधारो के०) धारण करो ॥ १ ॥

रतनसंचया तिहां वसे जी, नयरी परवत मांह ॥ कनककेतु राजा तिहां जी,
विद्याधर नरनाह ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ रतन जिसी रलियामणी जी, रतनमाला
तस नार ॥ सुरसुंदर सोहामणा जी, नंदन बे तस चार ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ ते
उपर एक इबतां जी, पुत्री हुइ गुणधाम ॥ रूप कला रति आगली जी,
मदनमंजूषा नाम ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ पर्वत शिर सोहामणो जी,तिहां एक जिन-
प्रासाद ॥ रायपिताए करावीयो जी, मेरुशुं मंडे वाद ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥

अर्थ–तिहां ते पर्वत मांहे रत्नसंचया नामे नगरी वसे बे, तिहां कनककेतु नामे राजा राज्य करे बे, ते विद्याधर राजाउनो (नरनाह के०) स्वामी बे ॥ २ ॥ ते राजाने रत्न जेवी रलियामणी रत्नमाला नामे पट्टराणी बे, तेने (सुरसुंदर के०) देवताना पुत्रनी परे सुंदर सोहामणा एवा चार पुत्र बे. तेनां नाम कहे बे. (एक कनकप्रभ, बीजो कनकशेखर, त्रीजो कनकध्वज अने चोथो कनकरुचि.) ए चारेनां नाम श्रीपाल चरित्रमां लख्यां बे ॥ ३ ॥ ते चार पुत्रनी उपरे इबतां थका रूप, कला अने रतिए करी (आगली के०) वधे एवी जोवा योग्य अने गुणनुं (धाम के०) स्थानकरूप एक पुत्री थइ. तेनुं मदनमंजूषा एवुं नाम बे ॥ ४ ॥ हवे ए पर्वतना (शिर के०) शिखर उपर मस्तकरूप घणोज सोहामणो शोभितो मनने हरनार अने राजाना पितानो करा-

एवो एवो रत्नमय एक श्रीजिनप्रासाद छे. ते एटलो तो उंचो छे के मेरु पर्वतथी पण वाद करवाने गयो जाय एवो छे ॥ ५ ॥

सोवनमय सोहामणा जी, तिहां रिसहेसर देव ॥ कनककेतु राजा तिहां जी, अहनिशि सारे सेव ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ भक्ते भली पूजा करे जी, राज-कुंवरी त्रण काल ॥ अगर उखेवे गुण स्तवे जी, गाये गीत रसाल ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ एक दिन जिन आंगी रची जी, कुंवरीए अति चंग ॥ कनकपत्र करी कोरणी जी, विच विच रतन सुरंग ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥ आव्यो राय जुहारवा जी, देखे सुता विज्ञान ॥ मन चिंते धन मुज धुआ जी, चउसठ कलानिधान ॥ प्रभु० ॥ ९ ॥ ए सरिखो जो वर मले जी, तो मुज मन सुख थाय ॥ साची सोवन मुद्रडी जी,काच तिहां न जडाय ॥प्रभु०॥१०॥

अर्थ–तिहां ते प्रासादने विषे सोहामणा शोभिता मनने हरण करनारा एवा (श्रीरिसहेसर देव के०) श्रीऋषभदेवजी, तेनी रत्न जडित सोनामय प्रतिमानी स्थापना छे, तेनी कनककेतु नामे राजा रात्रि दिवस सेवा करे छे ॥ ६ ॥ तथा ते राजानी कुंवरी जे मदनमंजूषा छे ते पण विशेषे करी प्रभात, मध्याह्न अने संध्या मली त्रणे काले भली भक्तिए करी अष्टप्रकारी पूजा करे छे, तथा अगर उखेवे छे, रसाल एटले सुंदर गीत गाइने प्रभुना गुणनी स्तवना करे छे ॥ ७ ॥ एक दिवसे ते कुंवरीए परिवार सहित तिहां आवीने अत्यंत (चंग के०) मनोहर एवी श्रीजिन-राजनी आंगी रची. तेणे (कनक के०) सोनानां पत्रां लेइ तेमां कोरणी करीने तेनी वचवचमां रत्नो जड्यां, तेणे करी सुरंग एटले सारा रंगे शोभित कर्यां. एवी रीते घणी विस्तारित विधि-पूर्वक आंगीनी रचना करीने भाव सहित देववंदन करे छे ॥ ८ ॥ ते आंगी जुहारवाने माटे

कनककेतु राजा तिहां आव्यो. ते पोतानी पुत्रीने पूजा करती देखी तेणे करेली आंगी रचना संबंधी चतुराइने देखीने पछी तेनुं (विज्ञान के०) ज्ञान जाणी मनमां चिंतवना करवा लाग्यो के धन्य छे मारी (धुआ के०) पुत्रीने ! ए पुत्री तो चोसठ कलानुं (निधान के०) घर छे. एणे आज आश्चर्यकारी, अपूर्व एवी पोतानी चतुराइ देखाडी छे ॥ ए ॥ माटे जेवी ए चतुर छे तेवो एने एना सरखोज जो वर मली जाय तो मारा मनमां घणुं सुख थाय, केमके जे साची सोनानी मुद्रिका होय तेमां काच जडाय नहीं, परंतु हीरा, माणेक, पानां जडाय, तोज ते शोभाने पामे ॥ १० ॥

एम उभो शून्ये मने जी, चिंतातुर नृप होय ॥ इण अवसरे अचरिज थयुं जी, ते सुणजो सहु कोय ॥ प्रभु० ॥ ११ ॥ ओसरती पाछे पगे जी, जिनमुख जोती सार ॥ आवी गभारा बाहिरे जी, जव ते राजकुमारी ॥ प्रभु० ॥ १२ ॥ ताम गभारा तेहनां जी, देवाणां दोय बार ॥ हलाव्यां हाले नहीं जी, सलके नहींअ लगार ॥ प्रभु० ॥ १३ ॥ राजकुंवरी इम चिंतवे जी, मन आणी विषवाद ॥ में कीधी आशातना जी, कोइक धरी प्रमाद ॥ प्रभु० ॥ १४ ॥

अर्थ—एम कन्याना भर्तारनी चिंता चिंतवतो चिंतातुर थयो थको राजा शून्य मने उभो छे. एवा समयने विषे एक आश्चर्य थयुं, ते सहु कोइ सांभलो ॥११॥ ते राजकुंवरी जिनराजनी पूजा करी, त्रण वार प्रणाम करी पाछे पगे ओसरती, प्रधान श्रीजिनराजनुं मुख जोती थकी जे वारे ते गभाराथी बहार आवी ॥ १२ ॥ ते वारे ते गभारानां बेहु बारणां देवाणां एटले बंध थइ गयां, एवां जडाइ गयां के कोइ बलवंत पुरुष जो तेने हलावे, तोपण तेना हलाव्यां हाले नहीं, लगार मात्र (सलके के०) चसके नहीं ॥ १३ ॥ ते जोइ राजकुंवरी पोताना मनमां घणोज विषवाद

लागीने एम चिंतववा लागी के में कोइक प्रमाद धरीने प्रज्जुनी आशातना कीधी बे ॥ १४ ॥

धिक मुज जिन जोवा तणो जी, उपनो एह अंतराय ॥ दोष सयल मुज सांसहो जी, स्वामी करी सुपसाय ॥ प्रज्जु० ॥ १५ ॥ दादा दरिसण दीजीए जी, ए दुःख में न खमाय ॥ बेरु होय कुबेरुआं जी, बेह न दाखे माय ॥ प्रज्जु० ॥ १६ ॥ राय कहे वत्स सांजलो जी, दोष नहीं तुज एह ॥ दोष इहां बे माहरो जी, आणी तुज पर नेह ॥ प्रज्जु० ॥ १७ ॥ वरनी चिंता चिंतवी जी, जिणहर मांहि जेण ॥ ते लागी आशातना जी, बार देवाणां तेण ॥ प्रज्जु० ॥ १८ ॥ जिनवर तो रुषे नहीं जी, वीतराग सुप्रसिध्द ॥ पण कोइक अधिष्ठायके जी, ए मुज शिक्षा दीध ॥ प्रज्जु० ॥ १९ ॥

अर्थ—माटे मारे जिनराजना मुख जोवापणाने धिक्कार बे के जे थकी ए अंतराय उपन्यो. एम पोताने निंदती थकी घणो पश्चात्ताप करती प्रज्जुने विनंति करे बे के हे स्वामिन् ! हुं मंदजागिणी बुं. मारा उपर सुपसाय करीने जे में मध्य गजारामां दोष आचर्या होय, ते सर्व दोष मुजने (सांसहो के०) माफ करो ॥ १५ ॥ हे दादाजी ! तमे मुज पुण्यहीन दीनने दर्शन आपो. ए दुःख तो माराथी खमातुं नथी. कदापि बेरु तो कुबेरु होय, तोपण मातपिता तेने बेह देखाडे नहीं ॥ १६ ॥ एवी रीते ते पुत्रीने रोती थकी देखीने राजा कहे बे के हे वत्से ! तुं मारी वात सांजल के ए तारो दोष नथी, पण इहां तो मारो दोष बे, जे में तारा उपर स्नेह आणीने ॥ १७ ॥ श्रीजिनेश्वरना घर मांहे तारा वरनी चिंता चिंतवी तेनी आशातना लागी, तेथी बारणां देवाणां बे ॥ १८ ॥ तो हे पुत्री ! श्रीजिनवर तो निरागी सुप्रसिद्धपणे वीतराग बे, ते तो कोइनी उपर रुषे नहीं, पण कोइएक अधिष्ठायिक देवताए ए मुजने शिक्षा दीधी बे ॥ १९ ॥

जी, त्रण हुआ उपवास ॥ प्रजु० ॥ २० ॥ त्रीजे दिन निशि पाछली जी, वाणी हुइ आकाश ॥ दोष नथी इहां कोइनो जी, कांइ करो रे विषाद ॥ प्रजु० ॥ २१ ॥ जेहनी नजरे देखतां जी, उघडशे ए बार ॥ मदन-मंजूषा तणो थशे जी, तेहज नर जरतार ॥ प्रजु० ॥ २२ ॥ रुषजदेवनी किंकरी जी, हुं चक्केसरी देवी ॥ एक मास मांहे हवे जी,आवुं वरने लेवी ॥ प्रजु० ॥ २३ ॥ सुणी तेह हरख्यां सहु जी, रायने अति आणंद ॥ प्रेमे कीधां पारणां जी, दूर गयां दुःख दंद ॥ प्रजु० ॥ २४ ॥ दिन गणतां ते मासमां जी, उंणो छे दिन एक ॥ तिणे जुवे सहु वाटडी जी, विकल्प करे अनेक ॥ प्रजु० ॥ २५ ॥

अर्थ–ते माटे हवे ए कमाड उघड्या विना मारे (आवास के०) घेर जवुं नहीं. एम कही राजा परिवार सहित तिहां देरासरमां रह्यो, तेने त्रण उपवास थइ गया ॥ २० ॥ पछी त्रीजा दिवसनी पाछली रात्रिए आकाशने विषे एवी वाणी थइ के हे लोको ! इहां कोइनो दोष नथी, माटे तमे विषाद शा वास्ते करो छो ? ॥ २१ ॥ आ गजारानां बारणां जे देवाइ गयां छे, तेनुं कारण एटलुं ज छे के जे पुरुषनी नजरे देखतां वारमां आ बारणां उघडी पडशे, तेज नर ए मदनमंजूषा कुंवरीनो जर्तार थशे ॥ २२ ॥ हुं श्रीरुषजदेव स्वामीनी किंकरी एटले दासी चक्केसरी नामे देवी छुं. हवे हुं एक महीनामां वरने लइने आवुं छुं ॥ २३ ॥ एवी देवीनी वाणी सांजलीने सहु कोइ हर्षवंत थयां अने राजाने पण अत्यंत आनंद उपन्यो. ते वारे प्रेमे करी पारणां कीधां,

सर्वेना डुःखना (दंद के०) ढगला डूर गया ॥ २४ ॥ तिहांथी दिवस गणतां हवे एक महीनामां बाकी एक दिवस रह्यो छे, ते माटे सहु कोइ वाटफी जोइ वेठां छे, अने अनेक प्रकार विकल्प कस्या करे छे ॥ २५ ॥

पुत्र शेठ जिनदेवनो जी, हुं श्रावक जिनदास ॥ प्रवहण आव्यां सांभली

॥ २६ ॥ सुणी नाद नाटक तणो जी,

तुम तणुं जी, दरिसण दीठुं ताम

क्सरी जी, तुमे आण्या अम पास ॥

लशे सहुनी आश ॥ प्रभु० ॥ २७ ॥ पूज्य

॥ उघडशे ते बारणां जी, जाणुं

णी परे जी, सुणतां छठी ढाल

ाल ॥ प्रभु० ॥ ३० ॥

नामे शेठनो पुत्र जिनदास नामे श्रावक छुं. ते

२ह मारी पासे पट आवासमां आव्यो छुं ॥ २६ ॥ इहां

शब्द सांभलीने (जाम के०) जेहवे हुं देखवा आव्यो (ताम

में तमारुं दर्शन दीठुं ॥ २७ ॥ पण हुं जाणुं छुं जे श्रीचक्रेसरी देवीए गभारा उघाडवा सारु तमनेज अमारी पासे आण्या छे, माटे श्रीजिनघरनां बारणां उघाडतां थका सहुनी आशा फलशे ॥ २७ ॥ तो हे पूज्यजी ! तमे देराने विषे पधारो, अने श्रीजगदीश जे जगतना ईश्वर तेने (जुहारो के०) प्रणाम करो. हुं वीशे विश्वा जाणुं छुं जे तमारी नजरे देखतां ते बारणां अवश्य उघडशे. तेनी साथे अमारां पुण्य पण उघडशे ॥ २९ ॥

बीजा खंकने विषे ए रीते बठी ढाल कही ते सांजलतां थका श्रीविनयविजयजी उपाध्यायजी कहे ठे के श्रोताजनोना घरने विषे मांगलिकनी माला होजो ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

तव हरखे कुंवर जणे, धवल शेठने तेडी ॥ जइए देव जुहारवा, आवो डुर्मति फेडी ॥ १ ॥ शेठ कहे जिनवर नमो, नवरा तुमे निचिंत ॥ विण उपराजे जेहनी, पहोंचे मननी खंत ॥ २ ॥ अमने जमवानो नहीं, घमी एक परवार ॥ सीरामण वालु जिमण, करीए एकज वार ॥ ३ ॥ हवे कुंवर जावा तिहां, जब थाये असवार ॥ हरख्यो हेषारव करे, तेजी ताम तुखार ॥ ४ ॥ साथ लेइ जिनदासने, अवल अवर परिवार ॥ अनुक्रमे आव्या कुंवर, रुषनदेव दरबार ॥ ५ ॥

अर्थ–ए व्यतिकर सांजल्यो, ते वारे श्रीपाल कुंवर धवल शेठने तेमीने हर्षे करी कहे ठे के हे शेठजी ! हे पिताजी ! तमे डुर्मति जे माठी मति तेने फेमीने मारी साथे आवो, तो देव जुहारवा जइए ॥ १ ॥ ते सांजली शेठ कहेवा लाग्यो के तमे निरंतर कामकाज कस्या विना नवरा बेठा ठो. वली विण उपराजे एटले उपार्जन कस्या विना पोतानी मेले लक्ष्मी मलती जाय ठे, तमारा मननी खंत पूर्ण थाय ठे, माटे तमे निश्चिंत ठो, तेथी तमे सुखे श्रीजिनवरने (नमो के०) नमस्कार करो ॥ २ ॥ अमने तो व्यापारनां कामकाज करवामांथी जमवाने माटे एक घमी वार पण परवारी शकीए तेम बनतुं नथी, तेथी सीरामण, वालु अने जमण, ए त्रणे एकज वार करीए ठीए ॥ ३ ॥ हवे जे वारे श्रीपाल कुंवर तिहां जवाने माटे घोमा उपर स्वार थया, (ताम के०) ते वखते (तेजी के०) कोइ दिवस चाबुक मारवो न पडे एवी जातिनो (तुखार के०)

गतीना कुलना (दंद के०) डगला दूर गया ॥ २४ ॥ तिहांथी दिवस गणतां हवे एक महीनामां बाकी एक दिवस छे, ते माटे सहु कोइ वाटडी जोइ बेठां छे, अने अनेक प्रकारना विकल्प कर्या करे छे ॥ २५ ॥

पुत्र शेठ जिनदेवनो जी, हुं श्रावक जिनदास ॥ प्रवहण आव्यां सांभली
जी, आव्यो इहां उल्लास ॥ प्रभु० ॥ २६ ॥ सुणी नाद नाटक तणो जी,
देखण आव्यो जाम ॥ मनमोहन प्रभु तुम तणुं जी, दरिसण दीठुं ताम
॥ प्रभु० ॥ २७ ॥ जाणुं देवी चक्केसरी जी, तुमे आण्या अम पास ॥
जिणहर बार उघाडतां जी, फलशे सहुनी आश ॥ प्रभु० ॥ २८ ॥ पूज्य
पधारो देहरे जी, जुहारो श्री जगदीश ॥ उघडशे ते बारणां जी, जाणुं
विसवा वीश ॥ प्रभु० ॥ २९ ॥ बीजे खंडे एणी परे जी, सुणतां छठी ढाल
॥ विनय कहे श्रोताघरे जी, होजो मंगलमाल ॥ प्रभु० ॥ ३० ॥

अर्थ—वली हुं एज नगरनो रहेवासी जिनदेव नामे शेठनो पुत्र जिनदास नामे श्रावक छुं. ते आजे प्रवहण आव्यां सांभलीने उल्लासथी इहां तमारी पासे पट आवासमां आव्यो छुं ॥ २६ ॥ इहां नाटक थतुं हतुं तेनो (नाद के०) शब्द सांभलीने (जाम के०) जेहवे हुं देखवा आव्यो (ताम के०) तेहवेज हे मनमोहन प्रभु ! में तमारुं दर्शन दीठुं ॥ २७ ॥ पण हुं जाणुं छुं जे श्रीचक्केसरी देवीए गभारा उघाडवा सारु तमनेज अमारी पासे आण्या छे, माटे श्रीजिनघरनां बारणां उघाडतां थका सहुनी आशा फलशे ॥ २८ ॥ तो हे पूज्यजी ! तमे देराने विषे पधारो, अने श्रीजगदीश जे जगतना ईश्वर तेने (जुहारो के०) प्रणाम करो. हुं वीशे विश्वा जाणुं छुं जे तमारी नजरे देखतां ते बारणां अवश्य उघडशे. तेनी साथे अमारां पुण्य पण उघडशे ॥ २९ ॥

बीजा खंडने विषे ए रीते बठी ढाल कही ते सांभलतां थका श्रीविनयविजयजी उपाध्यायजी कहे ठे के श्रोताजनोना घरने विषे मांगलिकनी माला होजो ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

तव हरखे कुंवर भणे, धवल शेठने तेडी ॥ जइए देव जुहारवा, आवो डुर्मति फेडी ॥ १ ॥ शेठ कहे जिनवर नमो, नवरा तुमे निचिंत ॥ विण उपराजे जेहनी, पहोंचे मननी खंत ॥ २ ॥ अमने जमवानो नहीं, घमी एक परवार ॥ सीरामण वालु जिमण, करीए एकज वार ॥ ३ ॥ हवे कुंवर जावा तिहां, जब थाये असवार ॥ हरख्यो हेषारव करे, तेजी ताम तुखार ॥ ४ ॥ साथ लेइ जिनदासने, अवल अवर परिवार ॥ अनुक्रमे आव्या कुंवर, रुषभदेव दरबार ॥ ५ ॥

अर्थ—ए व्यतिकर सांभल्यो, ते वारे श्रीपाल कुंवर धवल शेठने तेमीने हर्षे करी कहे ठे के हे शेठजी ! हे पिताजी ! तमे डुर्मति जे माठी मति तेने फेमीने मारी साथे आवो, तो देव जुहारवा जइए ॥ १ ॥ ते सांभली शेठ कहेवा लाग्यो के तमे निरंतर कामकाज कस्या विना नवरा बेठा गे. वली विण उपराजे एटले उपार्जन कस्या विना पोतानी मेले लक्ष्मी मलती जाय ठे, तमारा मननी खंत पूर्ण थाय ठे, माटे तमे निश्चिंत ठो, तेथी तमे सुखे श्रीजिनवरने (नमो के०) नमस्कार करो ॥ २ ॥ अमने तो व्यापारनां कामकाज करवामांथी जमवाने माटे एक घमी वार पण परवारी शकीए तेम बनतुं नथी, तेथी सीरामण, वालु अने जमण, ए त्रणे एकज वार करीए ठीए ॥ ३ ॥ हवे जे वारे श्रीपाल कुंवर तिहां जवाने माटे घोमा उपर स्वार थया, (ताम के०) ते वखते (तेजी के०) कोइ दिवस चाबुक मारवो न पडे एवी जातिनो (तुखार के०)

घोडो ते हर्ष पामतो हतो (हेषारव के०) हणहणाट शब्द करे छे. अर्थात् ते घोडो पोताना हणहणाट शब्दे करी कुंवरने सारां शकुन आपे छे ॥ ४ ॥ पछी धवल शेठने तिहांज मूकी जिनदास शेठने साथे लइ तथा (अवर के०) वीजो पण जे (अवल के०) सुंदर परिवार, तेणे करी सहित कुंवर तिहांथी चाल्या. ते अनुक्रमे श्रीऋषभदेव स्वामीना दरबार पासे आव्या ॥ ५ ॥

एकेको आवो जइ, सहु गभारा पास ॥ कुंवर पछी पधारशे, इम बोले

॥ ६ ॥ जिम निर्णय करी जाणीए, बार उघाडणहार ॥ गभारे

, सहुको करे जुहार ॥ ७ ॥ हवे कुंवर करी धोतीयां, मुख बांधी

॥ जिणहर मांहे संचरे, मन आणी संतोष ॥ ८ ॥

१। जिनदास शेठ एम बोल्या के प्रथम सर्व श्रीसंघ मांहेलो एकेको पुरुष थइने प्रभुना पासे जइ आवो अने श्रीपाल कुंवर पछी पधारशे ॥ ६ ॥ जे थकी बारणांना उघाडनार ने निश्चे लइए. गभारा पासे जइ जइने प्रभुने जुहार

री पहेरीने मुखे मुखकोश बांधी

संचर्या ॥ ८ ॥

वर विहरण पांगर्यां जी ॥ ए देशी ॥

उघडीयां बार रे ॥ देव कुसुम वरषे

जइने गइ तुरत वधामणी

आवीयो जी, तेजे

थकाज तरत ते गभारानां बेह बारणां

उघमी पड्यां, ते वारे देवोए कुसुमनी वृष्टि करी, अने ते वखते जयजयकार शब्द थयो ॥ १ ॥ राजाने पण तुरत वधामणी गइ के हे महाराज! आजनो दिवस तो सफल सुविहाण उग्यो, देवीए जे वर दीधो हतो ते इहां आव्यो. ते तेजे करीने तो जेवो झलामल करतो सूर्य होय नहीं? ते समान देखाय छे ॥ २ ॥

सोवन भूषण लाख वधामणी जी, देइ पंचांग पसाय रे ॥ सकल सजन
जन परवस्यो जी, देहरे आवे नरराय रे ॥ कुंवर० ॥३॥ दीठो कुंवर जिन
पूजतो जी, केसर कुसुम घनसार रे ॥ चैत्यवंदन चित्त उल्लसे जी, स्तवन
कहे इम सार रे ॥ कुंवर० ॥ ४ ॥ दीठो नंदन नाभि नरिंदनो जी, देवनो
देव दयाल रे ॥ आज महोदय में लह्यो जी, पाप गयां पायाल रे ॥
कुंवर० ॥ ५ ॥ देव पूजीने कुंअर आवीया जी, रंगमंडप मांहि जाम रे ॥
राय सजन जने परवस्या जी, वेगा करीय प्रणाम रे ॥ कुंवर० ॥ ६ ॥

अर्थ—वधामणीयाने सोनानां आभूषण तथा लाख पसाय करी वधामणीना पंचांग पसाय दइने सर्व सज्जन जनना परिवारे परवस्यो थको (नरराय के०) मनुष्योनो राजा देरे आव्यो ॥ ३ ॥ तिहां केशर, फूल अने घनसार जे बरास, तेणे करी श्रीजिनेश्वरने पूजता एवा कुंवरने राजाए दीठो, कुंवरे पण पूजाए करी रह्या पछी चित्तने उल्लासे करी चैत्यवंदन कर्युं. एमज वली (सार के०) प्रधान घणां श्रेष्ठ एवां स्तवनो कह्यां ॥ ४ ॥ तिहां कुंवर प्रभुनी स्तुति आवी रीते करे छे के हे नाभि राजाना पुत्र श्रीऋषभदेवजी! हे देवना देव! हे दयाल! में तमोने दीठा, तेथी आज में मोटा पुण्यनो उदय लह्यो, अने मारां जे पाप हतां ते तो सर्व पातालमां पेसी गयां ॥ ५ ॥ एवी रीते देव पूजीने बहारना रंगमंडप मांहे जे वारे श्रीपाल कुंवर आव्या, ते वारे राजा पण सर्व

घोडो ते हर्ष पामतो नतो (हेषारव के०) हणहणाट शब्द करे छे. अर्थात् ते घोडो पोताना हणहणाट शब्दे करी कुंवरने सारां शकुन आपे छे ॥ ४ ॥ पछी धवल शेठने तिहांज मूकी जिनदास शेठने साथे लइ तथा (अवर के०) बीजो पण जे (अवल के०) सुंदर परिवार, तेणे करी सहित कुंवर तिहांथी चाल्या. ते अनुक्रमे श्रीऋषभदेव स्वामीना दरबार पासे आव्या ॥ ५ ॥

एकेको आवो जइ, सहु गभारा पास ॥ कुंवर पछी पधारशे, इम बोले जिनदास ॥ ६ ॥ जिम निर्णय करी जाणीए, बार उघाडणहार ॥ गभारे आव्या जइ, सहुको करे जुहार ॥ ७ ॥ हवे कुंवर करी धोतीयां, मुख बांधी मुखकोश ॥ जिणहर मांहे संचरे, मन आणी संतोष ॥ ८ ॥

अर्थ—तिहां जिनदास शेठ एम बोल्या के प्रथम सर्व श्रीसंघ मांहेलो एकेको पुरुष थइने प्रभुना गभारा पासे जइ आवो अने श्रीपाल कुंवर पछी पधारशे ॥ ६ ॥ जे थकी बारणांना उघाडनार पुरुषने निश्चे करी जाणी लइए. एवुं सांभली सर्व कोइ गभारा पासे जइ जइने प्रभुने जुहार करता आव्या ॥ ७ ॥ हवे श्रीपाल कुंवर पण शुद्ध धोतीयां करी पहेरीने मुखे मुखकोश बांधी मनमां हर्षवंत थको संतोष आणीने श्रीजिनेश्वरना घरने विषे संचर्यो ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग मल्हार ॥ वे वे मुनिवर विहरण पांगर्यां जी ॥ ए देशी ॥

कुंवर गभारो नजरे देखतां जी, बेहु उघडीयां बार रे ॥ देव कुसुम वरषे तिहां जी, हुवा जयजयकार रे ॥ कुंवर० ॥१॥ रायने गइ तुरत वधामणी जी, आज सफल सुविहाण रे ॥ देवी दीयो वर इहां आवीयो जी, तेजे झलामल भाण रे ॥ कुंवर० ॥ २ ॥

अर्थ—तिहां श्रीपाल कुंवरे पोतानी नजरे गभारो देखतां थकाज तरत ते गभारानां बेहु बारणां

उघमी पड्यां, ते वारे देवोए कुसुमनी वृष्टि करी, अने ते वखते जयजयकार शब्द थयो ॥ १ ॥ राजाने पण तुरत वधामणी गइ के हे महाराज! आजनो दिवस तो सफल सुविहाण उग्यो, देवीए जे वर दीधो हतो ते इहां आव्यो. ते तेजे करीने तो जेवो झलामल करतो सूर्य होय नहीं ? ते समान देखाय छे ॥ २ ॥

सोवन ज्रूषण लाख वधामणी जी, देइ पंचांग पसाय रे ॥ सकल सजन
जन परवख्यो जी, देहरे आवे नरराय रे ॥ कुंवर० ॥३॥ दीठो कुंवर जिन
पूजतो जी, केसर कुसुम घनसार रे ॥ चैत्यवंदन चित्त उल्लसे जी, स्तवन
कहे इम सार रे ॥ कुंवर० ॥ ४ ॥ दीठो नंदन नाज्ति नरिंदनो जी, देवनो
देव दयाल रे ॥ आज महोदय में लह्यो जी, पाप गयां पायाल रे ॥
कुंवर० ॥ ५ ॥ देव पूजीने कुंअर आवीया जी, रंगमंमप मांहि जाम रे ॥
राय सजन जने परवख्या जी, बेठा करीय प्रणाम रे ॥ कुंवर० ॥ ६ ॥

अर्थ—वधामणीयाने सोनानां आज्रूषण तथा लाख पसाय करी वधामणीना पंचांग पसाय दइने सर्व सज्जन जनना परिवारे परवख्यो थको (नरराय के०) मनुष्योनो राजा देरे आव्यो ॥ ३ ॥ तिहां केशर, फूल अने घनसार जे बरास, तेणे करी श्रीजिनेश्वरने पूजता एवा कुंवरने राजाए दीठो, कुंवरे पण पूजाए करी रह्या पछी चित्तने उल्लासे करी चैत्यवंदन कख्युं. एमज वली (सार के०) प्रधान घणां श्रेष्ठ एवां स्तवनो कह्यां ॥ ४ ॥ तिहां कुंवर प्रज्रुनी स्तुति आवी रीते करे छे के हे नाज्ति राजाना पुत्र श्रीऋषज्रदेवजी! हे देवना देव! हे दयाल! में तमोने दीठा, तेथी आज में मोटा पुण्यनो उदय लह्यो, अने मारां जे पाप हतां ते तो सर्व पातालमां पेसी गयां ॥ ५ ॥ एवी रीते देव पूजीने बहारना रंगमंमप मांहे जे वारे श्रीपाल कुंवर आव्या, ते वारे राजा पण सर्व

म नाग जनना परिवारे परवर्यो थको छे, तेने रायने प्रणामे प्रणाम करीने सर्वे बेसता हवा ॥ ६ ॥

जिनघरबार उघाम्तां जी, अचरिज कीधी तुमे वात रे ॥ देवस्वरूपी दीसो आपणां जी, वंश प्रकाशो कुल जात रे ॥ कुंवर० ॥ ७ ॥ न कहे उत्तम नाम ते आपणुं जी, नवि करे आप वखाण रे ॥ उत्तर न दीधो तेणे रायने जी, कुंअर सयल गुण जाण रे ॥ कुंवर० ॥ ८ ॥ देखो अचंजो इणे अवसरे जी हुउं गयणे उद्योत रे ॥ उंचे वदने जोवे तव सहु जी, ए कुण प्रगटी ज्योत ॥ कुंवर० ॥ ए ॥ विद्याचारण मुनि आवीया जी, देव घणा तस साथ रे ॥ जइ जुहारे जिन वांदीया जी, थुण्या श्रीजगनाथ रे ॥ कुंवर० ॥ १० ॥ देवरचित वर आसने जी, बेठा तिहां मुनिराय रे ॥ दीए मधुर ध्वनि देशना जी, भविकश्रवण सुखदाय रे ॥ कुंवर० ॥ ११ ॥

अर्थ–पछी राजा कुंवरनी समस्त प्रकारे स्तुति करीने कहेवा लाग्यो के श्री जिनघरनां बारणां उघाम्तां तमे अचरिज जेवी वात करी, तेथी तमे कोइ देवस्वरूपी देखाउ छो, माटे कृपा करीने आपनां वंश, कुल, जाति ए सर्वेनो प्रकाश करो ॥ ७ ॥ एवी राजाए प्रार्थना करी, परंतु उत्तम पुरुष पोते पोताने मुखे पोतानुं नाम मात्र पण कहे नहीं अने पोतानां वखाण पण करे नहीं. एवा सर्व गुणनो जाण श्रीपाल छे, माटे तेणे राजाने कांइ पण उत्तर दीधो नहीं ॥ यतः ॥ परप्रणीता हि गुणा यशस्कराः, स्वयं प्रणीता न भवंति कीर्त्तये ॥ न सौख्यसौभाग्यकरा भवंति ते, स्वयं गृहीतौ युवतीकुचाविव ॥ १ ॥ इति ॥ ८ ॥ (देखो के०) जुउ. एवा अवसरने विषे एक अचंबो देख्यो ते कहे छे. (गयणे के०) आकाशे उद्योत थयो, ते वारे उंचुं मुख करी सर्व जोवा लाग्या के आ ते कया प्रकारनी ज्योति प्रगट थइ छे ? ॥ ए ॥ एवामां घणा देवो

जेमनी साथे छे एवा विद्याचारण मुनि आकाशथी नीचे उतरता तिहां आव्या. तेमणे प्रथम तो गन्नारा आगल जइ श्रीजिनने वांदीने श्रीजगत्त्रयना नाथने थुण्या, एटले स्तव्या ॥ १० ॥ पछी देवोए प्रधान सिंहासन रच्युं, ते सिंहासन उपर मुनिराज आवी बेठा. तिहां भविक जीवना श्रवण जे कान, तेने सुखनी देनारी एवी देशना मधुर ध्वनिए एटले मीठा शब्दे करी देवा लाग्या ॥ ११ ॥

नव पद महिमा तिहां वरणवे जी, सेवो भविक सिद्धचक्र रे ॥ इह भव परभव लहीए एहथी जी, लीला लहेर अथक्क रे ॥ कुंवर० ॥१२॥ दुःख दोहग सवि उपशमे जी, पग पग पामे ऋद्धि रसाल रे ॥ ए नव पद आराधतां जी, जिम जग कुंअर श्रीपाल रे ॥ कुंवर० ॥१३॥ प्रेमे सयल पूछे परषदा जी, ते कोण कुंअर श्रीपाल रे ॥ मुनिवर तव धुरथी कहे जी, तेहनुं चरित्र रसाल रे ॥ कुंवर० ॥ १४ ॥

अर्थ–हवे मुनिराज तिहां देशना मांहे नव पदना महात्म्यनुं वर्णन करतां थकां ज कहे छे के भो भो भव्यो ! हे महानुभावो ! तमे जे थकी आ भव अने परभवने विषे अथाग एटले पार विनानी जेनो थाग नहीं एवी लीलानी लहेर (लहीए के०) पामीए, एवा श्रीसिद्धचक्र भगवानने सेवो. इहां श्रीअरिहंतादिक नव पदना समुदायने सिद्धचक्र कहीए, जे माटे श्रीजिनेश्वरे कहेलां देवतत्त्व, गुरुतत्त्व अने धर्मतत्त्व, ए त्रणे तत्त्व आराधवा योग्य छे, ते त्रणे तत्त्व ए नव पदने विषे ज छे, तेमां एक श्रीअरिहंत अने बीजा सिद्ध भगवान् ए बे पद देवतत्त्व-रूप जाणवां तथा एक आचार्य, बीजा उपाध्याय अने त्रीजा साधु, ए त्रण पद गुरुतत्त्वरूप जाणवां, तथा एक दर्शन, बीजुं ज्ञान, त्रीजुं चारित्र अने चोथुं तप, ए चार पद धर्मतत्त्वरूप जाणवां. एम त्रण तत्त्वना उत्तर भेद नव थया. तेज नव पदने तमे परम भक्तिए करी आराधो

॥ १२ ॥ ए थकी दुःख अने दौर्भाग्य सर्व उपशमी जाय, अने पगले पगले रसाल ऋद्धि पामे. ए नव पदने आराधतां नका जेम जगत् मांहे श्रीपाल कुंवर सुख पाम्या, तेम तमे पण पामो ॥ १३ ॥ ते सांभली सर्व पर्षदानां लोक तिहां प्रेमपूर्वक पूछवा लाग्यां के हे महाराज ! ते श्रीपाल कुंवर कोण थयो ? तेनुं चरित्र कही संभलावो. ते वारे मुनिराजे पण ते श्रीपाल कुंवरनुं रसाल चरित्र त्यां (मुरथी के०) प्रथमथी मांकीने देरासरमां गभारानां कमाड आवी उघाड्यां, तिहां-सुधी कही संभलाव्युं ॥ १४ ॥

ते तुम पुण्ये इहां आवीयो जी, उघड्यां चैत्य दुवार रे ॥ तेह सुणीने नृप
हरखीयो जी, हरख्यो सवि परिवार रे ॥ कुंवर० ॥१५॥ इम कहीने मुनि-
वर उतपत्या जी, गयणमारग ते जाय रे ॥ उभा थइ उंचे मुखे जी,
वंदे सहु तस पाय रे ॥ कुंवर० ॥ १६ ॥ ढाल सुणी इम सातमी जी,
खंड बीजानी एह रे ॥ विनय कहे सिद्धचक्रनी जी, भक्ति करो गुण-
गेह रे ॥ कुंवर० ॥ १७ ॥

अर्थ—ते श्रीपाल तमारां पुण्ये करी इहां आव्यो, जेना देखवाथी चैत्यनां द्वार उघड्यां. ए कथा सांभलीने राजा घणो हर्षवंत थयो, तथा सर्व परिवार पण हर्ष पाम्यो ॥ १५ ॥ एवी रीते श्रीपालनो संबंध कही तिहांथी मुनिवर आकाशमार्गे (उतपत्या के०) जता हवा, तेमना पगने सर्व लोक उभा थइने उंचे मुखे करी वांदवा लाग्यां ॥ १६ ॥ एम बीजा खंडनी ए सातमी ढाल सांभलीने हे भव्यो ! तमे सर्व उत्तम गुणोना घररूप एवा जे श्रीसिद्धचक्र भगवान् छे तेनी भक्ति करो, एम श्रीविनयविजय उपाध्यायजी कहे छे ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

बेठा जिनहर बारणे, मुख मंडप सहु कोय ॥ कुंवर निरखी रायनुं, हैडुं हरषित होय ॥ १ ॥ धन रिसहेसर कल्पतरु, धन चक्केसरी देवी ॥ जास पसाये मुज फल्यां, मनवांछित ततखेवि ॥ २ ॥ तिलक वधावी कुंवरने, देइ श्रीफल पान ॥ सज्जन साखे प्रेमे करी, दीधुं कन्यादान ॥ ३ ॥ श्रीफल फोफल सयणने, देइ घणां तंबोल ॥ तिलक करीने छांटणां, कीधां केसर घोल ॥ ४ ॥ निज डेरे कुंवर गया, मंदिर पहोता राय ॥ बेहु ठामे विवाहना, घणा महोत्सव थाय ॥ ५ ॥ वडी वडारण दे वली, पापड घणा वणाय ॥ केलवीए पकवान्न बहु, मंगल धवल गवाय ॥ ६ ॥

अर्थ–हवे श्रीजिनघरनी बाहिर मुख मंडपने विषे सहु कोइ आवी बेठा छे, तिहां कुंवरने निरखीने राजानुं हैयुं हर्षित थाय छे ॥ १ ॥ राजा कहे छे के कल्पतरु समान एवा श्रीऋषभेश्वर एटले आदिनाथ जगवान् तेने धन्य छे, वली चक्रेश्वरी देवीने पण धन्य छे के जेना पसायथी मारां मनोवांछित ततखेवि एटले तुरत फलीभूत थयां ॥ २ ॥ एम चिंतवी श्रीपाल कुंवरने तिलक वधावी, श्रीफल तंबोल आपी, सर्व सज्जनोनी साखे प्रेमे करी राजाए कन्यादान दीधुं ॥ ३ ॥ तथा सयण जे स्वजन जनो तेमने पण श्रीफल जे नालियेर अने फोफल एटले सोपारी तथा घणां (तंबोल के०) पान देइ, तिलक करी, केशर घोलीने छांटणां कीधां ॥ ४ ॥ हवे कुंवर पोताने (डेरे के०) तंबुमां गया, अने राजा पोताने मंदिरे पहोता, तिहां बन्ने पक्षमां पोतपोताने स्थानके विवाह संबंधी घणा महोत्सव थाय छे ॥ ५ ॥ (वली वडारण के०) मोटी वडारण एटले खवासण जे छे, ते वलीउं दे छे एटले आपे छे, घणा पापड वणाय छे, (बहु के०) घणा प्रका-

रना धवाद तेने (केलवीए के०) केलवीने करे छे. मांगलिकनां धवल एटले धोल गीत गवाय छे ॥ ६ ॥

वाघा सीवे नवनवा, दरजी बेठा बार ॥ जडिया मणि माणिक जडे, घाट घडे सोनार ॥ ७ ॥ राय मंडाव्यो मांडवो, सोवन मणिमय थंन्न ॥ थंन्न थंन्न मणिपूतली, करती नाटारंन्न ॥ ८ ॥ तोरण चिहुं दिशि वारणे, नील रयणमय पान ॥ फूमे मोती फुमखा, जाणे सरग विमान ॥ ए ॥ पंच वरणने चंडुवे, दीपे मोतीदाम ॥ मानुं तारामंडले, आवी कीयो विशराम ॥ १० ॥ चोरी चिहुं पखे चितरी, सोवन माणिक कुंन्न ॥ फूलमाल अति फूटरी, महके सबल सुरंन्न ॥ ११ ॥

अर्थ–दरजी लोको बारणे बेठा थका नवनवा वाघा शीवे छे अने जडिया लोको छे ते मणि अने माणिक जडे छे, तथा सोनार लोको नवनवा घाट घडे छे ॥ ७ ॥ हवे राजाए मांडवो मंडाव्यो छे, ते केवो छे ? तो के प्रथम तो ते मंडपमां संपूर्ण मणिरत्ने जडाव एवा सोनाना थंन्न ऊन्ना कीधा छे, ते मणिरत्नमयज देखाय छे, एवा थंन्ने करी ते मंडप विराजित छे. वली ते थंन्न थंन्नने विषे मणिरत्ननी पूतलीर्ट बनावी छे, ते जाणीए नाटारंन्नज करती होय नहीं ? एवी मुखमुद्राए रही थकी शोन्ने छे ॥ ८ ॥ तथा ते मंडपनी चारे दिशार्टनां बारणार्टने विषे नीलां रत्नमय पानांए करी शोन्नित एवां तोरणो बांध्या छे. ते तोरणोमां वली मोतीना फुमखा फुंबी रह्या छे, तेथी लटकता देखाय छे, ते जाणीए स्वर्गनां विमानज लटकतां होय नहीं ? एवा थकां शोन्ने छे, अथवा ते तोरणो नीलां पानांनां छे, ते विमान जेवांज छे, अने विमानोमां मोतीर्टना फुमखा फुंबी रहेला होय छे, माटे ते तोरणो पण विमानसदृश शोन्नतां थकां देखाय छे ॥ ए ॥ वली ते मंडपमां पांच वर्णना चंडुवा बांध्या छे, ते चंडुवाने विषे मोतीर्टनी (दाम के०) मालार्ट बांधेली छे, ते केवी दीपे छे ? तिहां

कवीश्वर कहे छे के हुं एम मानुं छुं जे आकाशमां रहेला ताराउना मंफले आवीनेज इहां विश्राम कीधो होय नहीं ? एवां ते मालाउनां मोतीउं देदीप्यमान थकां शोन्ने छे ॥ १० ॥ तथा वली राजाए चोरी बंधावी छे, ते केवी छे ? तो के चारे बाजुए मणिरत्ने जमाव एवा सोनाना (कुंन्न के०) घट, तेणे करी चितरेली छे. ते घडाउने वली अत्यंत फूटरी एटले उंची सरस एवी फूलोनी मालाउं पहेरावेली छे, ते (सबल के०) घणी एवी जे (सुरंज के०) सुगंध तेणे करी महकी रही छे ॥ ११ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ राग खंन्नायती ॥ करमो तिहां कोटवाल ॥ ए देशी ॥

हवे श्रीपाल कुमार, विधिपूर्वक मज्जन करे जी ॥ पहेरे सवि शणगार, ति-
लक निलाडे शोन्ना धरे जी ॥ १ ॥ शिर खूणालो खूंप, मणि माणिक मोती जड्यो
जी ॥ हसे हीराने तेज, जाणे हुं नृप शिर चड्यो जी ॥ २ ॥ काने कुंफल
दोय, हार हैये सोहे नवलखा जी ॥ जड्यां कंदोरे रतन, बांहे बाजुबंध
बहेरखा जी ॥ ३ ॥ सोवन वींटी वेढ, दश आंगुलिए सोहीए जी ॥ मुख
तंबोल सुरंग, नर नारी मन मोहीए जी ॥ ४ ॥

अर्थ—हवे श्रीपाल कुंवर विधिपूर्वक स्नान मज्जन करे, ते करीने पछी सर्व प्रकारनां आन्नूषण आदिक शणगार पहेरे, ते पहेरीने पछी ललाटे तिलकनी शोन्ना धरता हवा ॥ १ ॥ वली श्रीपाल कुंवरना शिर एटले मस्तकने विषे खूणावालो खूंप बांध्यो छे, ते मणि, माणिक अने मोतीए करी जड्यो छे, तेमां जे हीरा जडेला छे तेना तेजे करी ते खूंप हसे छे, अर्थात् जाणीए हसतोज होय नहीं ? एवो देखाय छे. तिहां कवि उत्प्रेक्षा करे छे के ते खूंप एवुं जाणे छे जे हुं (नृप के०) राजाना पण शिर उपर चढ्यो छुं, माटे हुं सर्व अलंकारमां उत्तम छुं, अथवा राजाउं करतां पण हुं मोटो छुं एवो गर्व आणीनेज जाणीए हसतो होय नहीं ? ॥ २ ॥ वली बे कानने विषे बे कुंफल

...ठे. हृदाने विषे नवलखा हार शोभी रह्या ठे, केमने विषे रत्ने जडाव कंदोरो बांध्यो ठे, ...बाहुने विषे बाजुबंध बहेरखा बांध्या ठे ॥ ३ ॥ बे हाथनी दशे आंगुलिए सोनानी वींटीउं ...पण शोभी रह्या ठे, तथा मुख तो प्रथमथीज महा तेजस्वी ठे, वली तंबोल चाववाथी विशेषे ...सुरंग एटले सारा रंगवालुं देखाय ठे. एवा देदीप्यमान कुंवरने जोइने तिहां नर नारीनां ...मन मोहने पामे ठे ॥ ४ ॥

कर धरी श्रीफल पान, वरघोडे जव संचस्या जी ॥ सांबेलां श्रीकार, सहस-
गमे तव परवस्यां जी ॥ ५ ॥ वाजे ढोल निशान, सरणाइ भुंगल घणी
जी ॥ रथ बेठी सयवऽ, गाये मंगल जानणी जी ॥ ६ ॥ साव सोनेरी
साज, हयवर हीसे नाचता जी ॥ शिर सिंदूर सोहंत, दीसे मयगल माचता
जी ॥ ७ ॥ चहुटे चहुटे लोक, जुवे महोत्सव नवनवे जी ॥ इम महोटे
मंमाण, मोहन आव्या मांडवे जी ॥ ८ ॥

अर्थ–हवे हाथमां श्रीफल पान लइने जे वारे वरघोमामां संचस्या, .ते वारे हजारोगमे ...श्रीकार के०) शोभाने धरनारां एवां सांबेलां तेनी साथे (परवस्यां के०) आगल चाल्यां ॥ ५ ॥ ढोल, नगारां, निशान तथा शरणाइउं अने भुंगलो घणां वाजे ठे, वली (सयबऊ के०) ...सेंकडागमे स्त्रीउं जानरुीउं जे बे ते रथमां बेठी थकी मांगलिकनां गीतो गाय ठे ॥ ६ ॥ (साव ...के०) केवल सोनेरीनो साज नाख्यो ठे जेमनी उपर एवा (हयवर के०) श्रेष्ठ घोडाउं नाचता ...थका आनंदमां मग्न थया थका हीसे एटले हणहणाट करे बे, वली जेमना (शिर के०) मस्त-...कने विषे सिंदूर शोभे बे एवा (मयगल के०) हाथीउं ते (माचता के०) मलपता थका (दीसे ...के०) देखाय ठे ॥ ७ ॥ तिहां चौटा चौटाने विषे लोक नवनवे महोत्सवे करी जुवे ठे. एवी ...रीते मोटे मंडाणे करी (मोहन के०) श्रीपाल कुंवर मांडवाने विषे आवी पहोंच्या ॥ ८ ॥

पोंखी आण्या मांहि, सासुए उलट घणे जी ॥ आणी चोरी मांहि, हर्ष घणो कन्या तणे जी ॥ ए ॥ कर मेलावो कीध, वेदपाठ ब्राह्मण भणे जी ॥ सोहव गाये गीत, बिहु पखे आप आपणे जी ॥ १० ॥ करी अग्निनी साख, मंगल चारे वरतीयां जी ॥ फेरा फरतां ताम, दान नरिंदे बहु दीयां जी ॥ ११ ॥ केलवीयो कंसार, सरस सुगंधो महमहे जी ॥ कवल ठवे मुख मांहि, मांहोमांहे मन गहगहे जी ॥ १२ ॥ मदनमंजूषा नारी, प्रेमे परणी इणी परे जी ॥ बिहुं नारीशुं भोग, सुख विलसे सुसराघरे जी ॥१३॥

अर्थ–तेमने सासुए घणा उलट सहित पोंखीने मांहे आण्या. वली कन्याने पण चोरी मांहे आणी, ते वारे तेना मनमां पण परणवानो हर्ष घणो छे ॥ ए ॥ पछी (कर मेलावो के०) हाथ मेलावो कीधो ते वखत ब्राह्मण वेदपाठ भणे छे, वली बेहु पक्षवालानी (सोहव के०) सुवासण स्त्रीउ आप आपनी तरफनां गीत गाय छे ॥ १० ॥ पछी अग्निनी साखे करी चारे मंगल वर्त्तावीने वर कन्याने फेरा फेरव्या, ते वखते राजाए घणा प्रकारनां दान दीधां ॥ यतः ॥ दानह वेला उजला, जग विरला को होय ॥ जलहर जल देवा समे, श्याम वदनधर जोय ॥ १ ॥ दानं सहिसनिदानं कुशलनिदानं कलंककरिसिंहः ॥ श्रीकलंककंठनूतं, सिद्धिवधूसंगमे दूतः ॥ २ ॥ इति ॥ ११ ॥ पछी सरस सुगंधे करी महमहाट करी रह्यो छे एवो कंसार केलव्यो छे एटले बनाव्यो छे, तेना (कवल के०) कोलीया तेने हर्ष सहित स्त्री ने भर्तार बेहु जण मली मांहोमांहे मनना गहगहाटे करी एकेकना मुखमां मूके छे ॥ १२ ॥ ए रीते मदनमंजूषा स्त्रीने प्रेमे करी परण्या. हवे श्रीपाल कुंवर ससराने घेर रह्या थका बेहु स्त्रीउंनी साथे सुखने (विलसे के०) भोगवे छे ॥ १३ ॥

ऋषभदेव प्रासाद, उछव पूजा नित करे जी ॥ गीत गान बहु दान, वित्त घणुं तिहां वावरे जी ॥ १४ ॥ चैत्र मासे सुखवास, आंबिल ओली आदरे जी ॥ सिद्धचक्रनी सार, लाखीणी पूजा करे जी ॥ १५ ॥ वरतावी अमार, अठाइ महोत्सव घणो जी ॥ सफल करे अवतार, लाहो लीए लखमी तणो जी ॥ १६ ॥ इक दिन जिनहर मांहि, कुंअर राय बेठा मली जी ॥ नृत्य करावे सार, जिनवर आगल मन रली जी ॥ १७ ॥ इणे अवसर कोट-वाल, आवी अरज करे इसी जी ॥ दाणचोरीए चोर, पकड्यो तस आज्ञा कीसी जी ॥ १८ ॥

अर्थ–इहां कुंवर श्रीऋषभदेवजीना प्रासादने विषे मोटा आनंदे करी नित्य प्रत्ये उत्सव सहित पूजा करे छे, तथा घणां गीत गान करे छे, बहु दान आपतो थको तिहां घणुं (वित्त के०) द्रव्य वावरे छे ॥ १४ ॥ फरी चैत्र महीनो आव्यो ते वारे सुखना आवासरूप आयंबिलनी ओली आदरीने श्रीसिद्धचक्रजीनी प्रधान लाखीणी पूजा करे छे ॥ १५ ॥ आठ दिवस पर्यंत अमारीनो पडह वर्त्तावीने एटले वगडावीने घणो मोटो अठाइ महोत्सव कर्यो. एवी रीते कुंवर पोतानो मनुष्य-अवतार सफल करे छे, अने लक्ष्मी पाम्यानो लाहो लीए छे ॥ १६ ॥ एक दिवसे जिनेश्वरना देरा मांहे कुंवर अने राजा ए बेहु जण साथे मली बेठा छे, अने (मन रली के०) मननी मग्नताए श्रीजिनेश्वरनी आगल उत्तम नृत्य करावे छे ॥ १७ ॥ ए अवसरे कोटवाल आवीने राजाने एवा प्रकारनी अरज करवा लाग्यो के हे महाराज ! दाणचोरीए चोर थयेलो एटले दाणचोरीनो करनार चोर अमे पकड्यो छे, तेने आप केवा प्रकारनी शिक्षा करवा हुकम करो छो ? ते कहो ॥ १८ ॥

वली ज्ञांगी तुम आण, बल बहुलुं इणे आदस्युं जी ॥ अमे देखाड्या हाथ, तव महोढुं ऊांखुं कस्युं जी ॥ १ए ॥ राजा बोले ताम, दंड चोरनो दीजीए जी ॥ जिणहरमां ए वात, कहे कुंअर किम कीजीए जी ॥ २० ॥ नजरे करी हजुर, पहेलां कीजे पारखुं जी ॥ पढे देइजे दंड, सहुए न होये सारिखुं जी ॥ २१ ॥ आण्यो जिसे हजुर, धवल शेठ तव जाणीयो जी ॥ कहे कुंअर महाराज, चोर ज्ञलो तुमे आणीयो जी ॥ २२ ॥ ए मुज पिता समान, हुं ए साथे आवीयो जी ॥ कोटिध्वज सिरदार, वाहण इहां घणां लावीयो जी ॥ २३ ॥ ढेडावी तस बंध, तेडी पासे बेसाडीयो जी ॥ गुनह करावी माफ, रायने पाय लगाडीयो जी ॥ २४ ॥

अर्थ–वली तमारी आणा दीधी ते पण एणे ज्ञांगी नाखी, तथा अमारी सामुं घणुं वल आदस्युं, परंतु अमे जे वारे खरेखरा हाथ देखाड्या, ते वारे तेणे पोतानुं मुख ऊांखुं कस्युं ॥ १ए॥ ते सांज्ञली राजा बोल्यो के एने चोरनो दंरू आपो, ते वारे कुंवर कहेवा लाग्यो के हे स्वामिन् ! जिनघरमां ए वात केम करीए ? ॥ २० ॥ वली जे चोर होय तेने प्रथम तो पोतानी नजर आगल हजुर करीने तेनी परीक्षा करीए, अने पढी जे कांइ तेने दंरू देवो घटे ते आपीए, शा माटे ? जे सर्व माणस कांइ सरखां न होय "सहुने होये सारिखुं जी" एवो पाठांतर पण ढे ॥ २१ ॥ पढी जे वारे राजानी हजुरमां तेने लइ आव्या, ते वारे ए धवल शेठ ढे एवुं जाणीने कुंवर राजाने कहेतो हवो के महाराज ! आ चोर तो तमे घणो ज्ञलो आण्यो ॥ २२ ॥ ए तो मारा पिता समान ढे, हुं एनी साथेज इहां आव्यो बुं, वली ए तो कांइ सामान्य माणस नथी, परंतु कोटिध्वजो जे ढे तेनो पण ए सिरदार ढे, अने इहां तमारा बंदर मांहे घणां वहाण

लइ आव्यो छे ॥ २३ ॥ एम कही तेनां बंधन छोडावी शेठने तेडी पोतानी पासे बेसाड्यो, अने तेनो गुन्हो माफ करावी राजाने पगे लगाड्यो ॥ २४ ॥

राय कहे अपराध, एहनो परमेसर सह्यो जी॥ अजरामर थयो एह, जेह तुमे बांहे ग्रह्यो जी ॥ २५ ॥ एक दिन आवी शेठ, कुंवरने एम विनवे जी ॥ वेची वहाणनी वस्तु, पूर्यां करीयाणे नवे जी ॥ २६ ॥ तुमे अमने इण ठाम, कुशल खेमे जिम आणीया जी ॥ तिम पहोंचाडो देश, तो सुख पामे प्राणीया जी ॥ २७ ॥ कुंअरे जणाव्यो भाव, निज देशे जावा तणो जी ॥ तव नृपने चित्त मांहि, असंतोष उपज्यो घणो जी ॥ २८ ॥ माग्यां भूषण जेह, ते उपर ममता कीसी जी ॥ परदेशीशुं प्रीत, दुःखदायी होये इसी जी ॥ २९ ॥ सासु सुसरो दोय, कर जोडी आदर घणे जी ॥ आंसु पडते धार, कुंअरने इणी परे भणे जी॥ ३० ॥

अर्थ–राजाए कह्युं के एनो अपराध तो परमेश्वरे सहन कर्यो एटले माफ कर्यो, ए तो हवे अजरामर थयो जाणवो, कारण के जे तुमे (बांहे ग्रह्यो के०) हाथे झाल्यो ते अजर अमर थयो एमां कांइ नवाइ नथी ॥ २५ ॥ हवे एक दिवसे धवल शेठ आवीने श्रीपाल कुंवरने एम विनवे छे के हे स्वामिन् ! वहाणनी वस्तु सर्वे वेचीने फरी नवां करीयाणां लइ तेणे करी वहाण (पूर्यां के०) भर्यां ॥ २६ ॥ माटे तमे अमने आ ठेकाणे जेवी रीते कुशले खेमे लाव्या छो तेवी रीते फरी पाछा अमारे देश पहोंचाडो तो प्राणी सर्वे सुख पामे ॥ २७ ॥ ते सांभली कुंवरे पण पोताने देश जवानो भाव ससराने जणाव्यो, ते वारे राजाना चित्तने विषे घणो असंतोष उपन्यो ॥ २८॥ तथापि वली विचार्युं जे मागी लावेलां आभूषणो होय तेनी उपर फोकट ममता शी करवी ?

ते पण एवीज डुःखदायी होय ॥ २ए ॥ एम निर्धारी सासु अने ससरो वेहु जण वे हाथ जोमी घणा आदरे करी आंखमांथी आंसुनी धारा पमते थके कुंवर प्रत्ये एवी रीते (जणे के०) कहेतां हवां ॥ ३० ॥

मदनमंजूषा एह, अम उत्संगे उछरी जी ॥ जन्मथकी सुख मांहि, आज लगे लीला करी जी ॥३१॥ वाहाली जीवितप्राय, तुम हाथे थापण ठवी जी ॥ एहने म देशो छेह, जो पण परणो नवनवी जी॥ ३२ ॥ पुत्रीने कहे वत्स, क्षमा घणी मन आणजो जी ॥ सदा लगे जरतार, देव करीने जाणजो जी ॥ ३३ ॥ सासु सुसरा जेठ, लज्जा विनय म चूकजो जी ॥ परिहरजो परमाद, कुलमरजादा म मूकजो जी ॥ ३४ ॥ कंत पहेली जाग, जागंतां नवि ऊंघीए जी ॥ शोक्य बहेन करी जाण, वचन न तास उल्लंघीए जी ॥३५॥

अर्थ–के हे राजन् ! ए मदनमंजूषा नामे पुत्री, ते अमारा खोलामां उछरी छे, एणे जन्मथकी मांडीने आज दिवस सुधी सदाय सुख मांहेज लीला करी छे ॥ ३१ ॥ ए पुत्री प्रायः अमारा जीवथकी पण अमने घणीज वहाली छे, ते आज तमारे हाथे जेम थापण (ठवी के०) स्थापी होय तेम आपी छे, माटे जो पण तमे नवनवी स्त्रीउं परणो, तोपण एने छेह देशो नहीं ॥ ३२ ॥ हवे पोतानी पुत्रीने शिखामण आपवा माटे राजा राणी कहे छे के हे वत्से ! तमे तमारा मनमां घणी क्षमा आणजो, क्रोध करशो नहीं, अने सदा लगण जर्तारने तो देव करीनेज जाणजो ॥ ३३ ॥ वली सासु, ससरो अने जेठ, तेमनी लज्जा विनय करवानुं के वारे पण चूकशो नहीं. तथा प्रमादने परहरजो, त्याग करजो अने कुलनी मर्यादा मूकशो नहीं ॥ ३४ ॥ वली जर्तार जाग्याथी पहेली जागजे, तथा जर्तार जागतो होय तिहां सुधी ऊंघीश नहीं, शोक्य होय तेने बहेन जेवी जाणजे, शोक्यनुं वचन उल्लंघन करीश नहीं ॥ ३५ ॥

कंत सयल परिवार, जम्या पछी ज्नोजन करे जी ॥ दास दासीजण ढोर, खबर सहुनी चित्त धरे जी ॥ ३६ ॥ जिनपूजा गुरुज्नक्ति, पतिव्रता व्रत पालजो जी ॥ शी कहीए तुम शिख, इम अम कुल अजुवालजो जी ॥ ३७ ॥ रयण ऋद्धि परिवार, देइ नृपे वाहण ज्नर्यां जी ॥ मयणमंजूषा धूअ, वोलावा सहु नीसर्यां जी ॥ ३८ ॥ कांठे सयल कुटुंब, हैर्मां ज्नर ज्नेटी मळ्यां जी ॥ तस मुख वारोवार, जोतां ने रोतां पाछां वळ्यां जी ॥ ३९ ॥ कुंअर वाहण मांहि, बेठा साथे दोइ वहू जी ॥ काम अने रति प्रीति, मलीयां एम जाणे सहु जी ॥ ४० ॥ बीजे खंडे एह, ढाल थुणी इम आठमी जी ॥ विनय कहे सिद्धचक्र, ज्नक्ति करो सुरतरु समी जी ॥ ४१ ॥

अर्थ–पोतानो ज्नर्तार तथा बीजो पण परिवार जे होय ते सर्वे जमी रह्या पछी तुं ज्नोजन करजे. वली दास, दासीजन तथा ढोर प्रमुख सहुनी खबर लेवी, एवुं चित्त धरे, एटले चित्त राखजे ॥ ३६ ॥ श्रीजिनेश्वरनी पूजा तथा गुरुनी ज्नक्ति करजो, पतिव्रता व्रत पालजो, बीजी वधारे शिख तमने अमे शी कही देखाडीए ? तमे एम शुज्नाचरण आचरीने अमारा कुलने अजुवालजो ॥ ३७ ॥ एवी रीते पुत्रीने शिखामण आपीने पछी राजाए रत्न, ऋद्धि तथा बीजो पण घणो परिवार आपीने वहाण ज्नर्यां, अने मदनमंजूषा पुत्रीने वोलाववाने माटे सर्वे कोइ नीसर्यां ॥ ३८ ॥ बंदरने कांठे सर्व कुटुंब आवी हैर्मां ज्नरी ज्नेटीने मळ्यां, पछी ते पुत्रीनुं मुख वारंवार जोतां जोतां अने रोतां थकां पाछां वळ्यां ॥ ३९ ॥ हवे श्रीपाल कुंवर वहाण मांहे पोतानी बे स्त्रीउ साथे बेठा, ते सहु कोइ एमज जाणे छे के आ तो कामदेव अने तेनी रति तथा प्रीति ए बे स्त्रीउ तेज इहां आवी एकठां मळ्यां छे, ए कविए उत्प्रेक्षा करी छे ॥ ४० ॥ बीजा खंडने

विषे ए आठमी ढाल एवी रीते स्तवी, माटे जो जव्यो ! तमे (सुरतरु के०) कल्पवृक्ष समान मनोवांछितनी देवावाली एवी श्रीसिद्धचक्रजी महाराजनी जक्ति करो, एम श्रीविनयविजय उपाध्यायजी कहे छे ॥ ४१ ॥

॥ चोपाइ ॥

खंड खंड मधुरो जिम खंड, श्री श्रीपालचरित्र अखंड ॥
कीर्तिविजय वाचकथी लह्यो, बीजो खंड इम विनये कह्यो ॥ १ ॥

अर्थ—ए रासनो खंम खंड (मधुरो के०) मीठाशवालो छे, जेम (खंम के०) खांमना कटका कटका मांहे मीठाश घणी होय तेम ए रासना पण खंम खंममां मीठाश घणी छे, अने श्री श्रीपाल राजानुं संपूर्ण चरित्र तो अखंम रूप छे, ते जे प्रमाणे श्री कीर्त्तिविजय उपाध्यायजीना मुखथी (लह्यो के०) सांजल्यो (एम के०) एज प्रमाणे आ बीजो खंड श्री विनयविजयजी उपाध्यायजीए कह्यो ॥ १ ॥

॥ इति श्रीमन्महोपाध्यायश्रीकीर्त्तिविजयगणिशिष्योपाध्यायश्रीविनयविजयगणिविरचिते श्रीसिद्धचक्रमहिमाधिकारे श्रीश्रीपालचरित्रे प्राकृतप्रबंधे विदेशगमने कन्याद्वय-पाणिग्रहणेत्यादिवर्णनो नाम द्वितीयः खंमः समाप्तः ॥ २ ॥

प्रथम खंडे गाथा ॥ २७२ ॥ द्वितीय खंडे गाथा ॥ २७५ ॥ सर्व गाथा ॥ ५५७ ॥

इति श्रीश्रीपालचरित्रे बालावबोधे द्वितीयः खंडः समाप्तः ॥ २ ॥

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

अथ तृतीयः खंडः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

सिद्धचक्रना गुण घणा, कहेतां नावे पार ॥ वांछित पूरे दुःख हरे, वंदुं वारोवार ॥ १ ॥ सभा कहे श्रीपालने, समुद्र उतारो पार ॥ अमने उत्कंठा घणी, सुणवा म करो वार ॥ २ ॥

अर्थ—श्रीसिद्धचक्र भगवानना गुण घणा छे, ते मुखथी कहेतां थका तेनो पार आवे नहीं. ए श्रीसिद्धचक्र केवा छे? तो के सेवनारनां मनोवांछित पूर्ण करे अने दुःखने हरण करे, माटे ते श्रीसिद्धचक्रजीने हुं वारंवार वांदुं छुं ॥ १ ॥ हवे आ रासना सांभलनारा सभास्थ जनो कवीश्वरने कहे छे के श्रीपाल कुंवरने समुद्रथकी पार उतारो, एटले श्रीपाल कुंवर समुद्रपार उतरीने कांठे आवे. ए वात सुणवानी अमने घणी उत्कंठा छे, माटे वार म करो, एटले व्याख्यान करवानो विलंब न करो ॥ २ ॥

कहे कवियण आगल कथा, मीठी अमीय समान ॥ निद्रा विकथा परहरी, सुणजो देइ कान ॥३॥ धवल शेठ झुरे घणुं, देखी कुंवरनी रिद्ध ॥ एकलडो आव्यो हतो, हे हे दैव शुं कीध ॥ ४ ॥

अर्थ—एवुं सभाजनोनुं बोलवुं सांभलीने कवीश्वर पण श्रीपालनी आगल कथा एटले समुद्रमां पड्या पछीनी जे कथा कहेवानी छे ते कहे छे. ते कथा केवी छे? तो के अमृत समान मीठाशनी आपनारी छे, माटे हे श्रोताजनो! तमे निद्रा अने विकथाने परहरी एटले त्यागीने एकाग्र चित्ते कान दइने सांभलजो ॥ ३ ॥ हवे श्रीपाल कुंवरनी ऋद्धि देखीने अदेखो विचारो

धवलशेठ घणुं घणुं झुरया करे छे के अरे ! आ तो एकलोज मारी साथे चाकर दाखल आवेलो हतो तो है है इति खेदे, हे देव ! हे कर्म ! आ ते तें शुं कीधुं ? ॥ ४ ॥

वहाण अढीसें माहरां, लीधां शिरमां देइ ॥ जोउं घर किम जायशे,
ऋद्धि एवडी लेइ ॥ ५ ॥ एक जीव छे एहने, नाखुं जलधि मझार ॥
पछी सयल ए माहरुं, रमणी ऋद्धि परिवार ॥ ६ ॥ देखी न शके पारकी,
ऋद्धि हिये जस खार ॥ सायर थाये डुबलो, गाजंते जलधार ॥ ७ ॥
वरसाले वनराइ जे, सवि नवपल्लव थाय ॥ जाय जवासानुं कीस्युं, जे
उभो सूकाय ॥ ८ ॥

अर्थ–एम धवल शेठने कुंवरनी ऋद्धि देखवाथी अदेखाइ उपनी, तेथी विचार करवा मांड्यो के आ अढीसें वहाण तो मारा माथामां दइने एणे लइ लीधां, पण हवे जोउं तो खरो के आ आटली ऋद्धि लइने केवी रीते पोताने घेर जाय छे ? ॥ ५ ॥ ए एकज जीव छे, तेने हुं (जलधि के०) समुद्रमां नाखी दउं, पछी ए (रमणी के०) बे स्त्रीउं तथा ऋद्धि अने बीजो जे एनो परिवार छे ते सर्वे मारुंज छे, ए बापडो क्यां लइ जवानो छे ? एवा दुष्ट अध्यवसाय शेठना थया ॥ ६ ॥ इहां कनिष्ठ पुरुषनां लक्षण उपर दृष्टांत कहे छे के जेम (जलधार के०) मेघ ते गाजंते एटले गर्जारव करे, ते वारे (सायर के०) समुद्र दुर्बल थइ जाय. ए दृष्टांते जे पुरुषना हैयामां (खार के०) अदेखाइ होय ते पुरुष पण पारकी ऋद्धि देखीने खमी शके नहीं ॥ यतः ॥ परवादे दशवदनः, परदोषनिरीक्षणे सहस्राक्षः ॥ संवृत्तवित्तहरणे, बाहुसहस्रार्जुनो नीचः ॥ १ ॥ इति ॥ ७ ॥ वली बीजो दृष्टांत कहे छे. जेमके वरसादना दिवसोमां अढार भार वनराजी एटले वनस्पतिनी पंक्ति जे छे ते सर्व नवपल्लव थाय छे, परंतु तेमां एक विचारा जवासाना झाडनुं शुं जाय

छे के जे उन्नो ने उन्नो सुकाइ जाय छे ? कांइज नहीं, परंतु जे अदेखुं माणस छे ते बीजानी सारी स्थिति थयेली जोइने पोते ड़ुःखी थाय छे एम जाणवुं ॥ ८ ॥

जे किरतार वडा कीया, तेशुं केही रीस ॥ दांत पड्या गिरि पाम्रतां,
कुंजर पाडे चीस ॥ ए ॥

अर्थ–पण खरी वात तो एज छे के जेने किरतारे मोटा कर्या तेनी साथे वली केवी रीस करवी? तेनी साथे रीस करवाथी उलटुं रीस करनारनेज ड़ुःखी थवुं पडे छे. कोनी पेठे ? तो के जेम (कुंजर के०) हाथी जे छे तेणे पोताने मोटो समजीने दांते करी गिरि जे पर्वत तेने पाम्री नाखवा माटे उद्यम कर्यो, परंतु तेने पाम्रवा जतां उलटा पोतानाज दांत त्रूटी पड्या, ते वारे मोटी चीसो पाडीने नासवा मांड्युं. ए दृष्टांते अहीं धवल शेठ पण श्रीपाल कुंवरने ड़ुःखी करवा माटे उद्यम करे छे, परंतु तेने ड़ुःखी करवा जतां पोतानेज ड़ुःखी थवुं पडशे, ते वात आगल कहे छे ॥ ए॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ राग मल्हार ॥ शीतल तरुवर छांहि, के बांह वालंन्नी रे ॥ के बांह० ॥ ए देशी ॥

देखी कामिनी दोय, के कामे व्यापीयो रे ॥ के कामे व्यापीयो ॥ वली घणो धननो लोन्न, के वाध्यो पापीयो रे ॥ के वाध्यो० ॥ लाग्या दोय पिशाच, के पीडे अति घणुं रे ॥ के पीडे० ॥ धवल शेठनुं चित्त, के वश नहीं आपणुं रे ॥ के वश० ॥ १ ॥

अर्थ–एम ते शेठ ड़ुष्ट अध्यवसायने योगे एक तो श्रीपालनी (दोय के०) बे (कामिनी के०) स्त्रीउं छे, तेमने देखीने कामे करी व्याप्त थयो, तथा बीजुं वली श्रीपालनी पासे घणुं धन छे, ते लइ लेवानो लोन्न शेठने लाग्यो. तद्रूप जे पाप तेणे करीने वाध्यो, अथवा धन लेवाना लोन्ने करी ते

पापी शेठ वाध्यो. एम ते शेठने काम अने लोभ, ए बे (पिशाच के०) भूत आवीने वलग्यां, तेणे करीने अत्यंत घणोज पीडाय छे, तेथी ते धवल शेठनुं चित्त पण पोताने वश रह्युं नहीं ॥ १ ॥

उदक न भावे अन्न, न आवे निद्रमी रे ॥ न आवे० ॥ उल्लस वालस
थाय, के जक नहीं एक घडी रे ॥ के जक० ॥ मुख मूके निसास, के
दिन दिन डुबलो रे ॥ के दिन० ॥ रात दिवस नवि जाय, के मन बहु
आमलो रे ॥ के मन० ॥ २ ॥ चार मल्या तस मित्र, के पूछे प्रेमशुं रे ॥
के पूछे० ॥ कोण थयो तुम रोग, के झुरो एम शुं रे ॥ के झुरो० ॥ के
चिंता उतपन्न, के कोइक आकरी रे ॥ के कोइक० ॥ भाइ थाओ धीर,
के मन काठुं करी रे ॥ के मन० ॥ ३ ॥

अर्थ–तेम (उदक के०) पाणी तथा अन्न पण भावतुं नथी, वली निद्रा पण आवती नथी, उल्लस वालस एटले आलस विलस थया करे छे, एक घडी मात्र पण जीवने (जक के०) जंप वलतो नथी, मुखथी निसासा मूकतो थको दिवसे दिवसे डुर्बल थतो जाय छे. वली मनमां बहु (आमलो के०) आमलसेरडा लीधा करे छे, तेनां रात दिवस जतां नथी ॥ यतः ॥ प्रवासिको व्याधियुतः सरोषो, विद्यार्थचित्तः परदाररक्तः ॥ यस्यास्ति वैरी हि वियोगितोऽपि, ह्यष्टौ लभंते मनुजा न निद्राम् ॥ अर्थ–एक परदेश फरनार, बीजो व्याधिमान्, त्रीजो क्रोधयुक्त, चोथो विद्याभ्यासने विषे तत्पर, पांचमो धन मेलववामां आसक्त चित्तवालो, छठो पारकी स्त्रीमां आसक्त, सातमो जेने माथे डुश्मन छे ते, आठमो पोताना प्रिय जनथी वियोग पामेलो, एवा आठ प्रकारना मनुष्यो निद्राने पामता नथी ॥ १ ॥ २ ॥ एम डुःखने लीधे धवल शेठ अर्धी रात्रे सुतो उठी टलवलतो फर्या करे छे, ते जोइने

तेना चार मित्र छे ते तेने मल्या, अने प्रेमपूर्वक पूछे छे के हे शेठजी ! तमोने श्यो रोग उत्पन्न थयो छे के तमे आमतेम फरी रह्या छो? अथवा तमोने घणीज आकरी एवी कोइक चिंता उत्पन्न थइ छे ? के शुं थयुं छे ? जे कांइ थयुं होय ते पण हे भाइ! मन कठिण करीने धीरजवान् थइने ॥ ३ ॥

दुःख कहो अम तास, उपाय विचारीए रे ॥ उपाय० ॥ चिंतासायर एह,
के पार उतारीए रे ॥ के पार० ॥ लज्जा मूकी शेठ, कहे मन चिंतव्युं रे ॥
कहे मन० ॥ तव चारे कहे मित्र, के धिक ए शुं लव्युं रे ॥ के धिक० ॥ ४ ॥

अर्थ—तमोने जे दुःख पेदा थयुं होय ते अमोने कहो तो अमे (तास के०) तेनो उपाय विचारीने आ चिंतारूप समुद्रमांथी तमोने पार उतारीए. ते वारे शेठे पण लज्जा मूकीने उंडो निसासो नाखी पोताना मननुं चिंतवेलुं काम जे हतुं ते मित्रोने कह्युं के अरे भाइओ! मारे शरीरे कोइ पण रोग पीडा करतो नथी, परंतु आ श्रीपालने मारी नाखवो, ए मारा मननी पीडा छे ते मने पीडे छे, दुःख आपे छे, ए सर्व वृत्तांत तेणे पोताना मित्रो आगल कही संभलाव्यो. एवी वात सांभली, ते वारे ते चारे मित्रो कहेवा लाग्या के अरे धिक्कार छे तुजने ! के आ अमारा कानने शूल लागे एवुं तुं शुं (लव्यो के०) बोल्यो ? आ ते शुं तारी अक्कल ठेकाणे नथी ? के बीजा कोइ सामान्य माणसना धननुं हरण करवुं ते पण उत्तम पुरुषने योग्य नथी, तो आ तो तारो स्वामी छे, वली तारा उपर मोटो उपकारकर्त्ता छे, तेनुं धन हरण करवुं ए कार्य तो मोटा कष्टनुं देवावालुं समजवुं. तेमज अन्य कोइ पुरुषनी स्त्री भोगववी तथा कोइ जीव मात्रने हणवो ते पण उत्तम पुरुषने महा निंदनीय छे, तो आ जे उपकारकर्त्ता स्वामी तेनी स्त्री भोगववी तथा तेने हणवो, एथी अवश्य नरके जवानो बंध पडे. एवुं पापकर्म मनमां चिंतवीने आ जीभे अमोने कहेतां थका तारी जीभ पण केम चाली ? माटे आज दिवस सुधी तो अमारे ने तारे मित्राचारीनो नातो

हतो, पण हवे आवुं डुष्टपणुं तें चिंतव्युं तेथी वर्त्तमानकाले तो तु अमारा डुश्मन तुल्य ठो के जे तें आवा सर्वशिरोमणि मस्तकना मणि सरखा महापुरुषनी उपर माठी चिंतवना करी ॥ ४ ॥

परनारीने पाप, जवोजव बुडीए रे॥ जवो० ॥ किम सुरतरुनी डाल, कुहाडे
छुडीए रे ॥ कुहाडे० ॥ परउपगारी एह, जिस्यो जग केवडो रे॥ जिस्यो०॥
दीठो प्रत्यक्ष जास, के महिमा एवडो रे ॥ के महिमा० ॥ ५ ॥ ठोडाव्या
दोय वार, इणे तुमे जीवता रे ॥ इणे० ॥ उगरीयां धन माल, जो पासे ए
हता रे॥ जो पासे० ॥ ताख्यां थंज्यां वाहण, इणे आगल रही रे॥ इणे० ॥
एहवो पुरुषरतन्न, के जग बीजो नहीं रे ॥ के जग० ॥ ६ ॥ करी एहशुं
डोह, जो विरुड ताकशो रे॥ जो० ॥ तो अणखूटे किहांइक, अंते थाकशो
रे ॥ के अंते० ॥ जाग्ये लाधी रुध्धि, इणे जो एवडी रे ॥ इणे० ॥ पडी
कांइ डुर्बुध्धि, गले तुम जेवडी रे ॥ गले० ॥ ७ ॥

अर्थ–वली ते मित्रो कहे ठे के हे शेठ ! एक तो परस्त्रीने पापे जवोजव संसार मांहे बुडीए, वली एवो मूर्ख पण कोण होय के जे (सुरुतरु के०) कल्पवृक्षनी डालने कुहाडे करी छेदी नाखे ? तेम ए पुरुष तो कल्पवृक्ष समान ठे, वली ए पुरुष तो जगत मांहे जेवो केवडो परोपकारी ठे तेनी समान परोपकारी ठे. जेनो एटलो महिमा तो प्रत्यक्ष तमेज दीठो ठे. (ते आगल कहे ठे)॥ ५ ॥ एक बब्बरकूटना बंदर उपर अने बीजा रत्नद्वीपे, ए बे ठेकाणे तो तमने मारवानी तैयारी थइ हती, ते बे स्थानकेथी बे वार तमोने जीवता (ठोडाव्या के०) मूकाव्या, तथा जो ए पासे हता तो तमारां धन माल सर्वे उगरयां, नहीं तो आज तमारी पासे एक कोडी पण रहेत नहीं ने तमे

पण जीवता रहेत नहीं. वली तमारां वहाण थंत्राणां हतां ते पण एणे आगल रहीने तार्यां, ते सर्व उपकार तमे भूली गया के शुं ? माटे एवो रत्न सरखो पुरुष जगतमां बीजो कोइ नथी ॥ ६ ॥ तेथी अमे तमने कहीए छीए के जो तमे एनी साथे द्रोह करीने (विरुद्ध के०) माठुं (ताकशो के०) इछशो, विचारशो, तो अंते तमे पोतेज क्यांइक वगर खूटे (थाकशो के०) मरण पामशो एटले आयुर्दा खुट्या विना मरण पामशो. अरे ! जो एने भाग्ये एणे एटली ऋद्धि (लाधी के०) पामी तो तमारा गलाने विषे (जेवडी के०) एटली दुर्बुद्धि केम आवीने पडी ? अथवा एटली दुर्बुद्धि आवीने तमोने केम गले पडी छे ? माटे अमे तो कहीए छीए के तारुं धवल नाम छे ते खोटुं छे, पण तुं मलिन कठोर स्वभाववालो छे, माटे कृष्ण लेश्याना योगे करी तारुं कालो एवुं नाम जोइए. तुजने देखवाथी अमारो आत्मा पण मलिनपणाने पामे ॥ ७ ॥

त्रण मित्र हितशीख, ते एम देइ गया रे ॥ ते एम० ॥ चोथो कहे सुण शेठ,
के ए वैरी थया रे ॥ के ए वैरी०॥ गणीए पाप न पुण्य, के लखमी जोडीए रे
॥ के लखमी० ॥ लखमी होये जो गांठ, तो पाप विछोडीए रे ॥ तो पाप० ॥८॥

अर्थ–एवी रीते त्रण मित्र हितनी शिखामण आपीने पोतपोताने स्थानके गया, (तव के०)ते वारे चोथो कपटस्वभावी मित्र हतो ते फरी पण ते शेठनी पासे बेठो अने कहेवा लाग्यो के हे शेठ ! तमे सांभलो, के ए त्रण मित्र तो उलटा तमारा वैरी थया, कारण के जेणे करी तमारी मोटाइ थाय तेवुं ए चिंतवता नथी, माटे गया तो जवा द्यो. हुं एकलोज तमारां मनोवांछित पूर्ण करीश, तमे कोइ वाते चिंता करशो नहीं. मारो मत तो एवो छे के पाप अने पुण्य कांइ पण गणीए (न के०) नहीं, परंतु लक्ष्मी जोडीए एटले एकठी करीए, कारण के जो लक्ष्मी गांठमां होय तो पुण्य करीने पापने विछोडी नाखीए ॥ ८ ॥

उपराजी इणे ऋद्धि, ते काजे ताहरे रे ॥ ते काजे० ॥ धणी थाये भाग्य-
वंत, कमाइ कोइ मरे रे ॥ कमाइ० ॥ करशुं इस्यो उपाय, के ए दोलत
घणी रे ॥ के ए० ॥ अने सुंदरी दोय, के थाशे तुम तणी रे ॥ के थाशे०
॥ ए ॥ जिम पामे विश्वास, मळो तिम एहशुं रे ॥ मळो० ॥ मुखे मीठी
करो वात, के जाणे नेहशुं रे ॥ के जाणे० ॥ मीठी लागी वात, ते शेठने
मन वसी रे ॥ ते शेठने० ॥ आव्यो फीटणकाळ, ते मति तेहनी खसी
रे ॥ ते मति० ॥ १० ॥ दुधज देखे डांग, न देखे मांकडो रे ॥ न देखे० ॥
मस्तक लागे चोट, थाये तव रांकडो रे ॥ थाये० ॥ रोगी करे कुपथ्य, ते
लागे मीठडुं रे ॥ ते लागे० ॥ वेदन व्यापे जाम, ते थाये अनीठडुं
रे ॥ ते थाये० ॥ ११ ॥

अर्थ—हे शेठजी ! हुं एम धारुं छुं जे ए श्रीपाले एटली ऋद्धि जे उपार्जन करेली छे ते सर्व ताहरे काजे छे, एम जाणजे. ते उपर दृष्टांत कहुं छुं, ते सांभळ. जेम कोइ निर्भाग्य पुरुष होय ते कमाइ एटले संचय करीने मरी जाय. पछी तेनी कमायेली लक्ष्मीनो धणी तो कोइ भाग्यवंत पुरुष होय तेज थाय, माटे आपणे कोइ एवो उपाय करशुं के जेथी ए घणी जे दोलत छे ते अने वळी आ बे सुंदरी छे ते पण सर्व तमारी थशे ॥ ए ॥ माटे हवे जेम ए तमारा उपर विश्वास पामे तेवी रीते तमे एनी साथे मळो तथा जेम ए जाणे के स्नेहे करीनेज मने कहे छे तेम तमे तमारा मुखे एनी साथे मीठी वात करो. ए चोथा मित्रनी वात ते शेठने मीठी साकर जेवी लागी, अने शेठना मनमां पण वसी जे आ वात ठीक कहे छे, कारण के तेनो

फीटणकाल आव्यो ते वारे (तेहनी के०) तेनी मति पण खसी गइ ॥ १० ॥ तेनी उपर दृष्टांत कहे छे. जेम (मांकमो के०) वांदरो अथवा उपचारथी बिलाडो जे छे ते दुधनेज देखे छे, पण (मांग के०) मारवा तैयार करी उगामी राखेली लाकमीने देखतो नथी. पछी जे वारे मस्तके चोट लागे, ते वारे बापडो रांक थइ जाय. तथा वली जेम कोइ रोगी पुरुष होय ते कुपथ्य करे एटले खारुं खाटुं खाय ते तेने मीठुं लागे, पछी जे वारे तेना योगे शरीरमां वेदना व्यापे, ते वारे अनिष्ट थइ पडे, तेम शेठजी पण मांकमा अने रोगीनी पेरे तत्पर थइ रह्या छे ॥ ११ ॥

बेसे कुंअर पास, के विनय घणो करे रे ॥ के विनय० ॥ तुं प्रभु जीव आधार, के मुखे इम उच्चरे रे ॥ के मुखे० ॥ पूरव पुण्य पसाय, के तुम सेवा मली रे ॥ के तुम० ॥ पग पग तुम्ह पसाय, के अम्ह आशा फली रे ॥ के अम्ह० ॥ १२ ॥ जोतां तुम मुखचंद, के सवि सुख लेखीए रे ॥ के सवि० ॥ रखे तुमारी वात, के विरुइ देखीए रे ॥ के विरुइ० ॥ कुंवर सघली वात, ते साची सद्दहे रे ॥ ते साची० ॥ दुर्जननी गति भाति, ते सज्जन नवि लहे रे ॥ ते सज्जन० ॥ १३ ॥

अर्थ–हवे शेठजी ते चोथा मित्रनी आपेली शिखामण मुजब कुंवरनी पासे आवीने बेसे अने घणो विनय करे तथा मुखथी एम कहे के हे प्रभु! तमे मारा जीवना आधार छो, पूर्वकृत पुण्यना पसायथी तमारी सेवा मने मली छे, पगले पगले तमारा पसायथी अमारी आशा फली छे ॥ १२ ॥ तमारा मुखरूप चंद्रमाने जोइने अमे सर्व सुख (लेखीए के०) जाणीए छीए, माटे रखेने तमारी कोइ (विरुइ के०) माठी वात अमने देखवी पडे एम कोइ वारे थाशो मां. एवी रीते कपटथी वातो

करे, ते सर्व वातोने कुंवर तो साची करीने सद्दहे छे, कारण के दुर्जन माणसनी गतिनी रीत जे छे ते सज्जन माणस लइ शके नहीं, एटले जाणी शके नहीं ॥ १३ ॥

जे वहाणनी कोर, के मांचा बांधीया रे ॥ के मांचा० ॥ दोर तणे अवलंबे,
ते उपर सांधीया रे ॥ ते उपर० ॥ तिहां बेसीने शेठ, ते कुंअरने कहे रे
॥ ते कुंअरने० ॥ देखी अचरिज एह, के मुज मन गहगहे रे ॥ के मुज०
॥ १४ ॥ मगर एक मुख आठ, के दीसे जूजूआं रे ॥ के दीसे० ॥ एवां
रूप सरूप, न होशे ने हुआं रे ॥ न होशे० ॥ जोवा इछो साहेब, के तो
आवो वही रे ॥ के तो० ॥ पछे काढशो वांक, जे कांइ कह्युं नहीं रे ॥ जे
कांइ० ॥ १५ ॥ कुंअर मांचे ताम, चढ्यो उतावलो रे ॥ चढ्यो० ॥ उतरीयो तव
शेठ, धरी मन आमलो रे ॥ धरी० ॥ विहुं मित्रे विहुं पासे, दोर ते कापीया
रे ॥ दोर० ॥ करतां एहवां कर्म, न बीए पापीया रे ॥ न बीए० ॥ १६ ॥

अर्थ—हवे एक दिवसे ते चोथा मित्रनी सलाह प्रमाणे प्रथमथी जे वहाणनी कोरे मांचा बांध्या छे तेने जुनां दोरडांनु आलंबन करीने पोताथी सहेलाइए कपाय एवी रीते उपर सांधी मूक्या छे. तिहां शेठजी पोते बेसीने कुंवरने कहेता हवा के हे स्वामिन् ! एह अचरिज देखीने मारुं मन गहगहे छे, एटले तमोने ते अचरिज देखाडवाने मारुं मन उत्साह धरे छे ॥ १४ ॥ ते अचरिज ए छे के मगरमत्स्य तो एक छे, पण तेनां मुख आठ छे, ते सर्व जूदी जूदी जातिनां देखाय छे, माटे एवां रूप स्वरूपवंत तो थयां पण नथी अने थाशे पण नहीं, ए अपूर्व कौतुक में पूर्वे केवारे पण दीठुं नथी, माटे हे साहेबजी ! जो जोवाने इछता हो तो वहेला

अहीं आवो, नहीं कां पछी अमारो वांक काढशो के अमने केम कह्युं नहीं ? कारण के "घणुं जीव्याथी जोयुं भलुं" एम लोकमां कहेवत छे ॥ १५ ॥ एवी वात सांभलीने कुंवर पण उतावलो मांचा उपर चढ्यो, ते वारे शेठ मन मांहे आमलो एटले कपट धरीने मांचा उपरथी उतर्यो अने बेहु मित्रे बेहु पासे उभा रहीने दोरडां कापी नाख्यां. कवि कहे छे के जे पापी दुष्ट प्राणी छे ते एवां नीच कर्म करतां थका जरा पण बीता नथी ॥ यतः ॥ भली करत लगत विलंब, विलंब न बूरे विचार ॥ भवन बनावत दिन लगत, ढहत न लागत वार ॥ १ ॥ इति ॥ १६ ॥

पडतां सायर मांहि, ते नव पद मन धरे रे ॥ ते० ॥ सिद्धचक्र प्रत्यक्ष, के सवि संकट हरे रे ॥ के सवि० ॥ मगरमत्स्यनी पूंठ, के बेठो थिर थइ रे ॥ के बेठो० ॥ वहाण तणी परे तेह, के पहोतो तट जइ रे ॥ के पहोतो० ॥ १७ ॥ औषधिने महिमाए, के जलभय निस्तरे रे ॥ के जल० ॥ सिद्धचक्र परभावे, के सुर सानिध करे रे ॥ के सुर० ॥ त्रीजे खंडे ढाल, ए पहेली मन धरो रे ॥ ए पहेली० ॥ विनय कहे भवि लोक, के भवसायर तरो रे ॥ के भव० ॥ १८ ॥

अर्थ–दोर काप्याथी कुंवर समुद्रमां पड्या, ते पडतां वेंतज नव पदनुं ध्यान धरता हवा, अने ए नव पद जे सिद्धचक्र ते तो सर्व संकट हरवाने प्रत्यक्षज छे, माटे पडतां वार तेज समये एक मगरमत्स्यनी पूंठ उपर पड्या, तेनी उपर स्थिर थइने बेठा, ते वारे वहाणनी पेरे ते मगरमत्स्य पण एक क्षणवारमां (तट के०) समुद्रने कांठे जइ पहोतो ॥ १७ ॥ श्रीपाल कुंवर औषधिने महिमाए करीने जलना भयनो निस्तार पाम्या तथा वली श्रीसिद्धचक्रजीना प्रभावे करी (सुर के०) देवता आवी सान्निध्य करे छे. एम त्रीजा खंडने विषे ए पहेली ढाल ते हे श्रोताजनो !

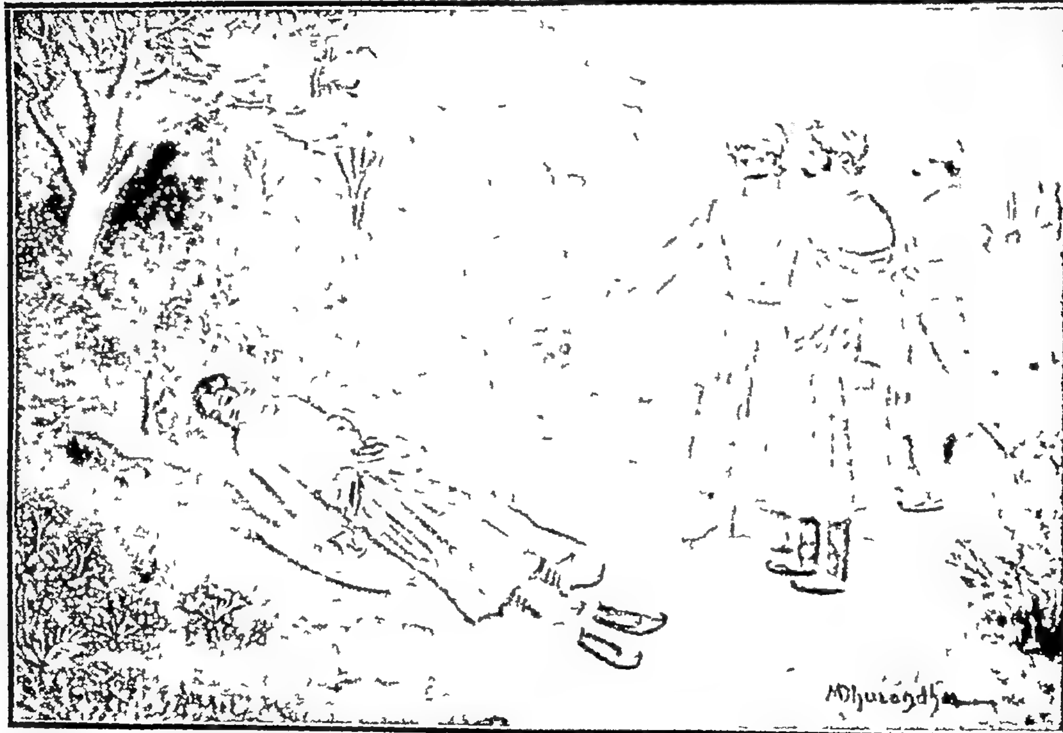
श्री श्रीपाल राजानो रास

प्रकाशक–श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबई

શ્રીપાળ અને વસુપાળ રાજાના સુભટો.

शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक ७५.

ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૧૦૬.



તે શ્રીપાળ કુંવર કોકણ કાંઠે જઇ ઉતરયો, તિહાં એક વન હતું તે માંહે પહોતો, પરંતુ તેને થાક લાગ્યો, માટે ચંપક વૃક્ષની છાયાની નીચે જઇ સુઇ રહ્યો એટલે નિદ્રાને અનુસરતો હવો

લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુંબઇ.

तमे तमारा मनने विषे धरो. श्रीविनयविजयजी उपाध्याय कहे छे के हे नव्य लोको ! जेम श्रीपाल समुद्रने तरी पार पाम्यो, तेम तमे पण (नव के०) संसाररूप समुद्रथी तरीने पार पामो, एवो आशीर्वाद आपुं छुं ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कोंकण कांठे उतर्यो, पहोतो इक वन मांहि ॥ थाक्यो निद्रा अनुसरे, चंपक तरुवर छांहि ॥ १ ॥ सदा लगे जे जागतो, धर्ममित्र समरछ ॥ कुंअरनी रक्षा करे, दूर करे अनरछ ॥ २ ॥ दावानल जलधर हुवे, सर्प हुवे फूलमाल ॥ पुण्यवंत प्राणी लहे, पग पग रुद्धि रसाल ॥ ३ ॥ करे कष्टमां पाडवा, दुर्जन कोडी उपाय ॥ पुण्यवंतने ते सवे, सुखनां कारण थाय ॥ ४ ॥ थल प्रगटे जलनिधि विचे, नयर रानमां थाय ॥ विष अमृत थइ परिणमे, पूरव पुण्य पसाय ॥ ५ ॥

अर्थ–ते श्रीपाल कुंवर कोंकण कांठे जइ उतर्यो, तिहां एक वन हतुं ते मांहे पहोतो, परंतु तेने थाक लाग्यो, माटे चंपक वृक्षनी छायानी नीचे जइ सुइ रह्यो एटले निद्राने अनुसरतो हवो ॥ १ ॥ जे सदा सर्वदा लगे जागतोज छे एवो महा सामर्थ्यवान् धर्मरूप जे मित्र ते कुंवरनी साथे छे, तेज मित्र कुंवरनी रक्षा करे छे अने अनर्थने दूर करे छे ॥ यतः ॥ आधयो व्याधयो विघ्ना, दुःस्वप्नाः कुग्रहा ग्रहाः ॥ दुर्जना दुष्टशकुना, बाधंते नैव धार्मिणाम् ॥ १ ॥ रोगादिचौरनीराग्नि, गजमारीभुजंगमाः ॥ प्रेतवैतालभूताद्या, बाधंते न हि धार्मिकान् ॥ २ ॥ इति ॥ २ ॥ जे पुण्यवंत प्राणी छे तेने (दावानल के०) अग्नि जे छे ते (जलधर के०) मेघ समान (हुवे के०) थाय, अने सर्प तो फूलनी माला समान थाय, तथा ते प्राणी पगले पगले (रसाल के०) मनोहर एवी रुद्धिने (लहे के०)

पामे ॥ यतः ॥ विलीयंते स्वयं विघ्ना, हीयंते कापि न श्रियः ॥ क्षीयंते शत्रवः सर्वे, प्रसादात् पुण्यनृपतेः ॥ १ ॥ इति ॥ ३ ॥ जो पण जे दुर्जन लोक छे ते सुजनने कष्टमां पाडवाने माटे कोइ उपाय करे छे, तोपण पुण्यवंत प्राणी जे छे तेने तो ते सर्व दुःखने बदले उलटां सुखनांज कारणरूप थइ पडे छे ॥ ४ ॥ पूर्वकृत पुण्यना पसायथी जीवने (जलनिधि विचे के०) समुद्र मांहे पण (थल के०) पृथ्वी स्थल प्रगट थाय, अने (रान के०) अरण्य मांहे नगर प्रगट थाय, तथा जे विष होय ते अमृत थइने परिणमे ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग मधुमादन ॥ जीरे महारे वाणी अमीय रसाल, सुणतां मुज आशा फली ॥ जीरेजी ॥ ए देशी ॥

जीरे महारे जाग्यो कुंवर जाम, तव देखे दोलत मली ॥ जीरे जी ॥ जीरे महारे सुभट नला सेंबऽ, करे विनंति मन रली ॥ जीरे जी ॥ १ ॥ जी० ॥ स्वामी अरज अम एक, अवधारो आदर करी ॥ जीरे जी ॥ जी० ॥ नयरी ठाणा नाम, वसे जिसी अलकापुरी ॥ जीरे जी ॥२॥ जी० ॥ तिहां राजा वसुपाल, राज्य करे नरराजीयो ॥ जीरे जी ॥ जी० ॥ कोंकण देश नरिंद, जस महिमा जग गाजीयो ॥ जीरे जी ॥ ३ ॥

अर्थ–हवे (जाम के०) जे वारे कुंवर निद्रामांथी जाग्रत थयो, (तव के०) ते वारे पोतानी आगल (देखे के०) जुए छे तो तिहां दोलत मलेली एकठी थयेली दीठी, ते शी दोलत दीठी ? तो के नला सुभट (सेंबऽ के०) शतबऽ एटले सेंकडागमे एकठा थयेला सेवामां सावधान एवा पोतानी चारे बाजुए वींट्या थका उभा छे, ते सर्व (मन रली के०) मनने विषे हर्ष पामता थका बे हाथ जोडी पोताने विनंति करे छे, एवी रीते दीठा ॥ १ ॥ ते सुभट कहे छे के हे स्वामिन् ! अमारी एक अरज छे ते तमे आदर करीने (अवधारो के०) मान्य करो. हे प्रभु !

इहां गणापुरी नामे नगरी छे, ते केवी छे ? तो के साक्षात् जेवी अलकापुरी होय तेवी वसे छे ॥ २ ॥ तिहां वसुपाल नामे राजा राज्य करे छे, ते आखा कोंकण देशनो राजा कहेवाय छे. जेनो महिमा जगतमां गाजी रह्यो छे ॥ ३ ॥

जी० ॥ एक दिन सभा मझार, निमित्तियो एक आवीयो ॥ जीरे जी ॥ जी० ॥
जी० ॥ कहो जोशी प्रश्न पूछेवा हेत, राय तणे मन भावीयो ॥ जीरे जी ॥ ४ ॥
जी० ॥ तेह तणो भरतार, अम धूअ, मदनमंजरी गुणवती ॥ जीरे जी ॥
जी० ॥ किम मलशे अम तेह, कोण थाशे भल भूपति ॥ जीरे जी ॥ ५ ॥
जी० ॥ कोण दिवस कोण मास, घर तेशे अहिनाणे जाणशुं ॥ जीरे जी ॥
जी० ॥ सकल कहो ए वात, जो तुम मीने आणशुं ॥ जीरे जी ॥ ६ ॥
जी० ॥ शास्त्र तणे परमाण, अम चिंता टालो विद्या छे खरी ॥ जीरे जी ॥
जी० ॥ परी ॥ जीरे जी ॥ ७ ॥

अर्थ—एक दिवसे ते वसुपाल राजानी सभाने विषे एक निमित्तप्रकाशक निमित्तियो आव्यो, ते निमित्तियो प्रश्न पूछवाने हेते राजाना मनमां घणोज (भाव्यो के०) गम्यो ॥ ४ ॥ तेथी राजाए प्रश्न पूछ्यो के हे जोशी ! तमे कहो के अमारी बहु गुणवंती एवी एक मदनमंजरी नामे (धूअ के०) पुत्री छे, तेनो भलो भर्तार कयो भूपति थशे ? ॥ ५ ॥ तथा ते अमने केवी रीते मलशे ? तथा शी अहिनाणीए अमे तेने जाणशुं ? तथा कये महीने अने कये दिवसे अमे तेने घेर तेडीने लावशुं ? ॥ ६ ॥ माटे जो तमारी विद्या खरेखरी छे तो ए सर्व वात अमने कहो, अने शास्त्रना प्रमाणे करी अमारी चिंता परी टालो; एटले दूर करो ॥ ७ ॥

जी०॥ जोशी कहे निमित्त, शास्त्र तणे पूरण बले ॥जीरे जी ॥जी०॥ पूरवगत आमनाय, ध्रुव तणी परे नवि चले ॥जीरे जी ॥ ८ ॥जी० ॥ सुदि दशमी वैशाख, अढी पहोर दिन अतिक्रमे ॥ जीरे जी ॥ जी० ॥ रयणायर उपकंठ, जइ जोजो तेणे समे ॥ जीरे जी ॥ ए ॥ जी० ॥ नव नंदन वन मांहि, शयन कीध चंपा तले ॥ जीरे जी ॥ जी० ॥ जोजो तस अहिनाण, तरुवर छाया नवि चले ॥ जीरे जी ॥ १० ॥ जी० ॥ राये न मानी वात, एम कहे ए शुं केवली ॥ जीरे जी ॥ जी० ॥ अमने मोकलीया आंहीं, आज वात ते सवि मली ॥ जीरे जी ॥ ११ ॥

अर्थ—एवुं सांजली ते जोशी पण शास्त्रना पूर्ण बले करीने पूर्वगत आम्नायथी निमित्त कहे छे. ते निमित्त केवुं छे ? तो के ध्रुवना तारानी परे चलायमान थाय नहीं एवुं छे ॥ ८ ॥ ते कहे छे के हे राजन् ! वैशाख सुदि दशमीने दिवसे जे वखते अढी पहोर दिवस अतिक्रमे (तेणे समे के०) ते वखते रत्नाकर जे समुद्र, तेने कांठे जइने जोजो ॥ ए ॥ तिहां नव नंदन वन मांहे एटले मेरु पर्वतमां जे नंदन वन छे ते तो शाश्वतुं छे, माटे ते नंदन वन तो ए नहीं, पण ते समानज इहां आ समुद्रने किनारे बीजुं नवीन नंदन वन छे, ते मांहे चंपाना वृक्षनी नीचे शयन कीध, एटले सुतो हशे, अने तेमां वली एवी (अहिनाण के०) निशानी जोजो जे दिवसनो त्रीजो पहोर हशे तोपण तरुवरनी छाया ते पुरुषनी उपरथी चलायमान थशे नहीं, परंतु तेनी उपरनी उपरज रहेशे ॥ १० ॥ एवी निमित्तियाए वात कही, पण राजाए ते वात मानी नहीं, कारण के राजाए विचार्युं जे आटली बधी खुलासापूर्वक वात कहे छे ते शुं ए केवली जगवान् छे ? ते वातनो निर्णय करवा माटे आजे

जोयुं तो आजे ते जोशीनी कहेली

अमोने अहीं मोकल्या छे, ते अमे अहीं आव्या, अने
वात सर्व मली आवी ॥ ११ ॥

जी०॥ प्रभु थाउ असवार, अश्वरत्न आगल धर्यो॥ जीरे जी॥जी०॥ कुंअर
चाल्यो ताम, बहु असवारे परवर्यो॥ जीरे जी ॥ १२ ॥ जी० ॥ आगल
जइ असवार, नृपने दीए वधामणी ॥ जीरे जी ॥ जी० ॥ सन्मुख आव्यो
राय, साथे लेइ दोलत घणी ॥ जीरे जी ॥ १३ ॥ जी० ॥ शणगार्या गज-
राज, अंबाडी अंबर अडी ॥ जीरे जी ॥ जी० ॥ घंटा घुघरमाल, पाखर
मणिरयणे जडी ॥ जीरे जी ॥ १४ ॥ जी० ॥ सोवन जडित पलाण, ते-
जाला तेजी घणा ॥ जीरे जी ॥ जी० ॥ जोतरीया केकाण, रथ जाणे
दिनकर तणा ॥ जीरे जी ॥ १५ ॥

अर्थ—माटे हे प्रभु ! आ अश्वरत्न तमारी आगल धर्युं छे, तेनी उपर तमे अस्वार थाउ. ते वारे घणे परिवारे परवर्यो थको कुंवर पण अश्व उपर चढीने चाल्यो ॥ १२ ॥ तिहां एक अस्वार आगलथी जइने राजाने वधामणी दीए छे; ते सांभलीने राजा पण घणी (दोलत के०) ऋद्धि लइने कुंवरनी सन्मुख आव्यो ॥ १३ ॥ हवे राजाए पोतानी साथे परिवार लीधो छे, ते कहे छे. मदोन्मत्त एवा (गजराज के०) हाथीउ शणगार्या छे, तेमनी उपर अंबाडीउ जे नाखेली छे ते (अंबर के०) आकाशमां जइ अडी रही छे, एटले लागी रही छे. तथा घंटा अने घुघरानी मालाउ तेणे करी सहित पाखर जे नाखेली छे, ते मणिरत्ने जडाव छे ॥ १४ ॥ वली जेमनी उपर सुवर्णे जडित पलाण नाख्यां छे, तेणे करी शोभता देखाय छे एवा (तेजाला के०) तेजदार (तेजी के०) तेजी नामना घोडा ते घणा पोतानी साथे लीधा छे, तथा वली जेने विषे (केकाण के०)

अमारां माता पिताने परहरीने जेनो संघात कीधो, ते अमारो प्राणनाथ पण अमाराथी (विछड्यो के०) जूदो पड्यो, तो हे हैया ! फिटकार छे तुने ! जे तुं केम फूटी जतुं नथी ? तुं ते वली शा वास्ते कायम रहे छे ? ॥ ८ ॥

धवल शेठ तिहां आवीयो रे, कूडा करे विलाप रे ॥ शुं कीजे ए दैवने रे, दीजे कीस्या शराप रे ॥ जीव० ॥ ए ॥ दुःख सह्यां माणस कह्यां रे, भूख सह्यां जिम ढोर रे ॥ धीरज आप न मूकीए रे, करीए हृदय कठोर रे ॥ जीव० ॥ १० ॥ मणि माणिक मोती परे रे, जेहना गुण अभिराम रे ॥ जिहां जाशे तिहां तेहने रे, मुकुट हार शिर ठाम रे ॥ जीव० ॥ ११ ॥ व्यंग वचन एहवुं सुणी रे, मन चिंते ते दोय रे ॥ एह करम एणे कर्युं रे, अवर न वैरी कोय रे ॥ जीव० ॥ १२ ॥

अर्थ—एम ते बालिकाउं विलाप करे छे, तिहां धवल शेठ पण आव्यो अने कूडा विलाप रतो करतो कहे छे के अरे ! आ दुष्ट दैवने शुं करीए ! अने शुं कहीए ! एने केवा शाप ापीए ॥ ए ॥ माटे जेम भूख सहन करवामां ढोर कह्यां छे, तेम दुःख सहन करवामां माणस ह्यां छे, ते माटे दुःख तो माणस उपरज आवी पडे छे, परंतु पोतानुं धैर्य मूकीए नहीं अने हृदय कठण करीए ॥ १० ॥ मणि, माणिक अने मोतीनी पेरे जेना मनोहर गुण छे एवा पुरुष जिहां जशे तिहां ते मुकुट, हार अने मस्तकना (ठाम के०) स्थानकने पामशे, माटे हे भद्रे ! तमे कांइ दुःख करो नहीं, हुं तमारुं दुःख दूर करीश ॥ ११ ॥ एवुं (व्यंग के०) वांकुं वचन शेठना मुखमांथी नीकलतुं सांभलीने ते बेहु स्त्रीउं मनमां चिंतववा लागी जे ए अघटित कर्म एणेज कर्युं छे. बीजो वैरी आपणो कोइ नथी ॥ १२ ॥

स्त्रीउंने काने पडी, ते वारे तेमने ध्रसक देइने ध्रासको पड्यो. ते ध्रासको जाणे साक्षात् वज्रना घा लागे तेवो तेमना हैयामां थइ लाग्यो ॥ यतः ॥ निर्माय खलजिह्वाग्रं, सर्वप्राणहरं नृणाम् ॥ चकार किं वृथा शस्त्र,–विषवह्नीन् प्रजापतिः ॥ १ ॥ इति ॥ ४ ॥

थइ अचेत धरणी ढली रे, करती कोड विखास रे ॥ सही सहेली सवि मली रे, नाके जोवे निसास रे ॥ जीव० ॥ ५ ॥ ढांट्यां चंदन कमकमां रे, कस्या वींझणे वाय रे ॥ चेत वल्युं तव आरडे रे, हैये दुःख न माय रे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ कांइ प्राण पाछा वल्या रे, जो रूठो किरतार रे ॥ पीयरीयां अलगां रह्यां रे, मूकी गयो भरतार रे ॥ जीव० ॥ ७ ॥ माय बापने परहरी रे, कीधो जेहनो साथ रे ॥ फिट हियडा फूटे नहीं रे, विछड्यो ते प्राणनाथ रे ॥ जीव० ॥ ८ ॥

अर्थ–ते बे कुंवरीउं करोडोगमे विषाद करती थकी अचेतन थइने (धरणी के०) पृथ्वी उपर ढली पडी. ते एवी थइ गइ के जाणीए मरणज पामी होय नहीं ? ते वारे आ मरण पामी के शुं ? एवी शंका लावीने सखीउं साहेलीउं मलीने तेमने नाके (निसास के०) निःश्वास (जोवे के०) जोवा लागी ॥ ५ ॥ पछी नाकेथी निःश्वास आवतो जोइ सखीउंए कमकमां एटले अत्यंत बहेकतां एवां बावनाचंदन तेमनी उपर छांट्यां, वींजणे करी वायु कस्यो, तेथी चेतन वल्युं. ते वारे तरत (आरडे के०) आक्रंद सोरबकोर करे छे. तेमनां हैयामां दुःख समातुं नथी ॥ ६ ॥ ते आक्रंद करती कहे छे के अरे (किरतार के०) दैव ! तुं जो अमारा उपर रूठ्यो तो संपूर्ण केम रूठ्यो नहीं ? के जे तें अमारा प्राण कां पाछा वाल्या ? अमे मरी कां न गइ ? हवे अमारां पीयरीयां जे माता पिता ते पण अलगां रही गयां, अने भर्तार पण मूकी गयो ॥ ७ ॥ अमे

रोवे छे, पण हैडामां हसे छे. एम पापे करीने पोताना आत्माने वगोवे छे ॥ यतः ॥ चित्ते दुष्टा मुखे मिष्टाः, स्वदोषे परदोषकाः ॥ प्रविश्यांतर्जनं घ्नंति, विषमिश्रगुलाः खलाः ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ रहो रहो रथ फेरवो रे ॥ ए देशी ॥

जीवजीवन प्रभु किहां गया रे, दीयो दरिसन एक वार रे ॥ सुगुणा साहेब तुम विना रे, अमने कोण आधार रे ॥ जीव० ॥१॥ शिर कूटे पीटे हियुं रे, मूके महोटी पोक रे ॥ हालकलोल थयो घणो रे, भेलां हुआं घणां लोक रे ॥ जीव० ॥ २ ॥ कौतुक जोवाने चढ्या रे, मांचे वाहणनी कोर रे ॥ हैं हैं ! दैव ए शुं थयुं रे, त्रूटा जुना दोर रे ॥ जीव० ॥ ३ ॥ जव बेहु मयणा तणे रे, काने पडी ते वात रे ॥ ध्रसक पड्यो तव ध्रासको रे, जाणे वज्रनो घात रे ॥ जीव० ॥ ४ ॥

अर्थ—हवे शेठ केवी रीते विलाप करे छे ? ते कहे छे के मारा जीवना जीवन ! तमे क्यां गया ? अरे ! मने एक वार दर्शन तो आपो ! हे सुगुण साहेब ! तमारा विना हवे अमने इहां बीजा कोनो आधार छे ? ॥ १ ॥ माथुं कूटे छे, हैयुं पीटे छे अने मुखथी मोटी पोको मूके छे, तेथी घणो हालकलोल थइ रह्यो, ते सांभलीने तिहां घणां लोको भेलां थयां ॥ २ ॥ ते पूछवा लाग्यां के हे शेठजी ! तमे शामाटे एटलुं बधुं रुदन करो छो ? ते वारे कपटी शेठे लोकोने विश्वास बेसारुवा सारु जवाब आप्यो के भो लोको ! मारा स्वामी जे श्रीपाल कुंवर ते कौतुक जोवाने माटे वहाणनी कोरे मांचा उपर चढ्या, तेमां जुनां दोरडां हतां ते त्रूटी गयां अने ते कुंवर समुद्रमां पड्या. आम लोकोने कहीने वली कल्पांत करवा लाग्यो के हैं हैं इति दुःखे ! हाय हाय !! हे दैव ! आ ते शो गजब थयो !!! ॥ ३ ॥ ए वात जे वारे ते बेहु (मयणा के०)

स्त्रीउने काने पडी, ते वारे तेमने ध्रसक देइने ध्रासको पड्यो. ते ध्रासको जाणे साक्षात् वज्रनो घा लागे तेवो तेमना हैयामां थइ लाग्यो ॥ यतः ॥ निर्माय खलजिह्वाग्रं, सर्वप्राणहरं नृणाम् ॥ चकार किं वृथा शस्त्र,–विषवह्नीन् प्रजापतिः ॥ १ ॥ इति ॥ ४ ॥

थइ अचेत धरणी ढली रे, करती कोड विखास रे ॥ सही सहेली सवि
मली रे, नाके जोवे निसास रे ॥ जीव० ॥ ५ ॥ छांट्यां चंदन कमकमां
रे, कस्या वींझणे वाय रे ॥ चेत वल्युं तव आरडे रे, हैडे दुःख न माय
रे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ कांइ प्राण पाछा वल्या रे, जो रूठो किरतार रे ॥
पीयरीयां अलगां रह्यां रे, मूकी गयो नरतार रे ॥ जीव० ॥ ७ ॥ माय
बापने परहरी रे, कीधो जेहनो साथ रे ॥ फिट हियडा फूटे नहीं रे, वि-
छड्यो ते प्राणनाथ रे ॥ जीव० ॥ ८ ॥

अर्थ–ते बे कुंवरीउ करोडोगमे विषाद करती थकी अचेतन थइने (धरणी के०) पृथ्वी उपर ढली पडी. ते एवी थइ गइ के जाणीए मरणज पामी होय नहीं ? ते वारे आ मरण पामी के शुं ? एवी शंका लावीने सखीउ साहेलीउ मलीने तेमने नाके (निसास के०) निःश्वास (जोवे के०) जोवा लागी ॥ ५ ॥ पछी नाकेथी निःश्वास आवतो जोइ सखीउए कमकमां एटले अत्यंत बहेकतां एवां बावनाचंदन तेमनी उपर छांट्यां, वींजणे करी वायु कस्यो, तेथी चेतन वल्युं. ते वारे तरत (आरडे के०) आक्रंद सोरबकोर करे छे. तेमनां हैयामां दुःख समातुं नथी ॥ ६ ॥ ते आक्रंद करती कहे छे के अरे (किरतार के०) दैव ! तुं जो अमारा उपर रूठ्यो तो संपूर्ण केम रूठ्यो नहीं ? के जे तें अमारा प्राण कां पाछा वाल्या ? अमे मरी कां न गइ ? हवे अमारां पीयरीयां जे माता पिता ते पण अलगां रही गयां, अने नर्तार पण मूकी गयो ॥ ७ ॥ अमे

अमारां माता पिताने परहरीने जेनो संघात कीधो, ते अमारो प्राणनाथ पण अमाराथी (विछड्यो के०) जूदो पड्यो, तो हे हैया ! फिटकार छे तुने ! जे तुं केम फूटी जतुं नथी ? तुं ते वली शा वास्ते कायम रहे छे ? ॥ ८ ॥

धवल शेठ तिहां आवीयो रे, कूडा करे विलाप रे ॥ शुं कीजे ए दैवने रे, दीजे कीस्या शराप रे ॥ जीव० ॥ ए ॥ दुःख सह्यां माणस कह्यां रे, नूख सह्यां जिम ढोर रे ॥ धीरज आप न मूकीए रे, करीए हृदय कठोर रे ॥ जीव० ॥ १० ॥ मणि माणिक मोती परे रे, जेहना गुण अभिराम रे ॥ जिहां जाशे तिहां तेहने रे, मुकुट हार शिर ठाम रे ॥ जीव० ॥ ११ ॥ व्यंग वचन एहवुं सुणी रे, मन चिंते ते दोय रे ॥ एह करम एणे कर्युं रे, अवर न वैरी कोय रे ॥ जीव० ॥ १२ ॥

अर्थ—एम ते बालिकाउं विलाप करे छे, तिहां धवल शेठ पण आव्यो अने कूडा विलाप करतो करतो कहे छे के अरे ! आ दुष्ट दैवने शुं करीए ! अने शुं कहीए ! एने केवा शाप आपीए ॥ ए ॥ माटे जेम नूख सहन करवामां ढोर कह्यां छे, तेम दुःख सहन करवामां माणस कह्यां छे, ते माटे दुःख तो माणस उपरज आवी पडे छे, परंतु पोतानुं धैर्य मूकीए नहीं अने हृदय कठण करीए ॥ १० ॥ मणि, माणिक अने मोतीनी पेरे जेना मनोहर गुण छे एवा पुरुष जिहां जशे तिहां ते मुकुट, हार अने मस्तकना (ठाम के०) स्थानकने पामशे, माटे हे बाई ! तमे कांइ दुःख करो नहीं, हुं तमारुं दुःख दूर करीश ॥ ११ ॥ एवुं (व्यंग के०) वांकुं वचन शेठना मुखमांथी नीकलतुं सांभलीने ते बेहु स्त्रीउं मनमां चिंतववा लागी जे ए अघटित कर्म एणेज कर्युं छे. बीजो वैरी आपणो कोइ नथी ॥ १२ ॥

धन रमणीनी लालचे रे, कीधो स्वामिद्रोह रे ॥ मीठो थइ आवी मले रे, खांड गलेफीयुं लोह रे ॥ जीव० ॥ १३ ॥ शील हवे किम राखशुं रे, ए करशे उपघात रे ॥ करीए कंत तणी परे रे, सायर झंपापात रे ॥ जीव० ॥ १४ ॥ सम काले बेहु जणी रे, मन धारी ए वात रे ॥ इण अवसर तिहां उपनो रे, अति विसमो उतपात रे ॥ जीव० ॥ १५ ॥ हालकलोल सायर थयो रे, वाये उन्नड वाय रे ॥ घोर घनाघन गाजीयो रे, वीजली चिहुं दिशि थाय रे ॥ जीव० ॥ १६ ॥ कूआ थंन्ना कम्कडे रे, उडी जाये सढ दोर रे ॥ हाथे हाथ सूझे नहीं रे, थयुं अंधारुं घोर रे ॥ जीव० ॥ १७ ॥

अर्थ–एक धन अने बीजी (रमणी के०) स्त्रीउ तेनी लालचे ए दुष्ट अमारा स्वामीनो द्रोह कीधो छे, अने हवे जेम खांडे गलेफ्युं एवुं (लोह के०) तरवार होय, तेनी पेरे उपरथी मीठो थइ आवीने अमने मले छे ॥ यतः ॥ मीठाबोला मानवी, केम पतीज्यां जाय ॥ मोर कंठ मधुरो लवे, साप समूलो खाय ॥ १ ॥ इति ॥ १३ ॥ माटे हवे आपणे आपणुं शील ते केवी रीते राखशुं ? कारण के ए तो आपणा शीलनो उपघात करशे तो हवे आपणे पण जर्त्तारनी परे समुद्रमां झंपापात करीए ॥ १४ ॥ ए वातने बेहु जणीए मनमां धारी राखीने सम काले समुद्रमां झंपापात करवानो निश्चय कर्यो. एवा अवसरने विषे तिहां अत्यंत विषम उत्पात उत्पन्न थया ॥ १५ ॥ उन्नरु वायरो वाय छे तेना योगे करी समुद्र हालकलोले चढ्यो एटले हालकलोल थइ रह्यो अने (घोर के०) महा नयंकर एवो (घनाघन के०) वर्षाद गाज्यो, तथा चारे दिशाए वीजलीना चमकारा थवा लाग्या ॥ १६ ॥ वहाणोना कूआ थंन्ना सर्व करुकडाट करवा लाग्या. सढ, दोर उमी जवा लाग्या. तिहां एवो (घोर के०) बीहामणो अंधकार थयो के जेने प्रन्नावे करी

कोइ माणसने हायोहाथ मेलववानी पण सूज पमती तथी. एवा सेंकमागमे भत्पात थवा मांड्या ॥ १७ ॥

झम झम डमरू डमकते रे, मुख मूके हुंकार रे ॥ खेत्रपाल तिहां आवीया रे, हाथे लेइ तरवार रे ॥ जीव० ॥ १८ ॥ वीर बावन्ने परवस्या रे, हाथे विविध हथियार रे ॥ बमीदार दोडे बडा रे, चार चतुर पमिहार रे ॥ जीव० ॥ १९ ॥ बेठी मृगपति वाहने रे, चक्र जमाडे हाथ रे ॥ चक्केसरी पाउधारीया रे, देव देवी बहु साथ रे ॥ जीव० ॥ २० ॥ हण्यो कुबुद्धि मित्रने रे, जिणे वांकी मति दीध रे ॥ खेत्रपाले तव ते ग्रही रे, खंम खंम तनु कीध रे ॥ जीव० ॥ २१ ॥

अर्थ–ते समये जेना पग मांहे रुम रुम शब्द करतो एवो रुमरू ते (डमकते के०) वाजते अने मुखमांथी हुंकार शब्द मूकतो तथा हाथमां तलवार लइने अत्यंत रौद्र रूप धरतो एवो क्षेत्रपाल देव प्रथम तिहां आव्यो ॥ १८ ॥ ते वार पछी बावन वीरोए परवस्या थका मणिभद्र, पूर्णभद्र, कपिल, पिंगल, ए चारे मोटा मुद्गर आदिक विविध प्रकारनां हथियारो जेना हाथमां छे एवा तथा कुमुद, अंजन, वामन अने पुष्पदंत, ए चार नामे चार दंरू हाथमां लइने चार चतुर पमिहार एटले प्रतिहार देवता ते बमीदारनी परे आगल बमा दोमता थका चाले छे ॥ १९ ॥ अने पोते मृगपति जे सिंह तेना वाहने बेठेली, हाथमां जाज्वल्यमान चक्रने जमामती थकी घणा देव अने देवीओ जेमनी साथे छे एवी चक्रेश्वरी देवी तिहां पधार्यां ॥ २० ॥ तेमणे आवीने प्रथम तो एवो हुकम कर्यो के अरे ! आ दुष्ट बुद्धिनो देवावालो जे शेठनो मित्र छे, तेज पुरुष निश्चे सर्व अनर्थनुं मूल छे. एणे वांकी मति एटले विपरीत मति दीधी छे, माटे एने पकमो, ते वारे तत्काल क्षेत्रपाले तेने पगथी बांधी ऊंचो कूआ थंजाने विषे टांगी नीचुं मुख करी

मुखमांथी वांकां वचन काढ्यां, माटे मुखमां अशुचि ज्ञरी तरवारे करी तेना (तनु के०) शरीरना खंडोखंड करी नाख्या. पछी जाणे शांति करवाने माटे चारे दिशाना चार दिक्पालने बलिज आपता होय नहीं ? एवी रीते चारे दिशाए तेना शरीरना कटकाने फेंकी दीधा. ए रीते क्षेत्रपाले कुबुद्धि मित्रने हण्यो ॥ २१ ॥

ते देखी बीहीतो घणुं रे, मयणा शरणे पइठ रे ॥ शेठ पशु परे ध्रूजतो
रे, देवी चक्केसरी दीठ रे ॥ जीव० ॥ २२ ॥ जा रे मूक्यो जीवतो रे, सती-
शरण सुपसाय रे ॥ अंते जाइश जीवथी रे, जो मन धरीश अन्याय रे
॥ जीव० ॥ २३ ॥ मयणाने चक्केसरी रे, बोलावे धरी प्रेम रे ॥ वत्स !
कांइ चिंता करो रे, तुम पियुने छे खेम रे ॥ जीव० ॥ २४ ॥ मास एक मांहे
सही रे, तमने मलशे तेह रे ॥ राजरमणी ऋद्धि ज्ञोगवे रे, नरपति
सुसरा गेह रे ॥ जीव० ॥ २५ ॥

अर्थ—ते कृत्य जोइने शेठ बापडो पशुनी परे ध्रूजतो थको, बीतो थको ते बेहु मयणा जे स्त्रीउ तेने शरणे जइ पेठो, तेने चक्रेश्वरी देवीए दीठो ॥ २२ ॥ ते वारे देवी कहेवा लाग्यां के अरे दुष्ट ! पापिष्ठ ! जा. हमणां तो तुजने सतीना शरणना सुपसाये करीने निश्चे जीवतो मूक्यो छे, पण अमे कहीए छीए के जो तुं तारा मनमां अन्याय धारण करीश तो अंते जीवथी जइश ॥ २३ ॥ ते जोइ विस्मय पामती थकी ते बेहु स्त्रीउ विनय सहित चक्रेश्वरी देवी प्रत्ये सप्रसाद एवुं वचन बोली. त्यारे तेने देवी पण प्रेम धरीने बोलावतां हवां के हे वत्से ! तमे कां चिंता करो छो ? तमे निश्चिंत रहो. तमारा स्वामीने क्षेम कुशल छे ॥ २४ ॥ (सही के०) निश्चे तमने तमारो ज्ञर्तार एक मही-

नामां मलशे, तमारो पति तो (नरपति के०) राजा ससराने घेर रह्यो थको राज्य अने (रमणी के०) स्त्रीरूप (ऋद्धि के०) लक्ष्मी तेने जोगवे छे ॥ २५ ॥

बेहुने कंठे ठवे रे, फूल अमूलक माल रे ॥ कहे देवी महिमा सुणो रे, एहनो अतिहि रसाल रे ॥ जीव० ॥ २६ ॥ शील यतन एहथी थशे रे, दिन प्रते सरस सुगंध रे ॥ जेह कुमीटे जोयशे रे, ते नर थाशे अंध रे ॥ जीव० ॥ २७ ॥ एम कही चक्केसरी रे, उतपतीयां आकाश रे ॥ सयल देवशुं परवर्‍यां रे, पहोतां निज आवास रे ॥ जीव० ॥ २८ ॥ तव उतपात सवे टल्या रे, वाहण चाल्यां जाय रे ॥ चिंता जांगी सर्वनी रे, वाया वाय सुवाय रे ॥ जीव० ॥ २९ ॥ मित्र त्रण कहे शेठने रे, दीठी परतक्ष वात रे ॥ चोथो मित्र अधर्मथी रे, पाम्यो वेगे घात रे ॥ जीव० ॥ ३० ॥

अर्थ–एम कही ते बेहुनी कंठे अमूल फूलनी माला पहेरावीने देवी कहे छे के एनुं अत्यंत रसाल माहात्म्य छे, ते हुं कहुं छुं, तमे सांजलो ॥ २६ ॥ ए मालानी दिवस दिवस प्रत्ये सरस सुगंध थती जशे, अने एहथी तमारा शीयलनी यत्ना थशे, कारण के जे कोइ तमने कुनजरे जोशे, ते पुरुष आंधलो थशे ॥ २७ ॥ एम कहीने चक्केसरी देवी आकाशमार्गे उतपत्यां, अने सर्व देवोनी साथे परवर्‍यां थकां पोताने आवासे पहोतां ॥ २८ ॥ ते वारे सर्व जे कांइ उतपात हता ते टल्या. हवे वहाण पण सुखे समाधे चाल्यां जाय छे, सर्वने जे चिंता प्राप्त थइ हती ते पण जांगी, अने वायरा पण सुवाय एटले रुडा वावा लाग्या ॥ २९ ॥ ते वखत शेठना जे सरल स्वजावी सुबुद्धिवाला त्रण मित्र हता, ते कहेवा लाग्या के हे शेठजी ! जुओ, आ प्रत्यक्ष वात बनी, ते तमे दीठी. जो आ चोथो मित्र अधर्मथी चाल्यो तो (वेगे के०) तरतज (घात के०)

मरण पाम्यो, अने तमे पण जो सतीउंनुं शरण लीधुं तो तेना महिमाथी जीवता रह्यो छो, नहीं कां तमारा पण तेवाज हाल थात ॥ ३० ॥

ते माटे ए चित्तथी रे, काढी मूको साल रे ॥ परलखमी परनारने रे, हवे म पडशो ख्याल रे ॥ जीव० ॥ ३१ ॥ पण दुर्बुद्धि शेठनुं रे, चित्त न आव्युं ठाय रे ॥ जइवि कपूरे वासीए रे, लसण दुर्गंध न जाय रे ॥ जीव० ॥ ३२ ॥ हैडा करने वधामणां रे, अंश न दुःख धरेश रे ॥ जो बच्यो छुं जीवतो रे, तो सवि काज करेश रे ॥ जीव० ॥ ३३ ॥ जो मुज भाग्ये एवडुं रे, विघ्न थयुं विसराल रे ॥ तो मलशे ए सुंदरी रे, समशे विरहनी जाल रे ॥ जीव० ॥ ३४ ॥

अर्थ—माटे अमे तमोने कहीए छीए के तमारा चित्तमां जे पारकी लक्ष्मी लइ लेवी अने पारकी स्त्री भोगववी, तद्रूप जे शल्य छे ते काढी नाखो अने हवे एवा ख्यालमां क्यारे पण पडशो नहीं ॥ ३१ ॥ एवी रीते त्रण मित्रे मली शेठने शिखामण आपी, तथापि जेम लसण छे तेने यद्यपि कपूरमां वासित करीए, तोपण तेनी दुर्गंधता जाय नहीं, तेम ते दुर्बुद्धि शेठनुं चित्त पण ठेकाणे आव्युं नहीं ॥ यतः ॥ यद्यपि मृगमदचंदन,—कर्पूरागरुमिश्रितो लशुनः ॥ तदपि न मुञ्चति गंधं, प्रकृतिगुणं जातिदोषेण ॥ १ ॥ इति ॥ ३२ ॥ तेम इहां धवल शेठने जो पण मित्रे आवीने शिखामण आपी, तोपण फरी एवो विचार करवा लाग्यो के हे हैडा ! हवे तो तुं वधामणां करने ? एक अंशमात्र पण दुःख धरीश नहीं, जो हुं जीवतो बच्यो छुं तो सर्व कार्य करीश ॥ ३३ ॥ जो मारा सारा भाग्ये करी एटलुं मोटुं विघ्न उपन्युं हतुं ते पण सर्व विसराल थइ गयुं

तो निश्चे हुं जाणुं छुं जे हवे आ लक्ष्मी जो सुखेथी मारे वश थइ गइ छे, तो सुंदरीउ पण मने अवश्य मलशे, अने मारा विरहनी ज्वाला पण उपशम पामशे ॥ ३४ ॥

एम चिंती दूतीमुखे रे, कहावे हुं तुम दास रे ॥ नेक नजर करी निरखीए रे, मानो मुज अरदास रे ॥ जीव० ॥ ३५ ॥ दूतीने काढी परी रे, देइ गलहत्थो कंठ रे ॥ तोहि निर्लज्ज लाज्यो नहीं रे, वली थयो उल्लंठ रे ॥ जीव० ॥ ३६ ॥ वेश करी नारी तणो रे, आव्यो मयणा पास रे ॥ दृष्टि गइ थयो आंधलो रे, काढ्यो करी उपहास रे ॥ जीव० ॥ ३७ ॥ उतरीए उत्तर तटे रे, वाहण चलावो वेग रे ॥ पण सन्मुख होये वायरो रे, शेठ करे उद्वेग रे ॥ जीव० ॥ ३८ ॥

अर्थ—एम चिंतवी दासीने मुखे स्त्रीउ प्रत्ये कहेवराव्युं के हुं तमारो दास छुं, माटे तमे मने (नेक नजर के०) रुडी नजरे करी जुउ; एटली मारी विनंति मान्य करो ॥ ३५ ॥ ते सांभली स्त्रीउए ते दूतीने घणीज निर्भंछी कंठे गलहत्थो देइने काढी मूकी, तोपण ते निर्लज्ज शेठ लगार मात्र पण लाज्यो नहीं. कामरूप पिशाचे पीड्यो थको गयो छे विवेक जेना हृदयमांथी अने पापमय अध्यवसायने लीधे एक क्षण मात्र पण जेने सुख आवतुं नथी एवो ते शेठ फरी पण उल्लंठ थयो ॥ ३६ ॥ फरी एक दिवसे ते शेठ पोते नारीनो वेश लइने बेहु स्त्रीउ पासे आव्यो, अने जेवी दृष्टि ते स्त्रीउनी उपर गइ के तरतज आंधलानी परे थइ गयो, एटले हारना प्रभावथी स्त्रीउने ते कांइ पण देखी शके नहीं एवो थको इहां तिहां भमतो रह्यो, तेने दासीउए उपहास करी मारी कूटीने कूतरानी परे तिहांथी बहार काढ्यो ॥ ३७ ॥ पछी शेठ नाखुदाने कहेवा लाग्यो के आपणे उत्तर दिशिना तटे उतरीए, अथवा उत्तर एटले बीजा कोइ तटे उतरीए, माटे तमे

वहाणोने वेगे चलावो, परंतु वायरो सन्मुख थवा लाग्यो, तेथी शेठजी घणो उद्वेग करवा लाग्या ॥ ३८ ॥

अवर देश जावा तणा रे, कीधा कोटी उपाय रे ॥ पण वाहण कोंकण तटे रे, आणी मूक्यां वाय रे ॥ जीव० ॥ ३९ ॥ त्रीजे खंडे इम कही रे, विनये त्रीजी ढाल रे ॥ सिद्धचक्र गुण बोलतां रे, लहीए सुख रसाल रे ॥ जीव० ॥ ४० ॥

अर्थ—शेठे (अवर के०) बीजा देशे जवाना करोडो उपाय कर्या, पण वायरे सर्व वहाणोने कोंकण देशना (तटे के०) कीनारे आणी मूक्यां ॥ ३९ ॥ ए त्रीजा खंडने विषे विनयविजयजी उपाध्याये त्रीजी ढाल कही. श्रीसिद्धचक्रजीना गुण बोलतां थका रसाल सुख पामीए ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

कोंकण कांठे नांगर्यां, सवि वाहण तिणी वार ॥ नृपने मलवा उतर्यो, शेठ लइ परिवार ॥ १ ॥ आव्यो नरपति पाउले, मिलणां करे रसाल ॥ बेठो पासे रायने, तव दीठो श्रीपाल ॥ २ ॥ देखी कुंअर दीपतो, हैये उपनी हूंक ॥ लोचन मीचाइ गयां, रवि देखी जिम घूक ॥ ३ ॥

अर्थ—ते वारे खलासीउए सर्व वहाणोने कोंकण कांठे नांगर्यां, शेठ पण पोताना परिवारने लइने राजाने मलवा माटे वहाणो उपरथी उतर्यो ॥ १ ॥ तेणे आवीने राजाने पगे लागी घणीज रसाल बहुमूली वस्तुउनां भेटणां कर्यां. पछी राजानी पासे बेठो ते वारे श्रीपाल कुंवरने दीठो ॥ २ ॥ तिहां दीपता एवा कुंवरने देखीने शेठना हैयामां हूंक उपनी, अने जेम (रवि के०) सूर्यने देखीने (घूक के०) घुवड पक्षीनी आंखो मीचाइ जाय छे, तेम तिहां शेठजीनां पण लोचन मीचाइ गयां ॥ ३ ॥

नृप हाथे श्रीपालने, देवरावे तंबोल ॥ शेठ भली परे ओलखी, चित्त थयुं डमडोल ॥ ४ ॥ है है दैव अटारडो, एह किशो उतपात ॥ नाखी हती खारे जले, प्रगट थइ ते वात ॥ ५ ॥ सभा विसरजी राय जब, पहोतो महोल मझार ॥ तव शेठे पडिहारने, पूछ्यो एह विचार ॥ ६ ॥ एह थगीधर कोण छे, नवलो दीसे कोय ॥ तेह कहे गति एहनी, सुणतां अचरिज होय ॥ ७ ॥ वनमां सुतो जागवी, घर आण्यो भली भात ॥ परणावी निज कुंअरी, न पूछी वात नें जात ॥ ८ ॥

अर्थ—राजाए पण शेठने मोटो सार्थवाह जाणीनें बहुमानपूर्वक विशेषे करी तेज श्रीपालने हाथे तेने तंबोल ते पाननुं बीडुं देवराव्युं, ते वारे श्रीपाले पण देखतां वार (भली परे के०) रुडी रीते जाण्यो जे ए धवल शेठज छे, अने शेठे भली परे ओलखी लीधो जे ए श्रीपालज छे, तेथी तेनुं चित्त डमडोल थयुं ॥ ४ ॥ ते वारे चिंतववा लाग्यो जे है है इति खेदे अरे ! ए (अटारडो के०) वांको दैव तेणे आ ते श्यो उत्पात कर्यो ! के जे वातने में खारा पाणीमां एटले खारा समुद्रमां नाखी दीधी हती, ते वात इहां प्रगट थइ ! ! ॥ ५ ॥ पछी जे वारे सभा विसर्जन करी राजा पोताना महोलने विषे पहोतो, ते वारे शेठे विचार्युं जे आ तेज श्रीपाल छे, किंवा एना सरखो बीजो कोइ पुरुष छे ? तेनी तपास तो करुं, कारण के तेने तो में समुद्रमां नाखी दीधो छे, माटे ते जीवतोज केम होय ? एवुं चिंतवन करीने पछी शेठे ए संबंधी सर्व विचार पोलीयाने पूछ्यो ॥ ६ ॥ के हे भाइ ! आ थगीधर ते कोण छे ? आ तो कोइक नवो माणस देखाय छे. एवुं सांभली ते पोलीयो कहे छे के हे शेठ ! एनी (गति के०) विगत सांभलतां थका तो माणसने अचरिज पेदा थाय एवी हकीकत छे ॥ ७ ॥ एने तो

वनमांथी सुतो जगावी मोटा महोत्सवे करी जली जाते घेर तेमी आणीने राजाए पोतानी कुंवरी परणावी दीधी, पण एनी जात के जात कोण छे? ते वात पण कांइ पूछी नहीं ॥ ८ ॥

शेठ सुणी रीझ्यो घणुं, चित्तमां करे विचार ॥ एहने कष्टे पाम्वा, जलुं देखाड्युं बार ॥ ए ॥ देइ कलंक कुजातिनुं, पाडुं एहनी लाज ॥ राजा हणशे एहने, सहेजे सरशे काज ॥ १० ॥ जो पण जे जे में कस्यां, एहने दुःखनां हेत ॥ ते ते सवि निष्फल थयां, मुज अनिलाष समेत ॥ ११ ॥ तोपण वाज न आवीए, मन करीए अनुकूल ॥ उद्यमथी सवि संपजे, उद्यम सुखनुं मूल ॥ १२ ॥ वैरीने वाध्यो घणो, ए मुज खणशे कंद ॥ प्रथमज हणवा एहने, करवो कोइक फंद ॥ १३ ॥

अर्थ–ते वात सांनलीने शेठ घणोज रीझ पाम्यो, अने मनमां विचार करवा लाग्यो के एने कष्टमां पाम्वा माटे एणे मने जलुं बारणुं देखाड्युं, कारण के एनी जाति जाति कोइ जाणतो नथी, तो ए उपाय मारा हाथमां घणो श्रेष्ठ आव्यो छे ॥ ए ॥ माटे हवे हुं कोइक कुजातिनुं कलंक दइने एनी लाज पाडुं के जेथी राजा एने अवश्य हणी नाखशे, ने सहेजमां मारुं कार्य सरी जशे ॥ १० ॥ जो पण आज पर्यंत एने जे जे में दुःखनां (हेत के०) कारण कस्यां, ते ते सर्व कारण मारा मनना अनिलाष सहित निष्फल थयां, एटले कारणनी निष्फलता थइ, तो ते कारण सफल करवा माटे मारा मनना जे अनिलाषो हता, ते पण सर्व निष्फल थया ॥ ११ ॥ तोपण वाज आवीए नहीं एटले सर्व हेतु निष्फल थइ गया, माटे हवे उद्यम मूकी देवो एवुं प्रतिकूल मन करीए नहीं, परंतु उद्यम जारी राखवा माटे मनने अनुकूल करीए, कारण के उद्यम कस्याथीज सर्व कांइ संपजे, नीपजे छे, माटे उद्यम जे छे तेज सुखनुं मूल छे ॥ १२ ॥ तथा वली ए तो मारो

वैरी छे, माटे जो घणो वधशे तो मने (कंद के०) मूलमांथी (खणशे के०) खोदी नाखशे, माटे तेनी पहेलांज एने हणवानो कोइक फंद रचवो सारो छे ॥ १३ ॥

इम चिंतवतो ते गयो, उतारे आवास ॥
एक तस जक नहीं, मुख मूके निसास ॥ १४ ॥

छ पोताना उताराना (आवास के०) घरमां गयो, पण एक पलवार
।, मुखथी निसासा मूकया करे छे ॥ १४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जोगीसर चेला ॥ जिहाने जमता थका हो लाल ॥ ए देशी ॥

रे कहे गुरु अमृत वाण रे ॥
रे, आव्युं टोलुं एक रे ॥ चतुर नर ॥ उता
डी महत्तर डुंबने रे, शेठ कहे अविवेक रे
मारुं एक करो हो लाल ॥ १ ॥ एह जमाइ
तुमे डुंब रे ॥ चतुर० ॥ लाख सोनैया तुमने आपशुं
वलगो गले रे, सघलुं मली कुटुंब रे ॥ चतुर० ॥ पाड
मानशुं हो लाल ॥ २ ॥

वसरे तिहां एक डुंबनुं टोलुं आव्युं. ते उता थका शेठनी उलग करे छे ते वारे शेठ (महत्तर के०) मोटा डुंबने तेडीने तेने अविवेकनी वात कहेवा मांडी के हे डुंब ! तमे अमारुं एक कार्य छे ते करो ॥ १ ॥ ए राजानो जमाइ जे छे तेने तमे जइने ए डुंब छे एम कहो तो ए काम करवाना लाख सोनैया तमने आपीशुं, माटे तमे तमारुं सर्व कुटुंब मली धाइने एने गले जइ वलगो तो अमे तमारो घणो पाड मानशुं ॥ २ ॥

डुंब कहे स्वामी सुणो रे, करस्यां ए तुम काम रे ॥ चतुर० ॥ मुजरो हमारो मानजो हो लाल ॥ केवलशुं कूडी कला रे, लेशुं परठयां दाम रे ॥ चतुर० ॥ साबाशी देजो पछे हो लाल ॥ ३ ॥ डुंब मली सवि ते गया रे, राय तणे दरबार रे ॥ चतुर० ॥ गाये उभा घूमता हो लाल ॥ राग आलापे टेकशुं रे, रीझ्यो राय अपार रे ॥ चतुर० ॥ मागो कांइ मुख इम कहे हो लाल ॥ ४ ॥ डुंब कहे अम दीजीए रे, मोहत वधारी दान रे ॥ चतुर० ॥ मोहत अमे वांछुं घणुं हो लाल ॥ तव नरपति कुंअर कने रे, देवरावे तस पान रे ॥ चतुर० ॥ तेहनुं मोहत वधारवा हो लाल ॥ ५ ॥ पान देवा जव आवीयो रे, कुंअर तेहनी पास रे ॥ चतुर० ॥ हसित वदन जोतो हसी हो लाल ॥ वडो डुंब विलगो गले रे, आणी मन उल्लास रे ॥ चतुर० ॥ पुत्र आज भेट्यो भले हो लाल ॥ ६ ॥

अर्थ–ते सांभली डुंब कहेतो हवो के हे स्वामिन् ! ए तमारुं काम अमे करशुं, पण अमारो मुजरो मानजो, ए अमे कूडी कला केवलशुं अने पछी तमारी साथे परठेलां (दाम के०) नाणां लइशुं, पाछलथी वली साबाशीनो सिरपाव पण अमने आपजो ॥ ३ ॥ एम कही ते सर्व डुंब मलीने राजाने दरबारे गया. तिहां गोखनी नीचे घूमता उभा थका टेक सहित रागनी आलापचारी करीने मधुर स्वरे गावा मांड्युं, तेथी राजा पण गीत सांभली पार विनानो तेमना उपर रीझ्यो, अने मुखथी कहेतो हवो के कांइ मागो, ते हुं आपुं ॥ ४ ॥ ते सांभली डुंब कहेवा लाग्या के हे स्वामिन् ! अमने महत्त्व वधारण दान आपो, कारण के अमे मान महत्त्वनेज घणुं इच्छीए छीए.

ते वारे राजाए पण खुशी थइने तेमनुं महत्त्व वधारवा माटे कुंवरनी पासे पाननुं बीडुं देवराव्युं ॥ ५ ॥ हवे जे वारे पाननुं बीडुं देवाने माटे श्रीपाल कुंवर ते डुंबोनी पासे आव्यो, ते वारे ते डुंबोमां जे वडो एटले मोटो डुंब छे, ते कुंवरनुं हसित वदन हसता मुखने पोते पण हसीने जोतो थको अथवा पोताना हसित वदने हसीने श्रीपालने जोतो थको मनमां घणो उल्लास एटले हर्ष आणीने कुंवरना गलामां जइ वलगी रह्यो, अने कहेवा लाग्यो के हे पुत्र ! तुं आज भले अमने भेट्यो, मोटी वात थइ जे तुं आज अमने मल्यो ॥ ६ ॥

एहवे आवी डुंबडी रे, रोइ लागी कंठ रे ॥चतुर०॥ अंगोअंगे भेटती हो
लाल ॥ बहेन थइने एक मली रे, आणी मन उत्कंठ रे ॥ चतुर० ॥
वीरा जाउं तुम भामणे हो लाल ॥ ७ ॥ एक कहे मुज माउलो रे, एक
कहे भाणेज रे ॥ चतुर० ॥ एवडा दिन तुमे किहां रह्या हो लाल ॥
एक काकी एक फइ थइ रे, देखाडे घणुं हेज रे ॥ चतुर० ॥ वाट
जोतां हतां तादरी हो लाल ॥ ८ ॥

अर्थ–एवामां वली एकी घरडी डुंबडी हती ते दोडी आवीने रोती थकी पुत्र ! पुत्र ! करती कुंवरने गले वलगीने अंगोअंगे भेटती हवी, अने कहेती हवी के हे वत्स ! आज केटले काले तुं अमने मल्यो ? एमज वली एक जणी बहेन थइने कुंवरने आवी मली, अने कहेवा लागी के हे वीरा ! हे बंधव ! हुं तारे भामणे जाउं. (तेमज एक कहेवा लागी के आ मारो भत्रीजो छे, एक कहेवा लागी के आ मारो देवर छे, एक कहे छे के ए मारो भर्तार छे, मने नानी परणीने मूकी गयो हतो ते आज मारा पुण्योदयथी मने मल्यो) ॥ ७ ॥ तेमज एक डुंब कहे छे के ए मारो मामो छे, एक कहे छे के आ मारो भाणेज छे, अरे भाइ ! एटला दिवस तमे क्यां रह्या हता ? तमे

परदेशमां क्यां क्यां फर्या ? हंसद्वीपे तमे कुशले गया, पछी जहाज उपर चढ्या एवुं अमे सांभळ्युं हतुं, तिहांथी इहां आव्या जणाओ छो. वळी एक काकी थइ, एक फूइ थइने घणुंज हेज देखाडे छे के हे भाइ ! अमे तारी वाट जोतां हतां ॥ ८ ॥

डुंब कहे नररायने रे, ए अम कुल आधार रे ॥ चतुर० ॥ रीसावी चाल्यो हतो हो लाल ॥ तुम पसाय भेलो थयो रे, सवि महारो परिवार रे ॥ चतुर० ॥ भांग्यां दुःख विछोहनां हो लाल ॥ ए ॥ राजा मन चिंते इस्युं रे, सुणी तेहनी वाच रे ॥ चतुर० ॥ वात घणी विरुइ थइ हो लाल ॥ एह कुटुंब सवि एहनुं रे, दीसे परतक्ख साच रे ॥ चतुर० ॥ धिक मुज वंश विटालीयो हो लाल ॥ १० ॥ निमित्तियो तेडावीयो रे, में तुज वचनविशास रे ॥ चतुर० ॥ पुत्री दीधी एहने हो लाल ॥ किम मातंग कह्यो नहीं रे, तें दीधो गले पाश रे ॥ चतुर० ॥ निमित्तियो वळतुं कहे हो लाल ॥ ११ ॥

अर्थ—हवे ते डुंब राजाने कहे छे के हे महाराज ! आ अमारा कुलनो आधार छे, ए अमाराथी रीसाइने चाल्यो गयो हतो ते तमारा पसायथी आज भेलो थयो. ए सर्व मारो परिवार छे, आज अमारां विछोहनां दुःख भांग्यां, अमे एने सारी रीते न ओळखत, पण आ पाननुं बीडुं आपवा आव्यो तेना मिषे अमे हवे सारी रीते लक्षणे करी ओळख्यो ॥ ए ॥ एवी रीतनी ते सर्व डुंब डुंबणीओनी वाणी सांभळीने राजा पोताना मनमां एवुं चिंतववा लाग्यो के वात तो घणीज (विरुइ के०) माठी थइ. आ डुंबोनुं कुटुंब जे छे ते सर्व एनुंज छे. ए प्रत्यक्ष साचुंज देखाय छे, माटे धिक्कार छे एने के जेणे मारो वंश विटाळ्यो ! ॥ १० ॥ एम चिंतवी राजाए निमित्तयाने तेडाव्यो अने कह्युं के में

तारा वचन उपर विश्वास राखीने एने मारी पुत्री आपी, तो ए मातंगनी जाति छे एवुं तें प्रथम मने केम न कह्युं? माटे तेंज आ मारे गले फांसो दीधो. एवुं सांभली वलतुं निमित्तियो बोल्यो ॥ ११ ॥

मुज निमित्त जूठुं नहीं रे, सुणजो साची वात रे ॥ चतुर० ॥ ए बहु मातंगनो धणी हो लाल ॥ राय अरथ समजे नहीं रे, कोप्यो चिंते घात रे ॥ चतुर० ॥ कुंअर निमित्तिया उपरे हो लाल ॥ १२ ॥ ते बेहुने मारवा रे, राये कीध विचार रे ॥ चतुर० ॥ सुभट घणा तिहां सज कीया हो लाल ॥ मदनमंजरी ते सुणी रे, आवी तिहां ते वार रे ॥ चतुर० ॥ रायने इणी परे विनवे हो लाल ॥ १३ ॥ काज विचारी कीजीए रे, जिम नवि होय उपहास रे ॥ चतुर० ॥ जगमां जश लहीए घणुं हो लाल ॥ आचारे कुल जाणीए रे, जोइए हीये विमास रे ॥ चतुर० ॥ उज्बल कन्ना नवि होइए हो लाल ॥ १४ ॥

अर्थ–हे राजन् ! मारुं निमित्त जूठुं नथी, हुं तमने साचेसाची वात कहुं छुं, ते तमे सांभलो, के ए पोते मातंग नथी, पण ए घणा मातंगनो धणी छे. एवुं कह्युं, पण मातंग शब्दनो अर्थ राजा समजतो नथी एटले हाथीने पण मातंग कहीए अने चंडालने पण मातंग कहीए, तेथी चिंतव्युं जे एज मातंग जे उभा छे, तेनो स्वामी ए हशे, एवुं विचारी कुंवरनी तथा निमित्तियानी उपर कोप्यो थको तेमनी घात करवानी चिंतवना करतो हवो ॥ १२ ॥ राजाए ते बेहु जणने मारवानो विचार करीने तिहां घणा सुभटोने सज्ज कर्या, तैयार कीधा. ते वात मदनमंजरीए सांभली, ते वारे तेज वखते तिहां आवीने राजाने ए रीते विनववा लागी ॥ १३ ॥ के हे पिताजी ! जे काम करीए ते विचारीने करीए के जेम पाछलथी उपहास न थाय ! जो विचारीने करीए तोज

जगतमां घणो यश पामीए, जो हैये विचार करी जोइए तो माणसना आचार उपरथी पण कुल जाणी शकीए, पण जेनी तेनी खोटी साची वात सांजलीने तेनो सारासार समज्या विना कोइ अकार्य करी नाखवुं नहीं अने एवा डुर्बल कानवाला थइए नहीं. लोकमां पण एवी कहेवत छे के "राजाने कान होय, पण शान न होय," ए कहेवत प्रमाणे तमारे वर्त्तवुं नहीं ॥ १४ ॥

कुंअरने नरपति कहे रे, प्रगट कहो तुम्ह वंश रे ॥ चतुर० ॥ जिम सांसो दूर टले हो लाल ॥ कहे कुंअर किम उच्चरे रे, उत्तम निज परशंस रे ॥ चतुर० ॥ कामे कुल उंलखावशुं हो लाल ॥ १५ ॥ सैन्य तुमारुं सज करो रे, मुज कर द्यो तरवार रे ॥ चतुर० ॥ तव मुज कुल प्रगट थशे हो लाल ॥ माथुं मुंडाव्या पछी रे, पूछे नक्षत्र वार रे ॥ चतुर० ॥ एह उखाणो साचव्यो हो लाल ॥ १६ ॥

अर्थ—एवी पोतानी पुत्रीनी वात सांजलीने राजा कुंवर प्रत्ये कहे छे के हे वत्स! तमे तमारो वंश प्रगट करो. जेम ए वातनो मने संदेह छे ते दूर टली जाय. ते सांजली कुंवर हसीने कहेतो हवो के हे राजन्! जे उत्तम पुरुष छे ते पोते पोताने मुखे पोतानी प्रशंसानो उच्चार केम करे? माटे कोइ मारा जेवुं काम पड़शे ते वारे हुं मारुं कुल तमोने उंलखावीश ॥ १५ ॥ अथवा तमे तमारुं सर्व सैन्य सज्ज करो एटले तैयार करो, अने मारा हाथमां एक तरवार आपो, जेथी मारा हाथ तमने कुल कही देशे, ते वारे मारुं कुल प्रगट थशे. हे राजन्! तमे तो केवुं कह्युं? के कोइ पुरुष माथुं मुंडावीने पछी जोशीनी पासे जइ नक्षत्र वार पूछवा लाग्यो, तेने जोशीए कह्युं के जाइ! तारे नक्षत्र वार पूछवानुं शुं काम छे? त्यारे तेणे कह्युं के हुं मस्तक मुंडावी आव्यो छुं, माटे नक्षत्र वार पूछुं छुं. ते सांजली जोशी पासे जे लोक बेठेला हता ते सर्व

मकरध्वज हसीने बोल्या के भाइ ! तुं तो घणो डाह्यो देखाय छे जे माथुं तो प्रथमथीज मुंडावी आव्यो छे, तो हवे पूछवानुं शुं कारण छे? ए उखाणो तमे पण साचव्यो देखाय छे, कारण के तमारी पुत्री परणावीने हवे मारो वंश पूछो छो ॥ १६ ॥

अथवा प्रवहणमां अछे रे, दोय परणी मुज नार रे ॥ चतुर० ॥ तेमनी पूछो तेहने हो लाल ॥ ते कहेशे सवि माहरो रे, मूलथकी अधिकार रे ॥ चतुर० ॥ इणी परे कीजे पारखुं हो लाल ॥ १७ ॥ तेहने तेडवा मोकल्यो रे, राये निज परधान रे ॥ चतुर० ॥ ते जइने तिहां विनवे हो लाल ॥ तव मयणा मन हरषीयां रे, पामी आदरमान रे ॥ चतुर० ॥ सहि कंते तेडावीयां हो लाल ॥ १८ ॥ बेसी रयण सुखासने रे, आव्यां राय हजुर रे ॥ चतुर० ॥ नृपति मन हर्षित थयुं हो लाल ॥ नयणे नाह नीहालतां रे, प्रगट्यो प्रेम अंकुर रे ॥ चतुर० ॥ साचे जूठ नसाडीयुं हो लाल ॥ १९ ॥

अर्थ–अथवा जो ए रीते मारा हाथथी मारुं कुल ओलखवा तमारी मरजी न होय तो हमणां जे वहाण आव्यां छे, तेमां मारी परणेली बे स्त्रीओ छे, तेमने तेडीने पूछो, ते मारो मूलथी मांडीने जे कांइ अधिकार छे ते सर्व कहेशे. ए रीते पारखुं करीए ॥ १७ ॥ ते सांभली राजाए ते स्त्रीओने तेडवा माटे पोताना प्रधानने मोकल्यो. ते जइने तिहां ते स्त्रीओने गाममां पधारवानी विनंति करतो हवो. ते वारे ते स्त्रीओ पण आदरमान पामी, तेथी तेमनां मन हर्षायमान थयां, अने विचारवा लागी के निश्चे आपणने भर्तारे तेडावी छे ॥ १८ ॥ पछी ते बेहु जणी रत्ने जडाव सुखासने बेसीने राजानी हजुर आवी. तेमने जोइ राजा पोताना मनमां घणोज हर्ष पाम्यो अने

स्त्रीउने पण पोताना (नाह के०) जर्तारने नयणे नीहालतां थका प्रेमनो अंकुरो प्रगट्यो. इहां साचे आवीने जूठाने नसाकी मूक्युं, एटले जे वारे साचुं आवे ते वारे जूठुं नासी जाय, तेम थयुं ॥ यतः ॥ जूठ विना फीकी लगत, अधिक जूठ दुःख जोन ॥ जूठ साचमें मेलीए, ज्युं आटामें लोन ॥ १ ॥ इति ॥ १९ ॥

विद्याधरपुत्री कहे रे, सघलो तस विरतंत रे ॥ चतुर० ॥ विद्याधर मुनिवर कह्यो हो लाल ॥ पापी शेठे नाखीयो रे, सायरमां अम कंत रे ॥ चतुर० ॥ वखते आज अमे लह्यो हो लाल ॥ २० ॥ ते सुणतां जव उलख्यो रे, तव हरख्यो मन राय रे ॥ चतुर० ॥ पुत्र सगी जगिनी तणो हो लाल ॥ अविचार्युं कीधुं हतुं रे, पण आव्युं सवि ठाय रे ॥ चतुर० ॥ जोजन मांहे घी ढल्युं हो लाल ॥ २१ ॥ नरपति पूछे डुंबने रे, कहो ए किस्यो विचार रे ॥ चतुर० ॥ तव ते बोले कंपता हो लाल ॥ शेठे अम्ह विगोइया रे, लोजे थया खुवार रे ॥ चतुर० ॥ कूडुं कपट अमे केलव्युं हो लाल ॥ २२ ॥

अर्थ—पछी राजाना पूछवाथी जेम विद्याचारण मुनिवरे रत्नद्वीपमां श्रीपाल कुंवरनुं चरित्र सजानी समक्ष कह्युं हतुं, तेम विद्याधर राजानी पुत्री ते सर्व वृत्तांत वसुपाल राजानी आगल कहेती हवी. वली कह्युं जे आ पापी शेठे अमारा जर्त्तारने समुद्रमां नाख्यो ते अमे अमारा मोटा वखतना योगथी आज (लह्यो के०) पाम्या ॥ २० ॥ ते वात सांजलतांज जे वारे श्रीपालने उलख्यो, ते वारे राजा पोताना मनमां हर्ष पाम्यो, जे आ तो मारी सगी बहेननो पुत्र छे, अरे ! में काम तो विचार्या विना कर्युं हतुं, पण सर्व ठेकाणे आवी गयुं. आ तो जोजन मांहे घी ढली पडवा जेवुं उत्तम

काम थयुं ॥ २१ ॥ हवे राजा डुंबोने पूछतो हवो के हे डुंबो ! तमे कहो के ए किस्यो विचार छे ? ते वारे ते डुंबो थर थर कंपता थका बोल्या के हे महाराज ! अमने तो धवल शेठे वगोव्या, अमोने द्रव्य आपवाने कबूल कर्युं, तेना लोभथी खुवार थया. ए सर्व अमे इहां कूडुं कपट केलव्युं हतुं ॥ २२ ॥

तव राजा रीसे चढ्यो रे, बांधी अणाव्यो शेठ रे ॥ चतुर० ॥ डुंब सहित हणवा धर्यो हो लाल ॥ तव कुंअर आडो वळ्यो रे, छोडाव्यो ते शेठ रे ॥ चतुर० ॥ उत्तम नर एम जाणीए हो लाल ॥ २३ ॥ निमित्तियो तव बोलीयो रे, साचुं मुज निमित्त रे ॥ चतुर० ॥ ए बहु मातंगनो धणी हो लाल ॥ मातंग कहीए हाथीया रे, तेहनो प्रभु वडचित्त रे ॥ चतुर० ॥ ए राजेसर राजीयो हो लाल ॥ २४ ॥ निमित्तियाने नृप दीए रे, दान अने बहु मान रे ॥ चतुर० ॥ विद्यानिधि जगमां वडो हो लाल ॥ कुंअर निज घर आवीया रे, करता नव पद ध्यान रे ॥ चतुर० ॥ मयणा त्रणे एकठी मली हो लाल ॥ २५ ॥

अर्थ—ते वारे राजा (रीसे के०) क्रोधे चढ्यो थको शेठने बांधी अणाव्यो, अने डुंबोना टोला सहित ते शेठने हणवा माटे धर्यो, एटले धार्यो, अथवा एवो विचार राजाए धर्यो, ते वारे श्रीपाल कुंवर आडो पडीने ते शेठने तथा डुंबोने छोडावतो हवो. हे सज्जनो ! जुओ के उत्तम नरने एवी रीते (जाणीए के०) परखीए जे अवगुण करनारने पण गुण करे ॥ २३ ॥ ते वारे निमित्तियो बोल्यो के हे राजन् ! मारुं निमित्त जुओ, केवुं साचुं छे ? ए (बहु के०) घणा मातंगनो धणी छे एवुं में कह्युं हतुं ते खरेखरुं सत्य थयुं. त्यारे राजाए पूछ्युं के मातंग ते कोने कहीए ? निमित्तियो बोल्यो के मातंग शब्दे हस्तीओ जाणवा, तेनो ए (प्रभु के०) स्वामी

जाणवो, एटले घणा हाथीउनो एने मोटो परिवार छे, वली (वडाचित्त के०) मोटा उदार मन वालो ए जाणवो, तथा ए (राजेसर के०) राजाउनो पण ईश्वर एवो (राजीयो के०) राजा जाणवो ॥ २४ ॥ पछी ते निमित्तियाने राजाए घणुं दान दीधुं, अने बहु मान आपी विसर्जन कर्यो. जगत मांहे विद्यानो (निधि के०) खजानो ते (वडो के०) मोटो जाणवो. हवे श्रीपाल कुंवर पण पोताने घेर आव्या, तिहां नव पदनुं ध्यान धरता थका रहे छे, अने (त्रण मयणा के०) मदनरेखा, मदनमंजुषा अने मदनमंजरी, ए त्रण स्त्रीउ पण एकठी मली छे ॥ २५ ॥

कुंअर पूरवनी परे रे, पाले मननी प्रीत रे ॥ चतुर० ॥ पासे राखे शेठने हो लाल ॥ ते मनथी छंडे नहीं रे, दुर्जननी कुल रीत रे ॥ चतुर० ॥ जे जेहवो ते तेहवो हो लाल ॥ २६ ॥ बेहु हाथ मूंइ पड्या रे, काज न एको सिद्ध रे ॥ चतुर० ॥ शेठ इस्युं मन चिंतवे हो लाल ॥ पी न शक्यो ढोली शकुं रे, एहवो निश्चय कीध रे ॥ चतुर० ॥ एहने निज हाथे हणुं हो लाल ॥ २७ ॥

अर्थ—हवे जो पण धवल शेठे श्रीपालने दुःख देवा माटे घणाए उपाय कर्या, तोपण श्रीपाल तो पूर्वली रीतेज शेठनी साथे मननी प्रीति पाले छे, तेथी निरंतरपणे शेठने तो पोतानी पासेज राखे छे. तेम छतां पण दुर्जनना कुलनी रीति छे ते रीतिने दुष्ट स्वभाववालो शेठ पोताना मनथी छांडतो नथी, केमके जे जेवो होय ते तेवोज जाणवो. एटले जे भलो होय ते भलोज होय, अने जे भूंडो होय ते भूंडोज होय, एमां कांइ संशय नथी ॥ यतः ॥ दुर्जनस्य स्वभावोऽयं परकार्यविनाशकः ॥ कथं वा कार्यमायाति, मूषको वस्त्रभक्षणात् ॥ १ ॥ गुणलक्षं परित्यज्य, दोषं गृह्णंति दुर्जनाः ॥ लक्षं दोषं परित्यज्य, गुणं गृह्णंति सज्जनाः ॥ २ ॥ २८ ॥ शेठ तो वली पण पोताना

दुर्जनपणाने अंगीकार करीने मन मांहे चिंतवना करतो हवो के मारा तो बेहु हाथ (भूंइ
के०) भूमिए पड्या, परंतु एक पण कार्य सिध्युं नहीं, तथापि हवे जो हुं पी शकुं नहीं तोपण
खोली तो (शकुं के०) नाखुं, तेथी शेठे एवो निश्चय कीधो के ए तो सातमी भूमिए एकलोज
छे, बीजुं कोइ पासे नथी,माटे हवे हुं एने (निज के०) पोताने हाथेज (हणुं के०)
नाखुं के जेथी वे स्त्रीउ अने एनी लक्ष्मी ते तो मारे हाथे नहीं चडे, तो पण ए पोते भोगवी
नहीं, एटलुं तो काम थशे. एवो निश्चय करीने ॥ २७ ॥

कुंअर पोढ्यो छे जिहां रे, सातमी भूंइए आप रे ॥ चतुर० ॥ लेइ कटारी
तिहां चढ्यो हो लाल ॥ पग लपट्यो हेठो पड्यो रे, आवी पहोतुं पाप
रे ॥ चतुर० ॥ मरी नरके गयो सातमी हो लाल ॥ २८ ॥ लोक
प्रभाते तिहां मळ्यां रे, बोले धिक धिक वाण रे ॥ चतुर० ॥ स्वामिद्रोही
ए थयो हो लाल ॥ जेह कुंअरने चिंतव्युं रे, आप लह्युं निरवाण रे
॥ चतुर० ॥ उग्र पाप तरतज फले हो लाल ॥ २९ ॥

अर्थ–जिहां सातमी भूमिए कुंवर पोढ्यो छे, तिहां ते धृष्ट, अनिष्ट, पापिष्ठ धवल शेठ पोते हाथमां कटारी लइने चढ्यो, परंतु सातमी भूमिए क्यांएक उन्मार्गे पग मूकतां पग (लपट्यो के०) खसी गयो, तेथी सातमी भूमिथी हेठो आवी पड्यो. तिहांथी पडतां शेठने पोताना हाथमां कटारी हती ते पण लागी, अने शेठनुं पाप पण आवी पहोंच्युं, एटले पापनो घडो भराणो हतो ते पण फूट्यो. तेने लीधे शेठ आर्त्त रौद्र ध्यानमां वर्त्ततो थको मरण पामीने सातमी नरके गयो. एटले सातमी भूमिथी पड्यो अने सातमी नरकपृथ्वीए गयो, केमके एवा नीच पुरुषोने एवुंज स्थानक मळे, परंतु बीजुं नहीं ॥ यतः ॥ सो सत्तम भूमिउं, पडिउं पत्तो य

प्रकाशक–श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबइ.

श्री श्रीपाल राजानो रास

શ્રીપાલ અને ધવળ શેઠ.

શાસ્ત્રી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ९१.

ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૧૨૯.



જિહા સાતમી ભૂમિએ કુવર પોઢયો છે તિહા તે ધૃષ્ટ, અનિષ્ટ, પાપિષ્ટ ધવળ શેઠ પોતે હાથમા કટારી લઇને ચઢયો પરતુ સાતમી ભૂમિએ કયાએક ઉન્માર્ગે પગ મૂકતા પગ ખસી ગયો, તેથી સાતમી ભૂમિથી હેઠો આવી પડયો તિહાથી પડતા શેઠને પોતાના હાથમાં કટારી હતી તે પણ લાગી અને શેઠનુ પાપ પણ આવી પહોચ્યુ, એટલે પાપનો ઘડો ભરાણો હતો તે પણ ફૂટયો તેને લીધે શેઠ આર્ત રૌદ્ર ધ્યાનમા વર્ત્તતો થકો મરણ પામીને સાતમી નરકે ગયો.

લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુંબઈ

सत्तमी नूमी ॥ निरयस्स तारिसाणं, समन्नि ठाणं किमन्नब ॥ १ ॥ इति श्रीपालचरित्रे ॥ तथा ॥ मित्रड्रोही कृतघ्नश्च, येऽपि विश्वासघातकाः ॥ ते नरा नरकं यांति, यावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ १ ॥ २७ ॥ तिहां प्रनाते लोक एकठां मळ्यां, ते सर्व ए शेठने धिक्कार बे ! धिक्कार बे ! ! ! एवी वाणी बोलतां हवां. जे माटे ए स्वामिड्रोही थयो, ए पापी शेठे कुंवरने हणवानुं चिंतव्युं, ते जेवुं चिंतव्युं एवुं पोतेज पाम्यो. ए अणखूटे निर्वाण पाम्यो, जे माटे कह्युं बे के (उग्र के०) घणुं अघोर पाप करे तो ते तरतज फले ॥ २ए ॥

मृतकारज तेहनां करे रे, कुंअर मन धरे सोग रे ॥ चतुर० ॥ गुण तेहना
संनारतो हो लाल ॥ सोवन घणुं तपावीए रे, अग्नि तणे संयोग रे
॥ चतुर० ॥ तोही रंग न पालटे हो लाल ॥ ३० ॥ माल पांचसें वहाणनो
रे, सवि संनाली लीध रे ॥ चतुर० ॥ लखमीनुं लेखुं नहीं हो लाल ॥
मित्र त्रण जे शेठना रे, ते अधिकारी कीध रे ॥ चतुर० ॥ गुणनिधि
उत्तम पद लहे हो लाल ॥ ३१ ॥

अर्थ–हवे श्रीपाल कुंवर तो शेठना मृत्युनो शोक मनमां धरतो थको शेठना मृत्यु संबंधी जे अग्निसंस्कार प्रमुख कार्य करवानां ते करतो हवो, अने ते शेठना गुणने संनारतो थको रहे बे, जेम सोनाने अग्निना संयोगे घणुं तपावीए तोपण तेनो रंग पलटे नहीं, तेम पुरुषने पण सोनानी समान जाणवा ॥ यतः ॥ कवित्त ॥ अगर अग्निमें जोर दहावत, तोहे सुगंध सबे विस्तारे ॥ चंदन काटत है ज्यों कुठारपें, तोहि कुठार बदन सुधारे ॥ यंत्रमें पीलत इखनकों, उनकुं इह मिष्ट जसा रस ठारे ॥ सज्जनकों डुःख देत डुरी जन, सज्जन तोहि न दोष विचारे ॥ १ ॥ इति ॥ ३० ॥ पांचसें वहाणोनुं जे कांइ माल करियाणुं विगेरे हतुं ते सर्वे संनाली तपासी लीधुं, ते

मांहे लक्ष्मीनुं तो लेखुं न करतां आवे नहीं एटली पार विनानी वस्तुओ जरेली हती, ते सर्व संभाली लइने शेठना वली बुद्धिना देवावाला जे त्रण मित्र हता, तेने पांचसें वहाणोना अधिकारी कस्या, जे माटे जे गुणनिधि एटले गुणवान् पुरुष होय ते उत्तम पदने पामे, तेम ए शेठना त्रण मित्र जो गुणवान् हता तो ते अगणित लक्ष्मीना अधिकारी थइने उत्तम पदवीने पाम्या ॥ ३१ ॥

इंद्र तणां सुख भोगवे रे, तिहां कुंअर श्रीपाल रे ॥ चतुर० ॥ मयणा त्रण
परिवस्यो हो लाल ॥ त्रीजे खंमे इम कही रे, विनये चोथी ढाल रे ॥ चतुर० ॥
सिद्धचक्रमहिमा फल्यो हो लाल ॥ ३२ ॥

अर्थ–हवे कुंवर तिहां सुख समाधिमां रहेतो थको निःकेवल इंद्रना सरखुं सुख भोगवतो थको जेम मुनिराज त्रण गुप्तिए सहित होय, तेम मयणरेखादिक त्रणे स्त्रीओए करी परवस्यो थको रहे छे. ए प्रकारे त्रीजा खंडने विषे चोथी ढाल श्रीविनयविजयजीए कही, माटे हे भव्यो ! जुओ के श्रीसिद्धचक्रजीनो महिमा एटले माहात्म्य श्रीपालजीने केवुं फलिभूत थयुं छे ? ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

इक दिन रयवाडी चढ्यो, रमवाने श्रीपाल ॥ साथ बहु तिहां उतस्यो,
दीठो ऋद्धि विशाल ॥ १ ॥ सार्थवाह लइ भेटणुं, आव्यो कुंअर पाय ॥ तव
तेहने पूछे इस्युं, कुंअर करी सुपसाय ॥ २ ॥

अर्थ–हवे एक दिवसे श्रीपाल कुंवर परिवार सहित रयवाडीए रमवा माटे चढ्यो. त्यां नगरनी बहार एक विशाल ऋद्धिवंत एवो सथवारो उतस्यो हतो, ते तेणे दीठो ॥ १ ॥ ते समये ते सार्थवाह पण सारी वस्तुनुं भेटणुं लइने श्रीपाल कुंवरनी पासे आव्यो, ते वारे कुंवर पण ते सार्थवाहने रुडो पसाय करीने आवी रीते पूछतो हवो ॥ २ ॥

कवण देशथी आवीया, किहां जावा तुम्ह नाव ॥ सार्थवाह तव विनवे, कर जोमी सद्भाव ॥ ३ ॥ आव्या कांति नयरथी, कंबुदीव उद्देश ॥ कुंअर कहे कोइक कहो, अचरिज दीठ विशेष ॥ ४ ॥ तेह कहे अचरिज सुणो, नयर एक अभिराम ॥ कोश इहांथी चारसें, कुंडलपुर तस नाम ॥ ५ ॥ मकरकेतु राजा तिहां, कपूरतिलकाकंत ॥ दोय पुत्र उपर हुइ, सुता तास गुणवंत ॥ ६ ॥ नामे ते गुणसुंदरी, रूपे रंभ समान ॥ जगमां जस उपम नहीं, चउसठ कलानिधान ॥ ७ ॥

अर्थ—के हे सार्थवाह ! तमे कोण देशथी आव्या छो ? अने क्यां जवानो तमारो भाव छे ? एवुं कुंवरे पूछ्युं ते वारे सार्थवाह पण हाथ जोमी साचा भावे करी विनंति करे छे ॥ ३॥ के हे महाराज ! अमे कांति नगरथी आव्या छीए, अने कंबुद्वीपे जवानो अमारो (उद्देश के०) अभिप्राय छे. ते सांभली श्रीपाल कुंवर तेमने कहे छे के तमे दूर देशथी आव्या छो, माटे वचमां कांइ अचरिज विशेष दीठुं होय तो ते अमोने कहो ॥ ४ ॥ ते वारे ते सार्थवाह कहे छे के हे महाराज ! में जे अचरिज दीठुं छे ते हुं तमोने कहुं छुं, ते सांभलो. जे इहांथी चारसें कोश दूर एक मनोहर नगर छे, तेनुं कुंडलपुर एवुं नाम छे ॥ ५ ॥ तिहां मकरकेतु नामे राजा छे, ते राजा कपूरतिलका नामे राणीनो (कंत के०) भर्त्तार छे, ते राणीने बे पुत्रनी उपर एक महा गुणवंती पुत्री उत्पन्न थइ ॥ ६ ॥ ते पुत्रीनुं गुणसुंदरी एवुं नाम छे, माटे नामे करी तो गुणसुंदरी छे. वली रूपे करी रंभा नामनी जे अप्सरा तेनी समान छे. जेने कोइ उपमा आपीने तेनी बराबरी करीए एवी कोइ वस्तु जगतमां नथी. एवी ते कुंवरी स्त्रीनी जे चोसठ कलाउ तेना निधानरूप छे. इहां चोसठ कलानां नामो कहे छे. १ नृत्य, २ औचित्य, ३ चित्रक, ४ वाद, ५

मंत्र, ६ तंत्र, ७ ज्ञान, ८ विज्ञान, ९ दंन, १० जलस्तंन, ११ गीतनाद, १२ तालमान, १३ मेघवृष्टि, १४ फलाकृष्टि, १५ आरामारोपण, १६ आकारगोपन, १७ धर्मविचार, १८ शकुन, १९ क्रियाकल्प, २० संस्कृतजल्प, २१ प्रासादनीति, २२ धर्मनीति, २३ वार्णिकावृद्धि, २४ सुवर्णसिद्धि, २५ सुरनितैलकरण, २६ लीलासंचरण, २७ गजतुरंगपरीक्षण, २८ पुरुषलक्षण, स्त्रीलक्षण, सामुद्रिक, २९ सुवर्णरत्ननेद, ३० अष्टादशलिपिपरिछेद, ३१ तत्कालबुद्धि, ३२ वाससिद्धि, ३३ वैद्यक, ३४ कामविक्रिया, ३५ घटभ्रम, ३६ सारिपरिश्रम, ३७ अंजन, ३८ चूर्णयोग, ३९ हस्तलाघव, ४० वचनपाटव, ४१ नोज्यविधि, ४२ वाणिज्यविधि, ४३ मुखमंडन, ४४ शालिखंडन, ४५ कथाकथन, ४६ पुष्पगुंथन, ४७ वक्रोक्ति, ४८ काव्यशक्ति, ४९ स्फारवेष, ५० सकल नाषाविशेष, ५१ अनिधानज्ञान, ५२ आनरणपरिधान, ५३ नृत्योपचार, ५४ गृहाचार, ५५ काव्यकरण, ५६ परनिराकरण, ५७ रंधन, ५८ केशबंधन, ५९ वीणानाद, ६० वितंडावाद, ६१ अंकविचार, ६२ लोकव्यवहार, ६३ अंत्याक्षरिका, ६४ प्रश्नप्रहेलिका. ए चोसठ कलानां नाम वली केटलीएक प्रतिउंमां प्रकारांतरे पण लखेलां छे. ए चोसठे कलानी जाण ते गुणसुंदरी छे ॥ ७ ॥

राग रागिणी रूप स्वर, ताल तंतवितान ॥
वीणा तस ब्रह्मा सुणे, थिर करी आठे कान ॥ ८ ॥

अर्थ–हवे ते गुणसुंदरीए बालपणाथीज वीणा वजाडवानो अन्यास कस्यो छे, ते केवी रीते कस्यो छे ? तो के–१ राग, २ रागिणी, ३ रूप, ४ स्वर, ५ ताल, ६ तंतवितान, एटला गुणयुक्त वीणाना जे कांइ नेदो छे ते सर्वेने ते कुंवरी जाणे छे ॥ तिहां प्रथम राग छ प्रकारना छे, तेमनां नाम श्लोके करी कहे छे ॥ श्रीश्रीरागो वसंतश्च, नैरवः पंचमस्तथा ॥ मेघरागश्च विज्ञेयः, षष्ठो

नट्टनारायणः ॥ १ ॥ अर्थ—श्रीराग, वसंतराग, भैरवराग, पंचमराग, मेघराग अने नट्टनारायणराग, ए छ रागनां नाम कह्यां. हवे एकेका रागनी छ छ रागणीउं एटले स्त्रीउं छे, तेमनां नाम श्लोके करी कहे छे ॥ गौरी कालहा अंधाली, द्राविडी मालकौशिका ॥ षष्ठी स्याद्देवगंधारी, श्रीरागाच्च विनिर्गताः ॥ १ ॥ हिंडोला कौशिकी चैव, रामग्री पटमंजरी ॥ गुदग्रीश्चैव देशाखी, वसंतप्रभवा इमाः ॥ २ ॥ भैरवी गुर्जरी चैव, भाषावेली कुली तथा ॥ कर्णाटी रक्तहंसी च, षडेता भैरवे मताः ॥ ३ ॥ त्रिगुणी स्तंभतीर्थी च, आभरी कुक्करी तथा ॥ वेराडी चैव सामेरी, षडेताः पंचमे मताः ॥ ४ ॥ बंगाली मधुकरी चैव, कामोदा दोषशाटिका ॥ दंबग्रीवी च देवाला, मेघरागांगनाश्च षट् ॥ ५ ॥ तोडिका मोटिका चैव, डंबीभद्दा परा तथा ॥ गंधारी सिंधु मल्हारी, नट्टनारायणोद्भवाः ॥ ६ ॥ ए छ रागनी छत्रीश रागणीउंनां नाम कह्यां. हवे एकेका रागना वली आठ आठ पुत्र छे, ते वारे छएना मली अडतालीश पुत्र थाय, तेमां छ मूल राग अने छत्रीश रागणीउं मेलवतां सरवाले नेवुं भेद थया. वली एकेका रागनी अने रागणीनी चाल तेमां कोइनी बे, कोइनी त्रण, कोइनी चार, कोइनी पांच, कोइनी छ, कोइनी सात थाय. ए सर्वे एना भेदज गणाय. एम बीजा पण एना अनेक प्रकारे भेद थाय छे, केमके चक्रवर्ती पोते मूलगा छ रागने प्ररूपे, अने तेनी स्त्री ६४००० छे, ते प्रत्येक एकेकी स्त्री, वली नवनवी देशीए करी भर्तारनी स्तवना करे, ते वारे चोसठ हजार देशीउं सर्वे जूदी जूदी रीते गवातां सर्वे मली चोसठ हजार भेदो थाय. तेमज वासुदेवनी बत्रीश हजार स्त्रीउं छे, तिहां बत्रीश हजार देशीउं गवाय, ते हाल पण बत्रीश हजार देशीउं चालु छे, केमके छेल्ला नवमा कृष्ण वासुदेव थइ गया ते वखते बत्रीश हजार देशीउं गवाती हती. ते पछी कोइ चक्रवर्ती थयो नथी, माटे बत्रीश हजारज चालु रहेली छे. ए रीते रागना अनेक भेद छे. वली ते राग रागणीनां रूप, ते जे जे रागनो जेवो जेवो आकार छे, जेवी रीते रागमालानां चित्रा-

मण कराय छे, ते शास्त्रोक्त सर्वेनां रूपने जूदां जूदां ते गुणसुंदरी जाणे छे, तेना आकार करी मूर्त्ति छे, तथा तेना पूर्वे चित्रेला आकारने उंलखे छे. वली स्वर सात प्रकारना छे, तेनां नाम श्लोके करी कहे छे।षड्ज ऋषभगांधारा, मध्यमः पंचमस्तथा ॥ धैवतो निषधः सप्त, तंत्रीसंजोद्भवाः स्वराः ॥ १ ॥ ए सात स्वरनां नाम कह्यां अथवा १ सा, २ री, ३ ग, ४ म, ५ प, ६ ध, ७ नी, ए सात भेद जाणवा. वली तालना सात भेद छे ते कहे छे. धूर्व, माठो, परुमनो, रूपको, जत्ति, पम्रतालो, एकतालो एटले एकताल, द्विताल, त्रिताल इत्यादि तालना सात भेद जाणवा. वली तंतवितान एटले तंतुनुं विस्तारवुं. तिहां कोइ वीणा चार तंतुनी होय, कोइ पांच तंतुनी होय, कोइ छ तंतुनी होय, कोइ सात तंतुनी होय, तेनुं संकोचवुं, विस्तारवुं तेने आकुंचन प्रसारण कहीए. तथा वीणा तंतुनुं चढाववुं, उतारवुं, ते सर्व तंतुनो वितान कहीए इत्यादिक अनेक वातो वीणा संबंधी छे, ते सर्व रागना ग्रंथोथी जाणवी. एवी रीते राग, रागिणी, रूप, स्वर, ताल अने तंतुवितान, ए छ तेणे करी संयुक्त जे वारे गुणसुंदरी वीणा वजावे छे ते वारे ते वीणानो जे शब्द तेना गुणथी रंजित थयो थको चार मुखने धारण करनारो एवो जे ब्रह्मा, ते पण पोताना आठे कानने स्थिर करीने ते वीणा सांजलवाने उजमाल थाय छे, तो बीजा सामान्य जनो सांजलवाने तत्पर थाय तेमां तो शुंज कहेवुं ? ॥ ७ ॥

शास्त्र सुजाषित काव्य रस, वीणानाद विनोद ॥
चतुर मले जो चतुरने, तो उपजे प्रमोद ॥ ए ॥

अर्थ—वली (शास्त्र के०) धर्मशास्त्र, विज्ञानशास्त्र, शब्दशास्त्र, आगमशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, निमित्तिशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, पुराणशास्त्र. हवे शास्त्रना चार योग कह्या छे, तेनां नाम कहे छे. एक धर्मकथानुयोग, बीजो चरणकरणानुयोग, त्रीजो गणितानुयोग अने चोथो द्रव्यानुयोग, इत्यादि

मण कराय छे, ते शास्त्रोक्त सर्वनां रूपने जूदां जूदां ते गुणसुंदरी जाणे छे, तेना आकार करी देखाडे छे, तथा तेना पूर्वे चित्रेला आकारने ओळखे छे. वली स्वर सात प्रकारना छे, तेनां नाम श्लोके करी कहे छे.। षड्ज ऋषभगांधारा, मध्यमः पंचमस्तथा ॥ धैवतो निषधः सप्त, तंत्री कंठोद्भवाः स्वराः ॥ १ ॥ ए सात स्वरनां नाम कह्यां अथवा १ सा, २ री, ३ ग, ४ म, ५ प, ६ ध, ७ नी, ए सात भेद जाणवा. वली तालना सात भेद छे ते कहे छे. ध्रुव, माठो, पडुमनो, रूपको, जत्ति, पफ्रतालो, एकतालो एटले एकताल, द्विताल, त्रिताल इत्यादि तालना सात भेद जाणवा. वली तंतवितान एटले तंतुनुं विस्तारवुं. तिहां कोइ वीणा चार तंतुनी होय, कोइ पांच तंतुनी होय, कोइ छ तंतुनी होय, कोइ सात तंतुनी होय, तेनुं संकोचवुं, विस्तारवुं तेने आकुंचन प्रसारण कहीए. तथा वीणा तंतुनुं चढाववुं, उतारवुं, ते सर्व तंतुनो वितान कहीए इत्यादिक अनेक वातो वीणा संबंधी छे, ते सर्व रागना ग्रंथोथी जाणवी. एवी रीते राग, रागिणी, रूप, स्वर, ताल अने तंतुवितान, ए छ तेणे करी संयुक्त जे वारे गुणसुंदरी वीणा वजावे छे ते वारे ते वीणानो जे शब्द तेना गुणथी रंजित थयो थको चार मुखने धारण करनारो एवो जे ब्रह्मा, ते पण पोताना आठे कानने स्थिर करीने ते वीणा सांभळवाने उजमाल थाय छे, तो बीजा सामान्य जनो सांभळवाने तत्पर थाय तेमां तो शुं कहेवुं ? ॥ ८ ॥

शास्त्र सुभाषित काव्य रस, वीणानाद विनोद ॥
चतुर मळे जो चतुरने, तो उपजे प्रमोद ॥ ए ॥

अर्थ—वली (शास्त्र के०) धर्मशास्त्र, विज्ञानशास्त्र, शब्दशास्त्र, आगमशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, निमित्तिशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, पुराणशास्त्र. हवे शास्त्रना चार योग कह्या छे, तेनां नाम कहे छे. एक धर्मकथानुयोग, बीजो चरणकरणानुयोग, त्रीजो गणितानुयोग अने चोथो द्रव्यानुयोग, इत्यादि

सर्व शास्त्र कहेवाय छे ते तथा (सुभाषित के०) जेमां प्रस्तावोचित भलां वचन होय, एवा प्रास्ताविक श्लोक जे चाणाक्य प्रमुख तेना भेद सहित तथा गाथाओना भेद, छंदनी जाति, सवैया कवित्त, कुंडलिया, दोहा, गाहा, हेली, प्रहेली इत्यादिक सर्व सुभाषित जाणवां, तथा (काव्य के०) हरिणी प्रमुखथी मांडीने महादंडक पर्यंत नवनवा छंदनी जातिओ. तिहां जे अगीयार अक्षरनुं पद ते काव्यनी पहेली जाति जाणवी इत्यादि. (रस के०) नव रस, तेमनां नाम कहे छे. शृंगाररस, हास्यरस, करुणारस, रौद्ररस, वीररस, भयानकरस, बीभत्सरस अद्भुतरस अने शांतरस ए नव रस. तथा वली त्रण प्रकारना रस. तेमां एक स्थायी रस, बीजो सात्त्विक रस, त्रीजो संचारी रस, एनी उपर राग, अनुराग, अनुरति, तेणे करी युक्त. तथा वली वीणानाद ते वीणाना शब्द तथा जूदी जूदी जातिनां वाजित्रोना शब्द ते लोकभाषाए त्रण प्रकारना छे. एक घा, बीजो वा, त्रीजो घसरको. तथा वली बीजा चार भेद कहे छे, एक घन ते ताल प्रमुख, बीजो सुषिर ते वंशादिक, त्रीजो आनद्ध ते मुरजादिक, अने तत ते वीणा प्रमुख. हवे प्रथमना त्रण भेदनो अर्थ कहे छे. प्रथम घा ते ढोल, पडहो, मृदंग, पखावज, ताल, कंसाल, करताल प्रमुख जाणवां. बीजो वा ते शंख, शरणाइ, भेरी, नफेरी, भुंगल, करणाट प्रमुख जाणवां. त्रीजो घसरको ते सारंगी प्रमुख जाणवां. इत्यादिक सर्व वाजित्र जाणवां. हवे वीणानां सात नाम छे, ते कहे छे. वीणा, घोषवती, विपंची, कंठकूणिका, वल्लकी, तंत्री, परिवादिनी. ते वीणाना स्वामी जूदा जूदा होय. शिवनी वीणानुं नाम नालंबी, सरस्वतीनी वीणानुं नाम कच्छपी, नारदने महती नामे वीणा होय, सर्वने सम्मत ते प्रभावती नामे वीणा जाणवी, ब्रह्मानी बृहती नामे वीणा छे, तुंबुरुनी कलावती नामे वीणा, चांडालनी कंटोली नामे वीणा, ए वीणाना भेद जाणवा. इत्यादिक सर्वनो (विनोद के०) रमण ते गुणसुंदरी छे, एटले ए सर्व चातुर्य गुणसुंदरीमां छे. एम सार्थवाह जे आव्यो छे ते श्रीपालने कहे छे. वली कहे छे के हे स्वामिन् ! ते कुंवरी अत्यंत डाही छे, वली चतुर

छे, माटे जो ते चतुरने मले तोज प्रमोद उपजे अथवा चतुरने जो कोइ चतुर मले तो परस्पर (प्रमोद के०) हर्ष आनंद उपजे. गुणवंतने गुणवंत मले तोज शोभे ॥ ए ॥

झहरो गाय तणे गले, खटके जेम कुकठ ॥ मूरख सरसी गोठडी, पग पग
हियडे हठ ॥ १० ॥ जो रुठो गुणवंतने, तो देजे दुःखपोठि ॥ दैव न
देजे एक तुं, साथ गमारां गोठि ॥ ११ ॥ रसियाशुं वासो नहीं, ते रसिया
इकताल ॥ झुरीने झांखर हुवे, जिम विछडी तरुडाल ॥ १२ ॥ उगति
युगति समजे नहीं, सूझे नहीं जस सोज ॥ इत उत जोइ जंगली,
जाणे आव्युं रोझ ॥ १३ ॥

अर्थ–नहींकां झहरो एटले एने कछी भाषामां गट कहे छे, ते (कुकठ के०) कुकाष्ठ एटले कुत्सित लाकडुं तेने ढीढर गायना गलामां बांध्युं थकुं गायना पगने विषे जेम खटके छे, तेम मूरख सरसी एटले मूरखनी साथे जे (गोठडी के०) गोष्ठि करवी अथवा गोठडी एटले सहवास करवो ते पण पगले पगले एटले वारंवार हैडाने विषे (हठ के०) अटक थाय, एटले खटक्या करे, हैयामां साल्या करे ॥ १० ॥ माटे हे दैव ! जो तुं गुणवंत जननी उपर रुष्टमान थाय तो तुने गमे तो तेने दुःखनी पोठो भरी भरीने आपजे, पण मात्र गमारां एटले मूर्ख तेनी साथे (गोठि के०) सहवास करवो जेनाथी प्राप्त थाय एवुं दुःख दइश नहीं ॥ ११ ॥ वली जे माणस पोते रसिक छे, अने तेने जो तेना जेवाज रसिक जन साथे वसवुं न थाय तो ते रसिया जन पण एकताल एक हाथे ताली न देवाय ते समान जाणवा. ते केवा समजवा ? के जेम (तरुडाल के०) वृक्षनी डाल, ते वृक्षथी विछडीने जूदी पडी गयेली होय ते वृक्ष विना एकली रहेली झुरी झुरीने झांखरा जेवी थाय छे, एवा ते एकताल माफकना रसिक

जन थाय छे ॥ १२ ॥ वली जे उक्ति के जुक्ति एटले कोइ पण वातनो न्याय करवो, चतुराइ देखाडवी, ते कांइ समजे नहीं, जेने कोइ पण कामकाज करवानी चतुराइथी सोज एटले शोध करवी तेनी सूज पडे नहीं, (इत उत के०) इहां तिहां अरहुं परहुं ज्यां त्यां जंगलीनी पेठे जोया करे, जाणे कोइ वगडानुं रोझ आव्युं होय नहीं ? ॥ १३ ॥

रोझ तणुं मन रीझवी, न शके कोइ सुजाण ॥ नदी मांहि निशिदिन वसे,
पलले नहीं पाषाण ॥ १४ ॥ मरम न जाणे मांहिलो, चित्त नहीं इक
ठोर ॥ जिहां तिहां माथुं घालतो, फरे हरायुं ढोर ॥ १५ ॥ वली चतुरशुं
बोलतां, बोली इक दो वार ॥ ते सहेली संसारमां, अवर अकज अवतार
॥ १६ ॥ रसियाने रसिया मले, केलवतां गुण गोठ ॥ हिये न माये रीझ
रस, कहेणी नावे होठ ॥ १७ ॥

अर्थ—माटे एवा रोझ जेवा मूर्खनुं मन तो कोइ (सुजाण के०) रुडो जाण पुरुष होय ते पण रीझवी शके नहीं, केनी पेठे ? के जेम मगसेलीयो पथरो जे छे, ते रात्रि दिवस नदी मांहेज वसे छे, तथापि ते बिलकुल पलले नहीं तेम ते मूर्ख पण जो सुजननी पासे रात्रि दिवस रहे तोपण कोइ रीते रीझ पामे नहीं ॥ १४ ॥ वली मूर्ख जन जे छे ते हरेक कामनी अंदरनो मर्म जे रहस्य तेने जाणे नहीं, वली तेनुं चित्त पण (इक ठोर के०) एक ठेकाणे न होय. जेम हरायुं एटले रखडतुं तोफानी ढोर होय ते ज्यां त्यां माथुं घालतुं थकुं फरतुं फरे तेनी पेरे ते पण फरतो फरे ॥ १५ ॥ वली चतुरनी साथे कदाचित् वचन बोलतां एक बे वार बोलीए ते संसारमां सहेली एटले अवतारनो लाहो लीधो जाणवो, अने (अवर के०) बीजो अवतार ते (अकज के०) निष्कारण निष्फल जाणवो ॥ १६ ॥ अथवा वली जे रसिया जन होय तेने जो रसिया मले

तो तेनी साथे गुणनी गोठ केलवतां थका तेथी जे रीऊनो रस उत्पन्न थाय ते हैयामां पण समाय नहीं अने ते रीऊनो जे रस, ते रसनी जे कहेणी ते होठमां आवे नहीं, एटले ते रीऊनो रस, तेनी वार्ता होठथी कहेवामां आवे नहीं ॥ १७ ॥

परख्या पाखे परणतां, छुंब मिले ज्ञरतार ॥ जाय जमारो ऊुरतां, किस्युं करे किरतार ॥ १७ ॥ तिण कारण ते कुंअरी, करे प्रतिज्ञा सार ॥ वीणा-वादे जीतशे, जे मुज ते ज्ञरतार ॥ १ए ॥

अर्थ–माटे परीक्षा कस्या विना जो परणीए तो छुंब एटले खराब मूर्ख ज्ञर्तार मले, तेना योगे आखो जन्मारो ऊुरतां ऊुरतां जाय, तेमां किरतार शुं करे? एटले पोते परीक्षा करवी नहीं, ने पछी किरतार जे दैव तेने दोष देवो ते फोकट छे. एमां बापमो दैव ते शुं आवी करे? ॥ १७ ॥ ते कारण माटे हे राजन्! ते कुंवरीए एवी (सार के०) प्रधान प्रतिज्ञा करी छे के जे पुरुष मुजने वीणावादमां जीतशे तेज मारो ज्ञर्तार जाणवो. ए बधी वात सार्थवाह श्रीपालने कही संज्ञलावे छे ॥ १ए ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ थाहरा महोला उपर मेह, ऊरूखे वीजली ॥ हो लाल ॥ ऊरूखे वीजली ॥ ए देशी ॥

तेह प्रतिज्ञा वात, नयरमां घर घरे ॥ हो लाल ॥ नयरमां० ॥ पसरी लोक अनेक, बनावे परे परे ॥ हो लाल ॥ बनावे० ॥ राजकुमार असंख्य, ते शीखण सज्ज थया ॥ हो लाल ॥ ते० ॥ लेइ वीणा साज, ते गुरु पासे गया ॥ हो लाल ॥ ते० ॥ १ ॥

अर्थ–हवे ते कुंवरीए करेली प्रतिज्ञानी वात ते कुंमलपुर नगरने विषे घरोघर पसरी एटले

फेलाइ के कुंवरीने वीणावादे जे जीते ते एनो भर्तार थाय. कुल जातिनो कांइ मेल नथी. एम जाणीने अनेक लोको चोज करीने ते वीणाना ख्यालने परे परे एटले अनेक प्रकारे बनावे छे. वली ए वात जाणीने असंख्य एटले घणा राजकुमारो ते वीणा शीखवा माटे तैयार थया, अने वीणानो साज लइने तेउ गुरुनी पासे गया ॥ १ ॥

त्रण ग्राम सुर सात, के एकवीश मूर्छना ॥ हो लाल ॥ के० ॥ तान उंगणपचास, घणी विध घोलना ॥ हो लाल ॥ घणी० ॥ विद्याचारय एक, सधावे शीखवे ॥ हो लाल ॥ सधावे० ॥ करे अभ्यास जुवान, ते उजम नवनवे ॥ हो लाल ॥ ते० ॥ २ ॥ शास्त्र संगीत विचक्षण, देश विदेशना ॥ हो लाल के ॥ देश० ॥ करे सभा मांहे वाद, ते नादविशेषना ॥ हो लाल ॥ ते० ॥ मास मास प्रति होय, तिहां गुण पारिखां ॥ हो लाल ॥ तिहां० ॥ सुणतां कुमरी वीण, सवे पशु सारिखा ॥ हो लाल ॥ सवे० ॥ ३ ॥

अर्थ–ते वीणा वजाडवाना आदि, मध्य अने अंत, ए त्रण ग्राम जाणवा. तथा खरज, ऋषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत अने निषाद, ए सात स्वर जाणवा, अने वीणानी मांहे एकवीश झीणा पीतलना तार थाय छे ते मूर्छना जाणवी. तेमज उंगणपचास तान जाणवां, अने घोलना तो (घणी विध के०) घणा प्रकारनी कही छे. एवी वीणा संबंधी विद्या ते एक विद्याचार्य छे ते त्यां सर्वने सधावे छे अने शीखवे छे. तिहां घणा जुवान पुरुषो नवनवा उजमभर अभ्यास करे छे ॥ २ ॥ ए प्रमाणे संगीतशास्त्रने विषे सर्व देश परदेशना जे विचक्षण एटले डाह्या पुरुषो छे ते त्यां आवीने सभा मांहे (नादविशेषना के०) स्वरविशेषना वाद करे छे. ते सर्वना कला संबंधी

गुणनी परीक्षा महीने महीने थाय छे, पण कुंवरीनी वीणा सांजलीने ते सर्व पशु एटले जानवर सरखा थइ जाय छे ॥ ३ ॥

चहुटा मांहि वीण, वजावे वाणीया ॥ हो लाल ॥ वजावे० ॥ न करे कोइ व्यापार, ते हौंशी प्राणीया ॥ हो लाल ॥ ते० ॥ इणी परे वरण अढार, घरोघर आंगणे ॥ हो लाल ॥ घरोघर० ॥ सघले मेडी माले, वीणा रणझणे ॥ हो लाल के ॥ वीणा० ॥ ४ ॥ गाय चारे गोवाल, ते वीण वजाडता ॥ हो लाल ॥ ते० ॥ राजकुंअरी विवाह, मनोरथ जावता ॥ हो लाल ॥ मनोरथ० ॥ सूनां मूकी खेत्र, मिले बहु करसणी ॥ हो लाल ॥ मिले० ॥ शीखे वीण वजावण, हौंश हिये घणी ॥ हो लाल के ॥ हौंश० ॥ ५ ॥

अर्थ—वली ते गामना चौटामां वाणीया लोको पण वीण वजाडे छे, ते सहु पोतानां मनमां एवी हौंश राखे छे के आपणने जो सारी वीणा वगाडतां आवडशे तो राजानी कुंवरी आपणने वरशे. एवी हौंशने राखनारा प्राणीउ ते पोतपोतानो व्यापार धंधो पण करता नथी. ए प्रमाणे त्यां अढारे वर्णनां लोकने घेर घेर, आंगणे आंगणे, मेडीए मेडीए, अने महोले महोले सर्व ठेकाणे वीणाना शब्दो रणझण थइ रह्या छे ॥ ४ ॥ तिहां जे गायोना चारनारा गोवालीया लोको छे ते पण गाय चारतां चारतां राजकुंवरीना विवाहना मनोरथने मनमां जावता थका वीणा वजाडे छे. तेमज करसणी जे खेडुत लोको छे ते पण पोतपोतानां धान्यनां पाकेलां खेतरोने सूनां मूकीने राजकुंवरीने परणवानी पोताना हैयामां घणी हौंश राखता थका तिहां आवीने (बहु के०) घणा मले छे, एटले ते वीणा वगाडवानो उद्यम शीखवाने एकठा थाय छे ॥ ५ ॥

तेह नयर मांहि एहवुं, कौतुक थइ रह्युं ॥ हो लाल के ॥ कौतुक० ॥ दीठे
बणे ते वात, न जाये पण कह्युं ॥ हो लाल ॥ न० ॥ सुणी कुंअर ते
वात, हिये रीझ्यो घणुं ॥ हो लाल ॥ हिये० ॥ सार्थवाहने सार, दीए
वधामणुं हो लाल ॥ दीए० ॥ ६ ॥ आव्यो निज आवास, कुंअर मन
चिंतवे ॥ हो लाल ॥ कुंअर० ॥ नयर रह्युं ते दूर, तो किम जास्यां हवे
॥ हो लाल ॥ तो० ॥ देत विधाता पांख, तो माणस रुअडां ॥ हो लाल
॥ तो० ॥ फरी फरी कौतुक जोत, जुवे जेम सूअडा ॥ हो लाल ॥ जुवे०
॥ ७ ॥ सिद्धचक्र मुज एह, मनोरथ पूरशे ॥ हो लाल ॥ मनोरथ० ॥
एहीज मुज आधार, विघन सवि चूरशे ॥ हो लाल ॥ विघन० ॥ थिर
करी मन वच काय, रह्यो इक ध्यानशुं ॥ हो लाल ॥ रह्यो० ॥ तन्मय
तत्पर चित्त, थयुं तस ग्यानशुं ॥ हो लाल ॥ थयुं० ॥ ८ ॥

अर्थ—तो हे कुंवर ! ते नगरमां एवा प्रकारनुं कौतुक थइ रह्युं छे ते नजरे दीठे बने, पण मुखे करी कह्युं जाय नहीं. ए वात सार्थवाहना मुखथी सांभलीने ते कुंवर पोताना हियामां घणुं रीझ्यो. ते वारे ते सार्थवाहने वधामणीमां (सार के०) प्रधान वस्त्रादिक (दीए के०) आपतो हवो ॥ उक्तं च ॥ तावत्प्रीतिर्भवेल्लोके, यावद्दानं प्रदीयते ॥ वत्सः क्षीरक्षयं दृष्ट्वा, परित्यजति मातरम् ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥ पछी श्रीपाल कुंवर संध्यासमये पोताना आवासने विषे आवीने मनमां एवुं चिंतववा लाग्यो के ते नगर तो अहींथी घणुं दूर रह्युं, तो हवे तिहां शी रीते जइशुं ? अहो ! जो विधाताए पांख आपी होत तो माणस रुमां थात; अने सूआडे

जेम फरी फरीने देश विदेशनां कौतुको जुवे छे तेम माणस पण आकाशगमन करी फरी फरीने देश विदेशनां कौतुक जोत ! ! ! ॥ ७ ॥ पण हवे मारे तो श्रीसिद्धचक्र जेवो धणी छे तो तेज मारा ए मनोरथ पूर्ण करशे, मारे तो एज आधारभूत छे, ते सर्व विघ्नोने चूर्ण करशे, एवो निश्चय करी पोतानां मन, वचन अने कायाने स्थिर करी, एक श्रीसिद्धचक्रजीनाज ध्यानमां रह्यो; ते श्रीपालनुं चित्त तन्मय एटले सिद्धचक्रना ध्यानमांज तत्पर एटले तल्लीन थयुं ॥ ८ ॥

ततखिण सोहमवासी, देव ते आवीयो ॥ हो लाल के ॥ देव० ॥ विमले-
सर मणिहार, मनोहर लावीयो ॥ हो लाल ॥ मनोहर० ॥ थइ घणो
सुप्रसन्न, कुंअर कंठे ठवे ॥ हो लाल ॥ कुंअर० ॥ तेह तणो कर जोडी,
महिमा वरणवे ॥ हो लाल ॥ महिमा० ॥ ए ॥ जेहवुं वंछे रूप, ते थाये
ततखिणे ॥ हो लाल ॥ ते० ॥ ततखिण वांछित ठाम, जाये गयणांगणे
॥ हो लाल ॥ जाये० ॥ आवे विण अभ्यास, कला जे चित्त धरे ॥ हो लाल
॥ कला० ॥ विषना विषम विकार, ते सघला संहरे ॥ हो लाल ॥ ते० ॥ १० ॥

अर्थ—ते वारे ततखिण एटले ते समयेज सौधर्मदेवलोकनो रहेवासी विमलेसर नामे देवता ते मनोहर मणिनो हार लइने तिहां आव्यो, ते घणोज सुप्रसन्न थइने ते हार श्रीपाल कुंवरने कंठे ठवीने बे हाथ जोडी ते हारनो महिमा वर्णवे छे ॥ ए ॥ ते कहे छे के हे कुंवर ! एक तो ए हारना प्रभावे करी जेवुं रूप वांछे तेवुं तत्काल थाय, बीजुं जे ठेकाणे जवानी वांछा करे तिहां तत्काल गयणांगणे एटले आकाशमार्गथी जवाय, त्रीजुं अभ्यास कर्या विना पण जे कला शीखवानुं पोताना चित्तमां धारे ते कला आवडे, अने चोथुं कोइने (विष के०) जेर व्याप्युं होय अने तेना विषम एटले आकरा विकार प्राप्त थया होय ते सर्वने संहरे एटले नाश करे ॥ १० ॥

श्री श्रीपाल राजानो रास

प्रकाशक—**श्रावक भीमसिंह माणेक,**
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनॉर, मुंबई

श्रीपाળ અને વિમલેશ્વર દેવતા.



તે વાર તતાખણ એટલે તે સમયેજ સૌધર્મ દેવલોકના રહેવાસી વિમલેશ્વર નામે દેવતા તે મનોહર મણિના હાર લઇને તિહાં આવ્યા



शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक ९८.



ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૧૩૮

લક્ષ્મી આર્ટ ભાયખળા, મુંબઈ

सिद्धचक्रनो सेवक, हुं छुं देवता ॥ हो लाल के ॥ हुं० ॥ केइ उद्धरीया धीर, में एहने सेवता ॥ हो लाल ॥ में० ॥ सिद्धचक्रनी भक्ति, घणी मन धारजो ॥ हो लाल ॥ घणी० ॥ मुजने कोइक काम, पडे संभारजो ॥ हो लाल ॥ पडे० ॥ ११ ॥ एम कहीने देव, ते निज थानक गयो ॥ हो लाल ॥ ते निज० ॥ कुंअर पोढ्यो सेज, निचिंतो मन थयो ॥ हो लाल ॥ निचिंतो० ॥ जाग्यो जिसे परभात, तिसे मन चिंतवे ॥ हो लाल ॥ तिसे० ॥ कुंमल नयर मझार, जइ वेसुं हवे ॥ हो लाल ॥ जइ० ॥ १२ ॥ नयण उघाडी जाम, विलोके आगले ॥ हो लाल ॥ विलोके० ॥ देखे उभो आप, नयरनी भागले ॥ हो लाल ॥ नयरनी० ॥ दीठा तिहां दरवाण, ते वीण वजावता ॥ हो लाल ॥ ते० ॥ राजकुंअरीनां रूप, कला गुण गावता ॥ हो लाल ॥ कला० ॥ १३ ॥

अर्थ—हे कुंवर ! हुं श्रीसिद्धचक्रनो सेवक देवता छुं. ए सिद्धचक्रने सेवता एटले सेवन करनारा एवा केटलाएक धीरजवंतोने में उद्धस्या छे, माटे तमे पण श्रीसिद्धचक्रनी भक्ति घणी मन मांहे धारजो, अने जो कोइक काम पडे तो मने संभारजो ॥ ११ ॥ ए प्रमाणे कहीने ते देवता पोताने स्थानके गयो, अने श्रीपाल कुंवर पण पोतानी सेज उपर जइ पोढ्यो, एटले सुइ रह्यो, तेनुं मन निश्चिंत थयुं छे. हवे प्रभाते जेवो जाग्यो तेवोज कुंवर पोताना मनमां चिंतववा लाग्यो के हवे कुंमलपुर नगरमां जइ वेसुं ॥ १२ ॥ एवुं चिंतवीने (जाम के०) जे वारे पोतानां (नयण के०) नेत्र उघाडीने आगल (विलोके के०) जुवे छे तो ते वारे पोताने कुंडलपुर नगरनी

त्रागोळे आवी उन्नेलो देखतो हवो, अने तिहां दरवाण जे नगरना दरवाजाना साचवनारा लोको ठे तेने पण वीणा वगाडता अने राजकुंवरीनां रूप, कला अने गुणोनुं गायन करता थका दीठा ॥ १३ ॥

चित्त मांहे चिंती रूप, करे तिहां कुबडुं ॥ हो लाल ॥ करे० ॥ उन्नम शीश निलाड, वदन जिस्युं तुंबडुं ॥ हो लाल ॥ वदन० ॥ चूए चूंची आंख, दांत सवि सोखला ॥ हो लाल ॥ दांत० ॥ वांका लांबा होठ, रहे ते मोकला ॥ हो लाल ॥ रहे० ॥ १४ ॥ चिहुं दिशि बेठुं नाक, कान जिम ठीकरां ॥ हो लाल ॥ कान० ॥ पूंठ उंची अति खुंध, हिये बहु टेकरा ॥ हो लाल ॥ हिये० ॥ कोट केम उर पेट, मली गयां दुकडां ॥ हो लाल ॥ मली० ॥ टुंकी साथल जंघ, हाथ पग टुंकमा ॥ हो लाल ॥ हाथ० ॥ १५ ॥ ठक ठक ठवतो पाय, नयर मांहि नीकल्यो ॥ हो लाल ॥ नयर० ॥ तेह नीहाली लोक, खलक जोवा मल्यो ॥ हो लाल ॥ खलक० ॥ जिहां शीखे ठे वीणा, कला तिहां आवीयो ॥ हो लाल ॥ कला० ॥ आव्या राजकुमार, मली बोलावीयो ॥ हो लाल ॥ मली० ॥ १६ ॥

अर्थ—पढी पोताना चित्तमां कुबडानुं रूप करवानुं चिंतवन करीने कुबमानुं स्वरूप कर्युं, ते आ प्रमाणे के प्रथम उन्नड शीश एटले मस्तक उंचुं ठे, ललाट पण उंचुं ठे, वदन जे मुख ते तुंबमा जेवुं ठे, अने आंखो चूंची ठे, तेमांथी पाणी चूए ठे एटले फरे ठे, तथा सर्व दांत सोखला थइ गयेला ठे, तथा होठ तो वांका, लांबा अने मोकला रहेला ठे, एटले एक होठने बीजो होठ मलतो नथी ॥ १४ ॥ तथा नाक चारे दिशाए बेसी गयेलुं ठे, कान तो जाणे ठीकरांज होय

नहीं ? एवा देखाय छे, पूंठ ऊंची छे, घणी खुंध नीकली छे, हैया ऊपर (बहु के०) घणा टेकरा जेवुं देखाय छे, तथा कोट, केरू, हृदय अने पेट, ए चारे ढुकडां एटले पासे पासे मली गयां छे, तथा साथल अने जांघ ए बेहु टुंकां छे, तेमज हाथ तथा पग पण सर्वे टुंकडा छे ॥ १५ ॥ एवुं रूप करी पगने हलवे हलवे ठक ठक करी (ठवतो के०) मूकतो थको एटले पग ठबकावतो थको नगरमां नीकल्यो. ते जोइने सर्व लोकनो खलक एटले समूह जोवा मल्यो. एवे वेषे जिहां बीजा राजकुमार प्रमुख वीणाकला शीखे छे तिहां ते कुब्ज आव्यो, तेने जोइने राजकुमारो पण तेनी तरफ आव्या, अने ते सर्व जणोए मली तेने बोलाव्यो ॥ १६ ॥

आवो आवो जुहार, पधारो वामणा ॥ हो लाल ॥ पधारो० ॥ दीसो
सुंदर रूप, घणुं सोहामणा ॥ हो लाल ॥ घणुं० ॥ किहांथी पधार्या राज,
कहो कुण कारणे ॥ हो लाल ॥ कहो० ॥ केहने देशो मोहत, जइ घर
बारणे ॥ हो लाल ॥ जइ० ॥ १७ ॥ कुब्ज कहे अमे दूर, थकी आव्या अहीं
॥ हो लाल ॥ थकी० ॥ हांसु करतां वात, तुम्हे साची कही ॥ हो लाल
॥ तुमे० ॥ वीणा गुरुनी पास, अमे पण साधशुं ॥ हो लाल ॥ अमे० ॥
करशे जो जगदीश, तो तुमथी वाधशुं ॥ हो लाल ॥ तो० ॥ १८ ॥

अर्थ—के हे वामणाजी ! आवो, आवो, जुहार छे, अहींयां पधारो, अहो ! तमे तो घणा सुंदर रूपवंत अने सोहामणा देखाओ छो ! हे राजन् ! तमे क्यांथी पधार्या ? अने शे कारणे तमोने अहींयां आववुं पड्युं छे ? तथा कोना घरने बारणे जइ तमे मान महत्त्व आपशो ॥ यतः ॥ दुर्जनोदीरितैर्दोषै—र्गुणैर्मार्गणवर्णितैः ॥ असतीदर्शितैः स्नेहै,—स्समानं महतां मनः ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ १७ ॥ ते सांभली कुब्जे कह्युं के हे भाइओ ! अमे घणा दूर देशथी अहींयां आव्या छीए.

तमे अमारुं हांसुं करता थका पण वात तो साची कही छे. हे कुमारो ! अमे पण गुरुनी पासे वीणानी कलाने साधशुं, अने जो जगदीश करशे तो तमाराथी पण ए कलामां अमे वधशुं ॥ १८॥

वीणानो ॥ जइ० ॥ जइ एम विनवे ॥ हो लाल ॥ जइ० ॥ वीणानो
विद्याचारीय पास, जइ एम विनवे ॥ हो लाल ॥ करावो० ॥ खड्ग अमूलिक एक,
अभ्यास, करावो मुज हवे ॥ हो लाल ॥ करावो० ॥ खड्ग अमूलिक एक,
कह्युं तस भेटणुं ॥ हो लाल ॥ कह्युं० ॥ तव हरख्या गुरु महोत, दीए
तस अति घणुं ॥ हो लाल ॥ दीए० ॥ १९ ॥ वीणा एक अनुपम,
दीधी तस करे ॥ हो लाल के ॥ दीधी० ॥ देखाडे स्वर नाद, ठेकाणां आदरे ॥
हो लाल ॥ ठेकाणां० ॥ त्रट त्रट त्रूटे तांत, गमा जाये खसी ॥ हो लाल ॥
गमा० ॥ ते देखी विपरीत, सभा सघली हसी ॥ हो लाल ॥ सभा० ॥ २० ॥

अर्थ–पछी विद्याचार्यनी पासे जइने ते कुबडो एवी रीते विनंति करे छे के हे गुरुजी ! हवे मने आप वीणानो अभ्यास करावो, पण राजकुमारो तेना उपर हसता हका हका करता देखीने गुरुए तो ते समये तेनी सामुं पण जोयुं नहीं, ते वारे कुब्जे ते उपाध्यायने पोताना हाथ मांहेला एक अमूलक खड्गनुं भेटणुं कह्युं, ते वारे तो ते गुरुए घणा हर्षवंत थइने कुब्जने अति घणुं महत्त्व दीधुं ॥ १९ ॥ एक अनुपम पोतानी वीणा कुबडाना हाथमां आपीने स्वर तथा नादनां जे जे ठेकाणां हतां ते सर्व आदरे करी देखाड्यां, ते वारे कुंवरे पण राजकुमारोने हास्य-रस वधारवा माटे विपरीतपणे वीणाना गमा चढाववा मांड्या के जेथी वीणानी तांतो जे हती ते सर्व त्रट त्रट त्रूटी गइ, अने गमा सर्व खसी गया, एटले तांतो त्रोडी नाखी, अने तुंबडुं फोडी नाख्युं. एवुं विपरीतपणुं जोइने सर्व सभा खडखड हसी, तोपण उपाध्याय पासे फरी फरी घरेणां आपवाना बदले करी आदर सहित रहे छे ॥ २० ॥

॥ हो लाल ॥ सन्ना० ॥ चतुर संगीत हवे परीक्षा हेतु, सन्ना महोटी मली ॥ हो लाल के ॥ बेठा० ॥ आवी राजकुमारी, विचक्षण, बेठा मन रली ॥ हो लाल ॥ कला० ॥ वीणा पुस्तक हाथ, जे पर-कला गुण वरसती ॥ हो लाल ॥ जे० ॥ २१ ॥ दरवाने दरबार, कुबज जव तख सरसती ॥ हो लाल ॥ कुबज० ॥ दीधुं नूषण रत्न, पछे नवि टोकीयो रोकीयो ॥ हो लाल ॥ पछे० ॥ आव्यो कुमरी पास, इछारूपी वडो ॥ हो लाल ॥ हो लाल ॥ इछारूपी० ॥ कुंवरी देखे सरूप, बीजा सवि कुबडो ॥ हो लाल ॥ बीजा० ॥ २२ ॥

अर्थ–हवे जे वारे महीनो पूर्ण थयो, ते वारे परीक्षाना हेतुए मोटी सन्ना मली. ते सन्ना मांहे संगीतशास्त्रने विषे चतुर अने विचक्षण एटले डाह्या पुरुषो सर्व पोतानां मनने रलीयाते एटले आनंदे करी बेठा. तिहां राजकुंवरी पण कला तथा गुणनो वरसाद वरसावती थकी आवी. तेना एक हाथमां वीणा छे, अने बीजा हाथमां वीणाना शास्त्र संबंधी पुस्तक छे, तेथी जाणीए प्रत्यक्ष एटले साक्षात् सरस्वतीज होय नहीं ? एवी शोभे छे ॥ २१ ॥ ते सन्नामां जवा माटे कुब्ज जेवो प्रवेश करे छे, तेवोज तेने दरवाने एटले पोलीये रोकी राख्यो, तेने कुंवरे रत्ननुं आनू-षण आप्युं, ते वारे तेणे सन्नामां जवा माटे नवि टोकीयो एटले अटकाव्यो नहीं. पछी ते (वक्रो के०) मोटो इछारूपी एटले इछामां आवे तेवा रूपने धारण करनारो जे कुंवर ते कुंवरी पासे आव्यो. तिहां मात्र एकली कुंवरी तो जेवुं श्रीपालनुं मूल रूप छे तेवुंज देखे छे, अने बीजा सर्वे तेने कुबडा जेवोज देखे छे ॥ उक्तं च ॥ प्रतिपच्चंद्रं सुरत्नी, नकुलीं नकुलः पयश्च कलहंसः ॥ चित्रकवल्लीं पक्षी, सूक्ष्मं धर्मं सुधीर्वेत्ति ॥ १ ॥ इति ॥ २२ ॥

सा चिंते मुज एह, प्रतिज्ञा पूरशे ॥ हो लाल ॥ प्रतिज्ञा० ॥ सफल जनम तो मानशुं, दुर्जन झुरशे ॥ हो लाल के ॥ दुर्जन० ॥ जो एहथी नवि भांजशे, मननुं आंतरुं ॥ हो लाल के ॥ मननुं० ॥ करी प्रतिज्ञा वयर, वसाव्युं तो खरुं ॥ हो लाल ॥ वसाव्युं० ॥ २३ ॥ दाखे गुरु आदेशे, निज वीणाकला ॥ हो लाल के ॥ निज० ॥ जाम कुमार कुमार, समा मद आकला ॥ हो लाल ॥ समा० ॥ ताम कुमारी देखावे, निज गुण चातुरी ॥ हो लाल के ॥ निज० ॥ लोके भाख्युं अंतर, ग्राम ने सुरपुरी ॥ हो लाल के ॥ ग्राम० ॥ २४ ॥

अर्थ–हवे (सा के०) ते राजकुंवरी श्रीपाल कुंवरने जोइने पोताना मनमां चिंतवे छे के मारी जे प्रतिज्ञा करेली छे ते जो एज पुरुष पूर्ण करशे तो हुं मारो जन्म सफल थयो एम मानीश, अने जे जे मारा दुर्जनो हशे ते सर्वे झुरता रहेशे, अने जो आ पुरुषथी मारा मननुं आंतरुं नहीं भांगे तो पछी आवी प्रतिज्ञा करीने में जगतमां खरेखरुं फोकट वेरज वसाव्युं एम जाणवुं ॥ २३ ॥ हवे (जाम के०) जे वारे गुरुनो आदेश पामीने (कुमार के०) सर्व राजकुमारो ते (कुमार समा के०) महादेवना पुत्र कार्तिकस्वामी सरखा मदे करी आकला थइने उतावलथी पोतपोतानी वीणाकला देखाडवा लाग्या, (ताम के०) ते वारे कुंवरीए पण पोताना गुणनी चतुराइ बतावी. ते जोइ सभाना लोके एवुं कह्युं के कुंवरीनी अने राजकुमारोनी वीणाकलामां तो ग्राम अने सुरपुरी जेटलुं अंतर छे, एटले किहां तो एक नानुं सरखुं गामडुं ! अने किहां देवलोकमां इंद्रनी नगरी ! ए बेहुमां परस्पर जेटलुं अंतर छे तेटलुं अंतर कुमारोनी अने कुंवरीनी वीणाकलामां छे ॥ २४ ॥

कुमरीकला आगे हुइ, कुंअर तणी कला ॥ हो लाल के ॥ कुंअर० ॥
चंद्रकला रवि आगे, ते गश ने बाकला ॥ हो लाल ॥ ते० ॥ लोक-
प्रशंसा सांजली, वामन आवीयो ॥ हो लाल के ॥ वामन० ॥ कहे कुंम्नल-
पुरवासी, जलो जन जावीयो ॥ हो लाल ॥ जलो० ॥ २५ ॥ कुंअरी
संकी तेण, वीणा दीए तसु करे ॥ हो लाल ॥ वीणा० ॥ कहे कुमार
अशुद्ध बे, ए वीणा धुरे ॥ हो लाल के ॥ ए० ॥ वीण सगर्जने दाधो,
दंड गले ग्रह्युं ॥ हो लाल के ॥ दंम्न० ॥ तुंबड तेण अशुद्ध,—पणुं में
तस कह्युं ॥ हो लाल ॥ पणुं० ॥ २६ ॥

अर्थ—जेम (रवि के०) सूर्यनी आगल चंद्रमानी कला निस्तेज देखाय बे, तेम राजकुंवरीनी कला आगल कुंवरोनी कला ते गश बाकला जेवी थइ गइ, एटले नहीं जेवी थइ गइ. ए प्रमाणे लोकोनां मुखथी कुंवरीनी प्रशंसा थती सांजलीने वामनजी तिहां आव्या, तेने जोइ वज्ररति बोल्यो के आ कुब्ज तो कुंम्नलपुरना वासी जनोने जलो जावीयो देखाय बे ॥ २५ ॥ हवे राज-कुंवरीए तो जाणे प्रथमथी तेनी साथे संकेतज कस्यो होय नहीं ? तेम (तसु के०) ते कुबम्नाना (करे के०) हाथमां पोतानी वीणा आपी, ते वीणा जोइने कुंवर बोल्यो के (धुरे के०) प्रथम तो ए वीणाज अशुद्ध बे, केमके ए वीणाना तुंबम्नानो गर्न पूरोपूरो नीकल्यो नथी, कांइक मांहेली कोरे रही गयेलो बे, माटे ए वीणा (सगर्न के०) गर्न सहित बे, अने वली ए वीणानो दंड जे बे ते अरण्यमां दग्ध थयेलुं जे वृक्ष हतुं ते वृक्षनुं काष्ठ कापीने बनावेलो बे, माटे (दाधो के०) दग्ध थयेलो, बलेलो बे, तेथी (गले ग्रह्युं के०) गलुं ग्रहवाणुं बे, ते पकडाइ जाय बे,

अटकी जाय छे, तेने लीधे एनो स्वर भिन्न थाय छे, एना गलामांथी शब्द बराबर सारो नीकलतो नथी, एवी ए वीणा छे, (तेण के०) ते माटे (तस के०) ते तुंबडानुं अशुद्धपणुं में कह्युं ॥ २६ ॥

दे(दा)खी दोष समारी, वीण ते आलवे ॥ हो लाल ॥ वीण० ॥ होइ ग्रामनी मूर्छना, किंपि न को चवे ॥ हो लाल के ॥ किंपि० ॥ सूता लोकनां लेइ, मुकुट मुद्रा मणि ॥ हो लाल ॥ मुकुट० ॥ वस्त्राभरण लेइ करी, राशि ते अति घणी ॥ हो लाल के ॥ राशि० ॥ २७ ॥ जाग्यां लोक अछेरुं, देखी एहवुं ॥ हो लाल के ॥ देखी० ॥ पूर्ण प्रतिज्ञा कुमारी, चित्त हरषित हवुं ॥ हो लाल० ॥ चित्त० ॥ त्रिभुवनसार कुमार, गले वरमालिका ॥ हो लाल ॥ गले० ॥ हवे ठवे निज माने, धन्य ते बालिका ॥ हो लाल ॥ धन्य० ॥ (पाठांतर) वीणानाद विनोदे, ते रीझी खरी ॥ हो लाल के ॥ ते० ॥ कंठे ठवे वरमाला, तेहने कुंअरी ॥ हो लाल के ॥ तेहने० ॥ २८ ॥

अर्थ—ए प्रमाणे ते वीणामां दोष देखाडीने पछी कुंवरे तेने समारीने तेनी आलापचारी करी, ते जेवी वीणाना ग्रामनी मूर्छना थइ तेवांज सर्व लोको मूर्छा पाम्यां, (किंपि न को चवे के०) कोइ लगार मात्र पण बोले नहीं, हाले चाले नहीं. एवी रीते सर्व लोकोने मूर्छावश थयेलां जोइने श्रीपाल कुंवरे ते सुतेलां लोकोनां मुकुट अने मणिरत्ने जडित एवी मुद्रा एटले वींटीउ तेमज वस्त्र अने बीजां पण कुंडलादिक घरेणांउ लइने तेनो अत्यंत घणो मोटो राशि एटले ढगलो कर्यो, अने पोते पाछो वीणा वजाडवा बेसी गयो ॥ २७ ॥ थोडी वार पछी जे वारे ते लोको सर्व मूर्छामांथी जाग्यां ते वारे लोकोए एवुं अछेरुं दीठुं, अने कुंवरीनी प्रतिज्ञा पूर्ण थवाथी एनुं चित्त पण

हर्षायमान थयुं. हवे ते समये त्रण भुवनमां सारभूत एवो जे श्रीपाल कुंवर, तेना गलाने विषे वरमालिका ते गुणसुंदरी (ठवे के०) स्थापती हवी, अने ते बालिका जे राजकुंवरी ते पोताना अवतारने धन्य मानवा लागी ॥ पाठांतरे ॥ ते कुंवरी वीणानो जे (नाद के०) शब्द तेनो (विनोद के०) आनंद तेणे करी खरेखरी रीझ पामीने श्रीपाल कुंवरने कंठे वरमाला थापती हवी ॥ २८ ॥

वामन वरीयो जाणी, नृपादिक दुःख धरे ॥ हो लाल ॥ नृपादिक० ॥
ताम कुमार स्वभावनुं, रूप ते आदरे ॥ हो लाल के ॥ रूप० ॥ शशि
रजनी हर गौरी, हरि कमला जिस्यो ॥ हो लाल ॥ हरि० ॥ योग्य मे-
लावो जाणी, सवि चित्त उल्लस्यो ॥ हो लाल ॥ सवि० ॥ २९ ॥ निज
बेटी परणावी, राजा भली परे ॥ हो लाल ॥ राजा० ॥ दीए हय गय
धण कंचण, पूरे तस घरे ॥ हो लाल ॥ पूरे० ॥ पुण्य विशाल भुजाल,
तिहां लीला करे ॥ हो लाल ॥ तिहां० ॥ गुणसुंदरीनी साथ, श्रीपाल ते
सुख वरे ॥ हो लाल ॥ श्रीपाल० ॥ ३० ॥

अर्थ–इहां कुंवरीए वामणाने वर्यो, एवुं जाणीने जे वारे नृपादिक एटले कुंवरीना पिता प्रमुख सर्व दुःख धरवा लाग्या, (ताम के०) ते वारे कुंवरे पण पोतानुं मूल स्वभावनुं जे रूप हतुं ते आदर्युं. पछी ते कुंवरी अने कुंवरनुं जोरुडुं केवुं शोभवा लाग्युं ? के जेम (शशि के०) चंद्रमा अने रजनी जे शरदपूनमनी रात्रि ए बेहुनुं जोडुं जेवुं शोभे तेवुं, तथा हर जे महादेव अने गौरी जे पार्वती ए बेहुनुं जोडुं जेवुं शोभे तेवुं, तथा हरि जे श्रीकृष्ण अने कमला जे लक्ष्मीजी ए बन्नेनुं जोडुं जेवुं शोभे तेवुं श्रीपाल कुंवर अने गुणसुंदरीनुं जोडुं शोभवा लाग्युं. एवो योग्य

मेवावो जाणीने सर्व लोकोनां चित्त उल्लासने पाम्यां ॥ यतः ॥ वपुर्वंशो वयो वित्तं, विद्याविधिविदग्धता ॥ विवेको विनयश्चेति, वरे सप्त गुणा श्रमी ॥ १ ॥ इति ॥ २ए ॥ राजाए पोतानी कुंवरीने नली परे परणावीने (हय के०) घोमा, (गय के०) हाथी, (धण के०) धन श्रने कंचन जे सोनुं ते (दीए के०) दइने तेनुं घर (पूरे के०) पूरे डे. श्रर्थात् घर संपूर्ण रीते नराय एवुं दान देतो हवो. हवे विशाल पुण्यनो धणी श्रने मोटी नुजाउवालो जे श्रीपाल कुंवर, ते तिहां पोताना ससराना घरने विषे रह्यो थको लीला करे डे श्रने गुणसुंदरीनी साथे सुख नोगवे डे ॥ ३० ॥

त्रीजे खंमे ढाल, रसाल ते पांचमी हो लाल ॥ रसाल० ॥ पूरी ए अनुकूल, सुजन मन संक्रमी ॥ हो लाल ॥ सुजन० ॥ सिद्धचक्र गुण गातां, चित्त न कुण तणो ॥ हो लाल ॥ चित्त० ॥ हरषे वरसे अमिय, ते विनय सुजश घणो ॥ हो लाल ॥ ते० ॥ ३१ ॥

श्रर्थ–ए त्रीजा खंमने विषे रसाल एटले रसे करी सहित एवी पांचमी ढाल कही. इहां नावार्थ ए डे जे ए ढालनी रचना करतां करतां श्रीविनयविजयजी उपाध्याय देवलोक पहोता. ते पठी ए ढाल जे श्रधुरी मूकी गया हता ते श्रनुकूल एटले जेवी जोइए तेवी रीते श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्याये (पूरी के०) पूर्ण करी, ते सज्जन जनोनां मनमां संक्रमी एटले गमी, तेमनां हृदयने श्रानंददायक थइ, तो हे नव्यो ! ए श्रीसिद्धचक्रजीना गुण गातां थका कोना चित्तने विषे श्रमिय एटले श्रमृत समान हर्षनो वरसाद नहीं वरसे ? श्रर्थात् सहु कोइना चित्तमां वरसेज, श्रने ते प्राणी घणो विनय श्रने घणो सुयश पामे. इहां श्रीविनयविजयजी तथा यशोविजयजी बेहुनां नाम पण सूचन कर्यां ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

पुण्यवंत जिहां पग धरे, तिहां आवे सवि ऋद्धि ॥ तिहां अयोध्या राम जिहां, जिहां साहस तिहां सिद्धि ॥ १ ॥ पुण्यवंतने लछीनो, इछा तणो विलंब ॥ कोकिल चाहे कंठरव, दीए लुंब नर अंब ॥ २ ॥ पुण्ये परिणति होय भली, पुण्ये सुगुण गरिठ ॥ पुण्ये अलिय विघन टले, पुण्ये मिले ते इठ ॥ ३ ॥

अर्थ–पुण्यवंत प्राणी जिहां पोतानो पग धरे तिहां सर्व प्रकारनी ऋद्धि आवी मले, जेमके जिहां श्रीरामचंद्रजी होय तिहांज अयोध्या नगरी जाणवी, अने जिहां साहस छे तिहांज सिद्धि छे, ए दृष्टांत जाणी लेवो ॥ १ ॥ पुण्यवंत प्राणीने लछी जे लक्ष्मी पामवी ते तो मात्र तेने इछा करवी पडे, एटलोज विलंब छे. जेम कोकिल पक्षी छे, ते जे वारे रुडा (कंठरव के०) कंठनो शब्द एटले सुकंठनी इछा करे छे, ते वारे तरतज तेने अंब वृक्ष जे छे ते लुंब भरीने पोतानो महोर आपे छे ॥ २ ॥ वली पुण्यना प्रभावे करी जीवनी भली एटले रुडी परिणति थाय तथा पुण्यना योगे सुगुण जे रुडा गुण तेणे करी गरिष्ठ एटले मोटो थाय, तथा पुण्ये करी (अलिय के०) अलीक एटले माठां विघ्न टले, तथा पुण्ये करीनेज जेनी इछा होय ते इष्ट वस्तु आवी मले ॥ ३ ॥

॥ ढाल छठी ॥ सुण सुगुण सनेही रे साहिबा ॥ ए देशी ॥

इक दिन इक परदेशीयो, कहे कुमरने अद्भुत ठाम रे ॥
सुण जोयण त्रणसें उपरे, छे नयर कंचनपुर नाम रे ॥
जुउ जुउ अचरिज अति भलुं ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥

अर्थ–हवे एक दिवसे एक परदेशी पुरुष श्रीपालनी हजुर आवीने एक अद्भुत स्थानकनी वात

कहे छे के हे स्वामिन् ! सांभलो, के अहींथी त्रणसें योजन उपर एक कंचनपुर नामनुं नगर छे. हे महाराज ! तिहां अत्यंत भलुं आश्चर्यकारी कौतुक छे तेने तमे जुर्ज, जुर्ज एटले देखो, देखो. अर्थात् ए तमोने जोवा योग्य छे ॥ १ ॥

तिहां वज्रसेन छे राजीयो, अरिकाल सबल करवाल रे ॥ तस कंचनमाला
छे कामिनी, मालतीमाला सुकुमाल रे ॥ जुर्ज० ॥ २ ॥ तेहने सुत चारनी
उपरे, त्रैलोक्यसुंदरी नाम रे ॥ पुत्री छे वेदनी उपरे, उपनिषद् यथा अभि-
राम रे ॥ जुर्ज० ॥३॥ रंभादिक जे रमणी करी, ते तो एह घडवा करलेख
रे ॥ विधिने रचना बीजी तणी, एहनो जय जश उल्लेख रे ॥ जुर्ज० ॥४॥

अर्थ—तिहां ते नगरमां वज्रसेन नामे राजा छे, जेनी (अरि के०) शत्रुर्जने कालरूपी एवी सबल एटले बल सहित तरवार छे. ते राजाने मालतीनां पुष्पोनी माला सरखी सुकुमाल शरीरवाली एवी कंचनमाला नामे कामिनी एटले पट्टराणी छे ॥ २ ॥ ते राणीने चार पुत्र छे. तेनी उपरे वली एक त्रैलोक्यसुंदरी एवे नामे पुत्री थइ छे, ते जेम चार वेदने माथे उपनिषद् शोभे छे तेम चारे पुत्रोने माथे ते कुंवरी शोभे छे, एटले चार वेदनुं रहस्यरूप जेम उपनिषद् छे तेम ते चार पुत्र तो चार वेद जेवा गुणवंत छे, अने ते चार वेदना दोहनरूप जे उपनिषद् छे ते समान महा गुणवान् ते कुंवरी छे ॥ ३ ॥ हवे ए त्रैलोक्यसुंदरीनी उत्पत्ति कहेवामां कवि उत्प्रेक्षा करे छे के जगतमां सृष्टिनो कर्त्ता ब्रह्मा कहेवाय छे. तिहां जेम कोइक चित्रकार कोइ रुडी छबी करवानुं साधन करवा बेसे, तिहां प्रथम तो झाझां झीणां चित्रोनो अभ्यास करे छे, एम करतां करतां जे वारे तेनो हाथ वले ते वारे चिंतित पदार्थनी छबी मन प्रतीत प्रमाणे ते करे छे. तेम सृष्टिनो कर्त्ता जे विधि तेणे पण ए त्रैलोक्यसुंदरीने घडवाने अर्थे हस्तक्रिया समारवा सारु पहेली जे (रंभादिक के०) रंभा, उर्वशी,

तिलोत्तमा प्रमुख अप्सराउं विगेरे (रमणी के०) जे स्त्रीउं, तेना समूह कस्या, ते तो ए त्रैलोक्य-सुंदरीने घरूवाने अर्थे करलेख एटले हस्तलेख सुधारवा माटे प्रथम खरडो कस्यो. एम करतां करतां जे वारे ते ब्रह्मानो हाथ वल्यो ते वारे तेणे विगतोपमान एवी ए त्रैलोक्यसुंदरीने घरूी, एटले ब्रह्माने विषे जे स्त्रीना रूपमां सृष्टि नीपजाववानी अने रूपवंत करवा संबंधी क्रियाकुशलतानी सीमा हती ते सघली तेणे ए स्त्री घरूवामां वापरी नाखी. हवे एथी उपरांत रूप, कला अने गुणवान् कोइ बीजी स्त्री घरूवानी शक्ति विधातामां रही नहीं, एमां जेटलुं म्हापण हतुं ते त्रैलोक्यसुंदरी बनाववाना काममां लगाड्युं. हवे अहीं कोइ प्रश्न करे के ब्रह्माए प्रथम रंजादिक स्त्रीउं जे घडी ते तो जाणे त्रैलोक्यसुंदरीने घरूवा माटे हाथ वाल्यो हतो ते तो साचुं बे, पण ए त्रैलोक्यसुंदरी नीपजाव्या पठी वली ब्रह्माए बीजी उतरता रूपनी स्त्रीउं जगतमां शामाटे नीपजावी ? केमके साध्यनी परिसमाप्तिए कोइ क्रिया करे नहीं. तेनो उत्तर कहे बे जे "विधिने रचना बीजी तणी " एटले त्रैलोक्यसुंदरीने घड्या पठी वर्त्तमान काले तथा आगामिक काले बीजी घणी स्त्रीउं विधाताए नीपजावी, पण ते सर्वनां रूप, गुण अने कला, ए सहु सामान्य कीधां; ते एटला वास्ते के (एहनो के०) ए त्रैलोक्यसुंदरीना जययशनो (उल्लेख के०) उत्कर्ष लेख करवा माटे, एटले ए त्रैलोक्यसुंदरीने सर्वोत्तम, सर्वथी अधिक रूप, कला अने गुणना यशनो जय आपवा माटे तथा तेनो वान वधारवा माटे नीपजावी बे; अर्थात् विधाताए पोते त्रैलोक्यसुंदरीने सर्वोत्तम ठराववाना हेतुथी तेनो मुकाबलो करवाना निमित्ते बीजी त्रैकालिक स्त्रीउं कीधी बे, अने ते सर्व स्त्रीउंनां रूप, कला अने गुणने जीते तेवी ए त्रैलोक्यसुंदरी करी बे, तेथी तेज दीप्ति थइ बे, केमके सरस वस्तुनुं जाणपणुं केवारे थाय ? के जे वारे तेनी पासे बीजी निरस वस्तु होय ते वारे ते मूलगी वस्तु सरस दीठामां आवे. तेम ब्रह्माए पण एने

सर्वोत्तम ठराववा माटे बीजी त्रैकालिक स्त्रीउने सामान्य रूप गुणवाली कीधी छे. इति जावार्थः ॥ उक्तं च ॥ नैषधे ॥ पुराकृते स्त्रैणमिमां विधातु,—मज्रूद्विधातुः खलु हस्तलेखः ॥ एवं जवज्ञाविपुरंध्रिसृष्टिः, सास्यै यशो वै जयजं प्रदातुम् ॥ १ ॥ इति ॥ ४ ॥

रोमाग्र निरखे तेहने, ब्रह्माद्वय अनुजव होय रे ॥ स्मर अद्वय पूरण
दर्शने, तेहने तुल्य नहीं कोय रे ॥ जुउ० ॥ ५ ॥ नृपे तस वर सरिखो
देखवा, मंडप स्वयंवर कीध रे ॥ मूल मंडपथंजे पूतली, मणि कंचन-
मय सुप्रसिद्ध रे ॥ जुउ० ॥ ६ ॥

अर्थ—वली ते त्रैलोक्यसुंदरीना रूपनुं वर्णन ते सार्थवाह श्रीपाल कुंवरनी आगल करे छे. ते त्रैलोक्यसुंदरीना शरीरनो रोमाग्र एटले एक रोमनो अग्रजाग तेने जे प्राणी (निरखे के०) जुवे तो तेने (ब्रह्माद्वय के०) ब्रह्म जे आनंद तेनुं अद्वय एटले ऐक्यनो अनुजव (होय के०) थाय. एतावता आकारक जे ज्ञान तेनो अनुजव थाय, एटले ते कुंवरीना रोमाग्रने देखवाथी त्रैलोक्यवर्त्ती जे आनंद, तेनो एक पुंज एटले समूहमय थाय. अर्थात् दर्शक पुरुष तेना दर्शनथी केवल आनंदमय थइ जाय. इति जावः ॥ तथा ते स्त्रीना पूर्ण दर्शने एटले यथानुक्रमे नख शिख पर्यंत देखवे करीने स्मर जे कंदर्प तेनुं अद्वय जे ऐक्य तेनो अनुजव थाय, एटले दर्शक जे देखनारो ते केवल काममय थइ जाय, तेने रोमे रोमे काम व्यापी जाय. इति जावः ॥ केमके ते एम विचारे जे कामदेव ते अद्भुत रूपवंत छे, अने आ कुंवरीने संपूर्ण देखवाथी पण अत्यंत रूपवंतपणुं जाणवामां आवे छे, माटे एनुं रूप तो घणुंज सुंदर छे, अने शास्त्रमां तो एवुं घणुं सुंदर रूप एक कामदेवनुंज सांजल्युं छे, माटे कामदेव ते एज हशे ? एटले कंदर्प ते एनेज कहेता हशे ? एम साक्षात् कंदर्पपणुं ठरावते कंदर्पनुं वेपणुं टाल्युं ॥ ५ ॥ ते त्रैलोक्यसुंदरी कुंवरीना सरखो (वर के०)

भर्त्तार वराववाने माटे तेना पिताए स्वयंवरमंडप कर्यो छे, ते मंडपने विषे मूल स्तंभे प्रसिद्ध एवी कंचनमय, मणिरत्ने जडाव एक शोभनीय पूतली स्थापी छे ॥ ६ ॥

चिहुं पास विमाणावली समी, मंचातिमंचनी श्रेणी रे ॥ गोरव कारण
कणराशि जे, झींपीजे गिरिवर तेणी रे ॥ जुउ० ॥ ७ ॥ तिहां प्रथम पक्ष
आषाढनी, बीजे छे वरण मुहूर्त्त रे ॥ शुभ बीज ! बीज ते काल छे, पुण्य-
वंतने हेतु आयत्त रे ॥ जुउ० ॥ ८ ॥ एम निसुणी सोवन सांकळुं, कुंअरे
तस दीधुं ताव रे ॥ घरे जइ ते कुब्जाकृति धरी, तिहां पहोतो हार प्रभाव
रे ॥ जुउ० ॥ ए ॥ मंडपे पइसंतो वारीयो, पोळीयाने भूषण देइ रे ॥
तिहां पहोतो मणिमय पूतली, पासे बेठो सुखसेंइ रे ॥ जुउ० ॥ १० ॥

अर्थ—वली ते स्वयंवरमंडपमां जे राजाउ पधारशे तेमने बेसवा माटे ते मंडपनी चारे पासे देवताउनां विमानोनी आवली एटले श्रेणी तेनी समान तिहां मंचातिमंच एटले एक मंच ते लघु मंच अने बीजा अतिमंच एटले मोटा मंच तेनी श्रेणी एटले पंक्तिउ करेली छे. वली राजाउ जे आवशे तेमने गोरव करवाने एटले भोजन देवाने अर्थे कण जे धान्य तेना राशिउ एटले ढगलाउ कर्या छे; ते केवा छे? तो के गिरिवर जे मेरु पर्वत तेने पण झींपे एवा मोटा शोभी रह्या छे ॥ ७ ॥ तिहां आषाढ महीनानो प्रथम पक्ष तेनी बीजने दिवसे वरवानुं मुहूर्त्त छे, माटे हे शुभबीज ! एटले हे भला बीज ! उत्तम कुलना उपना कुंवर ! ते बीज जे छे ते आवती कालेज छे, माटे पुण्यवंत पुरुषने एनो हेतु एटले कारण (आयत्त के०) स्वाधीन छे ॥ ८ ॥ ए प्रमाणे ते परदेशीना मुखथी वात सांभलीने श्रीपाल कुंवरे तेने सोनानुं सांकळुं (ताव के०) ते वखत दीधुं. पछी पोताने घेर जइ (कुब्जाकृति धरी के०) कुबडानुं रूप धारण करी हारना

प्रतावे करी तिहां ते नगरने विषे जइ पहोतो ॥ ए ॥ ते कुबमाने स्वयंवरमंमपमां पेसतां थका तिहां उन्ना रहेला पोलीयाए वास्यो, ते वारे पोलीयाने आनूषण आपीने त्यां पहोतो. जिहां मंमपना मध्यन्नागे मणिमय पूतली हती, तेनी पासे जइ स्वस्थ थइने बेठो ॥ १० ॥

खरदंतो नाक ते नानडुं, होठ लांबा उंची पीठ रे ॥ आंख पीली केश
कावरा, रह्यो उन्नो मांडवा हेठ रे ॥ जुउ० ॥ ११ ॥ नृप पूछे केइ सोन्ना-
गीया, वली वागीया जागीया तेज रे ॥ कहो कुण कारण तुमे आवीया,
कहे जिण कारण तुमे हेज रे ॥ जुउ० ॥ १२ ॥ तव ते नरपति खमखम
हसे, जुउ जुउ ए रूपनिधान रे ॥ एहने जे वरशे सुंदरी, तेहनां काज
सर्यां वल्यो वान रे ॥ जुउ० ॥ १३ ॥

अर्थ—हवे ते कुबमो केवो छे ? तो के (खरदंतो के०) गधेमा जेवा जेना दांत छे, नाक तो नानुं छे, होठ लांबा छे, पीठ उंची छे, आंख पीली छे अने केश जेना काबरा छे एवो ते कुब्ज-रूपे श्रीपाल कुंवर स्वयंवरमंमपनी नीचे जइने उन्नो रह्यो ॥ ११ ॥ हवे श्रीपाल कुबमानुं रूप धारण करी आव्यो छे तेने तिहां स्वयंवरमंमपमां बेठेला बीजा (नृप के०) राजाउ पूछे छे के अमे केटलाएक राजकुंवर ते सोन्नागीया एटले सौन्नाग्यवंत न्नाग्यशाली, वली वागीया एटले वाचाल अने (जागीया तेज रे के०) पोताना तेज प्रतापे करी जाग्रत थयेला एवा इहां कन्या परणवाना कार्यने अर्थे मल्या छीए, परंतु तमे शा कारणे इहां पधास्या छो ? ते कहो. ते वारे ते कुबडो कहेतो हवो के जे कारणे तमे आव्या छो तेज कारणे अमे पण इहां आव्या छीए ॥ १२ ॥ एवुं कुबडाए कह्युं ते वारे ते राजाउ सर्वे खमखड हसवा लाग्या, अने मश्करीमां बोलवा लाग्या के जुउ, जुउ, आ रूपनुं निधान एटले खजानो इहां कन्या परणवाने आव्यो छे ! एने जे

सुंदरी वरशे तेनां तो सर्व कार्य सर्यां, अने तेना शरीरनो वान पण वध्यो, एम जाणवुं ॥ १३ ॥

इण अवसरे नरपति कुंअरी, वर अंबर शिबिकारूढ रे ॥ जाणीए चमकती
वीजली, गिरि उपर जलधरगूढ रे ॥ जु० ॥ १४ ॥ मुत्ताहलहारे
सोहती, वरमाला कर मांहे लेइ रे ॥ मूल मंडप आवी कुंअरने, सहसा
शुचि रूप पलोइ रे ॥ जु० ॥ १५ ॥ जे सहज स्वरूप विभावमां,
देखे ते अनुभवयोग रे ॥ इण व्यतिकरे ते हरषित हुइ, कहे हुउ
मुज इष्ट संयोग रे ॥ जु० ॥ १६ ॥

अर्थ–एवा अवसरे राजानी कुंवरी पण (वर के०) प्रधान एवां अंबर एटले वस्त्रोए करी आछादित करेली एवी शिबिका एटले पालखी तेमां आरूढ थइने स्वयंवरमंडपमां आवे छे, तिहां कवीश्वर उपमा आपे छे के जेम (जलधरगूढ के०) मेघनी घटाए ढांकेलो एवो जे पर्वत तेनी उपर चमकार करती वीजली शोभे, तेम इहां पर्वत समान ते पालखी जाणवी, अने ते पालखी उपर जे नीला वस्त्रनुं मेघाडंबरछत्र धर्युं छे ते जाणीए उंडो गुप्त वरसाद चढी आव्यो छे, अने तेमां झबकारा करती वीजलीनी परे ते कन्या बेठी थकी शोभे छे ॥ १४ ॥ ते कुंवरीए मुत्ताहल एटले मुक्ताफल जे मोतीउ तेना हार कंठमां पहेर्या छे, तेणे करी शोभती थकी हाथमां वरमाला लइने जेवी मूल मंडपस्तंभने विषे आवी, तेवीज तेनी आगल उभेला श्रीपाल कुंवरनुं सहसा एटले शीघ्रपणे अकस्मात् शुचि एटले पवित्र एवुं रूप तेने (पलोइ के०) देखीने मग्न थइ ॥ १५ ॥ तेनी उपर दृष्टांत कहे छे के जेम सहज स्वरूप एटले कर्मादि मल रहित, स्फटिक रत्ननी परे निर्मल, मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योगथी रहित तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्रमय एवुं जे आत्मानुं सहज स्वरूप छे तेने विभावमां एटले नवनिध परिग्रहादिक जे घर, माल मिल्कत,

माता, पिता, पुत्र, कलत्र, भ्राता, बहेन प्रमुख ए सर्व बाह्य परिग्रह विभाव जाणवो, अने राग, द्वेष, कषायादिक ते अंतरंग परिग्रह जाणवो, तेणे करी सहित जे संसारी जीव ते अनादि कालनो विभावदशामां मग्न थको ते मांहेज रातो रहे छे. ते कोइ वारे कर्म विवर दीधे थके कषायादिकनी मंदता थाय, ते वारे आत्मानी शुभ दशानी उग्रताने योगे पोतानुं सहज स्वरूप जे ज्ञानादिक गुणमय छे तेने देखे ते अनुभवयोग कहीए, ए उक्ति कही. हवे एनी युक्ति देखाडे छे. इहां श्रीपाले कुबजानुं रूप धारण कर्युं छे, माटे मंडपमां आवेला सर्व राजाउ प्रमुख तो तेनी कुब्जाकृतिज देखे छे ते श्रीपालनुं विभाव रूप छे, अने ते श्रीपालनुं मूल रूप जे छे ते सहज स्वाभाविक छे, तेमां विभावनुं रूप धारण कर्युं छे, ते मूकीने स्वभावना मूल रूपने राजकुंमारी देखे छे, ते जाणे अनुभवयोग थाय छे, ए युक्ति कही. हवे श्रीपालनुं मूल रूप जोइने कुंवरी पोताना चित्तमां विचारे छे के आ सर्व मोटा मोटा राजकुमारो बेठा छे, पण आ कुंवरना सरखुं बीजा कोइनुं रूप नथी अने वली एने देखवाथी मारुं चित्त विशेषे करी आनंदित थयुं थकुं विश्राम पामे छे. ए व्यतिकरे करी ते कुंवरी हर्षित थइ थकी मनमां कहे छे के ए मुजने इष्ट एटले वांछित संयोग अर्थात् मिलाप (हुउं के०) थयो ॥ १६ ॥

तस दृष्टि सराग विलोकतो, विचे विचे निज वामनरूप रे ॥
दाखे ते कुमरी सुवल्लही, परि परि परखे करी चूंप रे॥ जुउं० ॥ १७ ॥

अर्थ—हवे श्रीपाल कुंवरे पोतानी उपर ते कुंवरीनी सराग दृष्टि एटले कुंवरी मारा उपर संपूर्ण रागवंती थइ छे एवी तेने विलोकतो एटले जोतो थको एनो मारा उपर केवो प्रेम छे ? तेनी परीक्षा करवा माटे विचार्युं के जोउं तो खरो के आ कुंवरीनो मारा उपर बाह्य राग छे के अभ्यंतर राग छे ? अथवा ए मारा उपर संपूर्ण रागवाली छे के नथी ? एम चिंतवीने विच विचमां

वली पोतानुं विशेष वामनरूप तेने देखाडे छे, तेम तेम ते सुवल्लही एटले कुंवरने नली, वल्लभ, प्रिय एवी ते कुंवरी पण परि परि एटले वारंवार पोताना चित्तमां चोंप राखीने परीक्षा करवा लागी, जोवा लागी ॥ १७ ॥

सा चिंते नटनागर तणी, बाजी वाजीप्लुते जेम रे ॥ मन राजी काजी
शुं करे ? आजीवित एहशुं प्रेम रे ॥ जुर्ज० ॥ १८ ॥ हवे वरणवे जे
जे नृप प्रते, प्रतिहारी करी गुणपोष रे ॥ ते ते हिले कुंअरी दाखवी,
वय रूप ने देशना दोष रे ॥ जुर्ज० ॥ १९ ॥

अर्थ–एवुं रूप करता कुंवर प्रत्ये देखीने (सा के०) ते कुंवरी (चिंते के०) चिंतववा लागी के जेम नटनागर जे बाजीगर छे तेनी (बाजी के०) रमत तेनी कोइने खबर पडे नहीं, अथवा (वाजी के०) घोडो तेनी जे (प्लुत के०) गतिविशेष छे, अथवा घोडो दोडे छे ते वारे तेना उदर मांहे प्लुत शब्द थाय छे ते कये ठेकाणेथी नीकले छे तेनी कोइने गम पडती नथी, तेम ए कुंवरीना चरित्रनी पण खबर पडती नथी, अथवा बाजीगरनी रमत ते जेम व्यर्थ छे, अने घोडानो चालती वेलानो शब्द ते जेम व्यर्थ छे, तेम आ कुंवरनुं वामनरूप पण व्यर्थज छे. तथापि " मन राजी तो काजी शुं करे ? " ए कहेवत प्रमाणे मारुं मन एने वरवा माटे राजी छे, तो एमां बीजो कोइ शुं करनार छे ? माटे मारे तो आजीवित एटले आ शरीरे करी जिहां सुधी जीवती रहुं तिहां सुधी एनी साथेज प्रेम छे ॥ १८ ॥ हवे कुंवरी राजाउनी जे श्रेणीउ बेठी छे तेनी वचाले चाली, अने तेनी आगल प्रतिहारी जे दासी ते (गुणपोष के०) गुणनुं पोषण करीने जे जे राजाउ प्रत्ये वर्णन करे छे ते ते राजाउनां फरी ते राजकुंवरी वय, रूप अने देश संबंधी दोष काढीने हेलना करी नाखे छे, एटले कोइकने तो एवुं

कहे छे के आ राजा तो (वय के०) अवस्थामां मोटो छे अथवा नानो छे तथा कुले न्यून छे. एवी रीते वय संबंधी दोष काढे. वली कोइकने तो कहे के आ रूपवान् नथी, तथा कोइकने कहे के एनो देश सारो नथी, एमां दुष्काल घणा पडे छे, ए देश रसाल नथी, एमां धान्य पाकतुं नथी, एमां रमणीय उत्तम जातिनी चीजोनी पेदाश थती नथी, आ देशनी पेदाश सारी नथी, इत्यादिक देश संबंधी दोष देखाडीने तेनी हेलना करी नाखे ॥ १९ ॥

वरणवतां जस मुख उजलुं, हेलतां तेहनुं श्याम रे ॥ प्रतिहारी थाकी
कुंअरने, सा निरखे रति अभिराम रे ॥ जुओ० ॥ २० ॥ छे मधुर यथो-
चित शेलडी, दधि मधु साकर ने द्राख रे ॥ पण जेहनुं मन जिहां वेधीयुं,
ते मधुर न बीजा लाख रे ॥ जुओ० ॥ २१ ॥

ते वारे तो ते राजानुं
अर्थ–एम प्रतिहारी जे वारे जे जे राजाना यशनुं वर्णन करे, वखाण करे, मुख उजलुं थाय, अने फरी प्रतिहारीना कह्यानंतर कुंवरी जे वारे ते राजाना देशादि संबंधी दोष काढीने हेलना करे ते वारे तेनुं श्याम वदन एटले झांखुं मुख थइ जाय. एम प्रतिहारी सर्व राजाओनां वर्णन करीने थाकी गइ; परंतु कोइने कुंवरीए कबूल कर्यो नहीं. रति जे काम-देवनी स्त्री ते समान (अभिराम के०) मनोहर एवी (सा के०) ते कुंवरी तो श्रीपाल कुंवरनुं साक्षात् कंदर्प समान मूल रूप छे तेनेज (निरखे के०) जुवे छे ॥ २० ॥ हवे कवि कहे छे के यद्यपि शेलडी पण मीठी छे, तेमज दधि एटले दहीं, मध, साकर अने द्राख, ए सर्व वस्तु यथो-चित एटले यथायोग्य (मधुर के०) मीठी छे, तथापि जेनुं मन जिहां (वेधीयुं के०) लाग्युं, तेने तेज मधुर लागे, पण बीजी लाखोगमे मीठाशवाली वस्तुओ होय ते तेने मीठी न लागे. तेम

ए कुंवरीनुं मन पण श्रीपाल कुंवर उपरज रुचे छे, पण बीजा लाखोगमे राजाउ बेठा छे ते सर्वे रूपे, वये तथा गुणे करी सुंदर छे तोपण कुंवरीने रुचता नथी ॥ २१ ॥

इण अवसरे थंजनी पूतली, मुखे अवतरी हारनो देव रे ॥ कहे गुणग्राहक जो चतुर छे, तो वामन वर ततखेव रे ॥ जुउ० ॥ २२ ॥ ते सुणी वरीयो ते कुंअरीए, दाखे निज अतिही कुरूप रे ॥ ते देखी निर्भृत्से कुब्जने, तव रुठा राणा नृप रे ॥ जुउ० ॥ २३ ॥ गुण अवगुण मुग्धा नवि लहे, वरे कुब्ज तजी वर नृप रे ॥ पण कन्यारत्न न कुब्जनुं, उकरडे शो वर धूप रे ॥ जुउ० ॥ २४ ॥ तज माल मराल अमे कहुं, तुं काग छे अति विकराल रे ॥ जो न तजे तो ए ताहरुं, गलनाल लूणे करवाल रे ॥ जुउ० ॥ २५ ॥

अर्थ—ए अवसरे ते स्तंजनी पूतलीना मुख मांहे हारनो देवता जे विमलेसर नामे छे ते अवतरीने एटले संक्रमीने कहे छे जे हे कुंवरी ! जो तुं गुणनी ग्राहक, चतुर अने विचक्षण छो तो आ वामणाने तत्काल उतावले वर. ए प्रमाणे पूतलीद्वारा ते देव बोल्यो ॥ २२ ॥ एवां ते पूतलीनां वचन सांजलीने ते राजकुंवरीए ते वामणाने वर्यो, ते वारे ते वामणे वली (निज के०) पोतानुं (अतिही के०) अत्यंत कुरूप देखाडवा मांड्युं, ते देखीने (तव के०) ते वारे मोटा मोटा नृप एटले राणा राजा ते कुब्जनी उपर (रुठा के०) रुष्टमान ते कोपायमान थया थका तेनी निर्भर्त्सना करवा लाग्या ॥ २३ ॥ अने कहेवा लाग्या के अरे ! (मुग्धा के०) अज्ञातयौवना स्त्री होय ते कांइ गुण अवगुणने (लहे के०) जाणे नहीं, माटे (वर के०) श्रेष्ठ एटले मोटा मोटा राजाउने तजीने आ कुबडाने वर्यो, पण जेम उकरडो जे खातरनो ढगलो तेने विषे वर प्रधान

एवो दशांगी धूप ते शो ? एटले जेम उकरडा उपर प्रधान दशांगी धूप घटे नहीं, तेम आ कन्यारत्न ते कुब्जने घटे नहीं, अर्थात् रत्न सरखी कन्यानो कुबडानी साथे संबंध योग्य नथी ॥ २४ ॥ एम विचारी ते सर्व राजा कुबडा प्रत्ये कहेवा लाग्या के अमे (मराल के०) हंस सरखा छीए, अने तुं तो कागडा जेवो अत्यंत विकराल रूपवालो छो, माटे तुने कहीए छीए के तुं (माल के०) वरमाला तजी आप, एटले तारा गलामां कुंवरीए जे वरमाला पहेरावी छे ते काढी नाख, अने जो नहीं काढीश तो अमे तारुं जे आ गलनाल एटले गलानी नली छे तेने तरवारे करी लूणी नाखशुं एटले कापी नाखशुं ॥ २५ ॥

तव हसीय जणे वामन इस्युं, तुमे जो नवि वरीया एण रे ॥ तो दुर्भग
रुसो मुज किस्युं, रुसो न विधिशुं केण रे ॥ जुउ० ॥ २६ ॥ परस्त्री अभि-
लाषना पातकी, हवे मुज असिधारातिछ रे ॥ पामी तुमे शुद्ध थाउ सवे,
देखो मुज केहवा हछ रे ॥ जुउ० ॥ २७ ॥

अर्थ–ते वारे हसी करीने ते वामणोजी (इस्युं के०) आ प्रकारे (जणे के०) कहेवा लाग्यो के हे दुर्भगो ! एटले माठा भाग्यना धणीउ ! तमने जो (एण के०) ए कुंवरीए नवि वर्या तो मारी उपर शा वास्ते रुसो छो ? तमे विधि जे दैव तेनी उपर कां रुसणुं करता नथी ? ॥ २६ ॥ एणे मने वरमाला पहेरावी छे, तो हवे ए स्त्री मारी थइ चूकी, तमोने तो ए परस्त्री थइ, तेनो तमे अभिलाष करो छो, तेथी तमे परस्त्री अभिलाषना पातकी थया, माटे तेनुं प्रायश्चित्त लेवा सारु मारी (असि के०) तरवार तेनी जे धारा ते धारारूप तीर्थजल जाणवुं. ते जल पामीने तमे सर्व शुद्ध थाउ तो पापरहित थशो, अने जुउ तो खरा के मारा (हछ के०) हाथ केवा छे ? ॥ २७ ॥

इम कही कुबजे विक्रम तिस्युं, दाख्युं जेणे नरपति नठ रे ॥ चित्त चमक्या गगने देवता, तेणे संतति कुसुमनी वुठ रे ॥ जुउ० ॥ २७ ॥ हुउ वज्रसेन राजा खुशी, कहे बल परे दाखवो रूप रे ॥ तेणे दाख्युं रूप स्वभावनुं, परणावे पुत्री भूप रे ॥ जुउ० ॥ २९ ॥ दीयो आवास उत्तंग ते, तिहां विलसे सुख श्रीपाल रे ॥ निज तिलकसुंदरी नारीशुं, जिम कमलाशुं गोपाल रे ॥ जुउ० ॥ ३० ॥ त्रीजे खंडे पूरण थइ, ए बठी ढाल रसाल रे ॥ जश गातां श्री सिद्धचक्रनो, होय घर घर मंगलमाल रे ॥ जुउ० ॥ ३१ ॥

अर्थ—एम कहीने ते कुब्ज राजाए पोतानुं तेवुंज पराक्रम देखाड्युं के जेणे करी ते सर्व राजाउ नाठा. ते वखत कौतुक जोवाने अर्थे आवेला एवा (गगने के०) आकाशमां रहेला जे देवताउ ते पण ते कुब्जनुं पराक्रम जोइने चित्तमां चमकी गया, तेथी ते कुंवरना मस्तक उपर श्रेणी-परंपराए फूलोनी (संतति के०) अविछिन्न वृष्टि करता हवा ॥ २७ ॥ एवुं कुबडानुं पराक्रम जोइने कन्यानो पिता जे वज्रसेन राजा बे ते पण खुशी थयो, अने कुंवर प्रत्ये कहेवा लाग्यो के हे स्वामिन् ! जे प्रमाणे तमे तमारुं बल देखाड्युं ते प्रमाणे तमारुं रूप पण आवुं होवुं जोइए नहीं, माटे बल प्रमाणे रूप पण देखाडो. ते वारे ते श्रीपाल कुंवरे पण पोतानुं स्वाभाविक जे रूप हतुं ते देखाड्युं के भूपे पोतानी कुंवरी तेनी वेरे परणावी ॥ २९ ॥ पछी राजाए ते श्रीपालने रहेवाने माटे (उत्तंग के०) घणो उंचो एवो आवास आप्यो, त्यां ते श्रीपाल कुंवर पोतानी (तिलकसुंदरी के०) त्रैलोक्यसुंदरी नामक स्त्रीनी साथे जेम (कमला के०) लक्ष्मीजीनी साथे (गोपाल के०) श्रीकृष्णजी सुख भोगवे बे तेम सुख भोगवता हवा ॥ ३० ॥ ए त्रीजा खंडने

विषे (रसाल के०) शृंगारादि रसे नरित एवी बठी ढाल पूर्ण थइ. श्रीसिद्धचक्रजीना यश गातां थका घर घरने विषे मांगलिकनी माला थाय, एमां आ रासना कर्त्ता श्रीयशोविजयजीए पोतानुं नाम पण यश एवुं सूचव्युं ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

विलसे धवल अपार सुख, सोनागी सिरदार ॥ पुण्यबले सवि संपजे,
वंबित सुख निरधार ॥ १ ॥ सामग्री कारय तणी, प्रापक कारण पंच ॥
इष्ट हेतु पुण्यज वडुं, मेले अवर प्रपंच ॥ २ ॥ तिलकसुंदरी श्रीपालनो,
पुण्ये हुवो संबंध ॥ हवे शृंगारसुंदरी तणो, कहीशुं लान प्रबंध ॥ ३ ॥

अर्थ–हवे सोनागी पुरुषोनो शिरदार एवो श्रीपाल कुंवर तिहां धवल एटले उज्ज्वल एवां अपार सुखने विलसे बे, नोगवे बे. जीवने (निरधार के०) निश्चेथी पुण्यने बले करीनेज सर्व प्रकारनां मनोवांबित सुख संपजे बे ॥ १ ॥ हरेक कार्यनी सामग्रीनां प्रापक एटले प्राप्तिनां करावनारां काल, स्वनाव, नियति, कर्म अने उद्यम, ए पांच कारण बे, पण तेने मेलवी आपनार तिहां इष्ट हेतु ते एक मोटुं पुण्यज बे, जे (अवर के०) बीजा नला प्रपंच सर्व मेलवी आपे बे ॥ २ ॥ एज पुण्यना योगे करीने त्रैलोक्यसुंदरी अने श्रीपालनो परस्पर संबंध थयो. हवे शृंगारसुंदरीना लाननो एटले पामवानो प्रबंध कहीशुं ॥ ३ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ साहिबा मोतीडो हमारो ॥ ए देशी ॥

इक दिन राजसनाए आव्यो, चर कहे अचरिज मुज मन नाव्यो ॥
साहिबा रंगीला हमारा ॥ मोहना रंगीला ॥ दलपत्तननो बे महाराजा,
धरापाल जस पख बिहु ताजा ॥ साहिबा० ॥ मोहना० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

अर्थ—पूर्वे कहेलां जे पांच कारण, तेनुं किंचित् स्वरूप कहे छे. तेमां प्रथम काल नामे कारण छे, ते काले करी स्त्री गर्भ धारण करे छे अने काले करी विनाश पामे छे. बीजुं स्वभाव नामे कारण ते स्वभावे करी दुधमांथी दहीं थाय छे. त्रीजुं नियति ते निश्चेथी त्रेसठ शलाकापुरुष उपजे छे अने विलय पामे छे ॥ यतः ॥ नियतिवशे मन चिंतव्युं, आवी मले तत्काल ॥ वरसां सोनुं चिंतव्युं, नियति करे विसराल ॥ १ ॥ तथा ॥ कोयल कर कर कूकवा, किम राखी शके प्राण ॥ हेठल भमो पारधी, माथे भमे सिंचाण ॥ २ ॥ पारधी विसहर डंसीयो, हाथ विछूटो बाण ॥ कोयल जा घर आपणे, सीर लग्यो सिंचाण ॥ ३ ॥ ए नियति कारण जाणवुं ॥ हवे चोथुं भवितव्यता ते भाग्य, तेनी उपर दृष्टांतनुं काव्य कहे छे. श्लोकः केन करंडकेऽपि भुजंगः क्षुत्पीडितो नाशको, रात्रौ खादिमकांक्षया सुविवरं कृत्वोंदुरुस्तन्मुखे ॥ भाग्यादेव तदा स्वयं निपततस्तन्मांसतृप्तोऽभव,—द्यालस्तेन पथा गतः स्थिरतरो भोगीव भाग्यं भवेत् ॥ ४ ॥ ए भवितव्यता जे कर्म तेनी उपर दृष्टांत कह्यो. हवे उद्यम उपर दृष्टांत कहे छे ॥ दोहो ॥ उद्यम करतां मानवी, शुं नवि सीझे काज ॥ रामे रयणायर तरी, लीधुं लंका राज ॥ ५ ॥ ए उद्यम कारण उपर दृष्टांत कह्यो. ए पांचे कारण सत्य छे ॥ हवे एक दिवसे ते वज्रसेन राजानी सभामां एक चर एटले हलकारो आव्यो. ते कहेवा लाग्यो के हे राजन् ! हे मारा साहेबा ! रंगीला ! मोहना उपजावनारा ! में मारा मनने भावतुं एवुं एक अचरिज दीठुं. ते अचरिज केवुं दीठुं ? ते संबंधी वार्त्ता कहुं छुं ते सांभलो. एक दलपत्तन नामे नगर छे, तेनो धरापाल एवे नामे राजा छे. जेना मातृपक्ष तथा पितृपक्ष ए बेहु पक्ष ताजा छे ॥ १ ॥

राणी चोराशी तस गुणखाणी, गुणमाला छे प्रथम वखाणी ॥ साहिबा० ॥
पांच बेटा उपर गुणपेटी, शृंगारसुंदरी छे तस बेटी ॥ साहिबा० ॥ २ ॥

अर्थ—ते राजाने गुणोनी खाण जेवी चोराशी राणीउं छे, तेमां प्रथम पट्टराणीने स्थानके गुणमाला नामे राणीने वखाणी छे. ते राणीने पांच पुत्रनी उपर गुणनी पेटी जेवी एक शृंगारसुंदरी नामे पुत्री छे ॥ २ ॥

पल्लव अधर हसित सित फूल, अंग चंग कुच फल बहुमूल ॥ साहिबा० ॥ जंगम ते छे मोहनवेली, चालती चाल जिसी गज गेली ॥ साहिबा० ॥ ३ ॥ पंमिता विचक्षणा प्रगुणा नामे, निपुणा दक्षा सम परिणामे ॥ साहिबा० ॥ तेहनी पांच सखी छे प्यारी, सहुनी मति जिनधर्मे सारी ॥ साहिबा० ॥ ४ ॥

अर्थ—हवे ए शृंगारसुंदरीनुं शरीररूप जंगम मोहनवेलीनुं वृक्ष वखाणे छे. एटले वृक्षनी उपमाए करी एना शरीरना रूप अने सौंदर्यनुं वर्णन करे छे. वृक्षने पल्लव एटले नवां पत्र फूटे, ते जेवां सकोमल लाल होय तेना जेवा एना (अधर के०) होठ छे. तथा (सित के०) सपेत उजलां फूल समान एनी (हसित के०) हसती वखते दांतनी पंक्ति उजली देखाय छे. तथा (अंग के०) शरीर ते (चंग के०) मनोहर छे. तथा (कुच फल बहुमूल के०) बहुमूलां फल जेवुं कुचयुगल ते बे स्तन शोभे छे. ए रीते ते कुंवरी जंगम मोहनवेलीनुं वृक्ष छे, एटले बीजां जे जगतमां वनस्पतिनां वृक्षो छे ते हालतां चालतां नथी, माटे स्थावर छे, अने ए कुंवरी तो हाले चाले छे, माटे जंगम मोहनवेलीनुं वृक्ष कहीने वखाणी छे. वली वृक्ष जेम धीमे धीमे पवने धीमुं धीमुं हाले, तेम ए कुंवरी (गज गेली के०) गजगति जेवी चाले छे एटले जेवी हाथणी चाले तेवी गेल करती चाले छे ॥ ३ ॥ ते कुंवरीने एक पंमिता, बीजी विचक्षणा, त्रीजी प्रगुणा, चोथी निपुणा अने पांचमी दक्षा, ए पांचे जणी सम परिणामे एटले सरखा परिणामवाली सखीउं

श्री श्रीपाल राजानो रास

प्रकाशक–श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुबइ

રાજકન્યા શૃંગારસુંદરી અને તેની પાંચ સખીઓ.

शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक १११.



ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૧૫૭.

હે બહેનો! આપણું મન શ્રી જિનધર્મને વિષે કોઇ કાળે કાચું મ હોજો એટલે મ થાજો, એટલા માટે સાંસારિક સુખને કારણે જે આપણને ભર્ત્તાર વરવો તે પણ જે પુરુષ શ્રી જિનમતનો જાણ હોય તે પુરુષનેજ વરવો, પરંતુ જિનમતના જાણ વિના બીજા પુરુષને વરવો તે અપ્રમાણ છે.

લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુબઇ.

छे, ते कुंवरीने घणीज प्यारी छे, वल्लन्न छे, अने ते सर्वनी मति जैनधर्मने विषे सारी छे, रुमी छे, माटे सरखा परिणामवाली पांचेने कही छे ॥ ४ ॥

ते आगल कहे कुमरी साचुं, आपणनुं म होजो मन काचुं ॥ साहिबा० ॥
सुख कारण जिनमतनो जाण, वर वरवो बीजो अप्रमाण ॥ साहिबा० ॥
५ ॥ जाण अजाण तणो जे जोग, केल कंथेरनो ते संयोग ॥
साहिबा० ॥ व्याधि मृत्यु दारिद्र वनवास, अधिको कुमित्र तणो सह-
वास ॥ साहिबा० ॥ ६ ॥ हेममुद्राए अकीक न बाजे, श्यो जलधर जे
फोकट गाजे ॥ साहिबा० ॥ वर वरवो परखीने आप, जिम न होय कर्म-
कुजोमालाप ॥ साहिबा० ॥ ७ ॥

अर्थ–ते पोतानी पांचे सखीउंनी आगल कुंवरी साचेसाचुं कहे छे के हे बहेनो ! आपणुं मन श्रीजिनधर्मने विषे कोइ काले काचुं म होजो, एटले म थाजो, एटला माटे सांसारिक सुखने कारणे जे आपणने (वर के०) नर्त्तार वरवो ते पण जे पुरुष श्रीजिनमतनो जाण होय ते पुरुषनेज वरवो, परंतु जिनमतना जाण विना बीजा पुरुषने वरवो तो अप्रमाण छे॥५॥केमके एक जाण अने बीजो अजाण, ए बेनो जे (जोग के०) मेलाप छे, ते जेम केलना फाफनो अने कंथेर नामे कांटाना फाफनो पोतपोतामां संयोग थाय तेवो दुःखदायी जाणवो, माटे (व्याधि के०) रोगे करी पीमावुं, मृत्युने पामवुं, दरिद्रतानी प्राप्तिनुं थवुं अने वनवास नोगववो, एटला सर्व परान्नव सहन करवा ते करतां पण कुमित्रनो सहवास ते अधिक दुःखदायी छे ॥ ६ ॥ वली जेम हेममुद्रा एटले सोनानी वींटी मांहे अकीकनुं नंग जमीए तो ते बाजे नहीं, एटले शोन्ने नहीं, तथा ते (जलधर के०) मेघ पण श्या कामनो ? के जे फोकट गर्जनाज कर्या करे, अने पाणीनो छांटो पण वरसे नहीं?

तेम आपणने पण सोनानी वींटीमां अकीक जड्यानी पेठे जैनमतना जाण विना बीजा अकीक जेवाने वरवो नहीं, तथा व्यर्थ गर्जारव करनारा मेघनी पेठे बहारथी सारो देखाय अने मांहे कांइ माल न होय तेवाने पण वरवो नहीं, परंतु आपणे तो परीक्षा करीने जैनमतनो जाण होय तेज (वर के०) जर्तारने वरवो के जेम कर्मकुजोमालाप न होय एटले कर्मे करी कुजोडानो आलाप एटले मलवुं वा संजाषण करवुं ते न थाय ॥ ७ ॥

कहे पंमिता परनुं चित्त, जाव लखीजे सुणीय कवित्त ॥ साहिबा० ॥ सीथे

पाक सुजट आकारे, जिम जाणीजे शुद्ध प्रकारे ॥ साहिबा० ॥ ८ ॥

करीय समस्या पद तुमे दाखो, जे पूरे ते चित्त मांहे राखो ॥ साहिबा० ॥

इम निसुणी कहे कुंअरी तेह, वरुं समस्या पूरे जेह ॥ साहिबा० ॥ ए ॥

अर्थ–ते वारे शृंगारसुंदरीनी पांच सखी मांहेली पहेली सखी जे पंडिता नामे छे, ते एवुं कहे छे के परना चित्तनो जाव (सुणीय कवित्त के०) लोकजाषाए एम सांजलीए छीए के कवित्त सांजलीने परना चित्तनो जाव (लखीजे के०) जाणीए. एवुं कविनी उक्तिए सांजलीए छीए, एटले आपणा चित्तमां जे वात होय तेनो जावार्थ एक पदमां सूचवीने जे परीक्षा आपे तेनी आगल ते पद कहेवुं. पछी ते आपणा मुखथी एक पद सांजलीने जे कांइ आपणा मनमां होय ते प्रमाणे आखुं कवित्त करी आपे तो ते पुरुष जैनमतमां प्रवीण जाणवो. जेम (पाक के०) रसोइनी (सीथे के०) एक दाणे करी परीक्षा थाय छे, एटसे रसोइ चूले मूकेली होय, तेमांथी एक दाणो चांपी जोइए तो तरत पाकी छे के काची छे ? एवी मालम पडी जाय, तथा (सुजट के०) सीपाइ जे छे तेनी परीक्षा ते आकारे करी जाणवामां आवे छे एटले तेनी मुखाकृति दीठाथी तेमां केवा प्रकारनां शक्ति बल पराक्रम छे ? ते जेम शुद्ध प्रकारे जाणीजे ॥ ८ ॥ तेम तमे

पण जे आवे तेने समस्यानुं एक पद करीने (दाखा के०) देखाडो, अने पछी ते जे पूरे ते तमारा चित्तमां राखो के आपणा मनमां जे निर्धारेलुं हतुं ते प्रमाणे तेणे त्रण पद पूरीने खरेखरुं हार्द कही आप्युं के नहीं ? एवी रीते परीक्षा करो. (एम के०) ए रीते पोतानी सखीनुं बोलवुं सांजलीने ते कुंवरी कहेवा लागी के जे मारी समस्या (पूरे के०) पूरी आपे, पूर्ण करे, तेने हुं (वरुं के०) परणुं, पण बीजा वरने नहीं परणुं ॥ ए ॥

तेह प्रसिद्धि सुणीने मलीया, बहु पंडित नर बुद्धे बलीया ॥ साहिबा० ॥
पण मतिवेग तिहां नवि चाले, वायुवेगे नवि डुंगर हाले ॥ साहिबा०
॥ १० ॥ पंच सखी युत ते नृपबेटी, चित्त परखे करी समस्या महोटी
॥ साहिबा० ॥ सुणीय कहे जन किम पूरीजे, पर मन डह किम थाह
लहीजे ॥ साहिबा० ॥ ११ ॥ सुणीय कुमार चमक्यो आवे, घर कहे हो
मुज हार ! प्रन्नावे ॥ साहिबा० ॥ दलपत्तनगत जिहां नृपकन्या, तिहां
पहोतो सखी युत जिहां धन्या ॥ साहिबा० ॥ १२ ॥

अर्थ—हवे ते वात जगतमां प्रसिद्ध थइ. ते प्रसिद्धि सांजलीने (बहु के०) घणा पंमित जनो जे बुद्धिना बलीया छे, एटले बलवंत बुद्धिना धणी, अनेक शास्त्रोना पारंगामी, एक शब्दना सो अर्थ करे, हजार अर्थ करे, एवा पुरुषो तिहां एकठा थया, पण जेम वायुना वेगथी पर्वत हालतो नथी, चलायमान थतो नथी, तेम तेमनी मति जे बुद्धि तेनो (वेग के०) प्रचार ते समस्या मांहे कोइ रीते चालतो नथी ॥ १० ॥ एम पांच सखीउंए (युत के०) सहित ते राजानी कुंवरी मोटी समस्या करीने सर्वनां चित्तने परखे छे, परंतु समस्यानां पद सांजलीने ते पंमित जन एवुं कहे छे के अमे केवी रीते ए समस्या पूरीए ? आ पारकाना मनरूप डहनो थाग ते केम पामीए ? ॥ ११ ॥

ते वात कुंवर सांभलीने चित्तमां चमक्यो थको पोताने घेर आवीने कहे छे के अहो मारा हार ! हुं तारे प्रभावे तिहां पहोंचुं. एटलुं कहेतांज दलपत्तन नगरे रहेली पांच सखीउंए युक्त एवी राजानी कुंवरी जिहां धन्य छे, तिहां पहोतो ॥ १२ ॥

देखी कुमर अमर सम तेह, चित्त चमकी कहे जो मुज एह ॥ साहिबा० ॥
पूरे समस्या तो हुं धन्य, पूरी प्रतिज्ञा होय कयपुण्य ॥ साहिबा०
॥ १३ ॥ पूछे कुमर समस्या कोण, कुमरी संकेत सखी कहे गोण ॥ साहिबा० ॥
सीसे कुमर दीए कर पूरे, पुत्तल तेह रहे न अधुरे ॥ साहिबा० ॥ १४ ॥
पंडितोवाच ॥ मनवंछित फल होइ ॥ पुत्तलोवाच ॥ दोहा ॥ अरिहंताइ
सु नवह पय, निय मन धरे जु कोइ ॥ निच्छय तसु नरसेहरह, मन-
वंछित फल होइ ॥ १ ॥

अर्थ–तिहां ते कुंवरी साक्षात् (अमर सम के०) देवता समान श्रीपाल कुंवरने जोइने चित्त मांहे चमकी थकी मनमां कहे छे के जो ए पुरुष मारी समस्या पूर्ण करे तो मारो जन्म धन्य छे, एनाथी मारी प्रतिज्ञा पूरी थाय तो हुं कृतपुण्य जाणवी ॥ १३ ॥ श्रीपाल कुंवरे पूछ्युं के तमारी समस्या कइ छे ? ते कहो. ते वारे कुंवरीना संकेतथी प्रथम गौण जे मुख्य सखी एटले ते कुंवरीथी न्हानी छे, परंतु पांच सखीउंमां वडेरी छे, मोटी छे एवी पंडिता सखी समस्या कहे छे, ते वारे निकट रहेलुं एक पूतलुं छे, तेना माथा उपर कुंवर (कर के०) हाथ मूकतो हवो, तेथी ते पूतलुंज समस्या संपूर्ण रीते अधूरी न रहे तेम कहे छे ॥ १४ ॥ हवे पंडिता सखी समस्यानुं पद कहे छे. "मनवंछित फल होइ" ते एक पदमां बीजां नवीन आगलनां त्रण पद मेलवी गाथा संपूर्ण करीने पूतलुं समस्या पूरे छे, ते गाथानो अर्थ कहे छे. अरिहंतादिक नव पद छे, तेने

पोताना मनने विषे जे कोइ धरे, तो निश्चे (नरसेहरह के०) मनुष्य मांहे शेखर शिरोमणि एवा
(तसु के०) ते पुरुषने मनोवांछित फल थाय ॥ १ ॥

विचक्षणोवाच ॥ अवर म झंखो आल ॥ पुत्तलोवाच ॥ अरिहंत देव
सुसाधु गुरु, धम्मज दया विसाल ॥ जपहु मंत्र नवकार तुम, अवर
म झंखो आल ॥ २ ॥ प्रगुणोवाच ॥ कर सफलो अप्पाण ॥ पुत्त-
लोवाच ॥ आराहिजइ देव गुरु, दिहु सुपत्तहिं दाण ॥ तव संजम उवयार
करी, कर सफलो अप्पाण ॥ ३ ॥ निपुणोवाच ॥ जित्तो लिह्यो निलाड ॥
पुत्तलोवाच ॥ रे मन अप्पा खंची करी, चिंताजाल म पाड ॥ फल तित्तो-
हिज पामीए, जित्तो लिह्यो निलाड ॥ ४ ॥

अर्थ–हवे बीजी विचक्षणा सखी कहे छे के “ अवर म झंखो आल ” ते वारे पूतलुं बीजां
त्रण पद पूरीने कहे छे के देव तो श्रीअरिहंत जाणवा, अने गुरु ते सुसाधु जाणवा, तथा विशाल
एटले मोटी दया जेमां प्रधान छे ते श्रीकेवलिभाषित धर्म जाणवो. ए देव, गुरु अने धर्म, ए
त्रणेनो नवकार मंत्रमां समावेश थयेलो छे, माटे ते नवकार मंत्रने तमे जपो, सेवन करो, अने
(अवर के०) बीजां जे आल पंपाल छे, तेनी झंखणा म करो ॥ २ ॥ हवे त्रीजी प्रगुणा सखी
कहे छे के “ कर सफलो अप्पाण ” तेने पूतलुं आगलनां त्रण पद पूरी उत्तर आपे छे के देव
गुरुनुं आराधन करीए, अने सुपात्रने दान आपीए, वली तप, संयम अने (उवयार के०) परो-
पकार करीने हे जीव ! तुं तारा (अप्पाण के०) आत्माने सफल कर ॥ ३ ॥ हवे चोथी निपुणा
सखी कहे छे के “ जित्तो लिह्यो निलाड ” तेने पूतलुं आगलनां त्रण पदो नवां उत्पन्न करीने
उत्तर आपे छे के अरे मन ! तुं (अप्पा के०) आत्माने (खंची करी के०) खेंची करीने

पराणे चिंतारूप जालने विषे पामीश नहीं, कारण के फल तो जेटलुं ललाटमां लख्युं हशे तेटलुंज प्राप्त थशे ॥ ४ ॥

दक्षोवाच ॥ तस तिहुअणजण दास ॥ पुत्तलोवाच ॥ अछि नवंतर संचीउं, पुण समग्गल जास ॥ तसु बल तसु मइ तसु सिरी, तसु तिहुअण-जण दास ॥ ५ ॥ शृंगारसुंदर्युवाच ॥ रवि पहेला उगंत ॥ पुत्तलोवाच ॥ जीवंतां जग जस नहीं, जस विण कांइ जीवंत ॥ जे जस लेइ आथम्या, रवि पहेला उगंत ॥ ६ ॥ ढाल पूर्वनी ॥ पूरे कुमर समस्या सारी, आनंदित हुइ नृपतिकुमारी ॥ साहिबा० ॥ वरे कुमार ते त्रिभुवनसार, गुण-निधान जीवन आधार ॥ साहिबा० ॥ १५ ॥

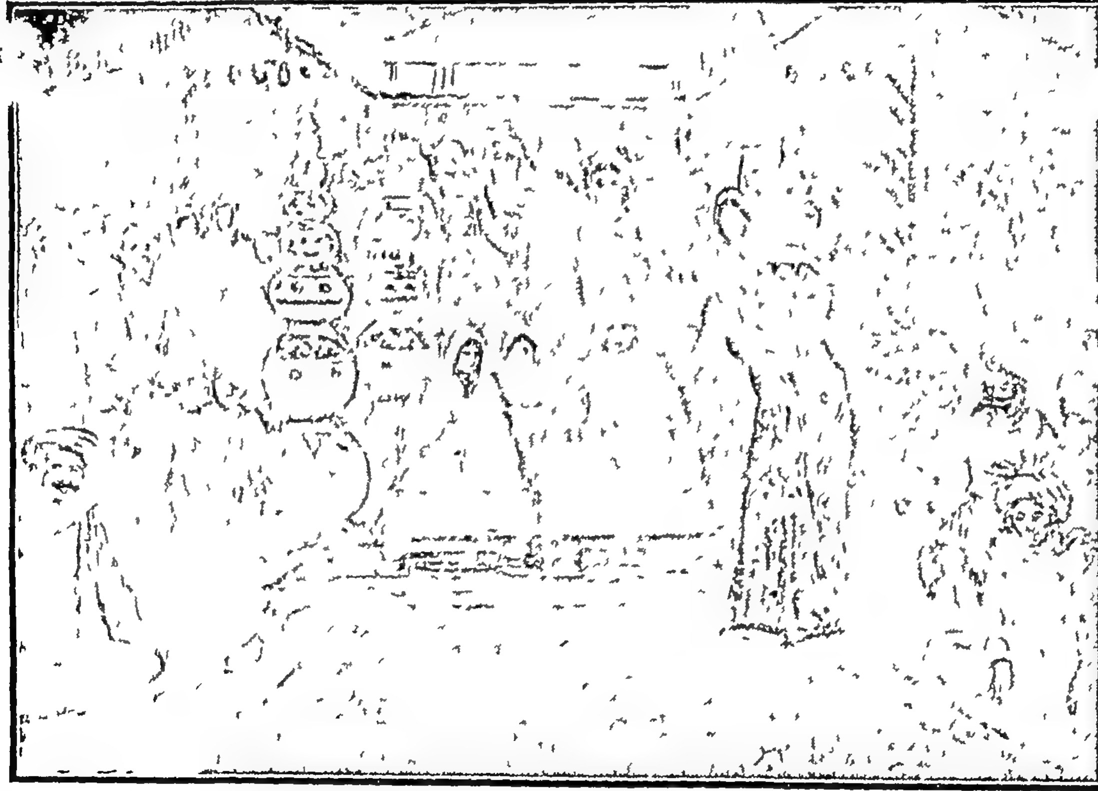
अर्थ—हवे पांचमी दक्षा सखी कहे छे.—"तस तिहुअणजण दास" तेने पूतलुं बीजां नवां त्रण पदनी रचना करी उत्तर आपे छे. हमणां जे नव आपणे नोगवीए छीए, तेथी पाछल थइ गयेला नवोने नवांतर कहीए, तेने विषे (जास के०) जेना समग्र पुण्यनो संचय करेलो (अछि के०) छे, (तसु के०) ते पुरुषने बल होय, तथा तेने (मति के०) बुद्धि पण होय, अने तेने (सिरी के०) लक्ष्मी पण होय. वली त्रण नुवनना जनो तेना दास थइने रहे ॥ ५ ॥ हवे शृंगार-सुंदरी पोते कहे छे. "रवि पहेला उगंत" तेने पूतलुं उत्तर कहे छे. जीवतां जेनो जगतमां यश नथी तो तेवा जीवो यश विवेक विना शुं जीवे छे ? अर्थात् तेमनुं जीववुं व्यर्थ छे, परंतु जे प्राणी यश लइने जगतमांथी अस्त पाम्यां छे, ते प्राणी (रवि के०) सूर्यथी पण पहेलां उदय थाय छे, अर्थात् सूर्योदयथी प्रथम तेमना नामनुं लोको स्मरण करे छे ॥ ६ ॥ एम कुंवरे ते सर्व

रास

प्रकाशक–श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबई

श्रीपाળ અને શૃંગારસુંદરીનો લગ્નમહોત્સવ.

ક્ષરના
ૃષ્ઠાંક ૧૧૪.



ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૧૬૧.

હવે રાજાએ મનને ભાવે કરી પાંચે સખીઓ સહિત પોતાની પુત્રીને શ્રીપાળ પ્રત્યે પાણિગ્રહણનો એટલે પરણાવવાનો ઉત્સવ ઘણો મોટો કર્યો

લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુંબઇ.

सखीउनी समस्याउ सारी रीते पूर्ण करी, तेणे करी राजानी कुंवरी परम आनंदित थइने त्रण भुवनने विषे सारभूत अने गुणनुं निधान एटले भंमार तथा जीवननो आधारभूत एवो जे कुमार ते प्रत्ये (वरे के०) वरती हवी ॥ १५ ॥

पूतलमुख समस्या पूरावी, राजा प्रमुख जन सवि हुउ भावी ॥ साहिबा० ॥ ए अचरिज तो कहींए न दीठुं, जिम जोइए तिम लागे मीठुं ॥ साहिबा० ॥ १६ ॥ राजा निज पुत्री परणावे, पंच सखी संजुत मन भावे ॥ साहिबा० ॥ पाणिग्रहण मह सबलो कीधो, दान अतुल मनवंछित दीधो ॥ साहिबा० ॥ १७ ॥ सातमी ढाल ते त्रीजे खंमे, पूरण हुइ गुण राग अखंमे ॥ साहिबा० ॥ सिद्धचक्रगुण जो गाइजे, विनय सुजश सुख तो पाइजे ॥ साहिबा० ॥ १८ ॥

अर्थ–एम पूतलाना मुखथी समस्या पूर्ण करावी, तेणे करी राजा प्रमुख जे (जन के०) लोक हतो ते सर्व भाविक थयो थको कहेवा लाग्यो जे आ आश्चर्य तो अमे क्यारे पण दीठुं नथी, एने तो जेम जेम जोइए छीए तेम तेम मीठुं लागे छे ॥ १६ ॥ हवे राजाए मनने भावे करी पांचे सखीउ सहित पोतानी पुत्रीने श्रीपाल प्रत्ये पाणिग्रहणनो एटले परणाववानो उत्सव (सबलो के०) घणो मोटो कर्यो, अने जेनी तुलना न थाय एवुं अतुल मनोवांछित दान दीधुं ॥ १७ ॥ ए सातमी ढाल ते त्रीजा खंमने विषे अखंम गुणे अने अखंम रागे करी पूर्ण थइ. श्रीसिद्धचक्र भगवानना जो गुणगान करीए तो भलो विनय अने रुमो यश तेनुं सुख पामीए. अथवा विनय, भलो यश अने सुख, तेने पामीजे ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

अंगभट्ट इण अवसरे, देखी कुमरचरित्र ॥ कहे सुणो एक माहरुं, वचन विचार पवित्र ॥ १ ॥ कोल्लागपुरनो राजीयो, अछे पुरंदर नाम ॥ विजया राणी तेहनी, लवणिम लीलाधाम ॥ २ ॥ सात पुत्र उपर सुता, जयसुंदरी छे तास ॥ रंभा लघु उंची गइ, जोडी न आवे जास ॥ ३ ॥ लवणिम रूप अलंकरी, ते देखी कहे भूप ॥ ए सरिखो वर कुण हशे, पाठक कहो स्वरूप ॥ ४ ॥ सो कहे इण भणतां कला, राधावेध स्वरूप ॥ पूछ्युं ते में वरणव्युं, साधनने अनुरूप ॥ ५ ॥

अर्थ—एवा अवसरने विषे अंगभट्ट नामे ब्राह्मण ते श्रीपाल कुंवरनुं चरित्र जोइने कहेवा लाग्यो के हे महाराज ! एक मारुं (पवित्र के०) रुडा विचारवालुं वचन सांभलो ॥ १ ॥ कोल्लागपुर नगरनो पुरंदर नामे राजा छे, तेने विजया नामे राणी छे; ते केवी छे? तो के (लवणिम के०) चतुराइविशेष तेनी लीलानुं (धाम के०) घर छे ॥ २ ॥ ते राणीने सात पुत्रो छे, तेनी उपर एक अत्यंत रूपवंत एवी जयसुंदरी नामे पुत्री छे, जेना रूपने देखीने रंभा जे स्वर्गनी देवांगनाउ अप्सरा उर्वशी, तिलोत्तमा ते पण एनुं रूप पोताथी विशेष जाणीने (लघु के०) हलकाइपणुं पामी उंची देवलोकने विषे जती रही, पण ते कुंवरीनी बराबर रूपवाली थइ नहीं, माटे (जास के०) जेनी (जोडी के०) बराबरीमां आवे तेवी कोइ बीजी स्त्री नथी ॥ ३ ॥ एवी ते कुंवरी (लवणिम रूप के०) सुंदर चतुराइविशेष अने रूप तेणे करी अलंकृत शोभायमान छे, तेने देखीने पाठकजीने राजाए पूछ्युं के हे पाठकजी ! ए कुंवरीना सरखो एटले जेवी ए कुंवरी छे तेवो एने

योग्य वर कोण हशे ? तेनुं स्वरूप अमने कहो ॥ ४ ॥ ते वारे (सो के०) ते पाठकजी कहेता हवा के हे राजन् ! ए कुंवरीए मारी पासे कलाउं जणतां थका राधावेध नामनी कलानुं स्वरूप मने पूछ्युं हतुं ते में पण तेना साधनने अनुरूप एटले योग्य रीते वर्णव्युं हतुं ॥ ५ ॥

आठ चक्र थंभ उपरे, फरे दक्षिण ने वाम ॥ अरविवरोपरि पूतली,
काठनी राधा नाम ॥ ६ ॥ तेल कढा प्रतिबिंब जोइ, मूके अधोमुख बाण
॥ वेधे राधा वाम अक्षि, राधावेध सुजाण ॥ ७ ॥ धनुर्वेदनी ए कला,
चार वेदथी उड्ढ ॥ उत्तम नर साधी शके, नवि जाणे कोइ मूढ ॥ ८ ॥
ते सुणी तुज पुत्री नृपति, करे प्रतिज्ञा एम ॥ वरशुं राधावेध करी,
बीजो वरवा नेम ॥ ए ॥

अर्थ–ते आगल कहे छे के एक थंभनी उपरे आठ चक्र मांडवां, तेमां चार चक्र दक्षिण बाजु सवलां फरे, अने चार चक्र वाम बाजु अवलां फरे, ते आठ चक्रना आरानां (विवरोपरि पूतली के०) विवर जे छिद्र छे, तेनी उपर राधा एवे नामे काष्ठनी पूतली बेसारवी ॥ ६ ॥ अने ते स्तंभनी नीचे एक तेलनी कढाइ भरी राखवी. ते तेलनी कढाइमां उपरनी राधा नामे पूतलीनुं प्रतिबिंब लक्षमां लइ जोइने अधोमुख एटले पोतानुं मुख नीचुं राखीने उंचे बाण नाखे, ते एवी युक्तिथी नाखे के उपर रहेली जे राधा नामनी पूतली छे, तेनी (वाम के०) डाबी बाजुनी जे (अक्षि के०) आंख छे तेने वेधे, एटले तेनो वेध करे, तेने राधावेध कहीए. ए कला कोइ सुजाण पुरुष होय ते जाणे ॥ ७ ॥ ए चार वेद मांहेला धनुर्वेदनी कला छे. ते चारे वेदथी (उड्ढ के०) ऊर्ध्व एटले उंची छे, माटे कोइ उत्तम पुरुष होय ते एने साधी शके, पण कोइ (मूढ के०) मूर्ख एनो भेद

जाणे नहीं ॥ ८ ॥ हे राजन् ! ए वात मारा मुखथी सांजलीने तारी पुत्रीए एवी प्रतिज्ञा करी बे
धः जे राधावेध साधशे तेने हुं वरीश, परंतु बीजा कोइने वरीश नहीं, एवो एणे नियम करेलो बे ॥ ए॥

मह्रोटा मंडप मांमीए, राधावेधनो संच ॥ करीए जिम वर पामीए, पाठक
कहे प्रपंच ॥ १० ॥ मंडप नृप मंमावीया, राधावेध विचार ॥ पण नवि
को साधी शके, पण साधशो कुमार ॥ ११ ॥ एम निसुणी ते जट्टने,
कुंडल देइ कुमार ॥ रयणी निज वासे वसी, चाल्यो प्रात उदार ॥ १२ ॥
पहोतो ते कोल्लागपुर, कुमर दृष्टि सब साखी ॥ साध्यो राधावेध तिहां,
हारमहिमगुण दाखी ॥ १३ ॥ जयसुंदरीए ते वर्यो, करे नृप विवाह ॥
तास दत्त आवासमां, रहे सुजश उन्नाह ॥ १४ ॥

अर्थ—माटे मोटा मंरूप मांमीने राधावेधनो संच करीए, जेम कुंवरीनो वर पामीए. ए रीते
ते पाठके प्रपंच कह्यो ॥ १० ॥ ते प्रमाणे ते राजाए पण मंरूप मंमाव्या बे, तेमां राधावेधनो
विचार जेम पाठके कह्यो तेम कर्यो बे, परंतु ते कला कोइ साधी शकतो नथी, पण हे कुंव-
रजी ! हुं जाणुं बुं जे तमे साधशो ॥ ११ ॥ एवी वार्त्ता जट्टना मुखथी सांजलीने श्रीपाल कुंवर
तेने कुंमल देतो हवो. पबी रात्रे पोताने (वासे के०) घेर (वसी के०) रहीने उदार चित्तनो
धणी जे श्रीपाल ते प्रजातनो तिहांथी चाल्यो ॥ १२ ॥ ते कोल्लागपुरे जइ पहोतो, तिहां कुंवरे
सर्व लोकनी नजरे देखतां सर्वनी साखे दृष्टि राखीने हारना महिमानो गुण देखामी राधावेध
साध्यो ॥ १३ ॥ तेने जयसुंदरीए वरमाला पहेरावीने वर्यो, ते वारे राजाए विवाह करीने पुत्री
परणावी. पबी (तास दत्त के०) ते राजाना दीधेला आवासमां सुजश उत्साहपूर्वक रहेतो हवो ॥ १४ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ बन्यो रे कुंवरजीरो सेहरो ॥ ए देशी ॥

हवे माउल नृप पेसीया, आव्या नर आणाकाज रे ॥ विनीत ॥ लीला-
वंत कुंअर जलो ॥ ए आंकणी ॥ कुंअरे पण निज सुंदरी, तेडावी
अधिके हेज रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ १ ॥ सैन्य मल्युं तिहां सामटुं, हय गय
रथ जड चतुरंग रे ॥ वि० ॥ तिण संयुत कुंअर ते आवीयो, ठाणा-
जिध पुर अति चंग रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २ ॥ आणंदीयो माउल नरपति,
तस सिरि वर सुंदरी देखी रे ॥ वि० ॥ थापे राज श्रीपालने, करे विधि
अजिषेक विशेष रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ३ ॥ सिंहासन बेठो सोहीए, वर
हार किरीट विशाल रे ॥ वि० ॥ वर चामर छत्र शिरे धर्यां, मुखकज
अनुसरत मराल रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ४ ॥

अर्थ–हवे श्रीपालनो माउल जे मामो राजा तेणे ठाणापुरथी श्रीपालने जोवाने अर्थे (पेसीया के०) मोकल्या एवा जे विनीत एटले विनयवंत (नर के०) मनुष्य ते (आणाकाज के०) राजानी आज्ञाने काजे तिहां आव्या, अने जला लीलावंत कुंवरने मल्या. ते वारे कुंवरे पण पोतानी परणेली स्त्रीउं जिहां जिहां हती तिहांथी अधिके हेजे करी माणसो मोकलीने तेडावी लीधी, ते पण पोताना बंधुउं सहित तिहां आवी पहोती ॥ १ ॥ तिहां (हय के०) घोडा, (गय के०) गज ते हाथी, रथ अने (जड के०) जट ते सुजटो, ए चतुरंग एटले चार अंग-वालुं अर्थात् चार प्रकारनुं सैन्य सामटुं मल्युं, एटले एकटुं थयुं. ते चतुरंग सैन्ये करी संयुक्त एवो श्रीपाल कुंवर अत्यंत (चंग के०) मनोहर ठाणापुर एवुं छे (अजिध के०) नाम जेनुं एवा

नगरने विषे आव्यो ॥ २ ॥ ते वारे (तस के०) ते श्रीपालनी (सिरि के०) लक्ष्मी अने वली श्रेष्ठ एवी सुंदरीउं जे स्त्रीउं तेने देखीने (माउल नरपति के०) मामो राजा जे श्रीपालनो मामो थाय अने ससरो पण थाय, ते आनंद पाम्यो थको विधिए सहित अभिषेक विशेष करीने श्रीपालने राज्यपाटे स्थापतो हवो ॥ ३ ॥ तिहां श्रीपाल सिंहासन उपर बेठो थको (वर के०) श्रेष्ठ एवा हार अने (किरीट के०) मुकुट तेणे करी (विशाल के०) घणुं सोहीए एटले शोभे छे. वली (वर के०) प्रधान चामर अने छत्र शिर उपर धर्यां छे. ते चामर सपेत होय छे अने हंस पक्षी पण सपेत होय छे, माटे कवि उत्प्रेक्षा करे छे के श्रीपालना मुखरूप कमलने बे चामररूप (मराल के०) हंस (अनुसरत के०) आश्रयता छे ॥ ४ ॥

सोले सामंते प्रणमीए, हय गय मणि मोतीय भेट रे ॥ वि० ॥ चतुरंगी
सेनाए परवर्यो, चाले जननी नमवा नेट रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ५ ॥ गाम
ठामे आवंतडो, प्रणमितो भूपे सुपवित्त रे ॥ वि० ॥ भेटी जंतो बहु भेटणे,
सोपारय नगरे पहुत्त रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ६ ॥

अर्थ—वली जे बल, ऋद्धि अने परिवारे करी पोताथी कांइक न्यून होय तेने सामंत राजा कहीए, तेवा सोल सामंत ते भक्तिरागे करी सहित थका जेनी सेवामां तत्पर रहेला छे, माटे सोल सामंते प्रणमी जतो, घणा घोडा, हाथी, मणि, रत्न, माणक अने मोतीउंनां भेटणां लइने पछी चतुरंगी सेनाए परवर्यो थको (नेट के०) निश्चयेथी पोतानी जननी जे माता तेने नमवाने माटे ठाणापुर नगरथी चाल्यो ॥ ५ ॥ ते श्रीपाल ग्राम स्थानके आवतो, पवित्र राजाए प्रणमितो, (बहु के०) घणा प्रकारनां भेटणांए भेटी जंतो एटले भेटणांनी भेटो लेतो थको मार्गने उल्लंघन करतो अनुक्रमे सोपारक नामे नगरे आवी पहोतो ॥ ६ ॥

ते परिसर सैन्ये परवर्यो, आवासे ते श्रीपाल रे ॥ वि० ॥ कहे भगति शकति नवि दाखवे, शुं सोपारक नरपाल रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ७ ॥ कहे परधान नवि एहनो, अपराध छे गुणवंत रे ॥ वि० ॥ नामे महसेन छे ए भलो, तारा राणी मनकंत रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ८ ॥ पुत्री तस कुखे उपनी, छे तिलकसुंदरी नाम रे ॥ वि० ॥ ते तो त्रिभुवनतिलक समी बनी, हरे तिलोत्तमानुं धाम रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ए ॥ ते तो सृष्टि छे चतुर मदन तणी, अंगे जीत्यां सवि उपमान रे ॥ वि० ॥ श्रुतिजड जे ब्रह्मा तेहनी, रचना छे सकल समान रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ १० ॥

अर्थ–ते श्रीपाल (सैन्ये के०) सैन्यना परिवारे परवर्यो थको सोपारक नगरना परिसर एटले समीपे आवीने (आवासे के०) तंबुमां आवी उतारो कीधो. ते वार पछी श्रीपाल कहेवा लाग्यो के आ सोपारक नगरनो राजा कांइ भक्ति एटले भेटणुं लइने आवीने नमस्कार करे तेने भक्ति कहीए अने शक्ति एटले शस्त्र लइ सामो आवीने युद्ध करे तेने शक्ति कहीए. ए बे वातो मांहेली कोइ पण वात देखाडतो नथी, तेनुं कारण शुं छे ? ॥ ७ ॥ एवुं श्रीपालनुं बोलवुं सांभलीने प्रधान कहेवा लाग्यो के हे गुणवंतजी ! ए राजानो कांइ पण अपराध नथी, ए महसेन नामे भलो राजा छे, ते तारा राणीनो (मनकंत के०) मननो वल्लभ छे, एटले तारा राणीनो भर्त्तार छे ॥ ८ ॥ (तस के०) ते राणीनी कुखे एक पुत्री उत्पन्न थइ छे, तेनुं तिलकसुंदरी एवुं नाम छे, परंतु ते कुंवरी तो त्रण भुवनने विषे एक तिलक समान बनी छे. ए रीते नाम प्रमाणे तेमां गुण पण छे, अने वली रूपे करी तो तिलोत्तमा जे इंद्रनी अप्सरा, उर्वशी, रंभा, तेनुं (धाम के०) तेज तेने (हरे के०) हरे एवी छे, अथवा तेनुं (धाम के०) स्थानक तेने हरे

एवी रूपवंत छे ॥ ए ॥ हवे ते तिलकसुंदरीनुं रूप अति अद्भुत छे, ते माटे कवीश्वर एवी संभा-
वना करे छे के ते तिलकसुंदरी तो चतुर जे डाह्यो अत्यंत निपुण एवो (मदन के०) कंदर्प एटले
कामदेव तेनी सृष्टि छे, एटले कामदेवनी घडेली छे, ते शा उपरथी जाणवामां आव्युं ? एवी
कोइ आशंका करे तो त्यां तेने उत्तर कहे छे के जगतमां चंद्रपद्मादिक एटले चंद्र सरखुं वदन
छे, कमलनी पांखडी सरखां नेत्र छे, एवी रीते अंग अंगनी उपमा आपीने घणी स्त्री आदिकना
रूपनुं वर्णन कराय छे, परंतु ते तो सर्व कलंकादि दूषणे करी दूषित छे, माटे ए कुंवरीने (अंगे
के०) शरीरे तो ते सर्व उपमानने दूषवीने जीती लीधां छे, तेथी ए कुंवरीनी जोडी जेवी जग-
तमां बीजी कोइ स्त्री नथी, माटे जाणीए छीए जे ए कुंवरीनुं रूप ते चतुर मदनकृतज छे. वली
कोइ शंका करे के मदनने रचनाचतुर शा वास्ते कहो छो ? तेनो उत्तर कहे छे के सर्वथी सूक्ष्म
परमाणु छे, ते परमाणुरूप मन जाणवुं. ते मन मांहे प्रवेश करीने विकार उत्पन्न करी सर्व ईश्व-
रादिक देवोनां चित्तने पण हरण करी लीए छे एवो ए कंदर्प छे. ते माटे एने अत्यंत निपुण
कह्यो, तेनी करेली ए सुंदरीरूप सृष्टि छे, परंतु श्रुति जे वेदनो ध्वनि वेदाभ्यास तेनो निरंतर
निर्घोष करवो तेणे करी जडरूप थयेलो कारण के लोकोक्तिए पण अत्यंत केवल वेदपाठी जे होय
तेने ढोरप्राय कहे छे, एटले "वेदीउं ढोर " कहेवाय छे, ते माटे वेदपाठ जणीने जडरूप थयेलो
एवो जे ब्रह्मा तेनी रचेली ए न कही. यद्यपि कोइ कहेशे के सकल जगत्सृष्टिनो अधिकार तो
ब्रह्माने छे, तो ए सुंदरीरूप सृष्टि ब्रह्माकृत केम न कही ? तेनो हेतु कहे छे. जे जणी (तेहनी
के०)ते श्रुतिमां जड थयेलो जे ब्रह्मा तेनी रचना, ते तो (सकल के०) सघली सर्व जगतमां सर्व
स्थले (समान के०) माने करी सहित एटले प्रमाणे सहित छे, अर्थात् एक एकनी जोड मली
आवे छे, माटे उपमाए सहित कहेली छे, कारण के (उपमानेन सहितं सोपमानं) एटले उप-
माने करी जे सहित होय ते सोपमान कहीए. (इयं तु निरुपमाना, निर्गतं उपमानं यस्याः सा

निरुपमाना तेन मदनकृतसृष्टिर्ज्ञायते) एटले आ तिलकसुंदरी तो गयुं बे उपमान जेना थकी एवी बे, ते माटेज आ तिलकसुंदरी कंदर्पसृष्टि बे, एटले उपमा सहित होत तो एने पण ब्रह्माकृत कहेत, परंतु आ कुंवरीनुं रूप तो उपमा रहित अति अद्भुत बे, माटे एने मदनकृत कही. एतावता ए कन्या घणीज रूपवंत बे ॥ १० ॥

मणि मंत्र
दीहपीठे दंसी सा सुता, कीधा बहुविध उपचार रे ॥ वि० ॥
औषध बहु आणीयां, पण न थयो गुण ते लगार रे ॥ वि० ॥ ली०
॥ ११ ॥ ते माटे डुःखे पीडीयो, महसेन नृपति तस तात रे ॥ वि० ॥
नवि आव्यो इहां ए कारणे, मत गणजो बीजो घात रे ॥ वि० ॥ ली०
॥ १२ ॥ राजा कहे किहां बे दाखवो, ते कीजे तस उपगार रे ॥ वि० ॥
एम कही तुरगारूढे तिणे, दीठां जातां बहु नर नार रे ॥ वि० ॥ ली०
॥ १३ ॥ समशाने लेइ जाती जाणी, तिहां पहोतो ते नरनाह रे ॥ वि० ॥
कहे दाखो मुज हुं सज करुं, मूर्छितने म दीयो दाह रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ १४ ॥

अर्थ–ते कुंवरीने हमणां दीर्घपृष्ठ जे सर्प तेणे डसेली बे, तेना घणा प्रकारना उपचार एटले उपाय कर्या, मणि तथा विसहर फुलिंग इत्यादि मंत्र तेमज औषध पण घणां आण्यां, तोपण लगार मात्र पण गुण थयो नहीं ॥ ११ ॥ ते माटे डुःखे पीड्यो थको ते कुंवरीनो पिता जे महसेन नामे राजा ते ए कारण माटे इहां तमारी पासे आवी शक्यो नथी, परंतु बीजो कोइ पण घात तमे गणशो नहीं ॥ १२ ॥ एवुं प्रधाननुं बोलवुं सांजलीने श्रीपाल राजा कहे बे के ते कुंवरी किहां बे ? मने देखाडो तो तेनो उपकार करीए. एम कहीने सेवकने मोकली अश्व मगावी (तुरगारूढे के०) घोडा उपर स्वार थयो ते वारे तेणे नगरनी बहार घणा पुरुषोना तथा

स्त्रीओना समूहने जतां दीठा ॥ १३ ॥ पछी राजा, प्रधान तथा नगरलोकनां वृंद मलीने कुंवरीने स्मशाने लइ जती सेवकना मुखथी जाणीने ते (नरनाह के०) नरनो नाथ श्रीपाल राजा तिहां पहोतो, अने कहेतो हवो के कुंवरी मुजने देखाडो तो हुं तेने साजी करुं, परंतु मूर्छा पामेली छे तेने दाह देशो नहीं ॥ १४ ॥

महियत मूकी ते थानिके, करी हार नमण अभिषेक रे ॥ वि० ॥ सज
करी सवि लोकनां चित्तशुं, थइ बेठी धरीय विवेक रे ॥ वि० ॥ ली०
॥ १५ ॥ महसेन मुदित कहे राजीयो, वत्स तुजने ए शुं होत रे ॥ वि० ॥
जो नावत ए वडभागीयो, न करत उपगार उद्योत रे ॥ वि० ॥ ली० ॥१६॥

अर्थ–तेणे श्रीपाल राजाना कह्याथी कुंवरीनी महियतने तेज स्थानके पृथ्वीए मूकी, ते वारे श्रीपाले हारना न्हवणनो अभिषेक करीने ते कुंवरीने सज्ज करी एटले साजी करी, ते वारे तत्काल ते कुंवरी सर्व लोकनां चित्तनी साथे आलस मोडी विवेक धरी बेठी थइ. इहां भावार्थ ए छे जे कुंवरी मरण पामवाथी राजा आदे दइने नगरवासी प्रमुख सर्व लोकनां चित्त चिंतातुर थइने पडी गयां हतां, ते श्रीपाले आवीने जे वारे कुंवरीने जीवती करी ते वारे सर्व लोकनां चित्त जे उदास थइने पडी गयां हतां ते उठ्यां एटले सर्व लोकनां चित्त आनंदमय थयां, विकस्वर थयां. तेथी ते सर्व लोकनां पडी गयेलां चित्त पण बेठां थयां, माटे ए कुंवरी सर्व लोकनां चित्तनी साथे विवेक धरीने बेठी थइ एम कह्युं ॥ १५ ॥ ते वारे महसेन नामे राजा ते (मुदित के०) हर्षवंत थयो थको पोतानी पुत्रीने कहे छे के हे वत्स ! तुजने हमणां आ ठेकाणे शुं थात ! ! जो आ मोटा भाग्यनो धणी श्रीपाल इहां नहीं आवत अने तारा उपर उपकाररूप उद्योत नहीं करत तो अमे तुजने मरण पामेली समजीने अग्निसंस्कार करत ! ॥ १६ ॥

प्रकाशक—श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबइ

શ્રીપાળ અને રાજાદિ જનસમૂહ.



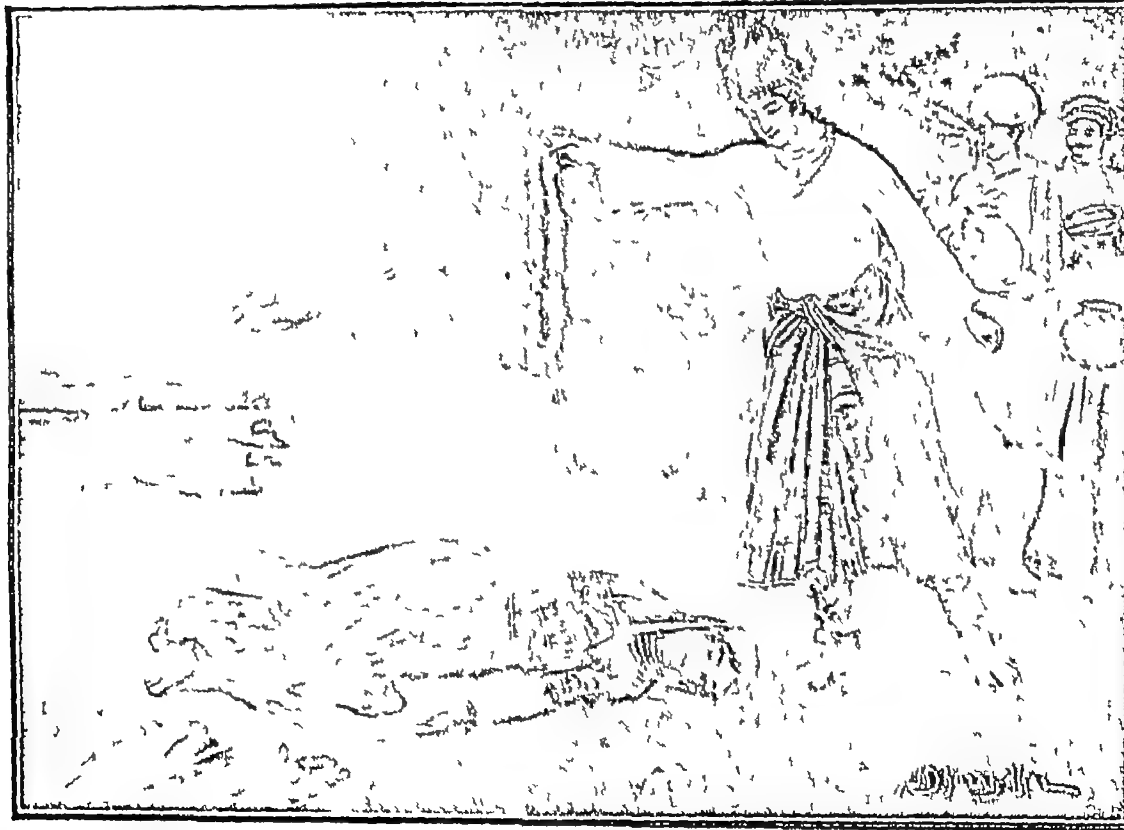
शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक ११९.





ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૧૬૭.





તે વારે શ્રીપાળે હારના ન્હવણનો અભિષેક કરીને તે કુંવરીને સજ્જ કરી એટલે સાજી કરી

લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુંબઈ

तुज प्राण दीया छे एहने, तुं प्राण अधिक छे मुज रे ॥ वि० ॥ एहने तुं
देवी मुज घटे, ए जाणे हृदयनुं गुह्य रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ १७ ॥ स्निग्ध
मुग्ध दृग देखतां, इम कहेतां ते श्रीपाल रे ॥ वि० ॥ मन चिंते महारा
प्रेमनी, गति एहशुं छे असराल रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ १८ ॥

अर्थ–माटे हे पुत्री ! हमणां तारा प्राण जता हता ते ए श्रीपाल राजाए पाछा दीधा छे, अने मारे तो तुं मारा प्राणथी पण अधिक वहाली छो, अने ए श्रीपाले तुजने मरणना भयथी बचावी राखी, माटे भयात्त्रायते इति भर्त्ता, माटे मारे तुं ए श्रीपाल राजाने देवी घटे छे, ए मारा हृदयनुं (गुह्य के०) विचार चिंतवन छे ते तुं जाणजे, तेथी तारे पण एनेज वरवो ॥ १७ ॥ महसेन राजाए पोतानी पुत्रीने एवी रीते कहेतां थका (ते के०) ते कुंवरी (स्निग्ध के०) स्नेहाली, सरस, रागवंत अने (मुग्ध के०) भद्रक भोली एवी (दृग के) दृष्टिए करी (श्रीपाल के०) श्रीपाल प्रत्ये (देखतां के०) देखती थकी मनमां चिंतववा लागी के मारा प्रेमनी गति (एहशुं के०) ए श्रीपालनी साथे (असराल के०) अकल छे, अभिनव छे, अवाच्य एटले मुखथी कही जाय नहीं एवी छे, इहां मुग्ध पदे करी वक्र कटाक्षादि क्रियावैदग्ध्यसहितपणानो अनुदय सूचव्यो, एटले कामक्रीडा प्रमुख विषयरसमां आसक्त हजी थइ नथी. हमणां नवयौवननो उद्गम छे, अने बाल्यावस्था विरमी यौवनावस्थानी प्राप्तिनो अवसर छे, एने वयःसंधि कहीए, माटे अविलसितयौवना छे. जो संपूर्ण विलसितयौवना होय तो ते वक्र कटाक्षादिक क्रियामां विदग्ध होय, तेथी तेना नेत्रविलसितनुं ज्ञान प्रगट न थाय, अने आ तो हजी मुग्धा छे, तेथी एना नेत्रविलासना ज्ञाननो उदय राजाने थयो छे. एवी ते कुंवरीए मुग्ध भद्रक दृष्टिए एटले रागभरे अनिमेष लोचने श्रीपालने जोयो, ते जोतांज पूर्वभव राग संबंधथी कोइ वचने कह्यामां न आवे

एवो अनिर्वचनीय परम प्रेमोद्गम थयो, तेने अनुजवीने कुंवरी मनमां चिंतववा लागी के मारे ए श्रीपालनी साथे प्रेमना संबंधनी कोइ असराल एटले अकल गति देखाय ठे. ते विचार आगल कहे ठे ॥ १७ ॥

जो प्राण कहुं तो तेहथी, अधिको किम लखीए प्रेम रे ॥ वि० ॥ कहुं
जिन्न तो अनुजव किम मिले, अविरुद्ध उजय गति केम रे ॥ वि०
॥ ली० ॥ १ए ॥

अर्थ–हवे पूर्वे कहेली वातनेज दृढावे ठे. चित्तनी आसक्तिविशेष तेने प्रेम कहे ठे. ते इहां कुंवरी विचारे ठे के जो ए पुरुषने हुं मारा प्राण कहुं तो ते पण ठीक लागतुं नथी, शा माटे ? जे प्राणथी पण अधिको एनी उपर प्रेम उपजे ठे, माटे प्राण कहुं तो तेथी प्रेम अधिको केम (लखीए के०) जाणीए ? केमके प्राण होय तोज प्रेम बने ठे, पण प्राण विना प्रेम बनतो नथी, ए लेखे प्राणथी प्रेम अधिको न होय, त्यारे तो प्राण अने प्रेम बेहु तुल्य थाय, अने जगतमां तो प्राणथी प्रेम अधिक देखाय ठे, केमके घणा जनो तो प्रेमने अर्थे प्राण गुमावे ठे, परंतु सज्जन पुरुषो प्राणने अर्थे प्रेम निर्गमता नथी ॥ यतः ॥ धन देइ जीव रखीए, जीव देइ रखीए लाज ॥ प्राण लाज दोय दीजीए, एक प्रेमके काज ॥ १ ॥ एवी रीते तो प्राणने प्रेमरूप कहेतां बनतुं नथी. ए अपेक्षाए तो प्राणथी प्रेम अधिक थयो देखाय ठे, अने जाणवामां पण प्राणथी प्रेम अधिक आवे ठे. एम विचारतां तो प्राण अने प्रेम बेहु जिन्न थाय ठे, अने ए रीते जो प्राण अने प्रेम ए बेहुने जिन्न कहुं तो अनुजव केम मले ? एटले बेहुने जिन्न कहुं तो अनुजव मलतो नथी, कारण के प्राण विना प्रेमने जाणनारो कोण होय ? प्रेमने जाणनारा तो प्राणज ठे, तेथी जे वस्तु जेथी अजिन्न होय तेनोज अनुजव थाय ठे, पण जिन्न वस्तुनो अनुजव न थाय. जो

अने प्रेमनो अनुभव तो मुजने थायज छे.
भिन्न वस्तुनो अनुभव मानीए तो अतिप्रसंग थाय छे, अने प्रेमनो अनुभव तो मुजने थायज छे. ते ए प्रेम पदार्थने विषे एकत्र समावेशपणे अविरोध-
एम परस्परे विरोधी भिन्नाभिन्न स्वरूप छे. ते ए प्रेम पदार्थने विषे एकत्र समावेशपणे अविरोध- गति ए श्रीपालनी
भावे केम रह्यो छे ? अत एव एटलाज कारण माटे जाणुं छुं जे मारा प्रेमनी गति ए श्रीपालनी
साथे कोइ (असराल के०) कोइए कली जाय नहीं एवी अकल छे, अलौकिक छे. इति भावार्थः ॥ १९॥

इम स्नेहल सा निज अंगजा, श्रीपाल करे दीए भूप रे ॥ वि० ॥ परणी
सा आठे तस मली, दयिता अति अद्भुत रूप रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २० ॥
अड दिठि सहित पण विरतिने, जिम वंछे समकितवंत रे ॥ वि० ॥ अड
प्रवचनमात सहित मुनि, समताने जिम गुणवंत रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २१ ॥

अर्थ–एम ए प्रकारे स्नेहल ते स्नेहरसे सहित एटले स्नेहे करी उल्लास पामती प्रेमसुधा सिंधु
निमग्न एटले प्रेमरूप अमृत तद्रूप समुद्रमां निमग्न थयेली एवी (सा के०) ते पोतानी पुत्री
जे तिलकसुंदरी तेने महसेन राजाए श्रीपालने हाथे दीधी. (सा के०) ते कन्या श्रीपाले
परणी एटले पाणिग्रहण कर्युं, ते वारे (तस के०) तेना मलवाथी (अति अद्भुत रूप के०)
अत्यंत अद्भुत रूपने धरनारी एवी आठ स्त्रीओ थइ. तेनां नाम कहे छे. १ मदनसेना, २ मदन-
मंजूषा, ३ मदनमंजरी, ४ गुणसुंदरी, ५ त्रैलोक्यसुंदरी, ६ शृंगारसुंदरी, ७ जयसुंदरी, ८ तिलक-
सुंदरी, ए आठनां नाम जाणवां, तथा शृंगारसुंदरीनी पंडिता प्रमुख पांच सखीओनुं पाणिग्रहण
कर्युं ते पण पांच स्त्रीओज छे, परंतु इहां ते शृंगारसुंदरीनी अंतर्गत आवी, ते माटे एकज शृंगार-
सुंदरी गणीने आठ स्त्रीओ श्रीपालनी साथे छे, तथा प्रथमनी परणेली मयणासुंदरी ते उज्जयणीमां
छे, माटे ते सहित सर्व नव स्त्रीओ जाणवी ॥ २० ॥ हवे इहां श्रीपाल यद्यपि आठ स्त्रीओ सहित
छे तथापि नवमी मयणासुंदरीने मलवा माटे उत्कंठित थयो थको तिहांथी आगल प्रयाण करवाने

वांछे छे. तिहां कवि उपमा कहे छे के जेम मित्रा, तारा, बला, दीप्ता, स्थिरा, कांता, प्रभा, परा, ए आठ दृष्टि सहित जे सम्यग्दृष्टि जीव छे ते पण जेम नवमी विरतिने वांछे छे, तथा वली पांच समिति ने त्रण गुप्ति ए आठ प्रवचनमाता सहित गुणवंत मुनीश्वर होय ते जेम नवमी समताने वांछे छे, तेम श्रीपाल राजा जो पण आठ स्त्री सहित छे तोपण नवमी मयणाने मलवा चाहे छे. अहीं कोइ पूछे के आठ दृष्टि सहित जे होय ते विरतिपणाने इछे एम कह्युं, तो शुं आठ दृष्टिवंत पुरुष जे छे ते विरतिपणाथी रहित छे के वली विरतिपणानी वांछा करे छे ? एना उत्तरमां कोइक एम कहे छे के भावविरतिने इछे छे, एवुं कहे छे ते यत्किंचित् जाणवुं, केमके दृष्टिवंतने जे विरतिपणुं होय ते भावथीज होय छे. तथा वली कोइक एम पण कहे छे के आठ दृष्टि सहित अविरति सम्यग्दृष्टि पण होय, ते माटे ते विरतिपणाने इछे छे. ते पण उत्तरनो आभासज जाणवो. जे भणी श्रीहरिभद्रसूरिकृत योगदृष्टिसमुच्चय ग्रंथने मते तो छठी दृष्टि सुधी अविरति संभवे छे अने उपरनी बे दृष्टिवालो तो विरतिवंतज होय, ते माटे इहां एवो उत्तर करवो के जे एक दृष्टि पाम्यो ते अवश्य आठे दृष्टिने संभवे, निश्चेथी पामे, ते भणी एकतर दृष्टि आगामिक नये तो भूतवत् उपचार करीने एक दृष्टिवंतने आठ दृष्टि सहित कही बोलाव्यो, एटले चतुर्थादि दृष्टिवंत ते विरतिने इछे छे ते अभिप्राय छे, परंतु सातमी आठमी दृष्टिवालो विरतिनो इछक नथी. अथवा कदापि विरति ते आ ठेकाणे सर्व संवरविरतिपणुं लहीए, ते चौदमे गुणठाणे होय छे, अने आठ दृष्टि तो तेथी पहेलीज पामे छे, ते माटे आठ दृष्टिवंत मुनीश्वर ते सर्व संवररूप विरतिने इछे छे, एम कहेवुं. इति सर्वं सुस्थम् ॥ २१ ॥

अड बुद्धि सहित पण सिद्धिने, अड सिद्धि सहित पण मुक्ति रे ॥वि०॥ प्रिया
आठ सहित पण प्रथमने, नित ध्यावे ते इण युक्ति रे ॥वि०॥ ली० ॥ २२ ॥

अर्थ—तथा शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धारणा, ऊह, अपोह, अर्थविज्ञान अने तत्त्वज्ञान, ए आठ बुद्धि तेणे करी सहित एवो योगीश्वर ते जेम नवमी सिद्धिने इछे छे, तथा अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, वशिता, ईशिता, प्राकाम्य, कामावसायित्व, ए आठ सिद्धिउं छे, तेणे करी सहित जे योगीश्वर होय छे, ते जेम नवमी मुक्ति जे परमपद मोक्षपद तेने इछे छे, (इण युक्ति के०) ए युक्तिए करीने श्रीपाल कुंवर पण परिणीत आठ प्रिया एटले आठ स्त्रीउंए करी सहित थको पण प्रथम परिणीत मयणासुंदरीने मलवा माटे नित्य प्रत्ये (ध्यावे के०) ध्याय छे, इछे छे ॥ २२ ॥

उत्कंठित चित्त तेहशुं, वली जननीने नमवा हेज रे ॥ वि० ॥ श्रीपाल
प्रयाणे पूरीयुं, देवरावे ढक्का तेज रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २३ ॥ हय गय रह
नरू मणि कंचणे, वली सछ वछ बहुमूल रे ॥ वि० ॥ पग पग भेटीजे नृप-
वरे, तेहनुं चक्रवर्ती सम सूल रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २४ ॥

अर्थ—एम एक तो ते मयणासुंदरीने मलवा माटे उत्कंठित चित्तवालो थयो छे, अने वली पोतानी माताने नमवानुं हेज छे, ते माटे श्रीपाले सतेज थके प्रयाणने पूरीयुं, एटले प्रयाणनी तैयारी करीने (ढक्का के०) जयना डंका देवरावतो हवो ॥ २३ ॥ हवे श्रीपाल तिहांथी चाल्यो, त्यारपछी (हय के०) घोमा, (गय के०) हाथी, (रह के०) रथ अने (नरू के०) सुनट तथा मणिरत्न, कंचन एटले सुवर्ण तेमज वली (बहुमूल के०) बहु मूल्यवालां एवां (सछ के०) शस्त्र अने (वछ के०) वस्त्र, एवी वस्तुउंनां भेटणांए करी पगले पगले (नृपवरे के०) श्रेष्ठ राजाउंए भेटी जतो थको एटले पगले पगले राजाउंने नमावतो थको तेमनी पासेथी पूर्वोक्त वस्तुनां

भेटणां लेतो थको एवो जे श्रीपाल तेनुं चक्रवर्ती राजानी समान (सूल के०) प्रवर्त्तन थयुं अथवा चक्रवर्ती समान सूल एटले पराक्रम थयुं ॥ २४ ॥

तस सैन्यभरे भारित मही, अहिपतिफणमणिगणप्रोत रे ॥ वि० ॥
तेणे गिरि पण जाणुं नवि गिरिया, शशी सूर नयण विधि जोत रे
॥ वि० ॥ ली० ॥ २५ ॥

अर्थ–हवे कवि उत्प्रेक्षा करे छे के जेम अणीयाली वस्तुना उपर भार आववाथी तेनी उपर रहेली वस्तु परोवाइ जाय छे, यथा "कंटकेन पादः" जेम कांटो हलवो छे, अने पग भारे छे, तोपण कांटानी तीक्ष्णताए करी ते पग कांटा मांहे परोवाइ जाय छे, तेम (तस के०) ते श्रीपालना (सैन्यभरे के०) सैन्यना भारे करी भारित थइ थकी दबाणी एवी जे (मही के०) पृथ्वी ते अहिपति जे शेषनाग, तेनी फण उपरनां जे मणिउना (गण के०) समूह, समुदाय तेणे करी (प्रोत के०) परोवाणी, एटले परोवाइ गइ, (तेणे के०) तेथी जाणीए जे (गिरि के०) पर्वत ते नवि गिरिया एटले पड्या नहीं ! परंतु जो ए पृथ्वी शेषनागनी फणनां मणिउमां परोवाणी न होत तो सैन्यना भारे करी एक दिशाए पृथ्वी नमी जात, ते वारे सम भूमिए रहेला पर्वतादिक पण ढली पडत, माटे ए कविए उत्प्रेक्षा कीधी के सैन्यने भारे पृथ्वी एक दिशाए नमी नहीं, तेथी शेषनागनी फणनां मणिउए परोवाणी देखाय छे. ए मोटुं आश्चर्य सांभलीने ते समये सूर्य अने चंद्र जे रात्रि दिवस श्रीपालना सैन्यने जुवे छे, ते जाणीए सूर्य चंद्र नथी ! परंतु विधि जे ब्रह्मा तेज शशी सूर एटले चंद्र सूर्य तद्रूप नयण जे नेत्र तेने विकासीने (जोत के०) जुवे छे, अने मनमां चिंतवे छे के भलुं थयुं जे पृथ्वी शेषनागनी फणनां मणिउए परोवाइ गइ, नहीं तो आ श्रीपालना मोटा सैन्यना भारे

जो ए पृथ्वी नमी जात तो तेथी मारी करेली पृथ्वीनी विषमता थइ जात. एम चकित थयो थको श्रीपालना सैन्यने अद्यापि सुधी चंद्र सूर्यरूप चक्षुए करी ब्रह्मा जोयाज करे छे ॥ २५ ॥

महरठ सोरठ मेवाडना, वली लाट भोटना भूप रे ॥ वि० ॥ ते आव्यो
सघला साधतो, मालव देशे रविरूप रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २६ ॥ आगमन
सुणी परचक्रनुं, चरमुखथी मालव राय रे ॥ वि० ॥ भयभीत ते गढने
सज करे, तेहनुं नवि तेज खमाय रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २७ ॥ कप्पड
चुप्पड तृण कण घणां, संग्रहे ते इंधण नीर रे ॥ वि० ॥ सन्नद्ध होय ते
सुभट वडा, कायर कंपे नहीं धीर रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २८ ॥

अर्थ—ते श्रीपाल कुंवर महरठ देश, सोरठ देश, मेवाड देश, वली लाट देश अने भोट देशना राजाउं ते सघलाउंने साधतो थको मालव देशने विषे रविरूप एटले सूर्य समान तेजे करी देदीप्यमान एवो आव्यो, जेम सूर्य निषध पर्वतथी उदय थयो थको हरिवास, हिमवंत, भरतादिक क्षेत्र अने गिरिउंने उद्योत करतो संध्याए पाछो फरी निषध पर्वते पहोंचे तेम श्रीपाल कुंवर पण मालव देशथी नीकल्यो हतो ते राजऋद्धि, रमणी, धन, चतुरंगिणी सेनाना परिवार युक्त सर्व देशोने साधतो थको पाछो मालव देशे आव्यो. इति रहस्यम् ॥ २६ ॥ ते समये मालव देशनो राजा चर एटले दूतना मुखथी परचक्र एटले परराजाना सैन्यनुं आगमन सांभलीने भयभीत थयो थको पोताना गढने समारवा लाग्यो, कारण के तेनाथी तेनुं तेज खमी शकातुं नथी ॥ २७ ॥ वली ते मालव देशनो राजा कप्पड एटले वस्त्रादिक अने चुप्पड एटले घृत, तैलादिक, तृण एटले घास, कण एटले धान्य, इंधण एटले लाकडां अने नीर एटले पाणी, ए

सर्वने घणां संग्रहे, तेमज मोटा सुज्ञट जे हता ते सन्नद्ध थाय ठे, अने जे कायर प्राणीउं ठे ते
कंपवा लाग्या, पण धैर्यवंत कंपता नथी ॥ २७ ॥

इम उज्जेणी हुइ नगरने, लोके संकीर्ण समीप रे ॥ वि० ॥ वींटी श्रीपाल
सुज्ञटे तदा, जिम जलधि अंतरद्वीप रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २ए ॥ मेरा
दीधा सवि सैन्यना, पहेलो हुउं रजनीजाम रे ॥ वि० ॥ जननी घर
पहोता प्रेमशुं, नृप हारप्रज्ञावे ताम रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ३० ॥ ढाल पूरी
थइ आठमी, पूरण हुउं त्रीजो खंड रे ॥ वि० ॥ होय नव पद विधि
आराधतां, जिन विनये सुजश अखंम रे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ३१ ॥

अर्थ—एम उज्जयणी नगरीमां सर्व आखा मालवा देशनी पासेनां गाममांनां लोक आवी
पेठां, तेणे करी संकीर्ण एटले सांकमी थइ, खीचोखीच ज्ञराणी, तेने (तदा के०) ते समये
समीप एटले ढुकमा श्रीपालना सुज्ञटे आवीने वींटी लीधी, तेथी ते केवी शोज्ञवा लागी ? के
जेम (जलधि अंतरद्वीप के०) समुद्रनी वचमां द्वीप होय तेम दीसवा लागी, एटले जेम समु-
द्रना अंतरद्वीपनी चारे बाजुए पाणी वींट्युं होय तेम उज्जेणीने चारे बाजुए श्रीपालना सैन्ये वींटेली
जाणवी ॥ २ए ॥ तिहां श्रीपाल राजाए डेरा तंबु दीधा, तेमां सर्व सैन्य उतर्युं. पठी जे वारे (रजनी
के०) रात्रिनो पहेलो (जाम के०) पहोर थयो, एटले प्रथम प्रहर रात्रि गइ ते वारे (नृप
के०) श्रीपाल राजा हारने प्रज्ञावे करीने प्रेम सहित जननी जे माता तेने घेर पहोतो ॥ ३० ॥
ए आठमी ढाल संपूर्ण थइ, अने त्रीजो खंम पण संपूर्ण थयो. ए नव पदनें विधिपूर्वक आरा-
धतां थका जिनराजनी ज्ञक्ति करतां थका विनयवंत थाय, तथा ते प्राणीनो अखंम सुयश थाय ॥ ३१ ॥

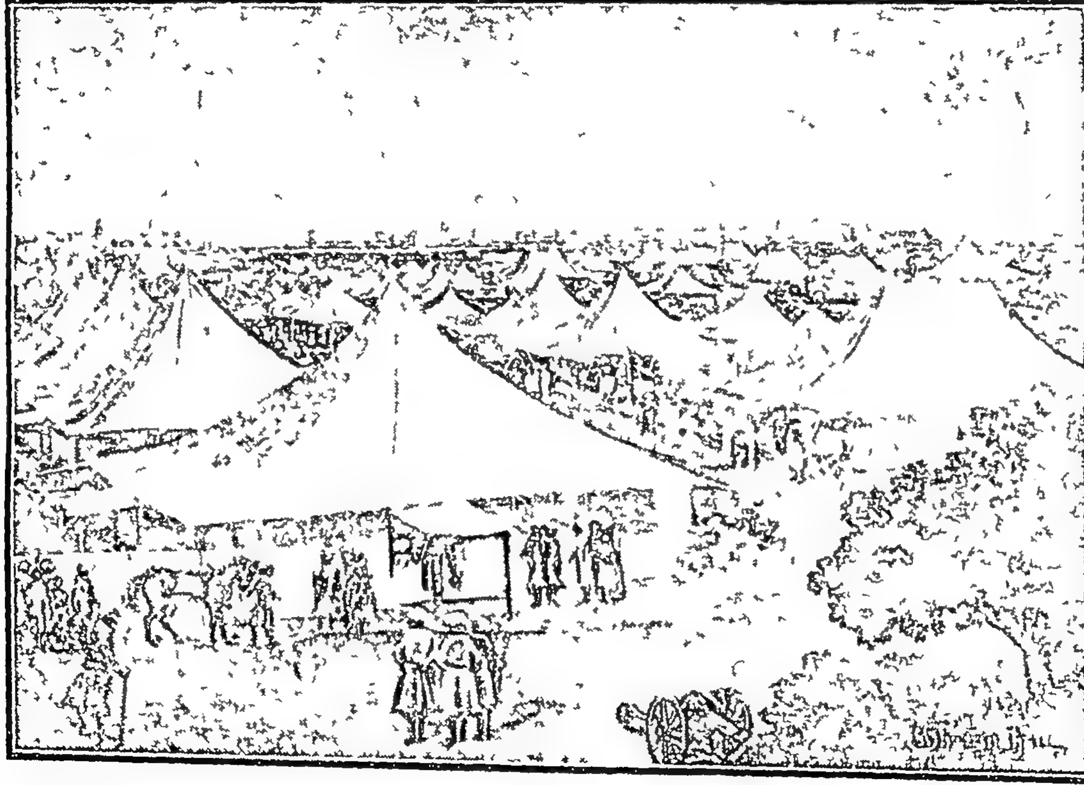
श्री श्रीपाल राजानो रास

प्रकाशक—श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबइ.

શ્રીપાળ અને તેનુ સૈન્ય




शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक १२३.



તિહા શ્રીપાળ રાજાએ ડેરા તણુ દીધા, તેમા સર્વ સેન્ય ઉતરયુ.




ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૧૭૨.

લક્ષ્મી આર્ટ છાપખાના, મુંબઈ

॥ चोपाइ ॥

खंड खंम मीठाइ घणी, श्री श्रीपालचरित्रे जणी ॥
ए वाणी सुरतरुवेलडी, किसी द्राख ने किसी सेलडी ॥ १ ॥

अर्थ–खंम खंमने विषे घणी मीठाश ते श्री श्रीपाल राजाना चरित्रे जणी, एटले वर्णवी छे. ए श्रीजिनेश्वरनी वाणी ते कल्पवृक्षनी वेल समान मनोवांछित पूर्ण करनारी छे. ए वाणीनी आगल द्राखनी मीठाश तथा शेलडीनी मीठाश ते शी गणतीमां छे ? ॥ १ ॥

॥ इति श्रीमन्महोपाध्यायश्रीविनयविजयगण्युपक्रांते महोपाध्यायश्रीयशोविजयगणिपूरिते सिद्धचक्रमहिमाधिकारे श्रीश्रीपालचरित्रे प्राकृतप्रबंधे विमलेश्वरदेवेनार्पितहारप्राप्ति-मनोज्ञीष्टदायकषट्कन्यापाणिग्रहणसर्वसैन्यसहितोज्जयिनीनगरीप्राप्तिप्रभृति-कथने तृतीयः खंमः समाप्तः ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीश्रीपालचरित्रे तृतीयखंडस्य बालावबोधः समाप्तः ॥ ३ ॥



॥ श्री सद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ अथ चतुर्थः खंडः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

त्रीजो खंड अखंड रस, पूरण हुउं प्रमाण ॥ चोथो खंड हवे वर्णवुं, श्रोता सुणो सुजाण ॥ १ ॥ शीस धुणावे चमकीयो, रोमांचित करे देह ॥ विकसित नयनवदन मुदा, रस दीए श्रोता तेह ॥२॥ जाणज श्रोता आगले, वक्ता कला प्रमाण ॥ ते आगे घन शुं करे, जे मगसेल पाषाण ॥ ३ ॥ दर्पण आंधा आगले, बहिरा आगल गीत ॥ मूरख आगे रसकथा, त्रणे एकज रीत ॥ ४ ॥

अर्थ—श्रीपालना रासनो त्रीजो खंड ते अखंड रसे करीने रुडी रीत प्रमाणे पूर्ण थयो. हवे चोथो खंड वर्णवुं बुं, ते हे सुजाण ! एटले चतुर श्रोताजनो ! तमे सांभलो ॥ १ ॥ हवे सुजाण श्रोतानां लक्षणो कहे छे. जे अर्थ सांभलतो थको चमत्कार पामी श्रवणरसथी मस्तक धुणावे, अने जेना शरीरनी रोमराजि उल्लास पामे एटले रोम उभां थाय, तथा नयन जे चक्षु अने वदन विकस्वर थाय, ते श्रोता हर्षे करी रस आपे, अथवा नेत्र विकस्वर थाय अने वदन जे मुख ते हसे, एवो श्रोता होय ते वक्ताने रस आपे ॥ २ ॥ एवो जाण श्रोता होय, तेनी आगल वक्ता जे वांचनार, तेनी कला प्रमाण थाय, परंतु मगसेलीया पाषाणनी आगल घन जे वरसाद ते शुं करे ? तेम जे श्रोता कठण हृदयवालो होय ते पलले नहीं तो ते आगल वक्ता शुं करे ? ॥ ३ ॥ जेम आंधला आगल दर्पण जे आरीसो ते धर्यो थको मिथ्या, जेम बहेरा आगल गीतगान करवां ते व्यर्थ थाय, तेम मूर्ख जननी पासे सारी सारी शृंगारादि रसनी कथाउ करवी ते व्यर्थ छे. ए

अणेनी एकज रीत छे, माटे तेनी उपर दृष्टांतनो एक दोहो कहे छे ॥ यतः ॥ मूरखने प्रतिबोधतां, मति पोतानी जाय ॥ टपलो सराणे चढावतां, आरीसो नवि थाय ॥ ४ ॥

ते माटे सज थइ सुणो, श्रोता दीजे कान ॥ बुझे तेहने रीझवुं, लक्ष न भूले ग्यान ॥ ५ ॥ आगे आगे रस घणो, कथा सुणंतां थाय ॥ हवे श्रीपालचरित्रना, आगे गुण कहेवाय ॥ ६ ॥

अर्थ–ते माटे हे श्रोताजनो ! तमे सज्ज थइ कान दइ सावधान थइने सांभलो. जे श्रोताजनो बुझे एटले समजे तेने हुं रीझवुं, एटले जे जाण होय, वेत्ता होय तेने रीझवी शकीए, कारण के जाण होय ते नवां नवां शृंगारादिक रसमय व्याख्यान सांभलीने रीझ पामे, कविनो आयास जाणे, पोताना ज्ञानथी लक्ष जे साध्य ते भूले नहीं, शृंगारादिक रस सांभलीने हेयोपादेय यथायोग्य आलंबने जोडे, परंतु जे अजाण होय ते सामा वक्ताना दोषो काढे ॥ ५ ॥ आ कथाने आगल आगल सुणतां थका घणो रस उत्पन्न थाय एवी छे, माटे हवे श्रीपालचरित्रना जे गुणो छे ते आगल कहेवाय छे ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ धन दिन वेला धन घडी तेह, अचिरारो नंदन जिन यदि भेटस्यां जी ॥ ए देशी ॥

रहीयो रे आवास दुवार, वयण सुणे श्रीपाल सोहामणो जी ॥
कमलप्रभा रे कहे एम, मयणा प्रति मुज चित्त ए दुःख घणो जी ॥ १ ॥

अर्थ–हवे सोहामणो श्रीपाल कुंवर एक पहोर रात्रि गये थके माताना घरने द्वारे उभो रह्यो. तिहां पोतानी मातानुं तथा मयणासुंदरीनुं जे मांहोमांहे बोलवुं थाय छे, ते वचन सांभले

छे. तिहां कमलप्रन्ना मयणा प्रत्ये एम कहे छे के हे वहू ! मारा चित्तमां ए डुःख घणुं छे. शुं डुःख छे ? ते आगल कहे छे ॥ १ ॥

वींटी छे ए परचक्र, नगरी सघलोइ लोक हिल्लोलीयो जी ॥ शी गति
होशे इण ठाम, सुतने सुख होजो बीजो घोलीयो जी ॥ २ ॥ घणा
रे दिवस थया तास, वालिन्न तुज जे गयो देशांतरे जी ॥ हजीय न
आवी कांइ शुद्धि, जीवे रे माता डुःखणी किम नवि मरे जी ॥ ३ ॥
मयणा रे बोले म करो खेद, म धरो रे न्नय मनमां परचक्रनो जी ॥
नव पद ध्याने रे पाप पलाय, डुरित न चारो छे ग्रह वक्रनो जी ॥ ४ ॥

अर्थ—के परचक्र जे बीजा राजानुं लश्कर तेणे आवीने आ नगरीने वींटी छे, तेथी सघलो लोक हालकलोल थइ रह्यो छे, माटे हवे आ स्थानके शुं जाणीए ! आपणी शी गति थशे ? आपणी तो ठीक, परंतु मारा सुतने एटले पुत्रने सुख होजो, एटले कुशल थाजो. बीजो सर्व घोल्यो एम कह्युं. इहां कोइ पूछे के कमलप्रन्ना पोते समकितधारी छे तो ते सर्व जगतवासी जंतुने करुणादृष्टिए जोवे छे, तो पोतानाने कुशल वांछे अने अपरने घोल्यो एम केम कहे ? तेने त्यां उत्तर आपे छे के एणे जे घोल्यो एवो शब्द कह्यो छे ते स्वनिष्ठित तन, धन, गृहादिक आश्रयी छे, एटले पोतानी माल मिल्कतने गमे ते थाउ ए अन्निप्राये कह्यो छे, परंतु बीजा कोइ नगरजनादिक आश्रयी घोल्यो कह्यो नथी ॥ २ ॥ वली हे वहू ! तारो वालम देशांतरे गयो छे, तेने घणा दिवस थइ गया छे, पण हजी लगण कांइ तेनी शुद्धि आवी नथी, माटे हुं तेनी माता डुःखणी जीवती रहुं छुं, पण मरती केम नथी ? ॥ ३ ॥ ते सांन्नली मयणासुंदरी बोली के हे सासुजी ! तमे खेद म करो, अने ए परसैन्यनो न्नय

... सर्व पाप पलायन करी जाय छे, काइ पण मनमां धरो नहीं, कारण के नव पदजीना ध्याने करी सर्व पाप पलायन करी जाय छे, वली एना ध्यान आगल ग्रह वक्र जे वांका ग्रह तेनी (डुरित के०) माठी चार जे गति तेनुं जोर कांइ पण न छे एटले नथी चालतुं ॥ ४ ॥

अरि करि सागर हरि ने व्याल, ज्वलन जलोदर बंधन जय सवे जी ॥
जाय रे जपतां नव पद जाप, लहे रे संपत्ति इह जवे परजवे जी ॥ ५ ॥
बीजां रे खोजे कोण प्रमाण, अनुजव जाग्यो मुज ए वातनो जी ॥ हुउ
रे पूजानो अनुपम जाव, आज रे संध्याए जगतातनो जी ॥ ६ ॥

अर्थ–(अरि के०) शत्रु, (करि के०) हाथी, (सागर के०) समुद्र, (हरि के०) सिंह अने (व्याल के०) सर्प, (ज्वलन के०) अग्नि, (जलोदर के०) जलोदर रोग, (बंधन के०) बंदिखानुं, ए आठ जातिना मोटा जे जय छे ते सर्वे नव पदनो जाप जपतां थका दूर नासी जाय, अने आ जवे तथा परजवे संपत्ति पामीए, तो हे सासुजी ! आ परचक्रनो जय ते नव पदना जाप आगल कोण मात्र छे ? ॥ ५ ॥ वली पण मयणा कहे छे के हे स्वामिनि ! बीजां प्रमाणने कोण (खोजे के०) ढूंढे ? अथवा परचक्रनी चिंता उपनी तेने निवारवा माटे केटलाएक मुग्ध प्राणीउ ज्योतिष, निमित्तादिकनां कारण छे तेनी खोज करे, एटले जोवरावे, ते कोण प्रमाण ? एटले एवां लौकिक प्रमाण जोवाथी शुं थाय ? मुजने तो ए वातनो अनुजव जाग्यो जे चित्तमां परचक्रनुं कांइक चिंतन हतुं ते हवे आज संध्याए श्रीजगतात एटले त्रण जगतजनने पिता समान एवा श्रीअरिहंत देव तेनी धूप, दीप, पूजा करवाना अवसरे कोइ उपमा न आवे एवो अनुपम जाव थयो. ते एवो के जे अनादि कालनो ए जीव चार गतिमां भ्रमण करतां अनंती वार श्रावकनुं कुल पाम्यो, धर्म पण उलख्यो अने देवनी पूजा पण करी, परंतु ए जीवने विजाव-

ने पांची मन, तेथी मन
दशानी बहुल दोडथी परपरिणतिमां विशेष रमण हतुं, माटे तद्रूप धर्म न उंलख्यो,
आदिकनी एकाग्रताए अनुपम भाव सहित पूजा उदय आवी नहीं. ते अनुपम भाव मुजने आज
संध्याए परमेश्वरनी पूजा करतां आव्यो हतो. आज परचक्रनी चिंतामां मुजने ए वातनो अनुभव
जाग्यो, तेनुं लक्षण आगली गाथाए करी कहे छे, ते निद्रा परहरीने धारजो ॥ ६ ॥

तदगतचित्त समयविधान, भावनी वृद्धि भवभय अति घणो जी ॥
विस्मय पुलक प्रमोद प्रधान, लक्षण ए छे अमृतक्रिया तणो जी ॥ ७ ॥

अर्थ—एक तो (तदगतचित्त के०) जे क्रिया करतो होय तेज क्रियानो उपयोगी होय, परंतु
क्षेप जे मननी व्यग्रता तद्रूप क्षेपक दोषादि युक्त न होय, बीजो (समयविधान के०) आगमने
विषे जे वेलाए जे विधि करवानो कह्यो छे, ते वेलाए तेज करवा योग्य शुभ क्रियाविधान करतो
होय, त्रीजो तत्समयोचित क्रिया करतो होय, तेमां (भावनी वृद्धि के०) चित्त उल्लसित थाय,
परिणामधारानी पुष्टि थाय, चोथो भव जे संसार तेनो अत्यंत घणोज भय उपजे, एटले जन्मनां
दुःखनी, जरानां दुःखनी बीक लागे, इत्यादिक भय उपजे, पांचमो (विस्मय के०) चमत्कार
उपजे, एटले तत्समयोचित क्रियामां अति पुष्टतर साध्यनी कारणता देखी चित्तमां अप्राप्त पूर्वनी
परे चमत्कार पामे, छठो (पुलक के०) रोमोद्गम होय, एटले पुष्ट कारण प्राप्त थवाथी अत्यंत
हर्ष उपजे, अने अथिर संसारभ्रमणभयथी रोमोद्गम थाय, सातमो (प्रमोद के०) महाहर्ष
थाय, आत्मिक सुखानुभव होय, जेम आंधलाने नेत्रनो लाभ थयेथी तथा सुभटने शत्रु जीतवाथी
जेवो प्रमोद थाय, तेथी पण अधिक प्रमोद समयोचित क्रिया करवामां थाय. ए सर्व अमृत-
क्रियानां (प्रधान के०) मुख्य लक्षणो छे, एटले चिह्ने अमृतक्रिया जाणीए. ए क्रिया इह लोक
अने परलोके अवश्य फलदायक होय, एटले निश्चे फलदायक होय ॥ उक्तं च ॥ सहजो भाव-

धर्मो हि, शुद्धचंदनगंधवत् ॥ एतद्गर्भमनुष्ठान,–ममृतं संप्रचक्षते ॥ १ ॥ शास्त्रार्थालोचनं सम्यक्, प्रणिधानं च कर्मणि ॥ कालाद्यंगविपर्यासो,–ऽमृतानुष्ठानलक्षणम् ॥ २ ॥ इति ॥ ३ ॥

अमृतनो लेश लह्यो इक वार, बीजुं रे औषध करवुं नवि पडे जी ॥ अमृत-
क्रिया तिम लही एक वार, बीजां रे साधन विण शिव नवि अडे जी ॥ ८ ॥
एहवो रे पूजामां मुज भाव, आव्यो रे भाव्यो ध्यान सोहामणो जी ॥
हजीअ न माये मन आणंद, खिण खिण होये पुलक निकारणो जी ॥ ए ॥
फुरके रे वाम नयन उरोज, आज मिले छे वालिम माहरो जी ॥ बीजुं
रे अमृतक्रिया सिद्धिरूप, तुरत फले छे तिहां नहीं आंतरो जी ॥ १० ॥

अर्थ–माटे जेम रोगीए अमृतनो लेशज मात्र (लह्यो के०) पाम्यो होय तो तेने बीजुं औषध करवुं पडे नहीं, तेम संसाररूप रोगे ग्रस्त जीवे जो एक वार अमृतक्रिया पामी होय तो पछी ते बीजां साधन कर्या विना (शिव के०) मोक्ष जवामां अडे नहीं, एटले अटके नहीं ॥ ८ ॥ माटे हे सासुजी ! एवो पूजामां मुजने भाव आव्यो, ते भावे करी सोहामणुं एटले सुंदर ध्यान में भाव्युं, जाएयुं. ते भाव ध्यावतां ते वखते जे मारा चित्तमां आनंद आव्यो छे ते आनंद मारा मनने विषे हजी सुधी समातो नथी, तेणे करी निष्कारण एटले कारण विना क्षणे क्षणे (पुलक के०) रोमोद्गम थाय छे, हर्ष थाय छे. निष्कारण ते भय अने हर्ष, ए बे निमित्त विना जे वारे पोतानी मेले रोमोद्गम थाय एटले शरीरनी रोमराजी विकस्वर थाय, ते वारे अकस्मात् अणचिंतव्युं कोइ पण वल्लभ आवी मले, एवुं निमित्तशास्त्रमां कह्युं छे. ए लक्षण आज मने थयुं छे, माटे ते लक्षण वांछीयुं निष्फल न थाय, पण फलदायक थवुं जोइए. एम मयणा कहे छे ॥ ए ॥ वली मारुं डाबुं नेत्र अने डाबुं स्तन फरके छे, तेथी हुं जाणुं छुं जे आज मारो वालम मने (मिले

छे के०) मलशे. वीजुं वली आज अमृतक्रिया मुजने प्राप्त थइ छे ते सिद्धिरूप छे, माटे तरतज फले छे. तेमां कांइ आंतरो एटले अंतर पडे नहीं ॥ १० ॥

कमलप्रभा कहे वत्स साच, ताहरी रे जीभे अमृत वसे सदा जी ॥
ताहारुं रे वचन होशे सुप्रमाण, त्रिविध प्रत्यय छे तें साध्यो मुदा जी
॥ ११ ॥ करवा रे वचन प्रियानुं साच, कहे रे श्रीपाल ते बार उघाडीए
जी ॥ कमलप्रभा कहे ए सुतनी वाणी, मयणा कहे जिनमत न मुधा हुये
जी ॥ १२ ॥ उघाडीयां बार नमे श्रीपाल, जननीनां चरणसरोज सुहंकरु
जी ॥ प्रणमी रे दयिता विनय विशेष, बोलावे तेहने प्रेम मनोहरु जी
॥ १३ ॥ जननी रे आरोपी निज खंध, दयिता रे निज हाथे लेइ रागशुं
जी ॥ पहोता रे हार प्रभावे राय, शिबिर आवासे उल्लसित वेगशुं जी ॥ १४ ॥

अर्थ—ते सांभली कमलप्रभा कहे छे के हे वत्स ! तें कह्युं ते साचुंज छे, तारी जीभे सदा निरंतर अमृतज वसे छे, तारुं वचन सुप्रमाण थशे, तें (त्रिविध प्रत्यय के०) मन, वचन अने काया ए त्रिकरण शुद्धे मुदा एटले हर्षे करीने धर्मने (साध्यो के०) आराध्यो छे ॥ ११ ॥ पछी पोतानी प्रिया जे स्त्री तेनुं वचन साचुं करवाने अर्थे श्रीपाल कहे छे के बारणुं उघाडीए. ते सांभली कमलप्रभाए कह्युं के ए मारा सुतनी वाणी छे, ते वारे मयणा कहे के श्रीजिनेश्वरनो मत कदापि काले (मुधा के०) खोटो थाय नहीं ॥ १२ ॥ पछी माताए बारणां उघाड्यां के श्रीपाल पोतानी जननीनां सुखकारक एवां चरणरूप सरोज एटले कमल ते प्रत्ये नमतो हवो, अने दयिता जे मयणासुंदरी ते पण विनयविशेषे करीने पोताना स्वामीने प्रणमी एटले पगे लागी, तेने श्रीपाले मनोहर प्रेमे करी बोलावी ॥ १३ ॥ पछी जननी जे माता तेने पोताना खंधने विषे

प्रकाशक—श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबइ

श्री श्रीपाल राजानो रास

મયણાસુંદરી અને શ્રીપાળની માતા.

शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक १२७.



ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૧૭૭.

તે સાંભળી કમળપ્રભા કહે છે કે હે વત્સ! તેં કહ્યું તે સાચુંજ છે, તારી જીભે સદા નિરંતર અમૃતજ વસે છે, તારૂં વચન સુપ્રમાણ થશે.

લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુંબઇ.

आरोपी एटले बेसाडी, तथा दयिता जे स्त्री मयणासुंदरी, तेने घणा रागथी पोताना हाथमां लइने हारना प्रभावे करी शिबिर एटले सैन्यना जिहां डेरा दीधा छे ते आवासने विषे श्रीपाल राजा (उल्लसित वेगशुं के०) उल्लास पामतो थको तरत अति उतावलो जइ पहोंतो ॥ १४ ॥

बेसाडी रे भद्रासने नरनाथ, जननीने प्रेमे इणी परे विनवे जी ॥ माताजी
देखो ए फल तास, जपीयां में नव पद जे सुगुरे दीयां जी ॥ १५ ॥
वहूरो रे आठे लागी पाय, सासुने प्रथम प्रिया मयणा तणे जी ॥ तेहनी
रे शीश चढावी आशीष, मयणा रे आगे वात सकल भणे जी ॥ १६ ॥
पूछे रे मयणाने श्रीपाल, तदारो रे तात आणावुं किण परे जी ॥ सा कहे
कंठे धरीय कुहाड, आवे तो कोइ आशातना नवि करे जी ॥ १७ ॥

अर्थ—पछी जननीने भद्रासने बेसाडीने नरनाथ जे श्रीपाल राजा, ते प्रेमे करी आवी रीते विनवे छे के हे माताजी ! सद्गुरुए जे नव पद दीधां हतां, तेनो में जाप जप्यो तेनुं ए फल थयुं, ते नव पदनो महिमा प्रगटपणे देखो एटले जुओ, ते केवो छे ? ॥ १५ ॥ पछी बीजी आठे वहूरो प्रथम पोतानी सासुने पगे लागी, अने पछी प्रथम प्रिया एटले पहेली परणेली जे मयणासुंदरी छे तेने पगे लागी. तेने बन्ने जणीए आशीष आपी, ते आशीष आठे स्त्रीओए मस्तके चढावीने पछी श्रीपालनी पाछलनी हकीकत जे देशांतरने विषे बनी हती, ते संबंधी सर्व वात मयणानी आगल (भणे के०) कहे ॥ १६ ॥ हवे श्रीपाल कुंवर मयणासुंदरीने पूछे छे के तारा पिताने केवी रीते अहीं तेडावुं ? ते वारे (सा के०) ते मयणासुंदरी कहे छे के कंठ उपर कुहाडो मूकीने आवी मले तो फरी श्रीजिनधर्मनी दुःखोत्पादकरूप आशातना अवज्ञा कोइ न करे. इहां केटलाएक एवो अर्थ करे छे के कोइ जिनशासननी आशातना न करे एटला माटे कंठे कुहाडो धरी तेडवानुं

कह्युं छे, ते यत्किंचित् जाणवुं. जे त्रणी प्रजापाल राजाए तो प्रथमज मयणा युक्त श्रीपालने देखीने
पोतानुं मान मूक्युं छे अने धर्मरुचि थयो छे, जैनधर्मनी प्रशंसा पण कीधी छे, उन्नति कीधी छे,
ते उपर फरी सम्यग्दृष्टि जीवने एटलो खेद न होय, केमके ए राजा कांइ ते काले जैननो प्रत्य-
नीक नथी, परंतु उलटो सहायकारी छे, माटे लोकोने जणाववाने अभिप्राये तेनुं अपमान करवा
माटे कांइ राजाने कंठे कुहाडो मूकावी तेड्यो नथी, परंतु लोकोने जाणवा स्वरूपविशेषथी
कर्मनी प्रतीति कराववाने अर्थे तथा विशेषथी धर्मना महा अभ्युदय फलविशेषनी प्रतीति करा-
ववाने माटे एवी अवस्थाए तेड्यो छे ॥ १७ ॥

कहेवराव्युं दूतमुखे तिण वार, श्रीपाले ते राजाने वयणडुं जी ॥ कोप्यो
रे मालव राजा ताम, मंत्री रे कहे नवि कीजे एवडुं जी ॥ १८ ॥ चोथे
रे खंडे पहेली ढाल, खंड साकरथी मीठी ए त्रणी जी ॥ गाये जे नव
पद सुजश विलास, कीरति वाधे जगमां तेह तणी जी ॥ १९ ॥

अर्थ—श्रीपाले तेज वखते दूतने मुखे प्रजापाल राजाने तेज रीते कहेवराव्युं, (ताम के०) ते वारे मालव देशनो राजा कोप्यो. तेने प्रधाने कह्युं जे महाराज ! एवडो कोप म करो, क्रोधमां फायदो नथी ॥ १८ ॥ ए चोथा खंडने विषे पहेली ढाल ते साकरना (खंड के०) कटकाथी पण मीठी (त्रणी के०) कही, ते जे प्राणी नव पदना रुडा यशने विलास सहित गाय तो तेनी जगतमां कीर्त्ति वधे, तथा अहीं कवि यशोविजयजीए पोतानुं नाम पण सूचव्युं ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

मंत्री कहे नवि कोपीए, प्रबल प्रतापी जेह ॥
नाखीने शुं कीजीए, सूरज सामी खेह ॥ १ ॥

अर्थ–हवे मालव देशना राजाने तेनो प्रधान कहे छे के जे प्रबल प्रतापी पुरुष होय तेनी उपर कोपीए नहीं. तिहां दृष्टांत कहे छे के जेम पंथीजनने मार्गे चालतां सूर्यनो आकरो ताप लागे, ते वारे (खेह के०) धूलनी पसली भरीने सूर्यनी सामी नाखे तो ते धूल पाछी आवी तेना पोताना मुख उपर पडे, माटे सूर्य सामी धूल नाखीने शुं करीए ? तेम प्रबल प्रतापी उपर क्रोध करवो ते पण पोतानेज दुःखदायी थाय ॥ १ ॥

उध्दत उपरे आथड्युं, पसरंतुं पण धाम ॥
उल्हाए जिम दीपनुं, लागे पवन उद्दाम ॥ २ ॥

अर्थ–वली प्रधान कहे छे के हे राजन् ! अंधारुं ते देशभाषाए उद्धत शब्दे अंधकार कहे छे. ते अंधकारनी उपरे आथड्युं, एटले आवी पड्युं, (पसरंतुं के०) ते मांहे विस्तार पामतुं, परंतु एम नहीं जे आथडीने पाछुं आवी पड्युं, अर्थात् आकरा अंधकारने टाले एवुं दीपनुं (धाम के०) तेज छे, एवुं तेज पण (उद्दाम के०) आकरो पवन लागे ते वारे उलाइ जाय. इहां प्रधाने पोतानी निपुणाइए राजाने अरज कीधी, तेमां एवुं सूचव्युं जे तमे तो दीवा सरखा छो, तमारुं तेज अस्खलित छे, ते बीजा अंधारा सरखा घणा राजाउनी उपर पड्युं, ते सर्व राजाउने तमे वश कीधा छे, पण ए हमणां आवेलो राजा ते उद्दाम पवन सरखो छे, माटे ए जेम कहे ते रीते करवुं, एने समजावी वोलाववो युक्त छे, जेम आकरो पवन लागवाथी दीपकने एक स्थलथी उपाडी बीजे स्थले मूकतां दीपकपदनी हानि थती नथी, महत्ता घटती नथी, तेम एने अनुकूल प्रवर्त्ततां आपणने कांइ हानि नथी. एम प्रधाने पोताना राजाने दीवा समान कही तेनुं महत्त्व राख्युं, अने तेने उद्दाम पवननी उपमा आपी. उद्धंठ भावे बलवान् सूचव्यो, एटले प्रबल उद्धंठ साथे विरोध करवो युक्त नथी. १. बीजो अर्थ उद्धत एटले अज्ञान तत्पर्यंत तेनी उपर

ज्ञाननुं तेज विस्तार पामतुं आथड्युं, तेने मिथ्यात्वरूप उद्दाम पवन लागे थके ज्ञाननुं तेज ऊलाइ जाय. २. ए रीते साम वचने करी पोताना राजाने प्रधाने समजाव्यो, ते वारे प्रजापाल राजानुं चित्त श्रीपालजीने मलवा उत्कंठित थयुं ॥ २ ॥

जे किरतारे वडा कीया, तेहशुं न चले रीस ॥ आप अंदाजे चालीए,
नामीजे तस शीश ॥ ३ ॥ दूत कहे ते कीजीए, अनुचित करे बलाय ॥
जेहनी वेला तेहनी, रखा एहज न्याय ॥ ४ ॥ एहवां मंत्रिवयण सुणी,
धरी कुहाडो कंठ ॥ मालव नरपति आवीयो, शिबिर तणे उपकंठ ॥ ५ ॥
ते श्रीपाल छोडावीयो, पहिराव्यो अलंकार ॥ सभा मध्ये तेड्यो नृपति,
आप्युं आसन सार ॥ ६ ॥ तव मयणा निज तातने, कहे बोल जे गुज्झ ॥
कर्मवशे वर तुमे दीयो, तेहनुं जुओ ए गुज्झ ॥ ७ ॥

अर्थ—जेने किरतारे मोटा कर्या छे तेनी साथे रीस करवी चाले नहीं, माटे पोताना अंदाजे एटले गजा प्रमाणे अदबथी चालीए अने तेने मस्तक नमावीए ॥ ३ ॥ माटे हे राजन् ! आ दूत कहे छे ते करीए, अनुचित काम आपणी बला करे छे, एटले अणघटतुं काम आपणे शामाटे करीए ? जेनी वेला एटले जेनो अवसर तेनीज रखा एटले रखोपुं, एज न्याय छे ॥ ४ ॥ एवां प्रधाननां वचन सांभली मालव देशनो राजा खांधे कुहाडो धरीने क्षिप्रा नदीनी (उपकंठ के०) पासे जिहां श्रीपालनुं सैन्य छे तिहां आव्यो ॥ ५ ॥ तेवोज श्रीपाले ते कुहाडो खांधथी छोडाव्यो एटले उतराव्यो, अने अलंकार पहेराव्यो एटले रुडां वस्त्राभरण पहेराव्यां, पाछो सभामां तेडीने बेसवा माटे श्रेष्ठ आसन आप्युं ॥ ६ ॥ ते वारे मयणा पोताना पिताने कहे छे के हे पिताजी ! मारो बोल संभारो, जे कर्मने वशे तमे वर दीधो हतो तेनुं (गुज्झ के०) भाग्य जुओ केवुं छे ? ॥ ७ ॥

तव विस्मित मालव नृपति, जामाउल प्रणमंत ॥ कहे न स्वामी तुं
उंलख्यो, गिरुउ बहु गुणवंत ॥ ८ ॥ कहे श्रीपाल न माहरो, एहवो
एह बनाव ॥ गुरुदर्शित नव पद तणो, ए बे प्रबल प्रभाव ॥ ए ॥ ते
अचरिज निसुणी मिल्यो, तिहां विवेक उदार ॥ सौभाग्यसुंदरी रूपसुंदरी,
प्रमुख सयल परिवार ॥ १० ॥ स्वजन वर्ग सघलो मिल्यो, वरत्यो आणंद
पूर ॥ नाटककारण आदिशे, श्री श्रीपाल सनूर ॥ ११ ॥

अर्थ–ते वारे मालव देशनो राजा विस्मय पाम्यो थको जमाइने प्रणाम करीने कहेवा लाग्यो जे हे स्वामिन् ! में तुजने उंलख्यो नहीं, तुं गिरुउ बो, महागुणवंत बो ॥ ८ ॥ ते सांभली श्रीपाल कहे बे के ए जे बनाव बे ते कांइ मारो नथी, परंतु ए तो गुरुए जे नव पद देखाड्यां तेनो ए प्रबल (प्रभाव के०) महिमा बे ॥ ए ॥ ते अचरिज जेवी वात सांभलीने तिहां विवेक उदार एटले मोटो विवेकवंत एवो सौभाग्यसुंदरी अने रूपसुंदरी प्रमुख सर्व परिवार एकठो मल्यो ॥ १० ॥ एम स्वजनवर्ग सर्व एकठो मले थके आनंदनो पूर वर्त्तते नाटक करावबाना कारण माटे सनूर एटले तेजे करी सहित एवो श्रीपाल आदेश देतो हवो ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ होजी लुंबे फुंबे वरसेलो मेह, आज दिहाडो धरणी त्रीजरो हो लाल ॥ ए देशी ॥

होजी पहेलुं पेडुं ताम, नाचवा उठे आफणी हो लाल ॥
होजी मूल नटी पण एक, नवि उठे बहु परे भणी हो लाल ॥ १ ॥

अर्थ–(ताम के०) ते वारे नाटकनां घणां पेडां बे, तेमांथी पहेलुं पेडुं एटले टोलुं नाचवाने

माटे खेहाए उठ्युं थयुं, पण ते मांहे एक मूल नटी एटले मुख्य नाटकणी छे, तेने टोले मलीने (बहु परे जणी केण) घणी रीते कह्युं तोपण ते नाचवा उठे नहीं ॥ १ ॥

होजी उठाडी बहु कष्ट, पण उच्छाह न सा धरे हो लाल ॥ होजी हा हा करी सविषाद, दुहो एक मुखे उच्चरे हो लाल ॥ २ ॥ दोहो ॥ किहां मालव किहां शंखपुर, किहां बब्बर किहां नट्ट ॥ सुरसुंदरी नचावीए, दैवे दल विमरट्ट ॥३॥ ढाल पूर्वनी ॥ होजी वचन सुणी तव तेह, जननी जनकादिक सवे हो लाल ॥ होजी चिंते विस्मित चित्त, सुरसुंदरी किम संभवे हो लाल ॥ ४ ॥ होजी जननी कंठ विलग्ग, पूछी जनके रोवती हो लाल ॥ होजी सघलो कहे वृत्तंत, जे ऋद्धि तुमे दीधी हती हो लाल ॥ ५ ॥

अर्थ—तथापि तेने बहु कष्टे करी उठाडी तोपण (सा केण) ते नटी नाचवाने माटे उत्साह धरती नथी, अने मुखथी विषाद सहित बे वार हा हा एवो शब्द करती एक दोहो पोताना मुखथी उच्चारती हवी ॥ २ ॥ तेनो अर्थ कहे छे के किहां मालव देशे जन्म अने किहां शंखपुरे परणावी, तथा किहां बब्बर देशे वेची अने किहां ए नाटक करवा शीखी. दैवे मरट्ट ते मरड एटले आमलो, वांकाइ, मानपणुं दली नाखीने सुरसुंदरीने नचावती करी ॥ ३ ॥ ते नाटकणीनां एवां वचन सांभलीने जननी जे माता अने जनकादिक जे पिता प्रमुख सर्व सज्जन विस्मित चित्ते करी चिंतवतां हवां के ए सुरसुंदरी ते नाटकणी थइ, ए केम संभवे ! ॥ ४ ॥ ते माता पिता पोतानां मनमां विमासे छे के केम ए सुरसुंदरी छे, किंवा नथी ! एटलामां तो सुरसुंदरी तिहांथी उठीने पोतानी जननीने गले आवी वलगी. तेने रोवती थकी देखीने जनके एटले पिताए पूछ्युं, ते वारे तेनी आगल सघलो वृत्तांत कहे छे के हे पिताजी ! तमे मुजने जे ऋद्धि दीधी हती ॥ ५ ॥

होजी हुं ते ऋद्धि समेत, शंखपुरीने परिसरे हो लाल ॥ होजी पहोतां।
होजी सुन्नट मुहूरत हेत, नाथ सहित रही बाहिरे हो लाल ॥ ६ ॥ होजी सुन्नट
गया केइ गेह, थोडे साथे निशा रही हो लाल ॥ होजी जामाता तुज नठ,
धाडी पडी तिहां हुं ग्रही हो लाल ॥ ७ ॥ होजी वेची मूल्ये धाडी, सुन्नटे
देश नेपालमां हो लाल ॥ होजी सारथवाहे लीध, फले लख्युं जे न्नालमां
हो लाल ॥ ८ ॥ होजी तेणे पण बब्बर कुल, महाकाल नगरे धरी हो
लाल ॥ होजी हाटे वेची वेश, लेइ शीखावी नटी करी हो लाल ॥ ए ॥
होजी नाटकप्रिय महाकाल, नृप नटपेटकशुं ग्रही हो लाल ॥ होजी वि-
विध नचावी दीध, मयणसेनापतिने सही हो लाल ॥ १० ॥

अर्थ–ते ऋद्धि सहित हुं शंखपुरी नगरीनी (परिसरे के०) समीपे पहोती, पण ते दिवसे नगरमां पेसवानुं मुहूर्त्त न हतुं, ते हेतु माटे हुं मारा (नाथ के०) न्नर्त्तार सहित गाम बहार रही ॥ ६ ॥ पोतानुं नगर जाणीने केटलाएक सुन्नटो पोतपोताने घेर गया, अने थोडे एटले थोडे सथवारे तिहां हुं रात्रिए रही, एटलामां मध्य राते हणो हणो करती चोरोनी मोटी धाड आवी पडी, ते वारे तमारो जमाइ तो मने मूकीने नासी गयो, अने चोरोए तमारुं आपेलुं धन देखीने जने ग्रही एटले पकडी लीधी ॥ ७ ॥ पछी ते धाडना सुन्नटोए मने लइने नेपाल वेची, तिहां सार्थवाहे लीधी. जे न्नालमां एटले कपालमां लख्युं होय ते थाय, परंतु तेमां अधिकुं उंबुं थायज नहीं ॥ ८ ॥ ते सार्थवाहे पण बब्बर कुलने विषे महाकाल राजाने नगरे (धरी के०) लइ जइने वेश्याने हाटे वेची, तेणे लइ नाटक-

कला शीखावीने नटी करी ॥ ए ॥ पछी नाटक छे प्रिय जेने एवो तिहांनो जे महाकाल राजा तेणे ते नाटकना पेटक एटले पेरूानी साथे मने ग्रही एटले वेचाती लइने विविध प्रकारे मने नचावी करीने पछी जे वारे पोतानी पुत्री मयणसेना परणावी, ते वारे तेना पतिने दायजामां (सही के०) निश्चे नाटकनां नवे पेरूां दीधां, तेमां मने पण (दीध के०) दीधी ॥ १० ॥

होजी नाटक करतां तास, आगे दिन केता गया हो लाल ॥ होजी देखी आप कुटुंब, उल्लस्युं दुःख तुम हुइ दया हो लाल ॥ ११ ॥ होजी मयणादुःख तव देखी, निज गुरुअत्तण मद कीयो हो लाल ॥ होजी ते मयणापति दास,-भावे अब मुज सलकीयो हो लाल ॥ १२ ॥ होजी एकज विजयपताक, मयणा सयणामां लहे हो लाल ॥ होजी जेहनुं शील सलिल, महिमाए मृगमद महमहे हो लाल ॥ १३ ॥

अर्थ—ते श्रीपालनी आगल नाटक करतां करतां आगल केटलाएक दिवस वही गया, परंतु आज तो आपणुं कुटुंब सहु देखीने मारा उपर तमारी दया थइ तेथी दुःख उल्लसी आव्युं ॥ ११ ॥ तमे मने परणावी ते वारे मयणानुं दुःख देखीने (निज गुरुअत्तण के०) में मारी मोटाइनो मद कर्यो, अहंकार कर्यो, तेना पसायथी (अब के०) हमणां तेज मयणानो पति जे श्रीपाल, तेना (दासभावे) सेवकभावे दासीभूत थइने में दासीपणुं कर्युं, माटे में जे मद करेलो हतो, (ते के०) ते मद सलक्यो ॥ १२ ॥ हवे सुरसुंदरी मयणासुंदरीनी स्तुति करे छे, एकज विजयपताक एटले अद्वितीय विजयपताकाने ते मयणासुंदरी पोताना सयणामां एटले सगां कुटुंबमां लहे, एटले पामी छे, वली जेनुं शीलरूप जे (सलिल के०) पाणी ते महिमाए करीने मृगमद जे कस्तूरी तेनी परे महमहाट करी रह्युं छे, एटले जगतमां जेना शीलनो सुगंध विस्तार पामी रह्यो छे ॥ १३ ॥

होजी मयणाने जिनधर्म, फलीयो बलीयो सुरतरु हो लाल ॥ होजी मुज मने मिथ्याधर्म, फलीयो विषफल विषतरु हो लाल ॥ १४ ॥ होजी एकज जलधि उप्पन्न, अमिय विषे जे आंतरो हो लाल ॥ होजी अम बिहुं बहेनी मांहि, तेह छे मत कोइ पांतरो हो लाल ॥ १५ ॥ होजी मयणा निज कुललाज, उद्योतक मणिदीपिका हो लाल ॥ होजी हुं छुं कुलमल-हेतु, सघन निशानी झीपिका हो लाल ॥ १६ ॥ होजी मयणा दीठे होय, समकितशुद्धि सोहामणी हो लाल ॥ होजी मुज दीठे मिथ्यात, धीठाइ होये अति घणी हो लाल ॥ १७ ॥

अर्थ—मयणाए श्रीजिनधर्म सेव्यो, ते तेने बलवंत एवुं जे (सुरतरु के०) कल्पवृक्ष ते समान प्रत्यक्ष दृश्यमान शुभरूप फले फूले करी फल्यो, अने में मिथ्यात्व धर्म सेव्यो, ते मुजने जेम विषतरु एटले विषवृक्षमां विषफल उपजे, ते समान दुःखरूप फले फूले करीने फल्यो. एटले जेवां बीज वाव्यां, तेवां फल पाम्यां ॥ १४ ॥ इहां कोइ अजाण पूछे के एकज कुलमां उपनी तमे बे बहेनो छो, ते मांहे एटलो फेर केम पड्यो ? तेने दृष्टांतपूर्वक उत्तर कहे छे के जेम एकज (जलधि के०) समुद्र उत्पत्तिनुं स्थानक छे, तेमां अमृत अने विष बेहु उपजे छे, ने तेमां आंतरुं छे, केमके अमृत छे ते रोगापहारकपणे जीवाडनार छे अने विष जे छे ते तो सर्वथा मारनारज छे, तेम इहां पण अमो बेहु बहेनो मांहे तेटलो अंतर छे, एटले मयणा अमृत तुल्य छे, अने हुं विष सरखी छुं. मत कोइ पांतरो एटले कोइ फेरफार जाणशो नहीं ॥ १५ ॥ वली मयणा पोताना कुलनी लाजने उद्योतक एटले प्रकाश करवामां मणिदीपिका एटले मणिरत्ननी दीवी समान छे, अने हुं तो कुलने मलिन करवानी हेतु एटले कारण छुं. ते केवी हेतु छुं ? तो के (सघन निशा के०)

वरसाद सहित अंधारी रात्रि होय तेनी पण दीपिका एटले दीपनारी छुं, एटले कुलने मलिन करवामां तो सघन रात्रिने जीतुं एवी हुं छुं ॥ १६ ॥ वली मयणाने दीठे थके सोहामणी समकितनी शुद्धि थाय, अने मुजने देखवाथी मिथ्यात्व लक्षण अत्यंत धीगाइ एटले वक्रता पेदा थाय ॥ १७ ॥

होजी एहवा बोली बोल, सुरसुंदरीए उपाइयो हो लाल ॥ होजी जे आनंद न तेह, नाटिक शतके पण कीयो हो लाल ॥ १८ ॥ होजी श्रीपाले वडवेग, हवे अरिदमण अणावीयो हो लाल ॥ होजी सुरसुंदरी तसु दीध, बहु रूद्धे वोलावीयो हो लाल ॥ १९ ॥ होजी ते दंपती श्रीपाल, मयणाने सुपसाउले हो लाल ॥ होजी पामे समकितशुद्धि, अध्यवसाये अति उले हो लाल ॥ २० ॥ होजी कुष्ठी पुरुष शत सात, मयणावयणे लही दया हो लाल ॥ होजी आराधी जिनधर्म, नीरोगी सघला थया हो लाल ॥ २१ ॥

अर्थ–इहां श्रीपाले लोकोने आनंद उपजाववा माटे सुरसुंदरीने नाटक करवानी आज्ञा करी हती. ते एक नाटक तो शुं ? पण (नाटक शतके के०) सेंकडागमे नाटक करवाथी पण जे आनंद (न के०) न उपजे, (तेह के०) ते आनंद पोताना दोष अने मयणाना गुण छे जेमां एवी पोतानी वचनचतुराइए करी पूर्वोक्त बोल बोलीने सुरसुंदरीए (उपाइयो के०) उपजाव्यो ॥ १८ ॥ हवे श्रीपाले घणी ताकीदथी अरिदमन राजाने तेडावी तेने सुरसुंदरी दीधी, तथा घणी रुद्धि आपीने वोलाव्यो, विदाय कर्यो ॥ १९ ॥ ते दंपती एटले अरिदमन अने सुरसुंदरी पण श्रीपाल तथा मयणाना सुपसायथी रुडा अत्यंत उला अध्यवसाये एटले पोताना परिणामनी शुद्धताए समकित पाम्यां ॥ २० ॥ हवे मयणानां वचनथी दयाने (लही के०) पामीने

श्री श्रीपाल राजानो रास

प्रकाशक–श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबई

શ્રીપાલ રાજા અને મતિસાગર પ્રધાન

शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक १३२.

ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૧૮૫.



વળી મતિસાગર નામે પ્રધાન પણ આવી શ્રીપાળ રાજાને પગે લાગ્યો, તે પૂર્વે પોતાના પિતાનો મોટો પ્રધાન હતો, તેની પેરે વળી પણ શ્રીપાળે તેને સર્વમાં વડેરો મોટો પ્રધાન કર્યો

લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુંબઇ.

श्रीजैनधर्म आराधीने सर्व नीरोगी थया हता एवा जे सातसें कुष्ठी पुरुषो ते श्रीपालनो यश सांजलीने तिहां आव्या ॥ २१ ॥

होजी ते पण नृप श्रीपाल, प्रणमे बहुले प्रेमसुं हो लाल ॥ होजी राणिम दीए नृप तास, वदनकमल नित उल्लस्युं हो लाल ॥ २२ ॥ होजी आवी नमे नृप पाय, मतिसागर पण मंत्रवी हो लाल ॥ होजी पूरव परे नरनाह, तेह अमात्य कीयो कवि हो लाल ॥ २३ ॥ होजी सुसरा साला नृप, माउल बीजा पण घणा हो लाल ॥ होजी तेहने दीए बहु मान, नृप आदरनी नहीं मणा हो लाल ॥ २४ ॥ होजी जाल मिलित करपद्म, सवि सेवे श्रीपालने हो लाल ॥ होजी इक दिन विनवे मंत्री, मतिसागर नृपालने हो लाल ॥ २५ ॥

अर्थ–ते पण श्रीपाल राजाने घणा प्रेमे करी प्रणम्या. ते सातसेंने श्रीपाल राणिम एटले राणानी ते उमरावनी पदवी देतो हवो. ते सर्वने सैन्यना नायक कर्या. ते श्रीपालनुं वदन जे मुख तद्रूप कमल ते नित्य एटले निरंतर सदाय उल्लस्युं, एटले विकसित थकुं रहे छे ॥ २२ ॥ वली मतिसागर नामे प्रधान पण आवीने श्रीपाल राजाने पगे लाग्यो, ते पूर्वे पोताना पितानो मोटो प्रधान हतो, तेनी पेरे वली पण श्रीपाले तेने (अमात्य कीयो कवि के०) सर्वमां वडेरो मोटो प्रधान कर्यो ॥ २३ ॥ वली ससरा अने साला पक्षना राजा तथा माउल एटले मोसाल पक्षना राजा तेमज बीजा पण घणा राजाउ अने सुजट आव्या छे, तेमने श्रीपाल बहुमान देतो हवो. श्रीपाल राजा आदर सन्मान आपवामां कांइ उछप राखतो नथी ॥ २४ ॥ ते सर्व पोताना जालस्थलने विषे मिलाव्यां छे (करपद्म के०) हाथरूप कमल जेमणे एवा थका एटले सर्व हाथ

ओगी पोताने मस्तके लगाडी नम्र थइ माथुं नीचुं नमावीने श्रीपाल राजानी सेवा करे छे. हवे एक समयने विषे मतिसागर प्रधान आवीने श्रीपालने विनवे छे ॥ २५ ॥

हांजी चोथे खंमे ढाल, बीजी हुइ सोहामणी हो लाल ॥
हांजी गुण गातां सिद्धचक्र, जश कीरति वाधे घणी हो लाल ॥२६॥

अर्थ—ए चोथा खंमने विषे शोजनीय बीजी ढाल संपूर्ण थइ. श्रीसिद्धचक्रजीना गुण गातां थका एटले स्तवतां थका घणो यश अने कीर्त्ति वधे ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

मतिसागर कहे पितृपदे, ठवीउ बालपण जेण ॥ उठावीयो तो तुज अरि,
ते सही दित्तमएण ॥ १ ॥ अरि करगत जे नवि लीए, शक्ति छते पितृरज्ज
॥ लोक हसे बल फोक तस, जेम शारद घन गज्ज ॥ २ ॥ ए बल ए ऋद्धि ए
सकल, सैन्य तणो विस्तार ॥ शुं फलशे जो लेशो नहीं, ते निज राज उदार ॥३॥

अर्थ—हवे मतिसागर प्रधान श्रीपालने कहे छे के बालपणे तमने तमारा पितृपदे एटले पिताने पाटे थाप्या हता, तिहांथी (जेण के०) जे तमारा (अरि के०) शत्रुए तमने उठाड्या, ते तमारो शत्रु (सही के०) निश्चे (दित्तमएण के०) दीप्तमदेन एटले दीपता मदे करी युक्त छे ॥ १ ॥ माटे अरि जे शत्रु तेना करगत एटले हाथमां गयुं एवुं जे (पितृरज्ज के०) पितानुं राज्य तेने पोतानी छती शक्तिए जे न लीए तो तेनी लोक मांहे हांसी थाय अने तेनुं बल पण फोक एटले व्यर्थ जाणवुं. केनी पेठे ? तो के जेम शरद्कालनो घन जे वरसाद ते फोकट गर्जना कस्या करे, पण पाणीनुं टीपुं वरसे नहीं, तेनी पेरे निरर्थक जाणवुं ॥ २ ॥ माटे जो ते पोतानं उदार राज्य तमे

नहीं लेशो तो तमारुं ए बल, पराक्रम तथा ऋद्धि जे दोलत अने वली आ सैन्यनो विस्तार, ते सर्वे शुं फलशे ? एटले ए सर्व पाम्यानुं शुं फल ? अर्थात् कांइज नहीं ॥ ३ ॥

नृप कहे साचुं तें कह्युं, पण छे चार उपाय ॥ सामे होय तो दंड श्यो,
साकरे पण पित्त जाय ॥ ४ ॥ अहो बुद्धि मंत्री भणे, दूत चतुरमुख
नाम ॥ नृप शीखावी मोकल्यो, पहोतो चंपा गाम ॥ ५ ॥

अर्थ–एवां प्रधाननां वचन सांभलीने राजा कहेवा लाग्यो के हे मंत्रीश्वर ! तें कह्युं ते सत्य छे, पण राज्य लेवाना साम, दाम, भेद अने दंड, ए चार उपायो छे, तेमां जो साम एटले मिष्ट वचनथीज कार्य थाय तो दंडनुं शुं काम ? जो साकर खाधाथी पित्त रोग जतो होय तो वली कडवुं औषध शामाटे करीए ? ॥ उक्तं–च ॥ साम प्रेमपरं वाक्यं, दानं चार्थविसर्जनम् ॥ भेदः परजनाकृष्टि,–र्निग्रहः परपीडनम् ॥ १ ॥ इति तत्त्वम् ॥ ४ ॥ एवुं श्रीपालनुं वचन सांभली मंत्री जे प्रधान ते कहे छे के अहो स्वामिन् ! तमारी बुद्धि तो मोटी छे, समुद्र जेवा गंभीर छो, तो हवे आ चतुरमुख नामे दूतने मोकलो, ते सामादि चार भेदने जाणनारो छे तथा मुखनी वाचालतामां चतुर छे, माटे चतुरमुख एनुं नाम छे. पछी तेने राजाए शीखावीने मोकल्यो, ते पण चंपा नगरीने गामे जइ पहोतो ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ राग बंगालो ॥ किसके चेले किसके पूत, आतमराम एकिला अवधूत ॥ मन मान ले ॥ ए देशी ॥

अजितसेन छे तिहां भूपाल, ते आगल कहे दूत रसाल ॥ साहिब सेवीए ॥
कला शीखवा जाणी बाल, जे तें मोकलीयो श्रीपाल ॥ साहिब० ॥ १ ॥

अर्थ–तिहां अजितसेन नामे राजा बेठो छे, तेनी आगल ते दूत आवीने पोतानी चतु-

राहथी अनुक्रमे मीठां, खाटां अने कडवां एवां त्रण प्रकारनां रसाल वचनो कहे छे. तिहां प्रथम मीठां वचन कहे छे के हे राजन् ! तमे वृद्ध थया छो, माटे हवे साहेब जे परमेश्वर, तेने सेवो, अथवा अमारा साहेबनी सेवा खीजमत करो, जे तमारा जाइनो छोकरो श्रीपाल पोताना बापने राज्यपाटे थाप्यो हतो तेने तमे पृथिवीनो जार खमी शकवाने असमर्थ जाणीने तेनी उपरथी जार उतारी तमे तमारी पोतानी खांधे चढावी लीधो, अने तेने बालक जाणी कलाउ शीखववा माटे बहार मोकली दीधो हतो ॥ १ ॥

सकल कला तेणे शीखी सार, सेना लइ चतुरंग उदार ॥ साहिब० ॥
आव्यो छे तुज खंधनो जार, उतारे छे ए निरधार ॥ साहिब० ॥ २ ॥
जीरण थंज तणो जे जार, नवे ठवीजे ते निरधार ॥ साहिब० ॥ लोके
पण जुगतुं छे एह, राज देइ दाखो तुमे नेह ॥ साहिब० ॥ ३ ॥

अर्थ–ते श्रीपाल (सार के०) प्रधान सर्व कलाउ शीखी, उदार एटले घणी मोटी एवी चतुरंगी सेना लइने तमे वृद्ध थया जाणी तमारे खंधे पडेलो राज्यकारजार संबंधी जे जार छे तेने (निरधार के०) निश्चे उतारे छे, एटले उतारवा कबूल थाय छे ॥ २ ॥ ते उपर दृष्टांत कहे छे के जेम (जीरण के०) जूना थइ गयेला थांजला उपर जार पडेलो होय ते उतारीने निश्चेथी पाछो फरी नवे थांजले ठवीजे, एटले नवा थांजला उपर मूकीए, ए वात लोकने विषे पण युक्त छे जे जूनो थंज काढीने नवो थंज बेसाडीए, ते कारणे तमे पण हवे वृद्ध जूना थंज जेवा थया छो, माटे नवा थंजरूप श्रीपालने राज्य दइने तेने स्नेह देखाडो. घणुं शुं कहुं ! अहीं त्रण गाथा सुधी बधां मीठां वचन कह्यां छे ॥ ३ ॥

बीजुं पयपंकज तस भूप, सेवे बहु भक्ति अनुरूप ॥ साहिब० ॥ तुमे नवि आव्या उपायो विरोध, नवि असमर्थ छे तेह शुं शोध ॥साहिब०॥ ४ ॥ किहां सरशव किहां मेरु गिरींद, किहां तारा किहां शारद चंद ॥ साहिब०॥ किहां खद्योत किहां दिननाथ, किहां सायर किहां छील्लर पाथ ॥ साहिब० ॥ ५ ॥ किहां पंचायण किहां मृगबाळ, किहां छींकर किहां सोवनथाळ ॥ साहिब० ॥ किहां कोद्रव किहां कूर कपूर, किहां कुकशा ने किहां घृतपूर ॥ साहिब० ॥ ६ ॥ किहां शून्य वेडी किहां आराम, किहां अन्यायी किहां नृप राम ॥ साहिब० ॥ किहां वाघ ने किहां वळी छाग, किहां दयाधरम किहां वळी याग ॥ साहिब० ॥ ७ ॥

अर्थ—हवे आम्ल एटले खाटां धींगां वचन कहे छे. बीजुं वळी (बहु के०) घणा (भूप के०) राजाओ ते श्रीपालना पदपंकजने भक्ति अनुरूप एटले अनुकूल भक्तिए करीने सेवे छे, पण तमे पोताना थका तेनी सेवा करवा आव्या नहीं, तेथी विरोध उपजाव्यो, तो ते विरोधनो शोध करवाने ते श्रीपाल शुं असमर्थ छे ? (नवि के०) ना, असमर्थ नथी ॥ ४ ॥ तेनामां अने तमारामां तो घणोज अंतर छे, ते हुं कहुं छुं, सांभळो. क्यां तो सरशवनो एक दाणो अने क्यां मेरु पर्वत ! वळी क्यां तारानुं तेज अने क्यां शरद् पूनमना चंद्रमानुं तेज ! क्यां खद्योत एटले आगीयो जीवडो उडे छे तेनुं तेज अने क्यां दिननाथ जे सूर्य उगे छे तेनुं तेज ! वळी क्यां सायर एटले समुद्रनी लहेर अने क्यां छील्लर पाथ एटले एक खाबोचीयानी लहेर ! ॥ ५ ॥ वळी क्यां पंचानन जे सिंह तेनुं बल अने क्यां मृगलाना बालकनुं बल ! तथा क्यां एक छींकरानी शोभा अने

राइथी अनुक्रमे मीठां, खाटां अने कडवां एवां त्रण प्रकारनां रसाल वचनो कहे छे. तिहां प्रथम मीठां वचन कहे छे के हे राजन् ! तमे वृद्ध थया छो, माटे हवे साहेब जे परमेश्वर, तेने सेवो, अथवा अमारा साहेबनी सेवा खीजमत करो, जे तमारा भाइनो छोकरो श्रीपाल पोताना बापने राज्यपाटे थाप्यो हतो तेने तमे पृथिवीनो भार खमी शकवाने असमर्थ जाणीने तेनी उपरथी भार उतारी तमे तमारी पोतानी खांधे चढावी लीधो, अने तेने बालक जाणी कलाउ शीखववा माटे बहार मोकली दीधो हतो ॥ १ ॥

सकल कला तेणे शीखी सार, सेना लइ चतुरंग उदार ॥ साहिब० ॥
आव्यो छे तुज खंधनो भार, उतारे छे ए निरधार ॥ साहिब० ॥ २ ॥
जीरण थंभ तणो जे भार, नवे ठवीजे ते निरधार ॥ साहिब० ॥ लोके
पण जुगतुं छे एह, राज देइ दाखो तुमे नेह ॥ साहिब० ॥ ३ ॥

अर्थ—ते श्रीपाल (सार के०) प्रधान सर्व कलाउ शीखी, उदार एटले घणी मोटी एवी चतुरंगी सेना लइने तमे वृद्ध थया जाणी तमारे खंधे पडेलो राज्यकारभार संबंधी जे भार छे तेने (निरधार के०) निश्चे उतारे छे, एटले उतारवा कबूल थाय छे ॥ २ ॥ ते उपर दृष्टांत कहे छे के जेम (जीरण के०) जूना थइ गयेला थांभला उपर भार पडेलो होय ते उतारीने निश्चेथी पाछो फरी नवे थांभले ठवीजे, एटले नवा थांभला उपर मूकीए, ए वात लोकने विषे पण युक्त छे जे जूनो थंभ काढीने नवो थंभ बेसारीए, ते कारणे तमे पण हवे वृद्ध जूना थंभ जेवा थया छो, माटे नवा थंभरूप श्रीपालने राज्य दइने तेने स्नेह देखाडो. घणुं शुं कहुं ! अहीं त्रण गाथा सुधी बधां मीठां वचन कह्यां छे ॥ ३ ॥

क्यां एक सोनाना थालनी शोभा ! तथा क्यां कोद्राना धान्यनुं भोजन अने क्यां कपूर समान उज्ज्वल कूरनुं भोजन ! तथा क्यां कूशकाना ढोकलानुं भोजन अने क्यां घृतना पूरे सहित घेवरनुं भोजन ! ॥ ६ ॥ वली क्यां शून्य वगडानी शोभा अने क्यां आराम एटले वाडी बगीचानी शोभा ! वली क्यां ते अन्यायी राजाउं अने क्यां श्रीरामचंद्रजी जेवा न्यायवंत राजा ! तथा क्यां वाघनुं बल अने क्यां छाग एटले बोकडानुं बल ! वली क्यां दयामय धर्म अने क्यां वली याग जे पापारंभ सहित यज्ञधर्म ! ॥ ७ ॥

किहां जूठ ने किहां वली साच, किहां रतन किहां खंडित काच ॥ साहिब० ॥
चढते उंछे छे श्रीपाल, पडते तुम सरिखा भूपाल ॥ साहिब० ॥ ८ ॥
जो तुं नवि निज जीवित रुठ, तो प्रणमी करे तेहज तुठ ॥ साहिब० ॥
जो गर्वित छे देखी रज्ज, तो रण करवा थाये सज्ज ॥ साहिब० ॥ ए ॥

अर्थ—वली क्यां ते जूठ बोलनारो अने क्यां सत्य भाषण करनारो ! तथा क्यां ते रत्ननी शोभा अने क्यां काचना कटकानी शोभा ! तो हे राजन् ! आ आटलां उंगां जे में तमोने कह्यां, ते मांहे जे चडतां उंगां कह्यां तेवो तो श्रीपाल राजा जाणवो, अने जे पडतां उंगां कह्यां ते समान तमारा सरखा राजा जाणवा. इहां चोथी गाथाथी आठमी गाथा सुधीनी पांच गाथामां खाटां वचन कह्यां छे ॥ ८ ॥ हवे कटु वचन कहे छे के हे राजन् ! जो तुं तारा पोताना जीवितव्य उपर रुष्ट थयो न हो तो आवीने श्रीपालने प्रणमीने तेनेज (तुठ के०) संतुष्ट कर, अथवा श्रीपाल राजाने प्रणाम कर तो तेज पोतानी मेले तारा उपर संतुष्ट थशे, अने जो तुं (रज्ज के०) राज्य देखीने गर्वित छो तो रण एटले संग्राम करवाने (सज्ज के०) सावधान थाजे ॥ए॥

तस सेनासागर मांहि जाण, तुज दल साथुचूर्ण प्रमाण ॥ साहिब० ॥
महोटाशुं नवि कीजे जुझ, सवि कहे एहवुं बुझ अबुझ ॥ साहिब० ॥
१० ॥ बोली एम रह्यो जब दूत, अजितसेन बोल्यो थइ भूत ॥ राजा
नहीं मले ॥ कहेजे तुं तुज नृपने एम, दूतपणानो जो छे प्रेम ॥ राजा० ॥
चंपा नगरीनो राय ॥ राजा नहीं मले ॥ ११ ॥ आदि मध्य अंते छे जाण,
मधुर आम्ल कटु जेह प्रमाण ॥ राजा० ॥ भोजन वचने सम परिणाम,
तिणे चतुरमुख तहारुं नाम ॥ राजा० ॥ १२ ॥

अर्थ–वली (तस के०) ते श्रीपालनी सेनारूप सागर मांहे तारुं (दल के०) लश्कर ते साथुउं जे जुवारनी धाणीना उंगणानो लोट होय ते प्रमाणे (जाण के०) जाणजे. वली मोटानी साथे युद्ध करीए नहीं. ए रीते सर्व बुझ तथा अबुझ एटले जाण अने अजाण सर्व लोको कहे छे ॥ १० ॥ एम पूर्वे कहेली रीते वचन बोलीने जे वारे दूत बोलतो बंध थयो ते वारे अजितसेन राजा भूतावेशनी पेरे क्रोध युक्त थइ बोल्यो के जो साचो दूतपणानो तुजने प्रेम छे तो हुं कहुं छुं तेज प्रमाणे तुं तारा राजाने जइने एम कहेजे के बीजा राजा आवीने तुजने मलीने नम्या, पण आ चंपा नगरीनो अजितसेन राजा तुजने मले नहीं अने नमे पण नहीं ॥ ११ ॥ हे दूत ! तुं जे मारी आगल वचन बोल्यो ते (आदि के०) प्रथम मधुर अने (मध्य के०) वचमां आम्ल एटले खाटां तथा अंतमां कटु एटले करूवां छे, ते तारां वचन अने भोजन ए बेहुने मांहोमांहे सम एटले सरखां परिणाम छे, एटले (जेह प्रमाण के०) जे प्रमाणे भोजन पण आद्यमां मिष्ट अने वचमां आम्ल तथा अंते तिक्त जमाय छे, तेम ए तारां वचन पण (जाण के०) जाणी लेजे, माटे ए त्रण गुण तारा मुखमां छे, तेथी तारुं नाम चतुरमुख छे ॥ १२ ॥

निज नहीं तेह अमारो कोइ, शत्रुभाव वहीए छे दोइ ॥ राजा० ॥ जीवतो
मूक्यो जाणी रे बाल, तेणे अमे निबल सबल श्रीपाल ॥ राजा० ॥ १३ ॥
निज जीवितने हुं नहीं रुठ, रुठ्यो तस जमराय अपूठ ॥ राजा० ॥
जेणे जगाड्यो सूतो सिंह, मुज कोपे तस न रहे लीह ॥ राजा० ॥ १४ ॥
जस बल सायर साथु प्राय, जेहना बल ते बीजा राय ॥ राजा० ॥ तेहमां
हुं वरूवानल जाण, सवि ते शोषुं न करुं काण ॥ राजा० ॥ १५ ॥ कहेजे
दूत तुं वेगो जाइ, आवुं छुं तुज पूठे धाइ ॥ राजा० ॥ बल परखीजे रण-
मेदान, खरूगनी पृथ्वी ने दियालुं दान ॥ राजा० ॥ १६ ॥

अर्थ–हवे जेटलां वचन दूते कह्यां हतां ते सर्वेनो उत्तर राजा आपे छे के हे दूत ! तुं कहे छे के श्रीपाल तमारो छे, पण ते अमारो कोइ नथी ! अने कदापि ते अमारो छे तोपण अमो बेहु पोतपोतामां शत्रुभावे वहीए छीए, एटले ते अमारो शत्रु छे ने अमे तेना शत्रु छीए. अमे एने बालक जाणीने जीवतो मूक्यो हतो, तेणे हवे अमे निर्बल थया अने ए श्रीपाल बलवान् थयो ॥ १३ ॥ वली हुं मारा जीवितने तो रुठ्यो नथी, पण अपूठो एटले उलटो यमराजा तेनी उपर रुठ्यो छे, कारण के जेणे सूता सिंहने आवी जगाड्यो, ते माटे हवे मारो कोप थयो तो एनी (लीह के०) रेखामात्र पण रहे नहीं ॥ १४ ॥ वली (जस के०) जेमनुं श्रीपालना सैन्यसमुद्रमां साथव प्रमाणे बल छे एवा निर्बल तो बीजा राजा जाणवा, परंतु मने तो तुं तेनी समुद्र सरखी सेनामां वरूवानल अग्नि सरखो जाणजे. हुं सर्व श्रीपालना सैन्यरूप समुद्रने शोषी लउं, परंतु तेमां उंछप राखुं नहीं ॥ १५ ॥ माटे हे दूत ! तुं वेगो एटले उतावलो जइने तारा राजाने कहेजे ने हुं पण तारी पछवाडेज धायो थको लडाइ करवा माटे आवुं छुं, बलनी परीक्षा रणमेदानमां करीए, ए वचनमां

वाद शा कामनो ! जेनुं खांडुं गाजतुं तेनी पृथ्वी जाणवी, अने जेनी विद्या जागती होय तेनुं दान जाणवुं. अथवा पृथ्वी तो खांमावालानी छे, पण निर्माल्यनी नथी; अने विद्याना दान समान बीजुं दान नथी ॥ १६ ॥

चोथे खंमे त्रीजी ढाल, पूरण हुइ ए राग बंगाल ॥ राजा० ॥
सिद्धचक्रगुण गावे जेह, विनय सुजश सुख पावे तेह ॥ राजा० ॥ १७ ॥

अर्थ—चोथा खंडने विषे त्रीजी ढाल बंगाल रागमां पूर्ण थइ. जे प्राणी श्रीसिद्धचक्रजीना गुण गाय ते प्राणी विनय, सुयशरूप सुख पामे ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

वचन कहे वयरी तणां, दूत जइ अति वेग ॥ कडुआं काने ते सुणी, हुउ श्रीपाल सतेग ॥ १ ॥ उच्च भूमि तटिनीतटे, सेना करी चतुरंग ॥ चंपा दिशि जइ तिणे दीया, पट आवास उत्तंग ॥ २ ॥ सामो आव्यो सबल तव, अजितसेन नरनाह ॥ मांहोमांहि दल बिहुं मळ्यां, सगरव अधिक उत्साह ॥ ३ ॥

अर्थ—हवे वैरीनां वचन सांभलीने तिहांथी दूते अत्यंत उतावला जइने ते श्रीपालने आवी संभलाव्यां. ते कडु वचन काने सांभलीने श्रीपाल राजा (सतेग के०) तरवारे सहित थयो, एटले लमाइ करवाने उजमाल थयो ॥ १ ॥ पछी तटिनी जे नदी तेना तट उपर जिहां उंची भूमि छे, तिहां चतुरंगिणी सेना तैयार करीने श्रीपाल राजाए चंपा नगरीनी दिशाए जइ (उत्तंग के०) घणा उंचां एवां (पट के०) वस्त्र तेना आवास एटले तंबु दीधा, अर्थात् तंबु खमा कस्या ॥ २ ॥ तेनी सामो अजितसेन राजा पण सबल सैन्य सहित आव्यो, ते बेहु (दल के०) कटक

मांहोमांहे आवी मळ्यां, पण ते केवां छे ? तो के (सगरव के०) गर्वे करी सहित अने संग्राम करवानो अधिक उत्साह धरतां छे ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कडखानी देशी ॥

चंग रणरंग मंगल हुआं अति घणां, भूरि रणतूर अविदूर वाजे ॥
कौतुकी लाख देखण मळ्या देवता, नाद दुंदुभि तणे गयण गाजे ॥ चंग० ॥ १ ॥ उग्रताकरण रणभूमि तिहां शोधीए, रोधीए अवधि करी शस्त्रपूजा ॥ बोधीए सुभट कुल वंश शंसा करी, योधीए कवण विण तुज दूजा ॥ चंग० ॥ २ ॥

अर्थ—(चंग के०) मनोहर, घणो सुंदर एवो जे (रणरंग के०) संग्राम करवानो उत्कर्ष, ते करवा माटे बंदिजन सिंधूका रागमां अत्यंत मनने आह्लादकारक एवां घणां मांगलिक करता हवा, एटले जे कार्यनो प्रारंभ करीए तेनी धुरे मंगल विना ते कार्यनी सिद्धि थाय नहीं, ते माटे घणां मंगल थयां. वली (भूरि के०) घणां एवां (रणतूर के०) संग्रामनां काहली, शरणाइ प्रमुख वाजित्र ते (अविदूर के०) अत्यंत नजीक अथवा अस्खलित वाजे, पण मांहोमांहे सघन भिन्न भिन्न स्वरे वाजे एम नहीं. एवां घणां वाजित्र वाजते थके वली तिहां सैन्यने विषे युद्ध जोवानो अभिलाष छे जेमने एवा निकटवर्ती कौतुकी लक्षबद्ध देवता ते युद्धनुं कौतुक जोवा माटे मळ्या छे. ते देवताउं पण आकाशे रह्या थका दुंदुभिउं वगाडी रह्या छे, तेना (नाद के०) शब्दे करी तमाम गयण जे आकाश ते गर्जारव करी रह्युं छे. ते शब्दे करी बेहु सैन्यना सुभटोने मांहोमांहे युद्ध करवानो अभिलाष वधतो हवो ॥ १ ॥ हवे अमे इहां संग्राम करशुं, एवी (उग्रताकरण के०) मोटाइ करवाने अर्थे तिहां रणभूमि एटले संग्राम करवानी भूमिने (शोधीए

के०) कचरो, कांटो, कांकरो काढी नाखी शोधीने साफ करे, तथा उंची नीची विषम टालीने बरोबर सरखी करे. पछी ते जगानी अवधि एटले मर्यादा करी पोतानी हद सुधी निशान स्थापीने तेटली भूमि पोतपोताने वास्ते रोधे एटले रोधी राखे. पछी बेहु सैन्यना सुभट मांहोमांहे पोतपोतानां शस्त्र जे खड्गादिक आयुध तेनी पुष्प, चंदन, धूप, दीपे करी पूजा करे. वली बेहु सैन्यमां (बोधीए के०) बंदिजन जे बिरुदावलीना बोलनारा भाट, चारण प्रमुख, ते सुभटोना कुल वंश ते पिताना पक्षनुं कुल अने माताना पक्षनो (वंश के०) जाति एटले आ अमुक सुभट अमुक कुलनो उपन्यो छे, ए अमुक जातिनो छे, एवी रीते कुल वंशनी (शंसा के०) प्रशंसा करीने कहे छे के भला भला हे सुभटो ! तमने शाबास छे ! आज तमारा स्वामीनुं काम पड्युं छे, माटे स्वामिभक्तनुं ए लक्षण छे के जीवितव्य पर्यंत स्वामीना काममां पाछो पग भरवोज नहीं. ते माटे अहो सुभटो ! आज इहां (विण तुझ दूजा के०) तमारा विना बीजा कोण (योधीए के०) जुझशे ! एवी कीर्त्ति बोलीने सुभटोने शुरपणुं हढावे छे ॥ २ ॥

चरचीए चारु चंदनरसे सुभट तनु, अरचीए चंपके मुकुट सीसे ॥
सोहीए हब वर वीरवलये तथा, कल्पतरु परि बन्या सुभट दीसे ॥चंग०॥३॥

अर्थ–वली (चारु के०) मनोहर सुगंध युक्त एवो चंदनरस एटले बावना चंदननो रस, तेणे करी (सुभट के०) सुभटो तनु एटले शरीरने (चरचीए के०) चर्चे छे, विलेपन करे छे, ते केसरे करी गरकाव थया छे, ते योद्धाउ युद्धमांथी जय मेलव्या विना पाछा हठेज नहीं. आज पण लग्नाइमां जे केसरियां वस्त्र करे छे ते युद्धमांथी पाछा फरता नथी, अवश्य युद्धने जीतेज अने जो न जीते तोपण जीवता नासी जाय नहीं. ए बे मार्ग तेमना छे. तथा वली (चंपके के०) चंपक वृक्षनां फूलनां छोगांउए करी सुभटो पोतानां माथांने विषे रहेला मुकुटने अर्चे छे,

एटले फूलनां गोगां मुकुटमां लटकावे छे, ते पण युद्धमांथी पाछा पग भरे नहीं, एम लोकोक्ति छे. तेमज केटलाएक सुभटो पोताना (हथ के०) हाथने विषे (वर के०) श्रेष्ठ एवां (वीरवलय के०) वीरपणानां कडां पहेरे छे, एटले वीरवलये करी जेना हाथ शोभे छे ते पण वीरनुं बिरुद धारण करे छे, माटे ते संग्राममांथी पाछा पग भरे नहीं. एवी रीते चंदने विलेपित अंगवाला तथा चंपानां फूलोनां गोगां धरनारा अने वीरवलय पहेरनारा इत्यादिक शोभाए करी सुशोभित थका ते सुभटो जाणीए साक्षात् कल्पवृक्षज होय नहीं ? तेनी परे बन्या थका दीसे छे ॥ ३ ॥

कोइ जननी कहे जनक मत लाजवे, कोइ कहे मादरुं बिरुद राखे ॥
जनक पति पुत्र तिहुं वीर जश उजला, सोहि धन जगतमां अ-
णीय आखे ॥ चंग० ॥ ४ ॥

अर्थ–हवे ते सुभटो घरथी तैयारी करी युद्ध करवा माटे नीकल्या, ते वखते कोइक सुभट पोतानी मातानी तेमज कोइक पोतानी स्त्रीनी शीख मागे, ते वारे तेने (जननी के०) माता एम कहे छे के हे पुत्र ! तारा (जनक के०) पिता महा शूरवीर हता, कोइ स्थले संग्राममांथी पाछा हठ्या नथी, एवा वीरबिरुदना धारक हता, माटे तेने तुं लजावीश नहीं, तुं पण जयवंत थइने मुजने मुख देखाडजे, अथवा शत्रुने हणतां मरण पामजे, पण नासजे नहीं. वली कोइक सुभटनी माता एम कहे छे के तुं मारुं बिरुद राखजे, केमके हुं वीरपुत्री अने वीरपत्नी ए बे बिरुदधारक तो कहेवाणी छुं, एटले मारो पिता अने मारो भर्त्तार ए बे तो शूरवीर थइ गया छे, हवे तुं पण शूरवीर थजे के जेणे करी हुं त्रीजा वीरप्रसूता नामे बिरुदनी धारण करनारी पण कहेवाउं ! एटले जनक, पति अने पुत्र, ए त्रणे जेना वीर यशे करी उजला जगत्रयमां आखी अणीए रहे ते धन्य. एवां मातानां वचन सांभली ते सुभट वीरपणुं आदरी संग्राममां आव्या ॥ ४ ॥

कोइ रमणी कहे हसीय तुं सहीश किम, समर करवाल शर कुंत धारा ॥ नयणबाणे हएयो तुज में वश कीयो, तिहां न धीरज रह्यो कर विचारा ॥ चंग० ॥ ५ ॥ कोइ कहे माहरो मोह तुं मत करे, मरण जीवन तुज न पीठ छांडुं ॥ अधररस अमृतरस दोय तुज सुलन्न छे, जगत जय हेतु हो अचल खांडुं ॥ चंग० ॥ ६ ॥

अर्थ—वली कोइक सुनट सन्नद्ध थइ पोतानी स्त्रीनी शीख मागे छे, ते वारे ते स्त्री तेनी सामुं जोइ हसीने कहे छे के हे स्वामिन् ! तुं युद्ध करवा जाय छे, पण तिहां तो शूरवीर अने धैर्यवंतनुं काम छे, ते तारामां देखातुं नथी, तो (समर के०) संग्रामने विषे (करवाल के०) खड्ग, (शर के०) बाण अने (कुंत के०) नालां तेनी तीक्ष्ण एवी धाराउने तुं केम सहन करी शकीश ? ए वातनुं मने आश्चर्य लागे छे, कारण के तुं सहन करी शकीश एवी मने कांइ प्रतीति आवती नथी. एवी स्त्रीनी वाणी सांनलीने सुनट बोल्यो के हे प्रिये ! तें मारी अधीरता क्यां दीठी ? ते वारे स्त्री बोली के रतिने अवसरे में मारां नेत्ररूप बाणे करीने हएयो, तेथी तुं विंधाइ गयो, अने तुजने में वश करी लीधो, तो त्यां तारुं धैर्य निश्चलताए रह्युं नहीं, माटे शत्रुनां बाणो केम सहन करीश ? तेनो विचार तुं कर. ते सांनली सुनट बोल्यो के हे प्रिये ! रतिने अवसरे तो इंद्र, ब्रह्मा, हरि, हरादिक जे सहस्रगमे अक्षौहिणी सैन्यने जीते एवा सामर्थ्यवाला हता, तोपण ते स्त्रीनी आगल निर्बल थया तो मारुं शुं गजुं छे? ॥ ५ ॥ तथा कोइक सुनटनी स्त्री कहे छे के तुं मनमां लावीश नहीं के कदाचित् संग्राममां हुं मरण पामीश तो पछी मारी स्त्री कोना आधारे जीवशे ? एवो तुं मारो मोह करीश नहीं, केमके मारुं मरवुं तथा जीववुं बधुं तारी पछवाडेज छे. हुं तारी पीठ छांकीश नहीं, एटले तुं जो संग्राममां जीत करी

निज नहीं तेह अमारो कोइ, शत्रुभाव वहीए छे दोइ ॥ राजा० ॥ जीवतो
मूक्यो जाणी रे बाल, तेणे अमे निबल सबल श्रीपाल ॥ राजा० ॥ १३ ॥
निज जीवितने हुं नहीं रुठ, रुठ्यो तस जमराय अपूठ ॥ राजा० ॥
जेणे जगाव्यो सूतो सिंह, मुज कोपे तस न रहे लीह ॥ राजा० ॥ १४ ॥
जस बल सायर साथु प्राय, जेहना बल ते बीजा राय ॥ राजा० ॥ तेहमां
हुं वडवानल जाण, सवि ते शोषुं न करुं काण ॥ राजा० ॥ १५ ॥ कहेजे
दूत तुं वेगो जाइ, आवुं छुं तुज पूठे धाइ ॥ राजा० ॥ बल परखीजे रण-
मेदान, खडगनी पृथ्वी ने वियानुं दान ॥ राजा० ॥ १६ ॥

अर्थ–हवे जेटलां वचन दूते कह्यां हतां ते सर्वनो उत्तर राजा आपे छे के हे दूत ! तुं कहे छे के श्रीपाल तमारो छे, पण ते अमारो कोइ नथी ! अने कदापि ते अमारो छे तोपण अमो बेहु पोतपोतामां शत्रुभावे वहीए छीए, एटले ते अमारो शत्रु छे ने अमे तेना शत्रु छीए. अमे एने बालक जाणीने जीवतो मूक्यो हतो, तेणे हवे अमे निर्बल थया अने ए श्रीपाल बलवान् थयो ॥ १३ ॥ वली हुं मारा जीवितने तो रुठ्यो नथी, पण अपूठो एटले उलटो यमराजा तेनी उपर रुठ्यो छे, कारण के जेणे सूता सिंहने आवी जगाव्यो, ते माटे हवे मारो कोप थयो तो एनी (लीह के०) रेखामात्र पण रहे नहीं ॥ १४ ॥ वली (जस के०) जेमनुं श्रीपालना सैन्यसमुद्रमां साथव प्रमाणे बल छे एवा निर्बल तो बीजा राजा जाणवा, परंतु मने तो तुं तेनी समुद्र सरखी सेनामां वडवानल अग्नि सरखो जाणजे. हुं सर्व श्रीपालना सैन्यरूप समुद्रने शोषी लउं, परंतु तेमां छेप राखुं नहीं ॥ १५ ॥ माटे हे दूत ! तुं वेगो एटले उतावलो जइने तारा राजाने कहेजे ने हुं पण तारी पछवाडेज धायो थको लडाइ करवा माटे आवुं छुं, बलनी परीक्षा रणमेदानमां करीए, ए वचनमां

वाद शा कामनो ! जेनुं खांडुं गाजतुं तेनी पृथ्वी जाणवी, अने जेनी विद्या जागती होय तेनुं दान जाणवुं. अथवा पृथ्वी तो खांडावालानी छे, पण निर्माल्यनी नथी; अने विद्याना दान समान बीजुं दान नथी ॥ १६ ॥

चोथे खंडे त्रीजी ढाल, पूरण हुइ ए राग बंगाल ॥ राजा० ॥

सिद्धचक्रगुण गावे जेह, विनय सुजश सुख पावे तेह ॥ राजा० ॥ १७ ॥

अर्थ—चोथा खंडने विषे त्रीजी ढाल बंगाल रागमां पूर्ण थइ. जे प्राणी श्रीसिद्धचक्रजीना गुण गाय ते प्राणी विनय, सुयशरूप सुख पामे ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

वचन कहे वयरी तणां, दूत जइ अति वेग ॥ कडुआं काने ते सुणी, हुउ श्रीपाल सतेग ॥ १ ॥ उच्च भूमि तटिनीतटे, सेना करी चतुरंग ॥ चंपा दिशि जइ तिणे दीया, पट आवास उत्तंग ॥ २ ॥ सामो आव्यो सबल तव, अजितसेन नरनाह ॥ मांहोमांहि दल बिहुं मल्यां, सगरव अधिक उत्साह ॥ ३ ॥

अर्थ—हवे वैरीनां वचन सांभलीने तिहांथी दूते अत्यंत उतावला जइने ते श्रीपालने आवी संभलाव्यां. ते कटु वचन काने सांभलीने श्रीपाल राजा (सतेग के०) तरवारे सहित थयो, एटले लडाइ करवाने उजमाल थयो ॥ १ ॥ पछी तटिनी जे नदी तेना तट उपर जिहां उंची भूमि छे, तिहां चतुरंगिणी सेना तैयार करीने श्रीपाल राजाए चंपा नगरीनी दिशाए जइ (उत्तंग के०) घणा उंचां एवां (पट के०) वस्त्र तेना आवास एटले तंबु दीधा, अर्थात् तंबु खडा कर्या ॥ २ ॥ तेनी सामो अजितसेन राजा पण सबल सैन्य सहित आव्यो, ते बेहु (दल के०) कटक

मांहोमांहे पाणी मळ्यां, पण ते केवां छे ? तो के (सगरव के०) गर्वे करी सहित अने संग्राम करवानो अधिक उत्साह धरतां छे ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कडखानी देशी ॥

चंग रणरंग मंगल हुआं अति घणां, नूरि रणतूर अविदूर वाजे ॥
कौतुकी लाख देखण मळ्या देवता, नाद डुंडुभि तणे गयण गाजे ॥ चंग०
॥ १ ॥ उग्रताकरण रणनूमि तिहां शोधीए, रोधीए अवधि करी
शस्त्रपूजा ॥ बोधीए सुभट कुल वंश शंसा करी, योधीए कवण विण
तुज्ज दूजा ॥ चंग० ॥ २ ॥

अर्थ–(चंग के०) मनोहर, घणो सुंदर एवो जे (रणरंग के०) संग्राम करवानो उत्कर्ष, ते करवा माटे बंदिजन सिंधूडा रागमां अत्यंत मनने आह्लादकारक एवां घणां मांगलिक करता हवा, एटले जे कार्यनो प्रारंभ करीए तेनी धुरे मंगल विना ते कार्यनी सिद्धि थाय नहीं, ते माटे घणां मंगल थयां. वली (नूरि के०) घणां एवां (रणतूर के०) संग्रामनां काहली, शरणाइ प्रमुख वाजित्र ते (अविदूर के०) अत्यंत नजीक अथवा अस्खलित वाजे, पण मांहोमांहे सघन भिन्न भिन्न स्वरे वाजे एम नहीं. एवां घणां वाजित्र वाजते थके वली तिहां सैन्यने विषे युद्ध जोवानो अभिलाष छे जेमने एवा निकटवर्ती कौतुकी लक्षबद्ध देवता ते युद्धनुं कौतुक जोवा माटे मळ्या छे. ते देवताओ पण आकाशे रह्या थका डुंडुभिओ वगाडी रह्या छे, तेना (नाद के०) शब्दे करी तमाम गयण जे आकाश ते गर्जारव करी रह्युं छे. ते शब्दे करी बेहु सैन्यना सुभटोने मांहोमांहे युद्ध करवानो अभिलाष वधतो हवो ॥ १ ॥ हवे अमे इहां संग्राम करशुं, एवी (उग्रताकरण के०) मोटाइ करवाने अर्थे तिहां रणभूमि एटले संग्राम करवानी भूमिने (शोधीए

मुकुटमां लटकावे छे, ते पण युद्धमांथी पाछा पग भरे नहीं, एम लोकोक्ति
फूलनां छोगां मुकुटमां लटकावे छे, ते पण युद्धमांथी पाछा पग भरे नहीं, एम लोकोक्ति हाथने विषे (वर के०) श्रेष्ठ एवां (वीर-
छे. तेमज केटलाएक सुभटो पोताना (हथ के०) हाथ शोभे छे ते पण वीरनुं
वलय के०) वीरपणानां कड़ां पहेरे छे, एटले वीरवलये करी जेना हाथ शोभे छे ते पण वीरनुं
बिरुद धारण करे छे, माटे ते संग्राममांथी पाछा पग भरे नहीं. एवी रीते चंदने विलेपित अंगवाला
तथा चंपानां फूलोनां छोगां धरनारा अने वीरवलय पहेरनारा इत्यादिक शोभाए करी सुशोभित
थका ते सुभटो जाणीए साक्षात् कल्पवृक्षज होय नहीं ? तेनी परे बन्या थका दीसे छे ॥ ३ ॥

कोइ जननी कहे जनक मत लाजवे, कोइ कहे माहरुं बिरुद राखे ॥
जनक पति पुत्र तिहुं वीर जश उजला, सोहि धन जगतमां अ-
णीय आखे ॥ चंग० ॥ ४ ॥

अर्थ–हवे ते सुभटो घरथी तैयारी करी युद्ध करवा माटे नीकल्या, ते वखते कोइक सुभट
पोतानी मातानी तेमज कोइक पोतानी स्त्रीनी शीख मागे, ते वारे तेने (जननी के०) माता
एम कहे छे के हे पुत्र ! तारा (जनक के०) पिता महा शूरवीर हता, कोइ स्थले संग्राममांथी
पाछा हठ्या नथी, एवा वीरबिरुदना धारक हता, माटे तेने तुं लजावीश नहीं, तुं पण जयवंत
थइने मुजने मुख देखाडजे, अथवा शत्रुने हणतां मरण पामजे, पण नासजे नहीं. वली कोइक
सुभटनी माता एम कहे छे के तुं मारुं बिरुद राखजे, केमके हुं वीरपुत्री अने वीरपत्नी ए बे
बिरुदधारक तो कहेवाणी छुं, एटले मारो पिता अने मारो भर्त्तार ए बे तो शूरवीर थइ गया
छे, हवे तुं पण शूरवीर थजे के जेणे करी हुं त्रीजा वीरप्रसूता नामे बिरुदनी धारण करनारी पण कहे-
वाउं ! एटले जनक, पति अने पुत्र, ए त्रणे जेना वीर यशे करी उजला जगत्रयमां आखी अ-
णीए रहे ते धन्य. एवां मातानां वचन सांभली ते सुभट वीरपणुं आदरी संग्राममां आव्या ॥ ४ ॥

कोइ रमणी कहे हसीय तुं सहीश किम, समर करवाल शर कुंत धारा ॥ नयणबाणे हण्यो तुज में वश कीयो, तिहां न धीरज रह्यो कर विचारा ॥ चंग० ॥ ५ ॥ कोइ कहे माहरो मोह तुं मत करे, मरण जीवन तुज न पीठ छांडुं ॥ अधररस अमृतरस दोय तुज सुजन्न छे, जगत जय हेतु हो अचल खांडुं ॥ चंग० ॥ ६ ॥

अर्थ—वली कोइक सुजट सन्नद्ध थइ पोतानी स्त्रीनी शीख मागे छे, ते वारे ते स्त्री तेनी सामुं जोइ हसीने कहे छे के हे स्वामिन् ! तुं युद्ध करवा जाय छे, पण तिहां तो शूरवीर अने धैर्यवंतनुं काम छे, ते तारामां देखातुं नथी, तो (समर के०) संग्राममने विषे (करवाल के०) खड्ग, (शर के०) बाण अने (कुंत के०) जालां तेनी तीक्ष्ण एवी धाराउने तुं केम सहन करी शकीश ? ए वातनुं मने आश्चर्य लागे छे, कारण के तुं सहन करी शकीश एवी मने कांइ प्रतीति आवती नथी. एवी स्त्रीनी वाणी सांजलीने सुजट बोल्यो के हे प्रिये ! तें मारी अधीरता क्यां दीठी ? ते वारे स्त्री बोली के रतिने अवसरे में मारां नेत्ररूप बाणे करीने हण्यो, तेथी तुं विंधाइ गयो, अने तुजने में वश करी लीधो, तो त्यां तारुं धैर्य निश्चलताए रह्युं नहीं, माटे शत्रुनां बाणो केम सहन करीश ? तेनो विचार तुं कर. ते सांजली सुजट बोल्यो के हे प्रिये ! रतिने अवसरे तो इंद्र, ब्रह्मा, हरि, हरादिक जे सहस्त्रगमे अक्षौहिणी सैन्यने जीते एवा सामर्थ्यवाला हता, तोपण ते स्त्रीनी आगल निर्बल थया तो मारुं शुं गजुं छे ? ॥ ५ ॥ तथा कोइक सुजटनी स्त्री कहे छे के तुं मनमां लावीश नहीं के कदाचित् संग्राममां हुं मरण पामीश तो पछी मारी स्त्री कोना आधारे जीवशे ? एवो तुं मारो मोह करीश नहीं, केमके मारुं मरवुं तथा जीववुं बधुं तारी पछवाडेज छे. हुं तारी पीठ छांमीश नहीं, एटले तुं जो संग्राममां जीत करी

पाछो घेर आवीश तो मंगलद्रव्ये तुने वधावीने हुं घरमां तेडी जइश, अने कदाचित् संग्राममां मरण पामीश तो हुं पण तारी पछवाडे अग्निप्रवेश करी मरण पामीश. ए रीते एक तो अधररस एटले होठनो रस अने बीजो अमृतरस, ए बे रस तुजने सुलभ छे. ते केवी रीते? तो के जो शत्रुनो पराजय करीने जीवतो घेर आवीश तो हुं तुजने आनंदित थकी स्मरातुर थइने रतिने अवसरे आलिंगन दइश. ते समये तुं मारा होठना चुंबनरूप रसनो स्वाद पामीश, अने जो कदापि संग्राममां तारा प्राणनो त्याग थशे तो तुं स्वर्गने विषे देवता थइश, अने हुं तारी पछवाडे अग्निप्रवेश करी सती थइने देवांगना थइश तो त्यां देवतानी पदवीमां अमृतरस सुलभ छे, एटले जो जीवतो रह्यो तो अधररस अने मरण पाम्यो तो अमृतरस, ए बे तुजने सुलभ छे, माटे जे कामे जाय छे तेमां सावधान थइने स्वामीनुं कार्य सुधारजे, पण कायर थइने पाछा पग भरीश नहीं. जेथी हे स्वामिन्! त्रण जगतमां जययशनुं हेतु एवुं तारे अचल खांडुं (हो के०) थाउ, केमके जे शूरपणुं आदरीने मरण पामे छे तेने आ लोकमां बलवत्तर सुभटपणानो यश मले छे, अने परलोकमां देवपद पाम्या थका यशकांतिनुं दीप्तिपणुं प्राप्त थाय, अने जे कायर थाय ते आ लोकमां अने परलोकमां अपयशनुं कारण थइ पडे ॥ ६ ॥

इम अधिक कौतुके वीररस जागते, लागते वचन हुआ सुभट ताता ॥
सूरपण क्रूर हुइ तिमिरदल खंडवा, पूर्व दिशि दाखवे किरण रातां॥चंग०॥७॥

अर्थ–(इम के०) ए रीते रात्रिए जे वारे सर्व सुभटो युद्धमां जवाने तैयार थाय छे, ते वखते कोइनी स्त्रीनां, कोइनी मातानां वेधालां वचन सांभलते तथा वली बंदिजनोनी बिरुदावलीना पाठमां पोताना वंशनी प्रशंसा सांभलते अने एवां कौतुके अधिक वीररसनो उद्गम थाते एटले शूरवीर तो प्रथमथीज छे, अने वली उक्ति युक्तिनां वचन ते सुभटोने काने लाग्यां, तेथी ते लागतां वचनने योगे करी वली अधिक वीररसे जाग्रत थया थका ते सुभटो युद्ध करवाने घणा ताता थया,

एटले तेजवंत थया, तेमनां शरीरमां रक्त वर्ण प्रगट थयो. जेम कोइक प्राणी प्रथमथी कषायवंत तो बेज, ते वली विशेष कषायोदय थवा योग्य एवां कोइनां वचन सांजले ते वारे तेने विशेषे करी कषायोज्ञम थाय, तेम इहां पण सर्व सुजटो विशेष वीररसमय थया थका युद्ध जणी तैयार थया. ए सर्व व्यतिकर रात्रि संबंधी जाणवो. हवे प्रजात थवा लाग्यो, ते वारे कवीश्वर एवी संजावना करे बे जे सूर्यें पूर्वे विचार कस्यो हतो के बेहु राजानां लश्कर आव्यां बे, माटे बेहुनुं साम्य थाय तो सारी वात, परंतु तेम तो थयुं नहीं, अने बेहु लश्कर मांहोमांहे एक बीजानो नाश करवाने तैयार थयां, ते जोइ सूर्यें पण विचास्युं जे हवे हुं पण मारा शत्रुनो नाश करुं. एम चिंतवी पोते निषध पर्वतना कूटांतराले रह्यो हतो तिहांथी क्रूर थइ रक्तपणुं आदरी लालचोल नेत्र करीने पोतानो शत्रु जे तिमिरदल एटले अंधकारनो समूह तेनुं खंमन करवाने अर्थे पूर्व दिशि जणि रातां किरणने देखाडे बे, एटले प्रजातकाल थयो ते वारे रक्त सूर्योदय पण थयो, अने सुजटो पण युद्ध करवाने ताता एटले रक्त वर्णवाला थया ॥ ७ ॥

रोपी रणथंज संरंज करी अति घणो, दोइ दल सुजट तव सबल जुझे ॥
जूमिने जोगता जोइ निज योग्यता, अमल आरोगता रण न मुंझे॥चंग०॥८॥

अर्थ–हवे जे प्रथम बेहु सैन्यवालाए संग्राम करवानी जूमि शुद्ध करी हती तेना मध्य जागे रणनो स्तंज रोपीने बे दिशाए बेहु सैन्यवालाए पोतपोतानी जूमिका स्थापी, अने पढी हाथी, घोमा, रथ अने पाला सुजटनो समूह थइने अत्यंत घणो युद्धनो (संरंज के०) प्रारंज करीने अथवा संरंज एटले क्रोधयुक्त थइने (दोइ दल के०) बेहु कटकवाला सबल जुझे, एटले बल सहित थया थका मांहोमांहे (जुझे के०) युद्ध करवा मंड्या. तिहां घणा दिवसनी सुजटोनां मनमां जे युद्ध करवानी वांबा हती ते अहीं पूर्ण करे बे, ने विचारे बे जे अमारा स्वामी आगल

आगारो मुजरो नाव. एम जाणी हर्षथी संग्राम करे छे. ते संग्राम मांहे जे मोटा मोटा हाकम, फोजदार, सेनाधिपति, पटाना खेलनार, अमीर, उमरावो तथा सीपाइओ छे ते राजानी आपेली वृत्तिनी जोग्यता जे जोगववुं ते प्रमाणे पोतानी योग्यता जोइने विचारे छे जे अमे घणा दिवस थया स्वामीनी आपेली धरती गरास खाइए छीए, माटे आज अमारा स्वामीने कार्ये संग्राममां लडवुं आमने योग्य छे, एवी योग्यता जोइ अधिक लडे छे. वली अमल ते कसुंबा काढी मांहोमांहे आरोगता थका पोतपोतानी मर्यादा तथा कुलीनपणुं विचारी अत्यंत युद्ध करता थका रणसंग्राममां मुंकाता नथी. तेनां मनमां एवो विचार छे के जेम तेम करी अमारा स्वामीनी जीत थाय, पण ते तो पुण्याधीन वात छे, तथापि निमित्तशास्त्रमां कह्युं छे के जेनुं सैन्य उंची भूमिकाए उतर्युं होय, वली जे न्यायवंत होय, तेनी जीत थाय. ते सर्व प्रकारनी शुद्धता तो हाल श्रीपाल राजाने छे. वली पुण्यप्रकृति पण एनी सारी छे, तेथी श्रीपालनो जय थाय एवुं देखाय छे ॥ ८ ॥

नीर जिम तीर वरसे तदा योधघन, संचरे बग परे धवल नेजा ॥ गाज
दलसाज ऋतु आइ पाउस तणी, वीज जिम कुंत चमके सतेजा॥चंग० ॥९॥

अर्थ–हवे संग्रामने वर्षाऋतुनी उपमाए वर्णवे छे. संग्राममां (योधघन के०) सुभटोए कालां सन्नाह पहेर्यां छे, तेणे करीने घन एटले मेघ सदृश देखाय छे, ते योद्धा (तदा के०) ते वखते (नीर जिम तीर के०) पाणीनी पेरे तीर एटले बाण तेनो वरसाद वरसावे छे, वली वरसादमां बगलां पक्षीओनो संचार होय तेनी परे इहां (संचरे धवल नेजा के०) सुभटोना हाथमां धोला ते सफेद नेजा छे तेने लइने सुभटो शूरपणे भर्या ठाम ठाम दोडी रह्या छे, तेथी ते नेजा संचरता थका फरकी रह्या छे, तथा (दलसाज के०) लश्करनो साज जे हाथी, घोडा, सुभट प्रमुखनां

प्रकाशक—श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबइ.

युद्ध.





शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक १४०.





ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૧૯૬.



લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુંબઈ

वृंद, ते मांहोमांहे कोलाहल शब्द करी रह्यां छे, तेनो पडछंदो पडे छे ते गाजी रह्यो छे, ते जाणीए वरसादमां गाज थती होय नहीं ? तेवो जणाय छे. तथा (कुंत चमके सतेजा के०) तेजे करी सहित एटले तेजवंतां भालांनी अणीर्ज चमकती झलकी रही छे, ते (वीज जिम के०) वीजलीनी पेरे जणाय छे. ए रीते ते संग्राम जोइने (ऋतु आइ पाउस तणी के०) जाणे वरसादनी ऋतुज आवी होय नहीं ? एवो संग्राम देखाय छे ॥ ए ॥

भंड ब्रह्मंड शत खंड जे करी शके, उछले तेहवा नालगोला ॥
वरसता अगनि रणमगन रोषे भस्या, मानुं ए यम तणा नयण-
झोला ॥ चंग० ॥ १० ॥

अर्थ—हवे नालमांथी गोला छूटे छे तेनी उपर कवीश्वर उत्प्रेक्षा करे छे के (भंड के०) कुंभारना घरनुं जूनुं भाजन, तेने जेम पथरो मारीने सो कटका करी नाखीए तेनी पेरे (ब्रह्मंड के०) स्वर्ग, मृत्यु अने पातालरूप ब्रह्मांड, तेना पण जे (शत खंड के०) सो खंड एटले सेंकडोगमे खंडोखंड करी शके तेवा महाबलवत्तर महासामर्थ्यवान् (नालगोला के०) नालो मांहेथी गलोला ठाम ठाम उछले छे. ते जे सैन्यना मनुष्यने नजीक आवी लागे तेना प्राण लीए छे. ते नालगोला केवा छे ? तो के (वरसता अगनि के०) अग्निना समूहने वरसता थका रणमगन एटले संग्राममां तन्मय थका रोषे भस्या एटले क्रोधे भस्या राता छे. ते गोला एम जाणे छे के अमे छतां शत्रु केम रहे ? इहां कवि युक्ति कहे छे के हुं एम मानुं छुं जे ए नालगोला अग्नि वरसता नथी, परंतु सुभटोना प्राण हरण करवाने विकास्या रणमार्गें जाणीए यम राजानां नेत्रना डोलाज छे ? एटले जेम यम राजानां नेत्रना डोला जेनी उपर पडे तेना प्राण लीए, तेम ए नालगोला पण जेनी उपर पडे तेना प्राण लीए ॥ १० ॥

केइ छेदे शरे अरि तणां शिर सुन्नट, आवतां केइ अरिबाण काले ॥ केइ असि छिन्न करिकुंन मुगताफले, ब्रह्मरथविहग मुख ग्रास घाले ॥ चंग० ॥ ११ ॥ मद्यरस सद्य अनवद्य कविपद्यन्नर, वंदिजन बिरुदथी अधिक रसिया ॥ खोज अरिफोजनी मोज धरी नवि करे, चमकन्नर धमक दइ मांहि धसीया ॥ चंग० ॥ १२ ॥

अर्थ–हवे ते सैन्यमां केवा केवा प्रकारनी कलाउंवाला सुन्नटो छे ? ते कहे छे. केटलाएक सुन्नट तो जेम खङ्गना प्रहारे करी शिर छेदाय तेम (शरे के०) अर्धचंद्रादिक बाणे करीने (अरि तणां शिर के०) शत्रुसुन्नटनां मस्तकने छेदे छे, एवी कलावाला छे. वली केटलाएक सुन्नट तो युद्धमां चारे तरफ नजर राखता (अरि के०) शत्रुनां सामां आवतां बाणने वचमांथीज काली राखे छे, तथा केटलाएक पोता उपर आवतां बाणने वचमांथीज छेदी नाखे छे, पण आगल वधवा देता नथी, पोताना अंग उपर आववा देता नथी, एवा लघुलाघवी कलावान् सुन्नटो छे, ते जाणीए युद्धमां रमतज करी रह्या होय नहीं ? हवे सुन्नटोनुं जुजबल कहे छे. केटलाएक सुन्नट (असि के०) तरवार तेना एकज घाए करी (करिकुंन के०) हाथीना कुंनस्थलने (छिन्न के०) छेदी नाखे छे, विदारी नाखे छे. तिहां नद्रक जातिना हाथीना कुंनस्थल मांहे जे मोतीनो राशि होय ते तेमांथी वेराइ पडे छे, ते मोतीनो ग्रहण करनार इहां कोण होय ? तिहां कवि संन्नावना करे छे के (ब्रह्मरथविहग के०) ब्रह्माना रथमां हंस पक्षी जोडेलां छे तेनां मुखने विषे (ग्रास घाले के०) चण चुगावे छे, माटेज सुन्नटो ते हाथीना कुंनस्थलने जाणे छेदता होय नहीं ? एम लागे छे. एवा अबीह सुन्नट जे छे ते बले करी एक घाए हाथीना मस्तकने विदारी नाखे ॥ ११ ॥ हवे सुन्नटोनो रणरस वखाणे छे. (सद्य के०) तत्कालनो उपन्यो जे (मद्यरस के०)

मदिरानो रस एटले तत्कालनी उपनी मदिरामां केफ घणो होय, ते पीतां वेंतज मन घूर्णित थइ जाय, विकल दशाने पामी जाय, माटे तत्कालनो उपन्यो मदिरारस अने (अनवद्य के०) निर्दूषण एवां कविपद्य एटले गण प्रमुखना जाण, पिंगल तथा अलंकारना पाठी जरत सदृश जे कविर्ज, तेनां रचेलां दग्धाक्षरादि दोषरहित एवां पद्य जे कवित, सवैया, कुंडलिया प्रमुख तेनो (जर के०) समूह, तेणे करी बंदिजन जे जाट, चारणादिक, ते बिरुदावली वंशावली बोली रह्या छे. ते सांजलीने शत्रुनी फोजनी खोज जे चिंता ते पोते मोज धरता न करे, एटले ए केटला छे! अमे केटला छीए! अथवा ए घणा छे! एम रसिक एवा सुजटजन अधिक अजिमाने चड्या थका (अरिफोजनी के०) शत्रुनी फोजनी (खोज के०) रखे अमने ए मारी नाखे, एवी चिंता राख्या विना तेनी अवगणना करीने (मोज धरी के०) पोताना दिलनी आनंद खुश बखतीए करी (चमकजर के०) रोषने जर एटले समूहे अकस्मात् एटले आगली सामी फोजवालाने गवेषणा नथी जे ए थोडे परिवारे आवीने अमारी साथे बाधशे. तेवा अकस्माते (धमक दइ के०) धमक दइने शीघ्रपणे धमकामां गुलांट मार्यानी पेठे अथवा सिंहनी पेरे पराक्रम धरीने शत्रुनी फोज मांहे (धसीया के०) पेठा एटले मांहोमांहे युद्ध करता थया, अर्थात् एकाएक सामानी फोज सेलजेल करी दीधी ॥ १२ ॥

वाल विकराल करवाल हत सुजटशिर, वेग उछलित रवि राहु माने ॥
धूलि धोरणी मिलित गगनगंगाकमल, कोटि अंतरित रथ रहत छाने ॥ चंग० ॥ १३ ॥

अर्थ—हवे ए महायुद्ध थाय छे, एटले गजे गज, घोडे घोडा, रथे रथ अने पाले पाला, एम सरखे सरखां मांहोमांहे बेहु सैन्य युद्ध करतां कोइक खड्ग धारण करनारो सुजट ते सामा खड्ग-

धारी सुभटने कहेवा लाग्यो के हुं तारा उपर आव्यो छुं, माटे खबर राखजे ! एम कही लघु-लाघवी कलाए दक्षिण करमां ग्रहण करेली (करवाल के०) तरवार, तेणे करी शत्रुना स्कंध उपर प्रहार कर्यो, तेणे करी (हत के०) हणायेलुं जे सुभटनुं मस्तक ते केवुं छे ? तो के (वाल विकराल के०) वाले करी विकराल एटले बीहामणुं देखाय छे, अर्थात् तेना मस्तकमां मोटा केशपाश छूटा थइ गयेला छे एवुं छे. ते जे वारे छेदाणुं ते वारे ते सुभट शूरपणामां हतो, तेथी तामसी प्रकृतिना पर्याय तेना मस्तकमां रही गया छे, तेने योगे (वेग उछलित के०) वेगे करी उता-वलथी ऊंचुं उछलवा लाग्युं. तिहां कवि उत्प्रेक्षा करे छे के संग्राम आकरो थाय छे, तेमां सुभट वाहनादिकना पादप्रहारथी रजनो समूह उडे छे ते आकाश सुधी पहोंच्यो छे, तेणे करी आकाश छाइ गयुं छे, माटे सूर्य ढंकाइ गयेलो छे, तेथी देखवामां आवतो नथी, माटे एम लागे छे जे ते सुभटनुं जे मस्तक उड्युं ते केशना योगे करी श्याम देखाय छे, तेथी धरू विनानुं एकलुं मस्तक देखीने "रवि राहु माने" (रवि के०) सूर्य तेणे तेने राहु करी मान्यो, तेथी पोताना शत्रुने अकस्मात् सामो आवतो देखी सूर्ये जय पामीने जाण्युं जे राहु मुजने ग्रसवा आव्यो छे, तेथी पोताना रथ सहित तिहांथी नासीने धूलनी जे धोरणी एटले समूह तेने मलवे करी गगन-गंगा जे आकाशगंगा तेनां कमलो धूले करी ढंकाइ गयां छे, ते स्थानक देखीने (कोटि अंतरित रथ रहत छाने के०) ते गगनगंगानां कमलना कोतरमां आवी सूर्यनो रथ छानो रही गयो, अथवा कोणोगमे कमल धूलना योगथी एकठां थयां छे ते मांहे जाणीए सूर्यनो रथ छानो रह्यो छे, अर्थात् संग्रामने योगे जे धूल उडी छे, तेने योगे सूर्य आछादित थयो छे ते देखातो नथी, माटे कविए उक्ति करी छे ॥ १३ ॥

केइ भट भार परि सीस परिहार करी, रणरसिक अधिक जुझे कबंधे ॥
पूर्ण संकेत हितहेत जय जय रवे, नृत्य मनु करत संगीतबन्धे ॥ चंग० ॥ १४ ॥

अर्थ–वली सुन्नटनी श्रेणी मांहे जुऊता थका केश्क सुन्नटनां मस्तको बेदाइ गयां बे, ते वारे ते सुन्नटोनां एकलां धरूज मात्र युरू करे बे, तेनी उपर कवि उत्प्रेक्षा करे बे के (केइ न्नट के०) कोइक सुन्नटे युरू करतां करतां विचार्युं जे पोतानी पासे न्नार होय तो खुले मने युरू न थाय, एवुं मनमां धारीने (न्नार परि सीस परिहार करी के०) पोताना मस्तकने न्नारनी परे जाणीने तेने वेगलुं मेल्युं बे, कारण के हलवुं थवाथी युरू अवल रीते थाय, माटे मस्तकनो परिहार करी पबी (रणरसिक के०) रणने विषे रसिक थयो थको (कबंधे के०) मस्तक विनाना धडे करीने (अधिक जुऊे के०) घणो घणो जुऊे बे. हवे ते धरू जे बे ते हाथमां खड्ग लइ जुऊे बे, तेनी उत्प्रेक्षा करे बे ते एवी रीते के जाणीए ते सुन्नटो युरू करवाने सावधान थया हता, ते वारे एवो कांइ संकेत कर्यो हतो जे शत्रुने जीतवो, अथवा पोताना जीवनो बेद करवो, अथवा लाखोगमे माणसोनो संहार करवो. ते (पूर्ण संकेत के०) संकेत पूर्ण थयो जाणीने तेना (हित-हेत के०) हितना कारण थकी (जय जय रवे के०) जय जय शब्दे करी धरू जुऊे बे. हवे धड जुऊे बे तिहां कवि कहे बे के हुं एम मानुं बुं जे ए धरू जुऊतुं नथी, परंतु संग्राम करी पोते जयपणुं पाम्युं तेने अर्थे जय जय रवे करी (नृत्य मनु करत संगीतबरू के०) जाणीए हर्षन्नरे संगीतबरू नाटकज करतुं होय नहीं ? ॥ १४ ॥

न्नूरि रणतूर पूरे गयण गरूगरू, रथ सबल शूर चकचूर न्नांजे ॥ वीर
हक्काय गय हय पुले चिहुं दिशे, जे हुवे शूर तस कोण गांजे ॥चंग०॥१५॥

अर्थ–हवे सुन्नटोनुं शूरपणुं वखाणे बे. तिहां संग्राममां (न्नूरि के०) घणां एवां (रणतूर के०) संग्रामनां वाजित्र जे नगारां, शरणाइ, ढोल अने रणशिंगां प्रमुख तेना शब्दने (पूरे के०) समूहे करीने (गयण के०) आकाश ते (गडगडे के०) गर्जारव करी रह्युं बे. (सबल शूर के०)

नथी, पण जाणीए छीए जे ते दिवसे तो ते तृप्त थयो हशे ! वली युद्ध जोवाना अभिलाषी जे व्यंतर निकायना देवता, ते पण अनेक सुभटो मरण पाम्या देखीने प्रेमे करी सहित प्रीतिवंत थया, एटले हर्षभर संतुष्ट थया, अने बेहु दलवाला सुभटोए पण प्रथम संग्रामनी आद्यमां जे विचार्युं हतुं के राजानी भूमि खाइए छीए, तेने माटे मारामां आवी युद्धनी कला छे ते हुं लडाइमां करी देखाडीश, ते ते प्रमाणे ते ते सुभटोए तेवी तेवी कलाए करी युद्ध कर्युं, तेथी तिहां कोइ पण सुभटने लडाइ करवानी होंश अधूरी रही नहीं ॥ २६ ॥

देखी श्रीपाल भट भांजीयुं सैन्य निज, उठवे तव अजितसेन राजा ॥
नाम मुज राखवो जोर फरी दाखवो, हो सुभट विमल कुल तेज
ताजा ॥ चंग० ॥ २७ ॥

अर्थ—एम मांहोमांहे युद्ध थतां थका पोताना सैन्यने श्रीपालना सुभटे (भांजीयुं के०) नसाड्युं एवुं देखीने एटले महाबलिष्ठ पराक्रमी एवा श्रीपालना सुभटे शस्त्रे करी घणा हत प्रहत कर्या, तेथी कायर थयेला, निर्बल थयेला, मरणथी बीक पामता, पाछा पग देता, नासता एवा पोताना सुभटोने देखीने अजितसेन राजा पोते स्वारी करी युद्ध करवा सावधान थइने तेमने उठवे एटले पाछा युद्ध करवा सावधान करे, हिम्मत आपे जे भागो मां, हवे हुं आगेवान थाउं छुं, तमे कशी वाते चिंता करो नहीं, हमणां शत्रुना सैन्यने दशे दिशाए नसाडी देशुं. एवी रीते भागतां थका तमारी अने अमारी आबरु केम रहेशे ? माटे हे सुभटो ! (नाम मुज राखवो के०) मारे नाम राखवुं छे, तेथी तमारुं पण नाम रहेशे जे फलाणा सुभट हता तेणे पोताना स्वामीनी आवी जीत करी देखाडी, ते माटे तमे तमारुं फरीथी जोर देखाडो. (विमल सुभट कुल के०) हे निर्मल कुलना उपन्या सुभटो ! तमे क्षत्रीना (तेज ताजा

एम सुन्नटोने कही सन्नरूबरू

के०) तेजे करी ताजा (हो के०) थाउं, पाडा पग म न्नरो, एम सुन्नटोने कही सन्नरूबरू
करी फरी लरूवाने तैयार कस्या ॥ १७ ॥

तेह इम बुरूतो सन्य सजी जुरूतो, वींटीयो रूत्ति सय सात राणे ॥ ते
वदे नृपति अन्निमान त्यजी हजीय तुं, प्रणमी श्रीपाल हित एह जाणे
॥ चंग० ॥ १८ ॥ मानधन जास माने न ते हितवचन, तेहशुं जुरूतो
नविय थाके ॥ बांधीयो पारूी करी तेह सत सय न्नटे, हुउ श्रीपालजश
प्रगट वाके ॥ चंग० ॥ १९ ॥

अर्थ–(तेह के०) ते अजितसेन राजा पोताना सुन्नटने (इम बुरूतो के०) एवी रीते जणावतो थको
सज्ज थइ श्रीपालना सैन्य साथे जुरूतो थको सैन्यने विलोडवा लाग्यो, ते जोइ सातसें राणा लडवा
आव्या. तेनी सामे तेउंए युरू करता तेना सुन्नटोने दूर करी (रूत्ति के०) रूटिति तत्काल अजितसेन
राजाने चारे तरफ घेरो करी वींटी लीधो, अने पडी ते राणा कहेवा लाग्या के हे नृपति ! हजी
सुधी तारुं कांइ गयुं नथी, माटे तुं अन्निमान गंरू, अहंकार राखवो युक्त नथी, पूर्वे पण अहं-
कारथी घणा राजाउंनां राज्य गयां डे, माटे अमारुं वचन मानी आवीने श्रीपाल राजानां चरण-
कमल प्रत्ये प्रणाम कर. (एह के०) ए श्रीपाल राजा केवो डे ? तो के (हित जाणे के०)
हितनो जाण डे, माटे प्रणमीश तो तारा गुन्हा सर्व बक्षीस करशे ॥ १८ ॥ एवां वचन राणाउंए
कह्यां, पण अजितसेनना चित्तमां नरमाश आवी नहीं, केमके (जास के०) जेने (मानधन
के०) अहंकाररूप धन डे ते पोताना हितनां वचन माने नहीं, तेम अजितसेन पण ते राणाउंनां
वचननी अवगणना करतो अन्निमाने पूरित थको मनमां विशेष क्रोध धरतो (तेहशुं के०) ते
सातसें राणाउंनी साथे युरू करतो कोइ रीते थाकतो नथी. मनमां विचारे डे जे मारा सुन्नटो बल-

हीन थया तो शुं थयुं ? पण मारुं बल तो क्यांहि गयुं नथी, एम धारी युद्ध करे छे. ते युद्ध करतां ते राणाउंए हाथीनी सूंढ फाली दंतूशल उपर पग दइ अजितसेननो पग फाली हाथीना होद्दा उपरथी पाडी करीने मुसके टाट बांधी लीधो. ते वारे श्रीपाल राजानो यश (प्रगट वाके के०) प्रगट शब्दे थयो. श्रीपाल राजा जीत्यो. सैन्यमां श्रीपालनी दुहाइ फरी जे हवे युद्ध करशो नहीं. ते वारे अजितसेननी सेना पण विलखी थइ ॥ १९ ॥

पाय श्रीपालने आणीयो तेह नृप, तेणे छोडावीयो उचित जाणी ॥
भूमिसुख भोगवो तात मत खेद करो, वदत श्रीपाल इम मधुर वाणी
॥ चंग० ॥ २० ॥ खंड चोथे हुइ ढाल चोथी भली, पूर्ण कडखा तणी
एह देशी ॥ जेह गावे सुजश एम नव पद तणो, ते लहे ऋद्धि सवि
शुद्ध लेशी ॥ चंग० ॥ २१ ॥

अर्थ–पछी ते बांधेला अजितसेन राजाने लइने राणाउंए श्रीपाल राजाना पग आगल आणी मूक्यो, तिहां ते विलखो थयो थको नीची दृष्टि करी रह्यो. एवो तेने देखीने श्रीपाल राजाने तत्काल दया आवी ने वली विचार्युं जे आ मारो काको छे, ते मारी आगल बांध्यो पड्यो रहे ते उचित कहेवाय नहीं, माटे एने छोडी मूकवो उचित छे एम चिंतवीने तेने तरतज छोडाव्यो, अने श्रीपाल कहेवा लाग्यो के हे तातजी ! तमे तमारी पोतानी जे भूमि छे तेने सुखे भोगवो, अने लगार मात्र तमारा चित्तमां खेद करशो मां. एवी रीते श्रीपाल राजाए अजितसेन राजाने मधुर एटले मीठी वाणीए कह्युं ॥ २० ॥ ए चोथा खंडने विषे भली एवी चोथी ढाल पूरी थइ, ए संपूर्ण कडखानी देशी छे. जे प्राणी ए नव पदनो रुडो यश गाय, अथवा श्रीयशोविजय गणि

कहे छे के ए नव पदने जे रुडी रीते गाय ते प्राणी (शुद्ध लेशी के०) विशुद्ध निर्मल लेश्यानो धणी थइने सर्व ऋद्धि पामे ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

अजितसेन चिंते कर्युं, अविमास्युं में काज ॥ वचन न मान्युं दूतनुं, तो न रही निज लाज ॥ १ ॥ आप शक्ति जाणे नहीं, करे सबलशुं जुज ॥ सुहितवचन माने नहीं, आपे पडे अबुज ॥ २ ॥ किहां वृद्धपणे हुं सदा, परद्रोह करवा भाव ॥ किहां बालपण ए सदा, परउपकार स्वभाव ॥ ३ ॥ गोत्रद्रोह कीरति नहीं, राजद्रोह नवि नीति ॥ बालद्रोह सद्गति नहीं, ए त्रणे मुज भीति ॥ ४ ॥

अर्थ—हवे अजितसेन राजा चिंतवे छे के में अविमास्युं एटले अणविचार्युं कारज कर्युं. प्रथमथीज दूतनुं वचन मान्युं नहीं, तो मारी लाज रही नहीं ॥ १ ॥ जे प्राणी पोतानी शक्ति जाणतो नथी अने बलवंत साथे युद्ध मांडे छे, अने सुहितवचन ते रुडुं हितनुं वचन अथवा भला हितचिंतक वडेरा पुरुषोनुं वचन माने नहीं, ते अबुज प्राणी पोते पाछो पडे ॥ २ ॥ जुओ के क्यां तो हुं वृद्धपणे सदा सर्वदा परद्रोहरूप पापनो करनारो ! अने क्यां ए श्रीपाल के जे बालपणाथीज सदा सर्वदा उपकारनो स्वभाव राखे छे ! माटे मारा वृद्धपणाने धिक्कार छे अने धन्य छे ए श्रीपालना बालपणाने ! के जे हजी लगण पण मने कहे छे के हे पिताजी ! भूमिसुख भोगवो अने अने खेद म करो ॥ ३ ॥ वली शास्त्रमां कर्युं छे के जे गोत्रद्रोह करे तेनी कीर्त्ति न होय अने जे राजद्रोह करे तेणे न्याय उल्लंघ्यो, माटे ए नीति नहीं, तथा बालद्रोह करवाथी सद्गति पामे नहीं, माठी गतिए जाय, ए त्रणे अकार्य में कर्यां छे, तेनी मुजने (भीति के०) बीक छे ॥ ४ ॥

को न करे ते में कस्युं, पातक निठुर निजाण ॥ नहीं बीजुं बहु पापने,
नरक विना मुज ठाण ॥ ५ ॥ एवा पण बहु पापने, उद्धरवा दीए हब ॥
प्रव्रज्या जिनराजनी, छे इक शुद्ध समछ ॥ ६ ॥ ते दुःखवल्लीवनदहन,
ते शिवसुखतरुकंद ॥ ते कुलघर गुणगण तणुं, ते टाले सवि दंद
॥ ७ ॥ ते आकर्षण सिद्धिनुं, जवनिःकर्षण तेह ॥ ते कषायगिरिभेद-
पवि, नोकषाय दवमेह ॥ ८ ॥

अर्थ–जे कोइ पण जलो माणस न करे तेवुं निठुर एटले हीणुं पाप में अजाण मूर्ख छते कठोर परिणामे दुर्ध्याने करी कस्युं, ते माटे एवां बहु पापनो करनारो जे हुं, तेने नरकनी गति विना बीजुं क्यांहि रहेवानुं ठेकाणुं नथी ॥ ५ ॥ एवा मारा सरखा घणां पाप करनारने पण उद्धरवाने हाथ दीए छे एवी पण एक श्रीजिनराजनी उपदेशेली शुद्ध निर्मल प्रव्रज्या एटले चारित्र, तेज एक समर्थ छे के जेथी नरके जवानुं बंध थाय छे ॥ ६ ॥ ते चारित्र केवुं छे ? तो के दुःखरूप वल्लीना वनने नाश करवा माटे (दहन के०) अग्नि समान छे, वली ते चारित्र (शिव के०) निरुपद्रव स्थानक जे मोक्ष, तेना सुखरूप वृक्षना (कंद के०) मूल समान छे, वली ते चारित्र गुणना गण जे समूह, तेने रहेवानुं कुलघर छे, वली ते चारित्र सर्व जगत्रयनां दंद एटले आपदानुं टालणहार छे ॥ ७ ॥ वली ते चारित्र सिद्धनुं आकर्षण छे एटले सिद्धपदने खेंचे छे, कारण के चारित्रीयो सातमे आठमे गुणठाणे रह्यो थको विशुद्ध, विशुद्धतर, विशुद्धतम एवा आत्माना अध्यवसायने योगे बंध, उदय, उदीरणा अने सत्तानी कर्मप्रकृति छेदीने नवमे गुणठाणे क्षपकश्रेणी मांडी घनघाती चार कर्म क्षय करी तेरमे गुणठाणे केवलज्ञान पामी सिद्धि वरे, तेमां कोइ चारित्रीयो अंतर्मुहूर्त्तमां मोक्षे जाय, कोइ आयुःकर्मनी यावत्प्रमाण पूर्त्ति करी मोक्षे जाय, माटे

चारित्र ते सिद्धनुं आकर्षण छे, वली तेज चारित्र भव जे संसार तेने निःकर्षण एटले दूर करनार छे, वली ते चारित्र क्रोध, मान, माया अने लोभरूप कषायना जे (गिरि के०) पर्वत छे, तेनुं भेदन करवाने (पवि के०) वज्र समान छे, तेमज वली ते चारित्र हास्यादिक नव नोकषायरूप (दव के०) दावानल, तेने उपशमाववाने (मेह के०) मेघ समान छे ॥ ७ ॥

प्रव्रज्या गुण इम ग्रहे, देखे भवजलदोष ॥ मोहमहामद मिट गयो, हुउ भावनो पोष ॥ ए ॥ भेदाणी बहु पापथिति,, कर्में विवरज दीध ॥ पूरव भव तस सांभर्यो, रंगे चारित्र लीध ॥ १० ॥

अर्थ—एम ते अजितसेन राजा प्रव्रज्याना गुण ग्रहण करे छे, एटले चारित्र ए प्रकारना गुणनुं कर्त्ता छे, ते विचार करतां करतां ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप गुण ग्रहण करतो केवल भवजल जे संसार-समुद्र, तेनो जे दोष तेने देखे छे, कारण के जेमां गुण होय तो तेना गुणनीज गवेषणा थाय छे, पण तेनी दृष्टिए अवगुण जोवामां आवे नहीं, तेम चारित्रमां गुणज छे, माटे गुण दीठा, तेना गुण ग्रहण कर्या, तेथी विचार्युं जे आत्मा ज्यां लगण चारित्र सहित थयो नथी त्यां लगण संसारविटंबना छे, ए आत्मानो दोष छे, तेनेज देखे छे, अने चिंतवन करे छे जे आत्माने अनादि मोह छे, ते संसारमां भमाडे छे, ज्यांसुधी समकितमोहनी, मिश्रमोहनी अने मिथ्यात्वमोहनी तथा अनंतानुबंधी कषायनी चोकडी, ए सात प्रकृतिनो क्षयोपशम नथी थयो त्यांसुधी ते आत्मा मिथ्यात्व गुणठाणे छे. एवी रीते ए अजितसेनने चारित्र गुण ग्रहवे करी सात प्रकृतिनो उपशम थाते क्षायिक परिणाम वर्त्तवाना भाव थकी मोहरूप महामद जे हतो ते मटी गयो. ते वारे उपशम समकितादिक उत्तम भावनो पोष थयो, एटले उपशम समकिते औपशमिक भाव थाय, अने क्षयोपशम समकिते क्षायोपशमिक भाव थाय, तथा क्षायिक समकिते क्षायिक भाव थाय. ए त्रण समकित

मांहेलुं जे समकित उपजे ते नावनो पोष थाय. ते इहां अजितसेन राजाने अंतर्गत नावनो पोष थयो, तेथी वैराग्यवंत थयो ॥ ए ॥ एम अजितसेनने संसारने अनित्य नावे चिंतवन करतां घणी पापनी स्थितिउं नेदाणी, ते वारे कर्मे (विवर के०) मार्ग दीधो, एटले आकरां कर्म हतां ते शिथिल थयां, अनादि मिथ्यात्व मव्युं, ते वारे आत्माना अध्यवसाय जे पूर्वे क्यारे एवा न थया हता ते थया, तेथी समकितनी रोधक अशुन कर्मप्रकृति बंधथी टली, चोथुं अविरति सम्यग्दृष्टि गुणठाणुं पाम्या. ते समकित पामते जातिस्मरणज्ञान उपन्युं, तेने योगे पोतानो पाबलो नव दीठो, ते पाबलो नव देखतांज वली नवनय विशेष उपन्यो, ते वारे वली आत्माना विशुद्ध अध्यवसायने बलवत्तरपणे अप्रत्याख्यानी कषायनी चोकडी अने प्रत्याख्यानी कषायनी चोकडीनो बंध गये थके बहुं गुणठाणुं आव्युं, ते वारे अजितसेन राजाए (रंगे के०) हर्षे करी चारित्र लीधुं अने बठा सातमा गुणठाणाना अधिकारी थया ॥ १० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो छोगलो ॥ मारुजी ॥ ए देशी ॥

हुउं चारित्र जुत्तो समिति ने गुत्तो ॥ विश्वनो तारु जी ॥ श्रीपाल ते
देखी सुगुण गवेषी मोहीयो ॥ वारुजी ॥ प्रणमे परिवारे नक्ति उदारे ॥
विश्वनो० ॥ कहे तुज गुण थुणीए पातक हणीए आपणां ॥ वारुजी ॥ १ ॥

अर्थ—हवे पांच समितिए समिता अने त्रण गुप्तिए गुप्ता एवं आठ प्रवचन माता, तेणे करी (जुत्तो के०) युक्त चारित्र थयुं. (विश्व के०) जगत्त्रयने तारवा समर्थ एवा सर्व सावद्य योग व्यापारथी विमुक्त थयेला अजितसेन राजर्षिने देखीने नला गुणोनी गवेषणानो करनारो एवो श्रीपाल राजा तेमनी उपर मोह्यो थको पोताना परिवार सहित पांच अनिगम साचवीने ते मुनिना

चरणरजे भालस्थल लगाडीने (प्रणमे के०) प्रणाम करे, उदार भक्तिए करीने स्तवना करे छे, ने कहे छे के हे प्रभु ! तमारा साधुपणाना गुणने (थुणीए के०) स्तवीने पातक हणीए एटले अमारां भवोभवनां संचेलां जे पाप, तेने हणीए एटले दूर करीए ॥ १ ॥

उपशमअसिधारे क्रोधने मारे ॥ वि० ॥ तुं मद्दववज्रे मदगिरि भज्जे
मोटका ॥ वा० ॥ मायाविषवेली मूल उखेडी ॥ वि० ॥ तें अज्जवकीले
सहज सलीले सामटी ॥ वा० ॥ २ ॥ मूर्छाजल भरीयो गहन गुहरियो
॥ वि० ॥ तें तरीयो दरियो मुत्तितरीशुं लोभनो ॥ वा० ॥ ए चार कषाया
भवतरुपाया ॥ वि० ॥ बहु भेदे खेदे सहित निकंदी तुं जयो ॥ वा० ॥ ३ ॥

अर्थ–हवे श्रीपाल स्तवना करे छे के हे मुनीश्वर ! राग द्वेष ए बेने एकपणे आणवा तेने उपशम गुण कहीए, ते उपशमरूप (असिधारे के०) तरवारनी धाराए करीने क्रोधरूप शत्रुने तमे मार्यो, माटे तमे क्रोधरहित थया छो, तेथी शमतामय छो. वली मानत्यागेन मार्दवम् एटले मानने भावे करीने मार्दव गुण उपजे छे, ते मार्दव जे कोमलता तद्रूप वज्र एटले सर्व शस्त्रोमां उत्तम एवुं इंद्रनुं आयुध ते अत्यंत आकरुं छे, तेणे करीने (मदगिरि भज्जे मोटका के०) मोटा एवा जे मदरूप पर्वत, तेनां जे आठ शिखर छे ते ज्यांसुधी आडां आवे त्यांसुधी स्तब्धपणे कोइ पण विनय विवेक न आवे, तेने तमे भज्जे एटले भांजी नाख्या, माटे तमे अहंकाररहित थया छो. वली (मायाविषवेली के०) माया जे कपट तेहीज विषवेली. ते केवी छे ? तो के साधुपणामां तप प्रमुखने पण स्त्रीवेदनी देवावाली छे एवी दुःखदायी जाणीने तेने तमे (अज्जवकीले के०) मायाना त्यागथी आर्जव जे सरलता तद्रूप खीलाए करीने (सहज सलीले के०) सहेजे महेनत विना लीलाए करी सहित (सामटी के०) एकठी करीने जड मूलथी उखेडीने नाखी दीधी

एवा छो ॥ २ ॥ वली परिग्रहनी उपर वांछा जे इछा तेने मूर्छा कहीए, ते मूर्छारूप जले करीने जस्यो, अने (गहन के०) ऊंमो (गुहरियो के०) जेनो पार पामीए नहीं एटले कषायवंत सामान्य पुरुष जेनो पार पामी शके नहीं, ते अजव्यने अनादि अनंत छे, अने जव्यने अनादि सांत छे एवो (लोजनो के०) लोज कषायनो (दरियो के०) समुद्र, ते मूर्छारूप पाणीए जरेलो छे, तेने (तें के०) तमे (मुत्तितरीशुं के०) मुक्ति जे निर्लोजतारूप गुण तद्रूप तरी एटले वहाण कहीए, तेणे करीने (तरीयो के०) तस्यो, एटले तरीने पार पाम्या, एतावता तमे निर्लोजी थया छो. ए उक्त क्रोध, मान, माया अने लोज मली चार कषाय जे छे ते केवा छे ? तो के चार गतिने विषे जे संसरवुं तेने संसार कहीए. तेज (कष के०) संसार तेनो छे (आय के०) लाज जेने विषे तेने कषाय कहीए, माटे ए चार कषाय ते (जव के०) संसार तद्रूप (तरु के०) वृक्ष एटले संसाररूप वृक्ष तेना पाया छे, केमके ज्यांसुधी ए कषाय छे त्यांसुधी ए संसार छे, जवतरुना पाया छे, ते चार कषायना अनंतानुबंधी आदिक घणा जेदो छे, अने घणा खेदना देनारा छे, ते खेदादिक दोष सहित चारे कषायने (निकंदी के०) निकंदन करी नाख्या, माटे (तुं जयो के०) तमे जयवंता वर्तो. अर्थात् कषायने कंद जे मूल ते सहित काढवाने तमें समर्थ थया छो ॥ ३ ॥

कंदर्पे दर्पे सवि सुर जीत्या ॥ वि० ॥ ते तें इक धक्के विक्रम पक्के मो-
मीयो ॥ वा० ॥ हरिनादे जाजे गज नवि गाजे ॥ वि० ॥ अष्टापद आ-
गल ते पण छागल सारिखो ॥ वा० ॥ ४ ॥

अर्थ–वली हे स्वामिन् ! तमे केवा छो ? तो के सर्व जगतमां सुर असुरादिकमां पण कंदर्प महाबलवान् छे. जे कंदर्पे पोताना बलने (दर्पे के०) अहंकार जे उन्माद तेणे करीने इंद्र, चंद्र, नागेंद्र, हरि, हर, ब्रह्मादिक (सवि सुर जीत्या के०) सर्वें देवताने जीत्या छे, परंतु देवता मांहे

चरणरजे ज्ञालस्थल लगामीने (प्रणमे के०) प्रणाम करे, उदार ज्ञक्तिए करीने स्तवना करे बे, ने कहे बे के हे प्रज्ञु ! तमारा साधुपणाना गुणने (थुणीए के०) स्तवीने पातक हणीए एटले अमारां ज्ञवोज्ञवनां संचेलां जे पाप, तेने हणीए एटले दूर करीए ॥ १ ॥

उपशमअसिधारे क्रोधने मारे ॥ वि० ॥ तुं मद्दववज्जे मदगिरि ज्ञज्जे
मोटका ॥ वा० ॥ मायाविषवेली मूल उखेडी ॥ वि० ॥ तें अज्जवकीले
सहज सलीले सामटी ॥ वा० ॥ २ ॥ मूर्छाजल ज्ञरीयो गहन गुहरियो
॥ वि० ॥ तें तरीयो दरियो मुत्तितरीशुं लोज्ञनो ॥ वा० ॥ ए चार कषाया
ज्ञवतरुपाया ॥ वि० ॥ बहु ज्ञेदे खेदे सहित निकंदी तुं जयो ॥ वा० ॥ ३ ॥

अर्थ—हवे श्रीपाल स्तवना करे बे के हे मुनीश्वर ! राग द्वेष ए बेने एकपणे आणवा तेने उपशम गुण कहीए, ते उपशमरूप (असिधारे के०) तरवारनी धाराए करीने क्रोधरूप शत्रुने तमे मार्यो, माटे तमे क्रोधरहित थया बो, तेथी शमतामय बो. वली मानत्यागेन मार्दवम् एटले मानने ज्ञावे करीने मार्दव गुण उपजे बे, ते मार्दव जे कोमलता तद्रूप वज्र एटले सर्व शस्त्रोमां उत्तम एवुं इंद्रनुं आयुध ते अत्यंत आकरुं बे, तेणे करीने (मदगिरि ज्ञज्जे मोटका के०) मोटा एवा जे मदरूप पर्वत, तेनां जे आठ शिखर बे ते ज्यांसुधी आमां आवे त्यांसुधी स्तब्धपणे कोइ पण विनय विवेक न आवे, तेने तमे ज्ञज्जे एटले ज्ञांजी नाख्या, माटे तमे अहंकाररहित थया बो. वली (मायाविषवेली के०) माया जे कपट तेहीज विषवेली. ते केवी बे ? तो के साधुपणामां तप प्रमुखने पण स्त्रीवेदनी देवावाली बे एवी दुःखदायी जाणीने तेने तमे (अज्जवकीले के०) मायाना त्यागथी आर्जव जे सरलता तद्रूप खीलाए करीने (सहज सलीले के०) सहेजे महेनत विना लीलाए करी सहित (सामटी के०) एकठी करीने जम मूलथी उखेमीने नाखी दीधी

रति अने अरति छे तेने तमे निवारी, अने वली इहलोक भय, परलोक भय इत्यादिक सात जे भारे भय छे ते पण हे मुनीश्वर! तमे मनने विषे धराज नहीं, एटले ए सात भयने तो तमे गणतीमां गणाज नहीं, परंतु तमारामांथी क्रोधादिक गये थके एमने तमारी पासे रहेवुं दुष्कर थइ पड्युं, तेथी तेज सर्व भय उलटा तमाराथी (भरीया के०) बीता थका पोतानी मेलेज दूर खसी गया, माटे तमे मोटा ऋषीश्वर छो. वली हे स्वामिन्! ज्यांसुधी चित्तमां शुभ अशुभ राग द्वेषनां जोर क्षीण थयां नथी त्यांसुधी दुगंछा छे, परंतु ते तमारामां नथी, माटे ते दुगंछा पण तमे तजी, तो हवे शी तुज वंछा एटले कांइ पण वांछा तमारे रही नथी. वली तमे (पुग्गल के०) पुद्गल अने (अप्पा के०) आत्मा, एटले पूरण गलन स्वभाव छे जेनो तेने पुद्गल कहीए, ते पुद्गल अनित्य अत एव विनाशी छे, अने आत्मा ते निश्चे अविनश्वर नित्य छे, ते बेहुने पोतपोताना लक्षणने उलखवे करी जूदा जूदा पद्धे करी बेहु पोतपोतामां भिन्न छे एम करी स्थाप्या छे ॥ ५ ॥

परिसहनी फोजे तुं निज मोजे ॥ वि० ॥ नवि भागो लागो रण जिम
नागो एकलो ॥ वा० ॥ उपसर्गने वर्गे तुं अपवर्गे ॥ वि० ॥ चालंतां न-
डीयो तुं नवि पडीयो पाशमां ॥ वा० ॥ ६ ॥

अर्थ—वली हे स्वामिन्! क्षुधा, पिपासा आदे दइने बावीश परिसहनी फोज ते आवे थके तेमांथी तमे पोतानी मोजे संयममार्गे चाल्या गया, परंतु परिसहना समूहथी बीक पामीने (नवि भागो के०) तमे पाछा भाग्या नहीं, लगारमात्र पण तेनो भय गण्यो नहीं. उलटा सामा संयममार्गमां लागी रह्या. ते कया दृष्टांते? तो के (रण जिम नागो एकलो के०) नागो जे हाथी ते जेम रणसंग्राममां एकलोज लाग्यो रहे, शस्त्रना घणा प्रहार पोतानी उपर पडे तोपण रणमांथी पाछो उसरे नहीं, तेम तमे पण पाछा भागता नथी, माटे ए आश्चर्य जाणवुं. वली उपसर्गो बे प्रकारना छे. तेमां जे स्त्रीना हावभाव, विभ्रमविलासादिक विषयप्रार्थना प्रमुख करवे करीने थाय

कोइए कंदर्पने जीत्यो नथी, अर्थात् सर्व स्वानुकूल चेष्टावंत कीधा एवो सर्वोत्तम बलिष्ठ जे कंदर्प तेने तमे तमारा (विक्रम पक्के के०) पंफितवीर्योल्लासरूप परिपक्व बल पराक्रम स्वरूपाग्निरमणरूप ध्यानना एक धक्काए मरफी नाख्यो, हेलामां मोरफी नाख्यो, अर्थात् अध्यात्ममार्गीने काम जीतवो डुर्लन्न नथी . अथवा तमारा पराक्रमने परिपाकपणे एटले चोथा व्रतना नवकोटि पच्चरकाणने करवे करीने (तें इक धक्के के०) तमे एक धक्कामांज एटले घणा काल अन्यास करवो न पड्यो, मात्र एक धक्कामांज ते कंदर्पने मोडी नाख्यो, दूर करी नाख्यो. हवे ए उक्त अर्थ दृष्टांते करीने दृढ करे ले. सर्व तिर्यंचो मांहें सिंह बलिष्ठ ले, केमके जो पण मद सहित गर्जारव करता एवा सहस्त्रगमे हाथीउंनी घटा मलेली होय, तोपण एक (हरिनादे के०) सिंहने नादे एटले शब्द करवे करीने ते गजनी श्रेणी गाजे नहीं एटले गर्जारव करी शके नहीं. सिंहनो शब्द सांनली सर्वे गजो दश दिशाने विषे नागी जाय, पण कोइ उन्नो रहे नहीं. एवो बलिष्ठ सिंह ले ते पण अष्टापद नामे जनावरनी आगल (लागल के०) बोकफा जेवो थइ जाय. अर्थात् सर्व जनावरोमां लाग निर्बल कहेवाय ले तेनी सरखो थइ जाय, तेम हे मुनीश्वर ! ते कंदर्पें सर्वेने जीत्या, पण कंदर्पने जीतनार ते तमेज एकला थया, माटे तमे निर्विषयी थया लो ॥ ४ ॥

रति अरति निवारी नय पण न्नारी ॥ वि० ॥ तें मन नवि धरीया ते-
हज डरीया तुजथी ॥ वा० ॥ तें तजीय डुगंछ शी तुज वंछ ॥ वि० ॥ तें
पुग्गल अप्पा बिहुं परके थप्पा लक्षणे ॥ वा० ॥ ५ ॥

अर्थ—हवे रति आदिक नोकषाय जे ले ए पण कषायनाज वधारनारा ले, ते माटे हे स्वामिन् ! रति जे कोइ मान पूजादि सत्कार करे ते वारे शाता वेदवी पडे ते रति, अने अरति ते अपमान, तिरस्कार, उपसर्गादिक उपजे ते वारे अशाता वेदवी पडे, ए बे शाता अशातारूप जे

(नवि मारग लेखा के०) कांइ मार्गनुं लेखुं नथी, एटले संसारसमुद्र तरीने कांठे जवाय तेना घणा मार्गो छे, अर्थात् जेटला जीवना भेद छे तेटला मार्ग पण अनुमाने जाणवा, माटे (विगत के०) गयुं छे विशेषपणुं जेथी एम कह्याथी आटलाज मार्ग थया एवी खबर न पडे, जे आ मार्ग अमुक गतिनो, अमुक जीवविशेषनो एम स्पष्ट मालम पडे नहीं, एवा गणती विनाना संसारसमुद्रना मार्ग छे ॥ ७ ॥

तिहां जोगनालिका समता नामे ॥ वि० ॥ तें जोवा मांडी उतपथ छांडी
उद्यमे ॥ वा० ॥ तिहां दीठी दूरे आनंदपूरे ॥ वि० ॥ उदासीनता शेरी
नहीं भवफेरी वक्र छे ॥ वा० ॥ ८ ॥

अर्थ—तिहां हे स्वामिन्! तमे अध्यवसायनी स्थिरताए करीने विचार्युं जे मारे तो मुक्तिपुरी साथे प्रयोजन छे, ते वारे मननी जिहां चंचलता छे तिहां तो भवाभिनंदीपणुं छे, माटे तमे मननी चंचलतानो स्थिर भाव करी मन, वचन, काया ए त्रणेनुं जे भिन्नपणुं छे, ते त्रणेनी एकाग्रता करी, ते वारे समता एटले समपणे अध्यवसाय कर्या. एवा त्रण योगरूप समता नामे योगनी जे प्रनालिका तेने तमे तिहां जोवा मांडी अने बीजा घणा मार्ग देखीने ते सर्वेने उन्मार्ग करी जाण्या, एटले तमे जोयुं जे बीजे मार्गे सिद्धपणुं नथी. समता नामे योगनी नालिका जो जडे तो तेज कामनी छे, ते वारे उतपथ जे उन्मार्ग तेने छांडी उद्यमे करी ते समता योगनालिकानेज निश्चलपणे जोवा मांडी. ते समता नालिका जोतां जोतां तिहां (दूरे के०) वेगलेथी समतारूप जे योगनालिका तेने (आनंदपूरे के०) आनंदना पूरे हे मुनीश्वर ! तमे दीठी. अथवा योगनालिका दीठी ते वारे आनंदनो पूर थयो. हवे ते योगनालिका सुधी केम पहोंचवुं ? ते माटे तेनो सरल मार्ग जोवा लाग्या. ते मार्ग जोतां उदासीनता नामे शेरी हाथमां आवी,

ते अनुलोम उपसर्ग कहीए, अने अनेक प्रकारनां ताडन, तर्जनादिक करवे करीने जे थाय ते प्रतिलोम उपसर्ग कहीए. एवा जे उपसर्गनो वर्ग एटले समूह, ते हे मुनि ! अपवर्ग जे मोक्ष तेना मार्ग जणी चालतां थका तमने नड्यो, परंतु तमे ते उपसर्गना पाशमां पड्या नहीं एवी तमारी समर्थाइ छे, माटे धन्य छे तमने ! हे स्वामिन् ! तमे मोक्षसुखना अभिलाषी छो, अने तमे संसारने दुःखमय जाण्यो छे ॥ ६ ॥

दोय चोर उठंता विषम व्रजंता ॥ वि० ॥ धीरजपविदंडे तेज प्रचंडे ता-
डीया ॥ वा० ॥ नइधारण तरतां पार उतरतां ॥ वि० ॥ नवि मारग लेखा
विगत विशेषा देखीए ॥ वा० ॥ ७ ॥

अर्थ–वली हे मुनि ! तमने मोक्षमार्गे जावा जणी आत्माना अध्यवसाय शुभ प्रवर्त्ततां ए मार्गे चालतां राग अने द्वेष ए बे चोर उठ्या. ए बे केवा छे ? तो के चार कषायनां मूल छे, कारण के क्रोध अने मान ए बे द्वेषनां छे, तथा माया अने लोभ ए बे रागनां छे, ते राग द्वेषरूप बे चोर उठतां तेमणे विषम एटले परम आकरे भवपर्यटनरूप मार्गे (व्रजंता के०) लइ जवानुं मन करवा मांड्युं. तेमणे विचार्युं जे ए जीव संसार मध्ये आपणा टोला मांहेथी जतो रहे छे, माटे तेने लेवा ते चोर उठ्या, परंतु तमारी कोइ आत्मपरिणामनी निर्मल धारारूप धीरज जे धैर्य, तद्रूप (पविदंडे के०) वज्रनो जे दंड तेणे करी (तेज प्रचंडे के०) प्रचंड तेजपणे एटले आकराशपणे (ताडीया के०) ताडना करी हण्या, ते बेहु तमाराथी दूर रह्या. ते एवा के फरी पाछा संसार मांहे तमने ढूकडा पण आवे नहीं एवी शीखामण तेने मली. वली (नइधारण के०) नदीनो धरनार जे समुद्र छे ते इहां अपारावार जे संसारसमुद्र, तेने पोताने भुजबले, पोताने पराक्रमे, कोइनी सहाय लीधा विना तरतां एटले तरीने तेनो पार जे कांठो तेने उतरतां थका

(नवि मारग लेखा के०) कांइ मार्गनुं लेखुं नथी, एटले संसारसमुद्र तरीने कांठे जवाय तेना घणा मार्गों छे, अर्थात् जेटला जीवना भेद छे तेटला मार्ग पण अनुमाने जाणवा, माटे (विगत के०) गयुं छे विशेषपणुं जेथी एम कह्याथी आटलाज मार्ग थया एवी खबर न पडे, जे आ मार्ग अमुक गतिनो, अमुक जीवविशेषनो एम स्पष्ट मालम पडे नहीं, एवा गणती विनाना संसारसमुद्रना मार्ग छे ॥ ७ ॥

तिहां जोगनालिका समता नामे ॥ वि० ॥ तें जोवा मांडी उतपथ छांडी
उद्यमे ॥ वा० ॥ तिहां दीठी दूरे आनंदपूरे ॥ वि० ॥ उदासीनता शेरी
नहीं भवफेरी वक्र छे ॥ वा० ॥ ८ ॥

अर्थ—तिहां हे स्वामिन्! तमे अध्यवसायनी स्थिरताए करीने विचार्युं जे मारे तो मुक्तिपुरी साथे प्रयोजन छे, ते वारे मननी जिहां चंचलता छे तिहां तो भवाभिनंदीपणुं छे, माटे तमे मननी चंचलतानो स्थिर भाव करी मन, वचन, काया ए त्रणेनुं जे भिन्नपणुं छे, ते त्रणेनी एकाग्रता करी, ते वारे समता एटले समपणे अध्यवसाय कर्या. एवा त्रण योगरूप समता नामे योगनी जे प्रनालिका तेने तमे तिहां जोवा मांडी अने बीजा घणा मार्ग देखीने ते सर्वेने उन्मार्ग करी जाण्या, एटले तमे जोयुं जे बीजे मार्गे सिरूपणुं नथी. समता नामे योगनी नालिका जो जडे तो तेज कामनी छे, ते वारे उतपथ जे उन्मार्ग तेने छांडी उद्यमे करी तें समता योगनालिकानेज निश्चलपणे जोवा मांडी. ते समता नालिका जोतां जोतां तिहां (दूरे के०) वेगलेथी समतारूप जे योगनालिका तेने (आनंदपूरे के०) आनंदना पूरे हे मुनीश्वर ! तमे दीठी. अथवा योगनालिका दीठी ते वारे आनंदनो पूर थयो. हवे ते योगनालिका सुधी केम पहोंचवुं ? ते माटे तेनो सरल मार्ग जोवा लाग्या. ते मार्गे जोतां उदासीनता नामे शेरी हाथमां आवी,

एटले सर्व संसारी जाव गगनाभ्रवत् क्षणिक दृष्टनष्ट एवी रीते धनादिक उपर जे उदासीन परिणाम तेने उदासीनता कहीए, ते उदासीनताने आदरीने ते उदासीनता शेरी हे मुनि ! तमे हाथ कीधी, अने ते उदासीनता जेणे आदरी तेने (नहीं जवफेरी वक्र छे के०) जे संसार ते मांहे फरवुं तेनुं वक्रपणुं नथी, एटले तेनी वांकाइ जिहां नथी एवी छे अर्थात् जेने एक सरल गति तेने एक मोक्षगतिज होय, तेथी तमे पण तेज गतिप्रापक छो ॥ ७ ॥

ते तुं नवि मूके जोग न चूके ॥ वि० ॥ बाहिर ने अंतर तुंज निरंतर सत्य
छे ॥ वा० ॥ नय छे बहुरंगा तिहां न एकंगा ॥ वि० ॥ तुमे नयपक्षकारी
छो अधिकारी मुक्तिना ॥ वा० ॥ ए ॥

अर्थ–ते उदासीनता शेरी तमारे हाथ आव्या पछी तेने (तुं नवि मूके के०) तमे मूको नहीं, कारण के तमे मन मांहे विचार्युं जे अनादि कालना जवकांतार मांहे अटन करतां करतां अपूर्व अभ्यासे आत्मानी परिणति सुधरे, तेथी चिंतामणि, कामकुंज, कामगवीनी परे दुष्प्राप्य एवी वस्तु पामीने जो प्रमादादि दोष लगाडीश तो ए मुजथी वेगली जती रहेशे, एम चिंतवीने हवे ते शेरीने तमे न मूको अने (जोग न चूके के०) मन, वचन, कायना योग एकाग्रतामां लीधा छे तेने तमे न चूको, एटले न मूको, माटे (तुंज के०) तमेज (बाहिर ने अंतर के०) बाह्य अने अभ्यंतरमां (निरंतर के०) अंतर रहित हरहमेश (सत्य छे के०) साचा छो, एटले जिन्न नथी, जेवा बाह्य सत्य छो तेवा मांहे अंतरमां पण सत्य छो. वली हे स्वामिन् ! (नय छे बहुरंगा के०) नय ते घणा प्रकारना छे, ते जेमके नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समजिरूढ अने एवंजूत, ए सात मूल नय जाणवा. ते एकेका नयना वली सो सो जेद छे, सर्व मली सात नयना सातसें जेद थाय छे, ते सर्वना जिन्न जिन्न स्वजाव छे, पण तिहां ते नय (न एकंगा के०) एकंगा नथी. ते मूल सात

नयमां पण वली एक अपेक्षाए प्रथमना चार नय ते व्यवहारना घरना छे, अने उपरना जे त्रण नय ते निश्चयना घरना छे, अने बीजी अपेक्षाए पहेला त्रण नय व्यवहारना घरना छे, अने पाछला चार नय निश्चयना घरना छे. ते सर्वना मत जूदा जूदा छे, पण श्रीवीतरागनो मत सर्व नय सम्मत छे, एवा विविध प्रकारना रंगना नय ते एकंगा नथी, तेमां तमे (नयपक्षकारी के०) उपरना निश्चयना घरना जे त्रण नय छे तेना पक्षकारी छो, तमे केवल एक अद्वितीय कर्मलेप-रहित मोक्षना अधिकारी छो. एतावता हवे तमारे मोक्ष विना बीजे क्यांइ जवुं नथी ॥ ए ॥

तुमे अनुभव जोगी निज गुण भोगी ॥ वि० ॥ तुमे धर्मसंन्यासी शुध्ध
प्रकाशी तत्त्वना ॥ वा० ॥ तुमे आतमदरसी उपशम वरसी ॥ वि० ॥
सिंचो गुण वाडी थाये ते जाडी पुण्यशुं ॥ वा० ॥ १० ॥

अर्थ—वली हे मुनीश्वर ! तमे अनुभव जे आत्मस्वभावरमण तेना योगी छो. आत्माना मूल गुणनो जे खरेखरो विचार करवो, तद्रूप अनुभव तमने प्रगट्यो छे. वली तमे अनंतज्ञान, अनंत-दर्शन, अनंतचारित्र, अकषायी, अवेदी, अयोगी, अलेशी, अतींद्रिय प्रमुख (निज गुण के०) पोताना गुण तेना भोक्ता छो. वली तमे आत्मधर्म चोथा गुणठाणाथी मंडाणो ते व्यवहार धर्म, तेमां चौदमा गुणठाणानो निश्चय धर्म एवा धर्मने सम्यक् प्रकारे (न्यास के०) जे स्थापे छे तेने धर्मसंन्यासी कहीए. ते तमे धर्मसंन्यासी छो. वली जे मार्गथी मुक्तिपद पामीए ते तत्त्वमार्ग जाणवो. ते तत्त्वमार्गना शुद्ध प्रकाशना करनार छो. वली हे मुनीश्वर ! तमे (आतमदरसी के०) आत्माने विभाव दशाथी निवारीने स्वभाव दशामां स्थाप्यो, केवलज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप आ-त्मानो मूल धर्म छे तेनेज एकांते स्थापीने आत्मगवेषणा करो एवा तमे आत्मदर्शी छो. वली तमे शांत रसने निकटवर्त्ती करीने खेदादिक दोषने दूर करी केवल उपशमरूप वरसादनी वृष्टिना

वरसावनारा छो. वली तमे तमारा आत्मिक गुणनी वाडी तेने उपशम रस जे शांत रस, तद्रूप पाणीए करीने सिंचो, जेम ते (पुण्यशुं के०) पुण्य संघाते जाडी थाय, तेजवंती थाय, पुष्ट थाय, एटले गुण पुष्ट थाय, गुणगणवृद्धिमत्ताए पुण्यथी धर्म वधे, पछी द्रव्यधर्मथी भावधर्म पण पामो ॥ १० ॥

अप्रमत्त प्रमत्त न द्विविध कहीजे ॥ वि० ॥ जाणंग गुणठाणंग एकज
भाव ते तें ग्रह्यो ॥ वा० ॥ तुमे अगम अगोचर निश्चय संवर ॥ वि० ॥
फरस्युं नवि तरस्युं चित्त तुम केरुं स्वप्नमां ॥ वा० ॥ ११ ॥

अर्थ–वली छठ्ठुं प्रमत्त गुणठाणुं अने सातमुं अप्रमत्त गुणठाणुं ए बे गुणठाणां साधु चारित्रीयाने रहेवानां छे. तेनी एकेकनी अंतर्मुहूर्त्त प्रमाण स्थिति छे, बे गुणठाणांनी मली देशे ऊणी एक पूर्वकोटि वर्षनी स्थिति छे, ते बे गुणठाणां यति आश्रयी कह्यां छे, पण हे स्वामिन् ! तमारे विषे ए बे गुणठाणां (न द्विविध कहीजे के०) बे प्रकारे छे एम नहीं कहेवाय, तमारे विषे तो (जाणंग के०) उपयोग युक्त जे (गुणठाणंग के०) गुणनुं स्थानक (एकज भाव ते के०) ते एकज अप्रमत्त गुणठाणाना भावे (तें ग्रह्यो के०) तमे ग्रहण कर्युं छे, एटले तमे तो एक सातमा अप्रमादी गुणठाणानोज भाव ग्रहण कर्यो छे, केमके घणा साधुजनोने अंतर्मुहूर्त्त छठ्ठुं प्रमत्त एटले प्रमादी गुणठाणुं रहे छे, वली अंतर्मुहूर्त्त सातमुं अप्रमादी गुणठाणुं रहे छे. तिहां अंतर्मुहूर्त्त ते जघन्यथी तो नव समयनुं छे, अने उत्कृष्टुं बे घडीमां एक समय ओछानुं छे, अने मध्यम तो अंतर्मुहूर्त्तना असंख्याता विकल्प थाय छे, ते मांहे जे साधु लघु जघन्य अंतर्मुहूर्त्तना कालप्रमाण छठे गुणठाणे रहीने उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त कालप्रमाण सातमे गुणठाणे रहे, ते वारे ते साधु अप्रमादी गुणठाणेज घणो रह्यो कहेवाय. तेम तमे पण सातमे गुणठाणे घणा काल लगण अप्रमादी थकाज रहो छो, माटे तमे एकज सातमा गुणठाणानो भाव ग्रह्यो छे, तेनाज अंगीकार-

कर्त्ता छो. वली तमारुं स्वरूप कोइने गम्य नथी, माटे तमे अगम छो. वली हे स्वामिन् ! तमारा आत्माना अध्यवसाय चर्मदृष्टिवालाने गोचर नथी, माटे तमे अगोचर छो. वली तमारुं चारित्र निश्चयथी छे, माटे तमे निश्चयरूप छो. तथा (संवर के०) तमे पांच इंद्रियने संवरी छे. हवे नवां कर्म तमने बांधवां नथी, परंतु मूलगां छे तेने क्षय करशो, माटे तमे संवररूप छो. वली हे प्रभु ! तृष्णारूप तृषाए तमारुं चित्त स्वप्नमां पण फरस्युं नथी, एटले तृष्णा छे ते कर्मनी वधारनारी छे तेने तो तमे प्रथमथीज पोताने वशवर्त्ती करी छे, केमके जो वश न होय तो स्पर्शें, माटे तमारुं चित्त स्वप्नमां पण तृष्णाए स्पर्श्युं नथी. वली प्रकारांतरे हे मुनीश्वर ! साधु छठा सातमा गुणठाणाना वासी होय, पण तमारामां ए बे गुणठाणां नथी. तमारे विषे जाणपणुं तो बे गुणठाणांनुं छे, पण भावथी एक सातमुं गुणठाणुंज ग्रह्युं छे ॥ ११ ॥

तुज मुद्रा सुंदर सुगुण पुरंदर ॥ वि० ॥ सूचे अति अनुपम उपशम
लीला चित्तनी ॥ वा० ॥ जो दहन गहन होय अंतरचारी ॥ वि० ॥ तो किम
नवपल्लव तरुअर दीसे सोहतो ॥ वा० ॥ १२ ॥

अर्थ–वली हे मुनिराज ! (तुज मुद्रा सुंदर के०) तमारी बाह्य प्रकारे मुख प्रमुख शरीरनी मुद्रा देखतां थका घणीज (सुंदर के०) मनोहर लागे छे, माटे ते मुद्रा (सुगुण के०) भला गुण तेनी (पुरंदर के०) इंद्र छे, कारण के संसारी जीवमां पहेला गुणठाणावालाथी चोथा गुणठाणावालामां घणा गुण होय. वली चोथावालाथी पांचमा गुणठाणे वर्तता जीवोमां वधारे गुण होय. तेथी पण तमे तो छठा सातमा गुणठाणे रह्या छो, माटे ते गुणठाणां प्रमाणेज तमारा भला गुण बाह्य आकारे देखाय छे. एवी जे तमारी बाह्यनी मुद्रा, तेज अमोने अत्यंत अनुपम एटले उपमाए रहित एवी तमारा अंतरमां (चित्तनी के०) अंतःकरणनी पण उपशम एटले शांत रस-

मय जे लीला, तेने (सूचे के०) सूचवे छे, एटले जणावे छे. अर्थात् जेवी तमारी बाह्य थकी उपशम रसनी लीला देखाय छे तेवुंज अंतरमां तमारुं चित्त पण उपशम रसमयज छे. इहां कोइ पूछे जे बाह्य इंगिताकार देखीने अंतरमां पण तेवोज परिणाम हशे, एम तमे शा उपरथी जाणो छो ? कदापि बहारनी मुद्रा तो सुंदर देखो छो, पण अभ्यंतरमां दोष सहित हशे तो ? एम पूछनारने दृष्टांतपूर्वक उत्तर आपे छे के जो (तरुअर के०) वृक्ष तेने (अंतरचारी के०) अंतरंग वचाले थडमां कोटर मांहे (दहन के०) अग्नि भर्यो होय तो पछी ते वृक्ष बहारथी पण केवी रीते नवपल्लव थकुं (सोहतो के०) शोभतुं देखाय ? अर्थात् नज देखाय. तेम तमारा अंतर मांहे जो उपशम लीला न होय तो बाह्याकारे पण समतामय मुद्रा क्यांथीज होय ? माटे हुं जाणुं छुं जे बाह्य थकी तमारी मुद्रा गुणवंती देखाय छे, तो अंतरंगमां पण तमे उपशम गुणे करी संभृत छो, तेथी सुगुण पुरंदर छो ॥ १२ ॥

वैरागी त्यागी तुं सोभागी ॥ वि० ॥ तुज शुभ मति जागी भावठ भांगी
मूलथी ॥ वा० ॥ जगपूज्य तुं मारो पूज्य छे प्यारो ॥ वि० ॥ पहेलां
पण नमीयो हवे उपशमीयो आदर्यो ॥ वा० ॥ १३ ॥

अर्थ—वली हे स्वामिन् ! तमे वैरागी एटले रागरहित छो. वली तमे बाह्य अने अभ्यंतर एवा बे प्रकारना संयोगना त्यागी छो. तिहां बाह्यथी तो स्त्री, पुत्र, धन, धान्यादिक परिग्रह, तेथी रहित छो, अने अंतरंगथी क्रोधादिक कषाय जे राग द्वेषादिक योग तथा अविरति, मिथ्यात्वथी रहित छो, माटे त्यागी छो. वली तमे सौभाग्यवंत छो. वली हे रुषीश्वर ! तमने भली मति जे रुडी बुद्धि ते जाग्रत थइ, अने कुमतिनो नाश थवाथी सुमतिनुं राज्य थयुं, तेथी भवभ्रमणपरंपरादिकनी जे भावठ हती ते भांगी गइ, एटले तमारे भवनो हठ तथा भवनी अनादि स्थिति तथा

नावठ एटले दरिद्रपणुं ते सर्व मूलथी नांगी गयुं, माटे हवे तमे नीहाल थया. वली हे मुनि! तमे स्वर्ग, मृत्यु अने पातालरूप त्रण जगतमां सुर, असुर अने मनुष्य तेहने वृंदे पूजनीय बो, माटे तमे जगत्रयपूज्य बो, एटले त्रण जगतने पूजवा योग्य बो, अने मारा तो वली अत्यंत वल्लन प्यारा पूज्य बो, शामाटे जे पहेलां पण (नमीयो के०) पूर्वे पण गृहस्थाश्रममां तमे मारे नमवा योग्य ठो, केमके तमे मारा काका थाव बो, ते पिताने ठेकाणे बो, जे माटे उत्तम विवेकवंत पुरुपने वृद्धनो विनय करवो उचित बे. विनय बे ते सहज श्रीजिनशासननुं मूल बे. विनयी पुरुष धर्म पामे, सुलनबोधी थाय, विनयथी देव, दानव सर्व वशवर्ती थाय, आचारनुं मूल पण विनय बे, सर्व शुन गुण विनयने वश बे, माटे तमे प्रथम पण नमवा योग्य हता, अने हवे तो वली उपशमीयो एटले कषायादिक उपशमकारक जे धर्म तेने तमे आदस्यो एटले अंगीकार कस्यो, अर्थात् चारित्र आदस्युं, तेथी तमे त्रणे जगतने नमवा योग्य थया. तेमां मारा तो वली विशेषे करी नमस्कार करवा योग्य तथा पूजा, सत्कार, सन्मान करवा योग्य बो, माटे हुं आपने वारंवार वांदुं बुं. एम अनेक युक्ति सहित ज्ञानना जाणवा थकी विनयवचने करीने नक्ति सहित अनेक प्रकारनी स्तवना श्रीपाले करी. तेमांथी किंचित् मात्र इहां कही देखाडी बे ॥ १३ ॥

एम चोथे खंडे राग अखंडे संथुएयो ॥ वि० ॥ जे मुनि श्रीपाले पंचमी
ढाले ते कह्यो ॥ वा० ॥ जे नवपद महिमा महिमाए मुनि गावशे ॥ वि० ॥
ते विनय सुजश गुण कमला विमला पावशे ॥ वा० ॥ १४ ॥

अर्थ—ए प्रकारे चोथा खंडने विषे अखंड रंगे एटले अखंड आनंदे करी सहित अथवा पाठांतरे राग अखंडे एटले पूर्ण रागे करी जे (मुनि के०) अजितसेन मुनि महाराजने (श्रीपाले

के०) श्रीपाल राजाए (संथुणयो के०) संस्तव्यो, ते इहां पांचमी ढाले करीने कह्यो. श्रीसिद्धचक्र प्रतिष्ठित नव पदनो महिमा तेने मोटा महिमाए करीने जे मुनि सावद्य व्यापार रहित थको गावशे, अथवा इहां मुनिनी प्रधानता करी, परंतु उपचारथी गृहस्थ पण लेवो, माटे मुनि अथवा गृहस्थ जे गुण गाशे ते विनय अने जलो यश तद्रूप गुण तेनी (कमला के०) लक्ष्मीने (विमला के०) निर्मलपणे पामशे. अथवा ए रास प्रथम श्रीविनयविजय गणिए रचवा प्रारंभ कर्यो हतो. तेमणे त्रीजा खंडनी पांचमी ढाल मांहेली एकवीश गाथा पर्यंत रची तेवारे समाधिस्थ थया, काल प्राप्त थया. तदनंतर श्रीयशोविजय गणिए पूर्ण कर्यो. ते अनुसारे श्रीविनय अने यश ए बे कवि कहे छे के जे मुनि नव पद महिमाने महिमाए करी गाशे, अथवा (मही मांहे के०) पृथ्वीने विषे गावशे ते जला गुण सहित सिद्धिरूप कमलाने पामशे. एम जाणी उत्तम पुरुषे नव पदनुं ध्यान त्रिकाल करवुं ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

अजितसेन मुनि इम थुणी, तेहने पाट विशाल ॥ तस अंगज गजगति
सुमति, थापे नृप श्रीपाल ॥ १ ॥ कारज कीधां आपणां, आरजने सुख
दीध ॥ श्रीपाले बल पुण्यने, जे बोल्युं ते कीध ॥ २ ॥

अर्थ–ए प्रकारे अजितसेन मुनिनुं स्तवन करीने पछी तेनो अंगज एटले पुत्र गजगति एवे नामे ते सुमति एटले रुडी बुद्धिनो धणी छे, तेने श्रीपाल राजाए अजितसेननी पाटे स्थाप्यो ॥ १ ॥ ए रीते पोतानां कार्य कर्यां, अने आरज जे सज्जन पुरुषो तेमने सुख दीधां, एटले सुखी कर्या. एम श्रीपाले पोताना पुण्यने बले करी जे मुखथी बोल्यो हतो ते सर्व सफल कर्युं ॥ २ ॥

श्री श्रीपाळ राजानो रास

प्रकाशक—श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुंबइ.

શ્રીપાળ રાજા અને સૈન્ય.



शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक १५३.







ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૨૧૧.



હવે શ્રીપાળ રાજા પોતાની જીત કરીને ચંપા નગરી માહે પ્રવેશ કરતો હવો.

લક્ષ્મી આર્ટ છાપખાના, મુંબઈ

॥ ढाल छठी ॥ वलद ज्ञला छे सोरठी रे लाल ॥ ए देशी ॥

विजय करी श्रीपालजी रे लाल, चंपा नगरीए करे प्रवेश रे ॥ सोज्ञागी ॥ टाव्या लोकना सकल कलेश रे ॥ सो० ॥ चंपा नगरी ते बनी सुविशेष रे ॥ सो० ॥ शणगार्यां हाट अशेष रे ॥ सो० ॥ पटकूले ढाया प्रदेश रे ॥ सो० ॥ जय जय ज्ञणे नर नारीउं रे लाल ॥ १ ॥ फरके ध्वजा तिहां चिहुं दिशे रे लाल, पग पग नाटारंज्ञ रे ॥ सो० ॥ मांड्या ते सोवन थंज्ञ रे ॥ सो० ॥ गावे गोरी अदंज्ञ रे ॥ सो० ॥ जेणे रूपे जीती छे रंज्ञ रे ॥ सो० ॥ बंज्ञने पण होय अचंज्ञ रे ॥ सो० ॥ जय० ॥ २ ॥

अर्थ–हवे श्रीपाल राजा (विजय करी के०) पोतानी जीत करीने चंपा नगरी मांहे प्रवेश करतो हवो. वली लोकनां मनमां एवा क्लेश हता जे आ ठेकाणे शुं जाणीए शुं थशे? ते सदा सौज्ञागी एवा श्रीपाले सर्व लोकना क्लेश टाल्या. ते समये चंपा नगरीनी शोज्ञा विशेष प्रकारे बनी रही, लोकोए चंपा नगरीनां (अशेष के०) समस्त हाटनी श्रेणी शणगारी, पटकूल जे हीरागल वस्त्र तेणे करी तेना प्रदेश एटले हाटनी भींतोने ढाही लीधी छे. चंपा नगरीनां नर नारी सर्व लोको ते ठाम ठाम श्रीपाल राजानो यश जय जय शब्दे बोलवा लाग्यां ॥ १ ॥ चारे दिशाए मोटी ध्वजाउं फरकी रही छे, पगले पगले नाटारंज्ञ थइ रह्यो छे, ठाम ठाम सोनाना थांज्ञला मांड्या छे, ते थंज्ञ उपर मांचा मांड्या छे, तेनी उपर बेठी थकी (गोरी के०) स्त्रीउं ते (अदंज्ञ के०) कपटरहितपणे मांगलिकनां गीत गाय छे. ते स्त्रीउं रूपे करी रंज्ञाने पण जीते एवी छे, ते देखी (बंज्ञने के०) ब्रह्माने पण अचंबो थाय जे आवा रूपवाली स्त्रीउंने में कये दिवसे घडी छे? ॥ २ ॥

सुरपुरी झंपा जे करी रे लाल, चंपा हुइ तेण वार रे ॥ सो० ॥ मदमोद समुद्रमां सार रे ॥ सो० ॥ फलीयो साहस मानुं उदार रे ॥ सो० ॥ तिहां आव्यो हरि अवतार रे ॥ सो० ॥ श्रीपाल ते कुल उद्धार रे ॥ सो० ॥ जय० ॥ ३ ॥ मोतीय थाल भरी करी रे लाल, वधावे वर नार रे ॥ सो० ॥ करकंकणना रणकार रे ॥ सो० ॥ पग झांझरना झमकार रे ॥ सो० ॥ कटिमेखलना खलकार रे ॥ सो० ॥ वाजे मादलना धोंकार रे ॥ सो० ॥ जय० ॥ ४ ॥

अर्थ—इहां दृष्टांत कहे छे. जेम कोइक पुरुष तपस्या करवी, अथवा सत्य बोलवुं आदिक अनेक प्रकारनां साहस करे छे, तेमांना कोइक साहसने अंगीकार करीने पछी ते साहस करवाथी कोइ पण प्रकारनुं शुभ स्थानक पामे, तेम (सुरपुरी के०) स्वर्गपुरीए विचार्युं जे आ स्थानक करतां कोइ वधारे कीर्त्तिनुं स्थानक पामुं तो सारुं एवो (मद के०) अहंकार तेनो (मोद के०) हर्ष धरती थकी तेणे (सार के०) प्रधान समुद्रमां (झंपा के०) झंपापात कर्यो. ते हुं एम मानुं छुं के ते सुरपुरीनुं (उदार के०) मोटुं जे (साहस के०) धैर्य ते फल्युं. जे (तेणी वार के०) ते वखते ते चंपारूप थइ, अने तिहां पोताना कुलनो उद्धार करनार एवो जे श्रीपाल ते (हरि के०) इंद्रावतार थयो. अर्थात् ते चंपा नगरी इंद्रपुरीथी पण अधिक बनी रही छे, अने तिहां श्रीपाल ते इंद्रना अवतार तुल्य छे ॥ ३ ॥ हवे श्रीपाल राजा जे वारे नगरीमां प्रवेश करे छे ते वारे मोतीओना थाल भरी करीने (वर के०) प्रधान सौभाग्यवती स्त्रीओ तेने वधावी लीए छे, अने वधावती वखते ते स्त्रीओना (कर के०) हाथमां कंकण पहेर्यां छे तेना रणकार शब्द थाय छे, पगमां झांझर पहेर्यां छे तेनो झमकार थइ रह्यो छे, कटमां मेखला पहेरी छे तेनो खल-

कार शब्द थइ रह्यो छे, वळी (मादल के०) पखावाजना धमप धमप धौंकार शब्द थाय छे ॥४॥

सकल नरेसर तिहां मली रे लाल, अभिषेक करे फरी तास रे ॥ सो० ॥
पितृपट्टे थापे उल्लास रे ॥ सो० ॥ मयणा अभिषेक विशेष रे ॥ सो० ॥
लघु पट्टे आठ जे शेष रे ॥ सो० ॥ सीधो जे कीधो उद्देश रे ॥ सो० ॥
जय० ॥ ५ ॥ एक मंत्री मतिसागरु रे लाल, तिन धवल तणा जे मित्त
रे ॥ सो० ॥ ए चारे मंत्री पवित्त रे ॥ सो० ॥ श्रीपाल करे शुभ चित्त
रे ॥ सो० ॥ ए तो तेजे हुउ आदित्त रे ॥ सो० ॥ खरचे बहुलुं निज
वित्त रे ॥ सो० ॥ जय० ॥ ६ ॥ कोसंबी नयरी थकी रे लाल, तेडाव्यो
धवलनो पुत्त रे ॥ सो० ॥ तेनुं नाम विमल छे युत्त रे ॥ सो० ॥ तेह शेठ
कर्यो सुमुहुत्त रे ॥ सो० ॥ सोवन पट बंध संयुत्त रे ॥ सो० ॥ कीधा
कोश ते अखय सुगुत्त रे ॥ सो० ॥ जय० ॥ ७ ॥

अर्थ–पछी (सकल के०) समस्त राजाउ मलीने (तास के०) ते श्रीपाल राजानो पट्टाभिषेक फरीथी करे, एटले एक तो पूर्वे बालपणामां पट्टाभिषेक कर्यो हतो, तेनो विरह थया पछी फरी हमणां पट्टाभिषेक कर्यो, माटे फरीथी (पितृपट्टे के०) पितानी पाटे घणा उल्लासथी स्थापीने राज्याभिषेक करता हवा अने नव स्त्री मांहे मयणासुंदरीने (विशेष के०) पट्टराणीपणे स्थापीने अभिषेक कर्यो, अने शेष जे आठ स्त्रीउ रही तेने लघु स्त्रीउने स्थानके पट्टाभिषेक कर्यो. श्रीपाले जे उद्देश धार्यो हतो के मारा भुजबलथी राज लउं ते सर्व कार्य सिद्ध्युं ॥ ५ ॥ एक मतिसार नामे प्रधान जे बुद्धिनो समुद्र छे ते अने बीजा धवल शेठना जे त्रण मित्र हता

ते मलीने चारे महा पवित्र प्रधान ते श्रीपाले पोताना शुभ चित्ते करीने कह्या. ए श्रीपाल तेजे करी (आदित्त के०) आदित्य एटले सूर्य जेवो थयो, अने घणुं पोतानुं (वित्त के०) द्रव्य तिहां खरचवा लाग्यो ॥ ६ ॥ वली कोसंबी नगरीथी धवल शेठना पुत्रने तेडाव्यो, ते निर्मल मननो छे, माटे तेनुं नाम विमल छे ते युक्तज छे, तेने शुभ मुहूर्ते सोनेरी (पट के०) वस्त्रबंध सहित नगरशेठ कर्यो, वली तेना (कोश के०) भंडार खजाना ते (अखय के०) कोइ काले क्षय थाय नहीं एवा (सु के०) भले प्रकारे (गुत्त के०) गुप्त कर्या ॥ ७ ॥

सिद्धउत्सव चैत्य अठाइयां रे लाल, विरचावे विधि सार रे ॥ सो० ॥ तेनो
चक्रनी पूजा उदार रे ॥ सो० ॥ करे जाणी तस उपगार रे ॥ सो० ॥ जय०
धर्मी सहु परिवार रे ॥ सो० ॥ धर्मे उल्लसे तस दार रे ॥ सो० ॥
॥ ८ ॥ चैत्य करावे तेहवां रे लाल, जेह स्वर्गशुं मांडे वाद रे ॥ सो० ॥
विधुमंडल अमृत आस्वाद रे ॥ सो० ॥ ध्वज जीहे लीए अविवाद रे
॥ सो० ॥ तेणे गाजे ते गुहिरे नाद रे ॥ सो० ॥ मोडे कुमतिना उन्माद
रे ॥ सो० ॥ जय० ॥ ए ॥

अर्थ–हवे ते श्रीपाल परमेश्वरना चैत्यने विषे अठाइ आदिक महोत्सव श्रेष्ठ विधिए करीने (विरचावे के०) रचावे छे. तिहां (उदार के०) मोटी सिद्धचक्रजीनी पूजा ते श्रीसिद्धचक्रजीनो उपकार जाणीने करे छे. एम ते श्रीपालनो सर्व परिवार धर्मिष्ठ छे, अने तेनी (दार के०) स्त्रीउ पण धर्मने विषे उल्लसे एटले उल्लास पामे छे ॥ ८ ॥ वली जे स्वर्गनी साथे पण वाद करे एवां परमेश्वरनां देरां करावे छे, जे चैत्य पोतानी ध्वजारूप (जीहे के०) जीभे करीने विधुमंडल जे चंद्रमानुं मंडल ते मांहे रह्युं जे अमृत तेनुं अविवादपणे आस्वादन करे छे, (तेणे के०) तेने योगे करी

ते ध्वजाउं गुहिर एटले गंभीर शब्दे करीने गाजी रही छे. ए उत्प्रेक्षा अलंकार जाणवो. वली कुमति जे माठी मतिना धणी तेना उन्मादने मोडे छे, एटले दूर करे छे ॥ ए ॥

पडह अमारी वजावीया रे लाल, दीधां दान अनेक रे ॥ सो० ॥ साचवीया सकल विवेक रे ॥ सो० ॥ समकितनी राखी टेक रे ॥ सो० ॥ न्याये राम कहायो ते छेक रे ॥ सो० ॥ ते राजहंस बीजा भेक रे ॥ सो० ॥ जय० ॥ १० ॥ अचरिज एक तेणे कर्युं रे लाल, मन गुप्त गृहे हुता जेह रे ॥ सो० ॥ कर्णादिक नृप ससनेह रे ॥ सो० ॥ छोडावीया सघला तेह रे ॥ सो० ॥ निज अद्भुत चरित अछेह रे ॥ सो० ॥ देखावी निज गुणगेह रे ॥ सो० ॥ जय० ॥ ११ ॥

अर्थ—वली श्रीपाले अमारीना पडह वजडाव्या, सुपात्रने अनेक प्रकारनां दान दीधां. एम तेणे धर्म संबंधी सर्व विवेक साचव्या. तथा शुद्ध देव, शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मरूप जे समकित, तेनी टेक राखी. ए श्रीपाल न्यायमार्गमां तो छेक रामचंद्रजी जेवो कहेवाणो, माटे ते समये श्रीपाल ते राजहंस सरखो छे, अने बीजा राजा ते भेक एटले देडकां सरखा छे ॥ १० ॥ वली ते श्रीपाले एक अचरिज कर्युं ते कहे छे के पूर्वे जे करणादिक राजाउं थया छे ते शूरपणे, त्यागीपणे, भोगीपणे, गुणवंतपणे लोकनां मनमां सस्नेहपणे रहेता हता, तेथी जाणीए जे ते मनरूप जे गुप्त गृह एटले बंदीखानुं तेमां पड्या होय नहीं ? ते जे वारे ए श्रीपाल महागुणवंत प्रगट थयो ते वारे एणे अद्भुत एटले आश्चर्यकारी अछेह एटले छेहरहित पार विनानुं पोतानुं चरित्र देखाडीने जगतमां गुणनुं घररूप पोते थयो, एटले दाने करी, यशे करी ते सर्वेथी वधतो थयो, तेथी

सर्व जन एनेज पूर्वोक्त विरुद देवा लाग्या, अने आगलना राजवीओनां नामने विसारवा लाग्या,
माटे ए श्रीपाले ते सर्वने मनरूप वंदीखानामांथी छोडाव्या, ए आश्चर्य कर्युं ॥ ११ ॥

श्रीपाल प्रतापथी तापीयो रे लाल, विधि शयन करे अरविंद रे ॥ सो० ॥
करे जलधिवास मुकुंद रे ॥ सो० ॥ हर गंग धरे निसपंद रे ॥ सो० ॥
फरे नाठा सूरज चंद रे ॥ सो० ॥ अरि सकल करे आक्रंद रे ॥ सो० ॥
जय० ॥ १२ ॥ तस जश छे गंगा सारिखो रे लाल, तिहां अरि अपजश
सेवाल रे ॥ सो० ॥ कपूर मांहे अंगार रे ॥ सो० ॥ अरविंद मांहे अलि-
बाल रे ॥ सो० ॥ अन्योन्य संयोग नीहाल रे ॥ सो० ॥ दीए कवि उपमा
ततकाल रे ॥ सो० ॥ जय० ॥ १३ ॥

अर्थ–हवे श्रीपाल राजाना प्रतापनुं वर्णन करे छे. ते श्रीपालना अत्यंत आकरा तेज प्रताप-
रूप अग्निथी तप्यो थको विधि जे ब्रह्मा तेणे शीतल थवा माटे (अरविंद के०) कमल तेमां
जइ शयन कर्युं, अने मुकुंद जे श्रीकृष्ण तेणे (जलधि के०) समुद्रमां जइ वास कर्यो. प्राग-
वरूनां पांदडां उपर जइ सुइ रह्यो. वली (हर के०) महादेव पोताने शीतलता करवा माटे माथानी
उपर (निसपंद के०) निश्चलपणे (गंग धरे के०) गंगा नदीने धारण करे छे, अने चंद्र सूर्य तो
नासताज फरे छे. तथा (अरि के०) शत्रु ते सर्व (आक्रंद के०) बूमो पाडी रह्या छे ॥ १२ ॥ वली
ते श्रीपालनो यश तो गंगा सरखो उजलो छे, ते गंगा नदीमां सेवाल जोइए, माटे तिहां शत्रुना
अपयशरूप सेवाल छे, वली कपूर सरखो उजलो श्रीपालनो यश, तिहां अंगार एटले कोयला
सरिखो शत्रुनो अपयश छे, तथा कमल समान श्रीपालनो यश, तिहां (अलिबाल के०) भ्रमराना

वालक सरखो कालो शत्रुनो अपयश छे एम अन्योऽन्य संयोगे (नीहाल के०) जोवुं. श्रीपालनो यश अने शत्रुनो अपयश, ए बेनी कवीश्वर सहगामी उपमा आपे छे ॥ १३ ॥

सुरतरु स्वर्गथी उतरी रे लाल, गयां अगम अगोचर ठाम रे ॥ सो० ॥
जिहां कोइ न जाणे नाम रे ॥ सो० ॥ तिहां तपस्या करे अभिराम रे
॥ सो० ॥ जब पाम्युं अद्भुत ठाम रे ॥ सो० ॥ तश करअंगुलि हुआं
ताम रे ॥ सो० ॥ जय० ॥ १४ ॥ जश प्रताप गुण आगलो रे लाल,
गिरुउ ने गुणवंत रे ॥ सो० ॥ पाले राज महंत रे ॥ सो० ॥ वयरीनो
करे अंत रे ॥ सो० ॥ मुखपद्म सदा विकसंत रे ॥ सो० ॥ लीला-
लहेर धरंत रे ॥ सो० ॥ जय० ॥ १५ ॥

अर्थ—हवे (सुरतरु के०) कल्पवृक्षो तेनो स्वर्गमां निवास छे, परंतु तेमणे विचार्युं जे अमारो अर्थी इहां कोइ नथी, एम विचारीने स्वर्गथी उतर्यां, ते (अगम के०) कोइने गम न पडे, (अगोचर के०) कोइ देखे नहीं, तथा कोइ उलखे नहीं, जिहां एनुं कोइ नाम पण न जाणे एवे स्थानके गयां. तिहां जइने अभिराम एटले मनोहर तपस्या करता हवां. ते तपस्या करतां करतां तेमणे तपस्यानुं फलरूप एवुं कोइ स्थानक पोताने रहेवानुं जगतमां दीठुं नहीं के जे तेनी पासे जइने रहे, एवुं कोइ ठेकाणुं पामता न हतां. एम जोतां जोतां (जब के०) जे वारे तेमणे अत्यंत अद्भुत स्थानक पाम्युं ते वारे (तस के०) ते श्रीपाल राजाना (कर के०) हाथनी अंगुलिरूप थयां, एटले कल्पवृक्षो पोतानी तपस्याना माहात्म्यथी श्रीपाल राजानी अंगुलिरूप थयां. ते दान दीए छे, माटे श्रीपाल राजा कल्पवृक्ष समान दानेश्वरी छे, तेथी कविए ए उपमा दीधी छे ॥ १४ ॥ वली जे (जश के०) यश कीर्त्ति, (प्रताप के०) तेज अने गुण, तेणे करी श्रीपाल

अथवा यश, प्रताप अने गुण ते जेना (आगलो के०)
सर्व मांहे (आगलो के०) अग्रेसर छे, (महंत के०) मोटुं उदार राज्य नोगवे
सर्वथी अग्रेसर छे, वली गिरुउं छे अने महागुणवंत छे, राज्यनी लीलालहेरनो धरनारो छे,
छे, वेरीनो (अंत के०) क्षय करे छे एवो पराक्रमी छे,
जेनुं मुखरूप (पद्म के०) कमल ते सदा निरंतर विकस्वर अकुंज रहे छे ॥ १५ ॥

मेरु मवे जे अंगुले रे लाल, कुशअग्रे जलनिधिनीर रे ॥ सो० ॥ फरसे आकाश समीर रे ॥ सो० ॥ तारागण गणित गंजीर रे ॥ सो० ॥ श्री-पाल सुगुणनो तीर रे ॥ सो० ॥ ते पण नवि पामे धीर रे ॥ सो० ॥ जय० ॥ १६ ॥ चोथे खंरू पूरी थइ रे लाल, ए छठी ढाल अजंग रे ॥ सो० ॥ इहां उक्ति ने युक्ति सुचंग रे ॥ सो० ॥ नव पद महिमानो रंग रे ॥ सो० ॥ एहथी लहीए ज्ञानतरंग रे ॥ सो० ॥ वली विनय सुयश सुखसंग रे ॥ सो० ॥ जय० ॥ १७ ॥

अर्थ–हवे श्रीपाल राजाना गुण अगणित छे, माटे कवीश्वर उपमा आपे छे के कोइ पुरुष एवो पण होय जे मेरु पर्वत लाख योजननो उंचो छे तेने पोतानी अंगुलिए करीने (मवे के०) मापी जाय, तथा (कुशअग्रे के०) रूाजनी अणीए करी (जलनिधिनीर के०) समुद्रना पाणीने मापी समुद्र खाली करे, तथा (समीर के०) वायरो आकाशने फरसे, तथा तारानो (गण के०) समूह तेनी पण कोइ (गणित के०) संख्या करी आपे, एटलां वानां दुष्कर छे, ते पण कदा-चित् कोइ गंजीर बुद्धिमंत पुरुषथी दैवयोगे थाय, पण श्रीपाल राजाना जला गुणनो (तीर के०) कांठो ते धीर थको पण न पामे, एटले न पामी शके ॥ १६ ॥ ए चोथा खंरूने विषे छठी ढाल अजंगपणें पूर्ण थइ. (इहां के०) ए ढालमां उक्ति ते कविनी चतुराइ अने युक्ति ते न्याय छेर-

वंशो तेज (सु के०) भलो (चंग के०) मनोहर छे, अने नव पदना महिमानो (रंग के०) आनंद छे, तेथी ज्ञानना (तरंग के०) कल्लोल पामीए, वळी विनय अने सुयश एटले भलो यश तद्रूप सुखनो (संग के०) समागम पामीए ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

एहवे रायऋषि भलो, अजितसेन जसु नाम ॥ ओहिनाण तस उपन्युं, शुद्ध चरण परिणाम ॥ १ ॥ तिण नगरी ते आवीयो, सुणी आगमन उदंत ॥ रोमांचित श्रीपाल नृप, हर्षित हुउ अत्यंत ॥ २ ॥ वंदन निमित्ते आवीयो, जननी भज्जा समेत ॥ मुनि नमी करीय प्रदक्षिणा, बेठो धर्म-संकेत ॥ ३ ॥ सुणवा वंछे धर्म ते, गुरु सन्मुख सुविनीत ॥ गुरु पण तेहने देशना, दे नय समय अधीत ॥ ४ ॥

अर्थ–हवे अजितसेन नाम छे जेनुं एवो राजर्षि, ते भूमितले विहार करतां शुद्ध (चरण के०) चारित्रना परिणामनी लहेरो वृद्धिवंत थतां तेने अनुगामी अप्रतिपातिपणे (ओहिनाण के०) अवधिज्ञान उपन्युं ॥ १ ॥ ते विहार करतो तेज चंपा नगरीए आव्यो. तेना आगमनना (उदंत के०) समाचार वनपालकना मुखथी सांभळीने श्रीपाल राजा रोमांचित थयो थको अत्यंत हर्षित थयो ॥ २ ॥ पछी जननी जे माता अने (भज्जा के०) भार्या एटले स्त्री, तेणे सहित मुनिने वांदवाने निमित्ते आव्यो. तिहां मुनिराजने नमी त्रण प्रदक्षिणा दइ करीने धर्म सांभळवाना संकेते बेठो ॥ ३ ॥ ते श्रीपाल गुरुनी सन्मुख सुविनीतपणे धर्म सांभळवाने इछे छे, अने गुरु पण तेने (नय के०) निश्चय व्यवहार नये करी युक्त तथा नय उपनय युक्त जे (समय के०) सिद्धांत तेने अधीत थका धर्मनी देशना दीए छे ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ हस्तिनागपुरवर नलुं, जिहां पांडु राजा सार रे ॥ ए देशी ॥

प्राणी वाणी जिन तणी, तुम्हे धारो चित्त मझार रे ॥ मोहे मुंझ्या मत फिरो, मोह मूके सुख निरधार रे ॥ मोह मूके सुख निरधार, संवेग गुण पालीए पुण्यवंत रे ॥ पुण्यवंत अनंत विज्ञान, वदे इम केवली नगवंत रे ॥ १ ॥ दश दृष्टांते दोहिलो, मानवनव ते पण लह्ह रे ॥ आरय क्षेत्रे जन्म जे, ते डुर्लन सुकृत संबंध रे ॥ ते डुर्लन० ॥ संवेग० ॥ २ ॥

अर्थ—हवे अजितसेन मुनि देशना आपे बे, अने श्रीपाल प्रमुख सर्व सना सांनले बे. ते देशना अनव्यने योग्य नहीं, माटे मोक्षयोग्य जे नव्य जीव बे तेने उद्देशीने कहे बे के अरे नव्य प्राणीउं ! जेमां दयाधर्म मुख्य बे एवी मोक्षमार्गाधिकारिणी, डुर्गतिडुःखनिवारिणी, पापसंताप-हारिणी, संसारसमुद्रतारिणी जे श्रीजिननी वाणी बे ते तमें तमारा (चित्त मझार के०) मननी मध्ये धारो, पण सांनल्युं अणसांनल्युं म करो. ते वाणी सांनलीने मोहे मुंझ्या मत फिरो, एटले मोहदशामां मुंझ्या थका फरो नहीं. ते मोह क्यां सुधी बे ? तो के ज्यांसुधी जीवने क्षायिक गुण प्रगट्यो नथी त्यांसुधी बे, माटे ते मोह मूकशो ते वारेज (निरधार के०) निश्चे सुख पामशो. ते निश्चय सुख तो सिद्धना जीवोने बे, माटे ते पामवानो उपाय ए बे जे संवेग गुण पालवो. ते संवेगीपणुं कोने कहेवुं ? तो के जेमां मोक्षमार्गानुयायी क्रियानुं करवुं होय तेने संवेगी-पणुं कहीए, माटे ते पालवुं. हे पुण्यवंत जीवो ! तमे सांनलो, ए हितशिक्षा कोनी कहेली बे ? तो के जे महा पुण्यवंत, अनंत विज्ञानना धणी, अनंत शक्तिना धणी, अनंत बलवंत एवा जे केवली नगवंत, तेणे (वदे के०) कहेली बे. ते आगली गाथाए कहे बे ॥ १ ॥ हे नव्यो ! तमे सांनलो के ॥ चुल्लग पासग धन्ने, जूए रयणे अ सुमिण चक्के अ ॥ कुम्म

जुगे परमाणु, दस दिठंता मणुअलंभे ॥ १ ॥ इति दृष्टांत गाथा ॥ ए गाथामां कहेला दश दृष्टांते करी पामवो दुर्लभ एवो (मानवभव के०) मनुष्यनो भव छे, ते पण जो घणोज पुण्यनो संचय होय तो पामीए. ते कदाचित् मनुष्यभव पण (लद्ध के०) पाम्यो, तेमां पण वली आर्य देशमां जन्म पामवो घणो दुर्लभ छे. जो घणी (सुकृत के०) शुभ करणीनो संबंध होय तोज आर्य देश मांहे जन्म पामीए. तिहां भरतक्षेत्रमां बत्रीश हजार देश छे. ते मांहे पण साडापचवीश आर्य देश छे, अने बीजा सर्व अनार्य देश जाणवा. ते आर्य देश कोने कहेवो ? तो के जिहां शुद्ध देव, शुद्ध गुरु अने श्रीवीतरागनो भाखेलो धर्म, तेनी सामग्रीना प्रवर्त्तक जे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, आचार्य, उपाध्याय अने थिविर, ए सात होय, तेने आर्य देश कहीए ॥ २ ॥

आरय क्षेत्रे जनम हुउ, पण उत्तम कुल ते दुर्लभ रे ॥ व्याधादिक कुले
उपनो, शुं आरज क्षेत्र अचंभ रे ॥ शुं० ॥ संवेग० ॥ ३ ॥ कुल पामे
पण दुल्लहो, रूप आरोग आउ समाज रे ॥ रोगी रूपरहित घणा, हीण
आउ दीसे छे आज रे ॥ हीण० ॥ संवेग० ॥ ४ ॥

अर्थ—ते पण कोइ पूर्वभवधर्मकर्त्तव्ययोगे आर्य देशमां जन्म थयो तोपण तेथी शी सिद्धि थाय ? ते आर्य देशमां पण जे मोटा इभ्य व्यवहारिया, शेठ, सेनापति, धन धान्यादिके पूरित तथा कुल ते पितानो पक्ष अने जाति ते मातानो पक्ष ए बे जेना विशुद्ध निर्मल होय तेने उत्तम कुल कहीए, ते पामवुं दुर्लभ छे. आर्य देशमां पण जो कदाचित् व्याधादिक जे कोली, वाघरी, भिल्ल, माछी, कसाइ, मांस भक्षण करनार इत्यादिक हिंसक लोकने व्याध कहीए, तेमना कुलमां उपन्यो अने आर्य क्षेत्र पाम्यो तो तेमां श्यो अचंबो जाणवो ? फोकट भव हारी जाय, माटे पाम्यो ते

वली कदापि पूर्व जन्मना पुण्योदयथी पूर्वोक्त उत्तम कुल पाम्यो
न पाम्या जेवुं थयुं ॥ ३ ॥ वली कदापि पूर्व जन्मना पुण्योदयथी पूर्वोक्त उत्तम कुल पाम्यो एटलां वानांनो (समाज
तोपण तेमां रूपवंतपणुं तथा आरोग एटले रोगरहितपणुं अने आयु, एटलां वानांनो (समाज
के०) संपूर्ण योग पामवो ते खरेखरो दुर्लभ छे, केमके आजना काल मांहे उत्तम कुल पामीने
पण घणा प्राणी रोगिष्ठ, वली घणा प्राणी रूपरहित तथा घणा प्राणी हीनायु एटले अल्पायुवाला
देखाय छे, माटे तेमने पुण्यकार्यमां एटली खामी रही, तेणे करी रूप न पामे, तेथी लोकोने
इष्ट न लागे, तथा रोग सहित होय तो धर्मनां कार्य साधी शके नहीं, वली हीनायुवालाथी
पण कांइ सुकृत थाय नहीं. ते वारे ते जीव उत्तम कुल पाम्यो तोपण शुं ? अने न पाम्यो
तोपण शुं ? कांइज नहीं ॥ ४ ॥

ते सवि पामे पण सही, दुलहो छे सुगुरु संयोग रे ॥ सघले खेत्रे नहीं
सदा, मुनि पामीजे शुभ योग रे ॥ मुनि० ॥ संवेग० ॥ ५ ॥

अर्थ—ए पूर्वोक्त मनुष्यनो भव, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल, रूपवंतपणुं, रोगरहितपणुं अने संपूर्ण आयुष्य, ए सर्व वानां पामे, पण (सही के०) निश्चय थकी सद्गुरुनो संयोग पामवो महा दुर्लभ छे, एटले जे पंचम गतिना साधक पोते संसारना पाशथी मूकाणा अने बीजाने मूकाववा समर्थ ते गुरु मलवा दुर्लभ छे. ते गुरु शास्त्रमां त्रण प्रकारना कह्या छे, तेमां एक तो पत्थर समान ते पोते पण बूडे अने आश्रय करनारने पण बूडाडे, बीजा काष्ठ समान ते पोते पण तरे अने आश्रय करनारने पण तारे, त्रीजा पिप्पलपत्र समान ते पोते तरे अने आश्रय करनारने बूडाडे. ए त्रण भेद मांहेला बीजा भेदवाला काष्ठ समान एवा सुगुरु, उत्तम गुरु, महामुनि, अकिंचनी, निर्लोभी, परोपकारी, तेनो भलो योग ते सर्व क्षेत्रने विषे आ पंचम कालमां सदा सर्वदा न पामीए, केमके गुणहीन घणा होय अने गुणवंत थोडा होय ॥ ५ ॥

महोटे पुण्ये पामीए, जो सद्गुरु संग सुरंग रे ॥ तेर काठीया तो करे, गुरुदर्शन उत्सव ज्ञंग रे ॥ गुरु० ॥ संवेग० ॥ ६ ॥ दर्शन पामे गुरु तणुं, धूर्त्ते व्युद्ग्राहित चित्त रे ॥ सेवा करी जन नवि शके, होये खोटो ज्ञाव अमित्त रे ॥ होये० ॥ संवेग० ॥ ७ ॥

अर्थ–ते पण कदापि जो मोटां पुण्यकार्य कर्यां होय तो ज्ञला रंगे करी सहित रुडा गुरुनो पण संग पामीए, अने ते गुरु गाममांज छे, धर्मशास्त्रनी देशना पण आपे छे, तथा आपणे पण तेवा गुरुनुं दर्शन करीने उपदेश सांज्ञलीए ! एवुं जे वारे मन करीए तो ते वारे तेर काठीया छे ते गुरुदर्शनना उत्सुकपणानो ज्ञंग करे छे. हवे ते तेर काठीयानां नाम कहे छे. एक गुरु पासे जतां आलस थाय ते आलस काठीयो, बीजो पुत्र कलत्रे वींट्यो रहे, तेथी गुरु पासे जवाय नहीं ते मोह काठीयो, त्रीजो गुरु कांइ खावा आपशे नहीं, जो धंधो करशुं तो खाशुं, एम चिंतवी न जाय ते अविनय काठीयो, चोथो मोटाइ मनमां राखे, जे कोण सर्वने पगे लागे ? ते अज्ञिमान काठीयो, पांचमो गुरुनी आगता स्वागता न करे, बोलावे नहीं, धर्मलाज्ञ न आपे ते क्रोध काठीयो, छठो प्रमादमां ज्ञर्यो रहे ते प्रमाद काठीयो, सातमो रखे गुरु पासे जतां कांइ पैसा खरचवा पडे, एवी कृपणता राखे ते कृपण काठीयो, आठमो ज्ञय राखे ते ज्ञय काठीयो, नवमो शोकने योगे न जाय ते शोक काठीयो, दशमो अज्ञानताने लीधे गुरु पासे न जाय ते अज्ञान काठीयो, अगीयारमो विकथा करवामां तत्परपणे गुरु पासे न जाय ते विकथा काठीयो, बारमो गुरु पासे जतां मार्गमां कौतुक जोवा उज्ञो रही जाय ते कौतुक काठीयो, अने तेरमो विषयमां माची रहे, तेथी गुरु पासे जवाय नहीं, माटे ते विषय काठीयो जाणवो. ए तेर काठीयानां नाम कह्यां ॥ ६ ॥ कदापि पूर्वकृत पुण्योदये करी तेर काठीयानो

अंतराय निवारीने गुरुनुं दर्शन पाम्यो, अने धर्मदेशना पण सांभली, तो ते गुरुनां हितकारक वचन पोताना चित्तमां धारे नहीं, शामाटे ? जे (धूर्ते व्युद्ग्राहित चित्त के०) पूर्वे कुगुरुनी संगति करी छे, तेणे पोतानां मिथ्या उपदेशवचन दृढपणे तेने रुचाव्यां छे, ते कदाग्रहपणे अस्थि-मज्जामय करी राख्यां छे, एवो खोटो धर्म देखाडीने वली एवुं कह्युं छे के हुं कहुं छुं एथी उप-रांत बीजो कोइ धर्मनो सार छेज नहीं, ते माटे रखेने तुं ए धर्मथी चलायमान थइ जा ! तुजने बीजो कोइ पाखंडी मलशे, ते पोतानो धर्मोपदेश करशे तेने तुं सत्य जाणीश नहीं ! एम वारं-वार वचनयुक्तिए तेने कुगुरुए प्रथम समजावेलो छे, अने ते मुग्ध जीवे पण तेनुं वचन पोताना मनमां तेमज निर्धार करी राख्युं छे के एणे जे कह्युं तेज सत्य छे. ए रीते प्रथम कुगुरुरूप धूर्ते तेनुं चित्त व्युद्ग्राहित कर्युं छे. तेने सद्गुरु मल्या, तेणे संसार तरवारूप धर्म कह्यो, परंतु पूर्वे कुधर्म अंगीकार करेलो छे तेने योगे तें खरा धर्मने आदरी शकतो नथी, तेथी ते (जन के०) पुरुष सद्गुरुनी सेवा करी शके नहीं. उलटो ते मूर्खनो गुरु उपर अमित्रता एटले शत्रुपणानो खोटो भाव थाय. एवा प्राणी जे होय ते धर्म पामी शके नहीं. तेनी उपर एक दृष्टांत कहे छे के कोइ एक जोगी गुरु अने चेलो ए बे जण भमतां भमतां एक मोटा नगरमां आव्या. तिहां गुरु नगर बहार बेठो, अने चेलाने भिक्षा लेवा नगरमां मोकल्यो. ते चेलो कोइ शाहुकारनी हवेलीमां गयो, त्यां सर्वना हाथमां सोनानां कडां पहेरेलां दीठां, तेथी तेने पण कडां पहेरवानी होंश थइ. पछी भिक्षा लइ गुरु पासे आव्यो. तिहां गुरु साथे जमी लीधा पछी गुरुने कहेवा लाग्यो के तुम मेरेकों सोनेके कडे पहेराउ ! तब में तुमेरी बंदगी करुंगा ! तेने गुरुए कह्युं के बेटा ! योग-मार्गमें एक दमडीभी पास नहीं रखनी, तो फेर सोनेके कडे किसतरे रक्खा जावे ! इस वास्ते मेरे तेरे नहीं बने ! एम कही योगी चेलाने त्यांज मूकी चाल्यो गयो. पाछलथी चेलाए पैसा पेदा करी कडां पहेरवानो निश्चय कर्यो. नित्य प्रभातनो गाममां जइ कण आटो मागी भेलो करी

वेचीने पैसा करवा मांड्या. एम करतां त्रण चार वर्षमां चारसें पांचसें रूपैया एकठा कर्या. पछी ते नगरमां एक सोनी रहे छे तेनी साथे मित्राइ करी मांहोमांहे घणा स्नेह मले, पण सोनी कपटी छे तेनी जोगीने खबर नथी. एक दिवसे जोगीए सोनीने कह्युं के हे मेरे मित्र ! मैनें चारसें पांचसें रूपैये एकिठे कीये है, उसका अछा सुन्ना लेके मेरेकों कड़ां बना दे. एवुं सांभली सोनीए कह्युं के तुं मारो मित्र छो अने मारी आबरु गाममां सारी नथी, तेथी गामना सोनी, सराफ अने नाणावटी सर्वे मारी साथे ईर्ष्या राखे छे, माटे तुं बीजा कोइ सोनी पासे घडावी ले. ए सर्व सोनीना बोल जोगीए सत्य करी मान्या, अने फरी सोनीने कह्युं के तुं मेरा मित्र है, तो तेरेकुं छोडकें दूसरेकी पास में नहीं बनवाउंगा, तोपण सोनीए विश्वास बेसाडवा सारु एक बे वार नाकारो कर्यो, परंतु जोगीए पराणे कड़ां घडवा सोंप्यां. सोनीए पण खरा सोनानां कड़ां घडी तैयार करी जोगीने आप्यां, अने कह्युं के मारुं नाम लइश नहीं, अने आखा गाममां देखाडी आव के आ मारी चीठी प्रमाणे किमत थाय छे के नहीं ? जो चीठी प्रमाणे किमत थाय तो मने साचो मानजे. जोगीए पण नाणावटी, सराफ, सोनीउं आदिक घणाने देखाडी किमत करावी तो बराबर सोनीए करी आपेली चीठी प्रमाणे कायम थइ, तेथी वली जोगीने सोनी उपर पूर्ण विश्वास आव्यो. ते वारे कडां पाछां लइ आवीने सोनीने उंपवा सारु आप्यां. सोनीए कह्युं के प्रभातना लइ जजे. पछी सोनीए ते कड़ां जेवांज बीजां पीतलनां कडां घडी तोलमां सरखां करीने तेनी उपर रंग आपी उंपी प्रभाते जोगीना हाथमां आप्यां, अने कह्युं के वली पण हुं एक पारखुं देखाडुं. जे आ कड़ां छे ते गइ काले ज्यां देखाड्यां त्यांज मारुं नाम लइने देखाडजे, तो बधा पीतलनां कहेशे, कारण के मारा सर्वे द्वेषी छे. चेलाए पण तेमज कर्युं, अने फरी बधाने सोनीनुं नाम लइ कडां देखाड्यां ते वारे सर्वे कहेवा लाग्या के आ पीतलनां छे. तेने जोगीए कह्युं के तुम सब लोक यह सोनीके दुश्मन हो. कल तो तुम सच्चे कहते थे. ते वारे ते

परीक्षकोए कह्युं के कालनां बीजां कर्मां हतां अने आ वली बीजां छे, माटे तुं ठगाय छे, तोपण जोगीए तेमनी वात सर्वथा नहींज मानी. ए दृष्टांते व्युद्ग्राहित चित्तवालो पण सर्वथा सद्गुरुनुं वचन नज माने ॥ ७ ॥

गुरुसेवा पुण्ये लही, पासे पण बेठा नित्त रे ॥ धर्मश्रवण तोहे दोहिलुं, निद्रादिक दीए जो चित्त रे ॥ निद्रादिक० ॥ संवेग० ॥ ८ ॥ पामी श्रुत पण उल्लही, तत्त्वबुद्धि ते नरने न होय रे ॥ श्रृंगारादिक कथारसे, श्रोता पण निज गुण खोय रे ॥ श्रोता० ॥ संवेग० ॥ ९ ॥

अर्थ—वली कदापि पूर्वकृत पुण्योदये करी गुरुनी सेवा (लही के०) पामी अने गुरुनी पासे पण नित्य जइने बेठा, तथापि जे वेलाए गुरु धर्मोपदेश आपे ते वेलाए अंतरायने योगे ते धर्म सांभलवो दुर्लभ थइ पडे, केमके ते वारे तेने निद्राज आवे, अथवा आदि शब्दथी विकथादिक प्रमादमां रुचि थाय, तेथी धर्मश्रवण क्यांथी थइ शके ? एटले धर्म सांभलवामां निद्रादिक प्रमाद जो आमो आवी भींत जेवो थइ पडे तो अटकावी नाखे, माटे प्रमाद छोडीने धर्म आदरवो ॥ ८ ॥ कदापि पुण्ययोगे गुरुनी पासे जइ निद्रा, विकथा, विषय, प्रमाद अने कषाय तेनो त्याग करी धर्मनुं सांभलवुं पाम्युं, तोपण ते नरने धर्म संबंधी तत्त्वनी बुद्धि आववी घणी दोहिली होय, कारण के अहोरात्र श्रृंगारादि रस जेमां प्रधान छे एवी (कथा के०) भाषाग्रंथ, कोकशास्त्र अनंगरंग, वात्स्यायनसूत्र प्रमुख, जेमां निःकेवल श्रृंगारनीज वातो छे, तथा आदि शब्दथी स्त्री अने राज प्रमुखनी कथा लेवी, ते सांभलवामांज प्राणी मग्न थइ रहे, माटे एवा श्रृंगारादिक रसे करी युक्त जे ग्रंथ तेना रसे करी ते श्रोता धर्म सांभले, तेथी सांभलतो थको पण आत्मगुणने खोइ नाखे, माटे तत्त्वनी बुद्धि धारवी ॥ ९ ॥

तत्त्व लहे पण डुल्लही, सद्दहणा जाणो संत रे ॥ कोइ निज मति आगल करे, कोइ डामाडोल फिरंत रे ॥ कोइ० ॥ संवेग० ॥ १० ॥ आप विचारे पामीए, कहो तत्त्व तणो किम अंत रे ॥ आलसुआ गुरु शिष्यनो, इहां जावजो मन वृत्तंत रे ॥ इहां० ॥ संवेग० ॥ ११ ॥

अर्थ—कदापि पूर्वेक्त शुज कर्मना उदयथी देशना सांजलीने धर्मनुं तत्त्व धार्युं, परंतु (संत के०) हे सज्जनो ! ते श्रोताने तत्त्वनी वात उपर सद्दहणा आववी घणीज दोहिली ले. शामाटे जे कोइक श्रोता तो पोताना मनथी उत्पन्न थइ जे कल्पनाजाल तेथी पोतानी मति आगल करे, एटले कहे के गुरु जले आम कहे ले, पण वात तो में धारी ले ते प्रमाणेज हशे, तथा केटलाएक श्रोता तो फामाफोल थइ प्रमादमग्न थका फर्या करे, एटले प्रथम जेनी पासे जे धर्म सांजल्यो होय ते जलो हशे के आ कहे ले ते जलो हशे ? एम चिंतवता फरे, पोताना फहापणमां समाय नहीं, तेथी सद्दहणा राख्या विना सर्व गार उपर लीपणा समान ले ॥ १० ॥ माटे तत्त्वनी श्रद्धा विना तत्त्व केम पामीए ? आ शुज ले ते आदरवा योग्य ले अने आ अशुज ले ते त्यागवा योग्य ले, एवी वातो तो जे वारे गुर्वादिकना मुखथी सांजलीने धारे ते वारे ते तत्त्व पामे, परंतु कहो के (आप के०) पोताना विचारथी तत्त्व ते केम पामीए ? जे आलसु थइ घरमां बेसी रहे, गुरुनी पासे धर्म सांजलवा न जाय ते तत्त्व केम पामे ? तत्त्व तो जे आलस त्यागीने चित्तमां धर्म सांजलवानी रुचि वधारीने गुरुमुखे जिनोक्त वचन सांजले, तिहां जे शंका उपजे ते पूठी संदेह टाली दृढता करे, ते पामे. आंहीं कोइ अन्यदर्शनी गुरु अने शिष्य ए बे जण आलसु हता, तेनो वृत्तांत मनने विषे जावजो. ते वृत्तांत कहे ले. कोइ गुरु शिष्य एक नगरनी बहार ऊंपमी बांधी रह्या ले, वस्त्ररहित ले, गाममां जिक्षा मागी उदरपूरणा करे ले, एवामां पोष मासना

दिवस आव्या, ठार घणो पडवा लाग्यो, पण ते बे जण निरुद्यमी छे, तेथी गाममां भिक्षा मागवा माटे पण एकाद् जगाए फरे. तिहांथी थोडुं घणुं जे मले ते लइ आवीने उदरपूरणा करे, पण वधारे जगाए फरे नहीं. वली उंढवाने कपडुं तो लावेज क्यांथी ? एम करतां एक दिवसे तो बहु टाढ पडी, तेथी ते गुरु शिष्य थरथर कंपता भिक्षा जडी, नहीं जमी, एवे हाले तुरत गाममांथी आवीने मढीनी अंदर पण आलसने लीधे गया नहीं. एमज जीर्ण वस्त्रे मुख ढांकीने बहार आवी सुता, पाछली रात्रिए जाग्या, ते वारे पण नेत्र उघाडीने जोवा जेटलो उद्यम न करतां एमज ढांकेले मुखे गुरु शिष्यने पूछवा लाग्यो के हे शिष्य ! टाढ घणी पडे छे, माटे हुं झुंपडीमां छुं के बहार छुं ? ते वारे शिष्य वली गुरुथी पण वधारे आलसु छे, माटे तेणे पण ढांकेले मुखेज जवाब आप्यो जे आपणे झुंपडीमां छीए. एवामां वली शीतना भयथी कोइक कुतरो आवीने गुरुनी पासे सुतेलो हतो तेनुं पूछडुं गुरुना हाथमां आव्युं. ते वारे गुरु शिष्यने कहेवा लाग्यो के " भो शिष्य ! मम पुच्छं वर्तते. तदा शिष्येण चिंतितं कच्छाटिकांबरखंडं गृहीत्वा भवान् पृच्छतीति, शिष्यः प्राह भो गुरवः ! ! तत्पुच्छं वस्त्रांतं तदजल्पनपरेण शयने त्वया यतितव्यं." एम बे जणा उद्यमरहित थका त्यांज टाढमां सुइ रह्या, परंतु बेमांथी एक पण आलसरहित थइ मढीमां गयो नहीं. प्रातःकाले हिम पड्युं, तेथी बेहु जण हिमथी दाझीने मरण पाम्या. तेम जे आलसु होय ते पोतानी मतिकल्पनाए कुमति करे, पण कोइने पूछे नहीं. उद्यम न करे तो तत्त्व पण पामे नहीं. जो गुरु शिष्य बेहुए उद्यम कर्यो होत अने मढीमां गया होत तो जीवता रहेत, माटे ए आलसु गुरु शिष्यनो वृत्तांत मनोभावित गवेषवो ॥ ११ ॥

छउर छात्र गज आवतां, जिम प्राप्त अप्राप्त विचार रे ॥ करे न तेहथी उगरे, तेम आपमति निरधार रे ॥ तेम० ॥ संवेग० ॥ १२ ॥

अर्थ—हवे वली आपमति उपर बीजो दृष्टांत कहे छे. जेम कोइ (बठर के०) मूर्ख (छात्र के०) शिष्य छे, ते वेदादिक शास्त्र तो भएयो छे, परंतु अर्थनी विवेचनाने अणजाणतो छे. ते कोइ कामने अर्थे बजारमां गयो छे, एवामां राजानो मदोन्मत्त हाथी छूट्यो छे. ते गजने पोतानी सामो आवतो देखे छे, एटलामां हाथीनो महावत लोकोने कहे छे के भाइओ! ए हाथी मारा हाथमां नथी, माटे तमे दूर थइ जाओ. ते सांभली सर्व लोक नाठां, ते वारे बठर छात्र चौटामां गयो, तेने पण लोके कह्युं के तुने हाथी मारशे, माटे इहांथी अलगो जतो रहे, तोपण ते तिहां उभो रहीने विचारवा लाग्यो के आ लोक कहे छे के हाथी मनुष्यने मारे छे, ते (प्राप्त के०) पाम्याने मारे छे किंवा अप्राप्त एटले अणपाम्याने मारे छे ? जो पाम्याने मारतो होय तो महावत एनी उपर बेठो छे तेने केम मारतो नथी ? अने जो अणपाम्याने मारतो होय तो सर्व जगतनां लोक एने अणपाम्यां जेवां छे तेने केम मारतो नथी ? एम विचार करे छे एटलामां हाथीए आवी सुंढथी झालीने तेने चीरी नाख्यो, तेथी मरण पाम्यो. जेम ए बठर छात्रे लोकनां वचन मान्यां नहीं, अने ते आपमते विचार करतो तिहांज उभो रह्यो, तेथी मरण पाम्यो, पण तेथी उगर्यो नहीं, तेम जे आपमति होय ते पण (निरधार के०) निश्चेथी दुःख पामे, माटे जे तत्त्वगवेषक होय ते गुरुमुखथी जाणी तेने कहेले मार्गे प्रवर्त्तन करे तो तत्त्व पामे, परंतु आपमति होय ते नरक निगोदनां दुःख पामे, माटे आपमति न थवुं ॥ १२ ॥

आगमने अनुमानथी, वली ध्यानरसे गुणगेह रे ॥ करे जे तत्त्वगवे-
षणा, ते पामे नहीं संदेह रे ॥ ते० ॥ संवेग० ॥ १३ ॥

अर्थ—(आ के०) समस्त प्रकारनुं जेमां गम एटले ज्ञान छे तेने आगम कहीए. ते आगम श्रीजिनेश्वरना कहेला अर्थ अने गणधरोनां गुंथ्यां सूत्र तेना अनुमानथी एटले आगममां भग-

वाने तत्त्वनी वात जेवी रीते कहेली छे तेना अनुमानथी तथा वली (ध्यानरसे के०) आदर करवा योग्य जे धर्मध्यान अने शुक्लध्यान तेना एकेकना चार चार पाया छे, तेणे करी चिंतवन करतां तेथी उपन्यो जे रस, तेने ध्यानरस कहीए, एटले ध्यानरसे करीने गुणनुं गेह एटले गुणनुं स्थानक प्रातिरूप जे तत्त्व, ते तत्त्वनी जे गवेषणा करे ते तत्त्व पामे, एमां संदेह नहीं. अथवा तत्त्व पामवानां त्रण कारण छे, एक आगमथी अने बीजुं अनुमानथी, त्रीजो ध्यानरस ते अनुभवरस ए त्रणे प्रकारे जे गुणनुं घर थइने तत्त्वनी गवेषणा करे ते निःसंदेह तत्त्व पामे ॥ १३ ॥

तत्त्वबोध ते स्पर्श छे, संवेदन अन्य स्वरूप रे ॥ संवेदन वंध्ये हुइ, जे
स्पर्श ते प्रापतिरूप रे ॥ जे० ॥ संवेग० ॥ १४ ॥ तत्त्व ते दशविध धर्म
छे, खंत्यादिक श्रमणनो शुद्ध रे ॥ धर्मनुं मूल दया कही, ते खंति गुणे
अविरुद्ध रे ॥ ते० ॥ संवेग० ॥ १५ ॥

अर्थ–तत्त्वनुं जाणपणुं ते तत्त्वबोध कहीए. तेना बे भेद छे. एक स्पर्श तत्त्वबोध, बीजो संवेदन तत्त्वबोध. तिहां तत्त्वनां शास्त्र जे आगम ते सांभलीने श्रीजिनागमभाषित तत्त्व सम्यक्त्वादि प्रातिपूर्वक श्रद्धापूर्वक नव तत्त्वादिकनो अवबोध थाय, शुद्ध अध्यवसाये आत्मपरिणतिपरिपाकपणे मन वचन कायानी एकाग्र स्थिरताए भावनी विशुद्धताए सद्गुरूपदेशामृतयोगथी सद्दहणामय वस्तुधर्म ग्रहणरूपपणे जे चित्तनी वृत्ति थाय एवो जे तत्त्वबोध ते स्पर्शरूप जाणवो, अने श्रद्धारहित सम्यक् प्रकारे वस्तुना स्वरूपने जाणपणामां धारे ते संवेदन तत्त्वबोध जाणवो. ते स्पर्श तत्त्वबोधथी (अन्य के०) जूदे रूपे जाणवो. ए संवेदन तत्त्वबोध ते (वंध्ये के०) वांझणी स्त्री जेवो होय, कांइ फल आपे नहीं, अने स्पर्श तत्त्वबोध ते प्रातिरूप छे, फलदायक होय, ते माटे संवेदन छांडवो अने स्पर्श आदरवो ॥ १४ ॥ हवे दश प्रकारनो यतिधर्म ते परम तत्त्व छे. खंति

आदे दशने शुद्ध धर्म स्पर्शी तत्त्वबोध ते दश प्रकारे (श्रमण के०) यतिनो जाणवो. (खंत्यादिक के०) क्षमा आदे दशने एटले १ खंति जे क्षमा ते क्रोधनो जय, २ मार्दव ते माननो त्याग, ३ आर्जव ते मायानो त्याग, ४ मुक्ति ते निर्लोभता, ५ बार प्रकारनी तपस्या, ६ सत्तर भेदे करी युक्त संयम, ७ चार निक्षेपे करी सत्य भाषण करवुं, ८ शौच ते भावशौचादिक, ९ अकिंचनत्व ते परिग्रहरहितपणुं, १० अढार भेदे युक्त ब्रह्मचर्य. ए दश प्रकारनो धर्म सेव्याथी चार गतिनो रोध करे अने पंचमी गति पमाडे. ते धर्मनुं मूल दया कही छे. जिहां दया नथी तिहां धर्म नथी. ते दया जे छे ते तो (खंति के०) क्षमा गुणथी अविरोधपणे छे, एटले मलती छे. क्रोध जाय ते वारे क्षमा आवे, अने जिहां क्षमा आवी तिहां दया अवश्य उपजे, ते माटे दयामय धर्म छे. ए पहेलो यतिधर्म कह्यो ॥ १५ ॥

विनयने वश छे गुण सवे, ते तो मार्दवने आयत्त रे ॥ जेहने मार्दव मन वस्युं, तेणे सवि गुणगण संपत्त रे ॥ तेणे० ॥ संवेग० ॥ १६ ॥ आर्जव विण नवि शुद्ध छे, नवि धर्म आराधे अशुद्ध रे ॥ धर्म विना नवि मोक्ष छे, तेणे ऋजुभावी होय बुद्ध रे ॥ तेणे० ॥ संवेग० ॥ १७ ॥

अर्थ—हवे बीजो मार्दव गुण वखाणे छे. ते एवी रीते जे देव, गुरु, धर्म, ए सर्व विनयथी फलदायक थाय छे, माटे जेटला कांइ गुण छे ते सर्व विनयने वश छे, अने जो सर्वोत्तम करणी करे छे, तेमां पण जो विनय नथी होतो तो सर्व शून्य प्राय छे, एवो विनयगुण छे ते पण मार्दवने (आयत्त के०) वश छे, मार्दवथी नजीक छे, ते मार्दवगुण माननो त्याग करे ते वारे प्रगट थाय, पण अभिमान, अहंकार, मत्सर, द्रोह, ईर्ष्यादि दोष सहित प्राणीने मार्दव गुण न आवे, परंतु ए दोषोना त्यागथी मार्दव गुण जीवने आवे. एवो मार्दव गुण जे प्राणीना मन मांहे वस्यो छे ते प्राणी (सवि गुणगण संपत्त के०) सर्व गुणना समुदायने पाम्यो, अने गुण सहित थयो ते वारे धर्मप्राप्तिने

पाम्यो. ए बीजो यतिधर्म जाणवो ॥ १६ ॥ हवे त्रीजो आर्जव गुण वखाणे छे. आर्जव गुण ते (आर्जव के०) सरलपणुं ते विना शुद्ध नथी, अने धर्मआराधन पण नथी, अशुद्ध छे, माटे कुटिलता, वक्रता, मायावीपणुं, ए सर्व मायानां घरनां छे, अने आत्माना बलवत्तरपणे शुद्ध चारित्रना अभ्युदयथी निर्मल आत्माना योग थकी कुटिलतादिकनो त्याग कस्याथी आर्जव गुण उपजे छे. ते आर्जव विना धर्मनी शुद्धि नथी, अशुद्ध छे, माटे ते शुद्ध धर्म आराधी शके नहीं, अने शुद्ध धर्म आराध्या विना मोक्ष नथी. ते माटे जे (बुद्ध के०) ज्ञानी ते (रुजुभावी के०) सरल स्वभावी होय, जे थकी आर्जव गुणनी पुष्टि थाय. ए त्रीजो यतिधर्म कह्यो ॥ १७ ॥

द्रव्योपकरण देहनां, वली भक्त पान शुचि भाव रे ॥ भावशौच जिम
नवि चले, तिम कीजे तास बनाव रे ॥ तिम० ॥ संवेग० ॥ १८ ॥ पंचा-
श्रवथी विरमीए, इंद्रिय निग्रहीजे पंच रे ॥ चार कषाय त्रण दंड जे,
तजीए ते संजम संच रे ॥ तजीए० ॥ संवेग० ॥ १९ ॥

अर्थ—हवे शौचधर्म कहे छे. तेना बे भेद छे. एक द्रव्यशौच, बीजुं भावशौच. ते मांहे (देह के०) शरीरनां द्रव्योपकरण ते हाथ, पग, आंगली प्रमुख ते सर्व द्रव्यथी देहनां द्रव्योपकरण, अथवा द्रव्योपकरण ते पुस्तकादिक तथा वस्त्र पात्रादिक तेमज वली भात पाणी तेने रागरहित धर्मपुष्टिदायक जाणी (शुचि भाव के०) पवित्र भावयुक्त, बेंतालीश दोषरहित एवा विधिए आहारादिकने ग्रहण करवे करीने द्रव्यशौच थाय. ते जेम आत्माना पवित्र चोखा अध्यवसाय धरवे, मननी लहेर कषायादिक रहित शुद्ध परिणामनी वधती धाराए भावशौच थाय छे. ते भावशौच जेम चले नहीं, मटे नहीं तेवी रीते तेने ग्रहण करवा बनाव कीजे, एटले जेम जेम भावशौच वधे तेम तेम यतिधर्म पण वधे, यतिधर्म वधते मोक्षप्राप्ति पण सुलभ थाय. ए चोथो

शौचधर्म कह्यो ॥ १८ ॥ हवे संयम गुण वखाणे छे. १ प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन अने ५ परिग्रह, ए पांच आश्रवथी (विरमीए के०) दूर रहीए, ए अनादि कालना आत्माना सहचारी पापोपचितपणे दुष्ट गतिदायक छे. तथा १ स्पर्शेंद्रिय, २ रसेंद्रिय, ३ घ्राणेंद्रिय, ४ चक्षुरिंद्रिय, ५ श्रोत्रेंद्रिय, ए पांचे इंद्रियनो निग्रह करीए एटले दमीए. वली १ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ, ए चार कषायने छांडीए, तथा १ मनोदंड, २ वचनदंड, ३ कायदंड, ए त्रण दंडने (तजीए के०) त्याग करीए. एवी रीते ए सत्तर वानां दूर करे थके आत्माने विषे संयम ठरे, पण एमांथी एक दुर्गुण होय त्यांसुधी संयमने मलिन कहीए, माटे ए सत्तर दोष टालीने एना प्रतिपक्षी सत्तर गुण प्रगटे, तेनो संचय मोक्षार्थीए करवो. ते वारे शुद्ध संयम कहीए. ए पांचमो संयमधर्म कह्यो ॥ १९ ॥

बांधव धन इंद्रिय सुख तणो, वली भय विग्रहनो त्याग रे ॥
अहंकार ममकारनो, जे करशे ते महाभाग रे ॥ जे० ॥ संवेग० ॥२०॥

अर्थ–हवे छठ्ठो मुक्त गुण वखाणे छे. बांधव शब्दे भाइ, स्त्री, माता, पिता, पुत्र, बहेन प्रमुख अने (धन के०) सोनुं, रूपुं, घर, हाट प्रमुख, वली इंद्रियसुख ते खावुं, पीवुं, वस्त्र, घरेणां प्रमुखना विलास, शब्द, रूप, रस, गंधादिक ए सर्व सुखनो त्याग करे, वली (भय के०) इहलोक, परलोक आजीविकादि सात भय अने (विग्रह के०) क्लेश, विषाद, ईर्ष्या एनो पण त्याग करे, तथा अहंकार ते जगतमां हुंज छुं, बीजो कोइ नथी, अने ममकार ते आ सर्व मारुं छे, " एवं अहं ममेति बुद्ध्या सर्व जगदंधीभूतं" माटे एनो त्याग करे ते महाभाग्यवंत जाणवो. ज्यांसुधी एटलां वानांनो त्याग कर्यो नथी त्यांसुधी संसारभ्रमण वधे छे, माटे एनो त्याग करी निर्लोभी गुण करवो. ए छठ्ठो धर्म कह्यो ॥ २० ॥

अविसंवादन जोग जे, वली तन मन वचन अमाय रे ॥ सत्य चतुर्विध
जिन कह्यो, बीजे दर्शन न कहाय रे ॥ बीजे० ॥ संवेग० ॥ २१ ॥ षड्-
विध बाहिर तप कह्युं, अभ्यंतर षड्विध होय रे ॥ कर्म तपावे ते सही,
पडिसोअवृत्ति पण जोय रे ॥ पडिसोअ० ॥ संवेग० ॥ २२ ॥

अर्थ—हवे सातमो सत्य गुण वखाणे छे. अविसंवादन योग ते जेमां कोइ जातिनो विश्लेष विसंवादपणुं नथी ते अविसंवादन योग कहीए, तेने धरे. वली तन, मन अने वचन, ए त्रिकरण अमायपणे कपट-रहितपणे प्रवर्ते, ते सत्यपणुं राखे. ते सत्य चार प्रकारनुं छे. तिहां १ ऋषभ, अजितादिक ए नाम-सत्य, २ तेनां बिंब जे काष्ठ, पाषाणादिकनी स्थापना करीए, अथवा अक्षरे नाम लखीए तेथी ते स्थापनासत्य, तथा ३ भाविजिन जे श्रेणिक प्रमुख थशे ते द्रव्यसत्य अने ४ सीमंधर प्रमुख विचरता तीर्थंकर ते भावसत्य. ए चार निक्षेपे करी सत्य ते (जिन के०) तीर्थंकरे कह्युं एटले श्रीठाणांग सूत्रमां कह्युं छे, पण बीजे दर्शने कहेवाय नहीं. ए सातमो सत्यधर्म कह्यो ॥ २१ ॥ हवे आठमो तपोगुण वखाणे छे. १ जघन्य नोकारशी, २ उत्कृष्ट जावजीव सुधी अशन पान वर्जवुं, ३ शेष रह्युं ते मध्यम, ते एम-के—१ जेमां खावुं पीवुं नहीं ते अणसण तप तथा २ ऊणोदरी ते आहारना प्रमाण मांहेथी कोलीयो, बे कोलीया, चार कोलीया ओछा करे ते ऊणोदरी तप, ३ द्रव्यनो संक्षेप करवो ते वृत्तिसंक्षेप तप, ४ रसनो त्याग करवो ते रसत्याग तप, ५ लोच प्रमुख क्लेश सहन करवो ते कायक्लेश तप, ६ पांच इंद्रियने गुप्त करवी ते संलीनता तप, ए छ प्रकारनुं बाह्य तप कह्युं छे, तथा १ गुरुदत्त प्राय-श्चित्त लेवुं, २ विनय साचववो, ३ गुरुनो विनय तथा वेयावच्च करवां, ४ सज्झाय ध्यान करवुं, ५ ध्यान धरवुं, ६ उपसर्ग तप ते एकध्याने काउस्सग्ग करवो तथा शरीरनुं छांडवुं, ए छ प्रकारे अभ्यंतर तप मलीने बार भेदे तप कह्युं. ए तप द्रव्यथी तथा भावथी करवुं. ए तप कर्मने तपावे,

वाली त्रस्स करे, ते तप निश्चेथी प्रतिशौचवृत्ति पण जोय एटले इंद्रियने न अनुकूल वृत्ति अर्थात् इंद्रियने जे गमे ते न करवुं ते पडिसोअवृत्ति ते पण तप कहीए ॥ २२ ॥

दिव्य औदारिक काम जे, कृत कारित अनुमति भेद रे ॥ योग त्रिके तस वर्जवुं, ते ब्रह्म हरे सवि खेद रे ॥ ते० ॥ संवेग० ॥ २३ ॥ अध्यातमवेदी कहे, मूर्छा ते परिग्रह भाव रे ॥ धर्म अकिंचनने भण्यो, ते कारण भवजल नाव रे ॥ ते० ॥ संवेग० ॥ २४ ॥

अर्थ—हवे ब्रह्मचर्य गुण कहे छे. (दिव्य के०) वैक्रिय शरीर संबंधी काम तथा बीजुं औदारिक शरीर संबंधी काम, ए बेनुं करवुं, कराववुं अने अनुमोदवुं, ए त्रणे गुणतां छ भेद थया. ते एकेकाने मन, वचन अने काया, ए त्रण योगे वर्जतां अढार भेद थाय, ए ब्रह्मचर्य सर्व खेदनुं हरनारुं छे, अथवा एना बीजी रीते १८००० भांगा थाय छे ते लखे छे. १ पृथ्वीकाय, २ अपकाय, ३ तेउकाय, ४ वायुकाय, ५ वनस्पतिकाय, ६ बेइंद्रिय, ७ तेइंद्रिय, ८ चउरिंद्रिय, ए पंचेंद्रिय, १० अजीव, ए दशने दश यतिधर्मे गुणतां १०० थाय. ते एक श्रोत्रेंद्रिये थया. तेवी पोतानी पांच इंद्रियो छे, तेनी साथे गुणतां ५०० भेद थाय. ते एक आहारसंज्ञाए थया. तेवी भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा अने परिग्रहसंज्ञा, ए चारे गुणतां २००० थाय, तेने मन, वचन अने काया, ए त्रणे गुणतां ६००० थाय. ते करवुं, कराववुं अने अनुमोदवुं, ए त्रणे गुणतां १८००० भेद थाय ॥ २३ ॥ हवे अकिंचनधर्म कहे छे. जे "आत्मानमधिकृत्याध्यात्मम्" एटले आत्माने अधिकारीने करे ते चोथा गुणठाणाथी मांडीने चौदमा गुणठाणा सुधी छे, तेने अध्यात्म कहीए, अने ते अध्यात्मना जाण जे होय तेने अध्यातमवेदी कहीए. ते एम कहे छे के जे मूर्छा छे तेज परिग्रहनो भाव छे, एटले पोता पासे खावाने मलतुं न होय, पण मूर्छा सर्व वस्तु उपर रही होय तो ते

परिग्रहज छे. तथा धन, कुटुंब, घर, वाडी, बाग अने बगीचा छे तोपण तेनी उपर जो मूर्छा नथी तो ते परिग्रह न कहीए, माटे ते मूर्छा न राखवी तेने अकिंचनपणुं कहीए, अने साधुधर्म ते अकिंचननेज कह्यो छे, माटे संसारसमुद्रथी तरवाने नाव समान ए धर्म छे. ए अकिंचनपणुं आदरवाथी भवनिस्तार थाय. ए दशमो अकिंचनधर्म थयो. ए दश प्रकारना यतिधर्म कह्या. एथी शुद्धपणे कर्मनुं शोधन थाय ॥ २४ ॥

पांच भेद छे खंतिना, उवयारवयार विवाग रे ॥ वचन धर्म तिहां तीन
छे, लौकिक दोइ अधिक सोभाग रे ॥ लौकिक० ॥ संवेग० ॥ २५ ॥
अनुष्ठान ते चार छे, प्रीति भक्ति ने वचन असंग रे ॥ त्रण क्षमा छे दोयमां,
अग्रिम दोयमां दोय चंग रे ॥ अग्रिम० ॥ संवेग० ॥ २६ ॥

अर्थ–(पांच भेद छे खंतिना के०) हवे ए दश प्रकारनो जे यतिधर्म कह्यो तेमां प्रथम क्षमाधर्मना पांच भेद छे ते कहे छे. तेमां एक तो जे आपणो उपकारी होय ते जे कांइ करूवां वचन कहे ते खमवां पडे तेने (उवयार के०) उपकारक्षमा कहीए. बीजी आगलो माणस जोरावर छे, तेना उपर कांइ पराक्रम चाले तेम नथी, माटे जो आ माणसनी सामुं बोलशुं तो तरत तिरस्कार पामशुं, एम जाणी तेनी सामुं न बोले ते बीजी (अवयार के०) अपकारक्षमा. त्रीजी कर्मादिकना भयथी खमवुं पडे ते विपाकक्षमा. चोथी कोइने आकरे वचने दुहवे नहीं, अने पोते पण कोइनां आकरां वचनथी दुहवाय नहीं, एम वचननो परिसह उपसर्ग सहन करवो, सावद्य वचन न बोलवुं ते वचनक्षमा. पांचमी गजसुकुमारनी पेरे हे आत्मन् ! तारो धर्मज क्षमा छे, माटे तुजने क्षमाज जोइए, आत्मधर्म क्षमामयज छे एवुं जाणी मूल धर्ममां स्थिर रहे, संपूर्ण धर्म आराधे, तेरमा चौदमा गुणठाणानी इच्छा करे ते धर्मक्षमा जाणवी. ए पांच क्षमा कही. तिहां

पहेली उपकार, बीजी अपकार अने त्रीजी विपाक, ए (तीन के०) त्रण क्षमाउं जे बे ते लौकिक छे एटले लौकिक सुखनी देवावाली बे तथा चोथी वचनक्षमा अने पांचमी धर्मक्षमा ए (दोइ के०) बे क्षमा जे बे ते अधिक सौजाग्यनी एटले मोक्षसुखनी देवावाली बे ॥ २५ ॥ हवे क्षमानां चार अनुष्ठान बे. अनुष्ठान शब्दे क्रिया कहेवी. तेनां षडावश्यक बे. तेमां १ श्रावकनुं पडिक्कमणुं अथवा यतिनुं पगाम, सज्झाय, अतिचार, आलोचना प्रमुख ते पडिक्कमणावश्यक, तथा २ ज्ञान, दर्शन, चारित्रना काउस्सग्ग करवा ते काउस्सग्ग नामे आवश्यक, ३ शक्ति प्रमाणे पच्चरकाण करवानुं आवश्यक, ए त्रण आवश्यकमां एक प्रीति अनुष्ठान जाणवुं, अने १ सामायिक आवश्यक, २ चउविसब्बो ते जिनवंदनावश्यक, ३ वांदणां देवां ते गुरुवंदनावश्यक, ए त्रण आवश्यक मांहे बीजुं जक्ति अनुष्ठान जाणवुं, अने त्रीजुं आगमने अनुसारे प्रवर्तन ते वचन अनुष्ठान जाणवुं, तथा जे सहेजे थाय ते चोथुं असंगानुष्ठान जाणवुं. ए चार अनुष्ठानने पूर्वोक्त क्षमाना पांच जेदमां वहेंचण करे बे, एटले पहेली उपकार, बीजी अपकार, त्रीजी विपाक, ए त्रण क्षमा बे ते (अग्रिम दोयमां के०) पहेलां प्रीति अने जक्ति ए बे अनुष्ठानमां बे, अने चोथी वचनक्षमा तथा पांचमी धर्मक्षमा, ए (दोय के०) बे क्षमा ते पाबलां वचनानुष्ठान अने असंगानुष्ठान, ए बे अनुष्ठानमां बे, माटे पाबलां बे अनुष्ठान ते (चंग के०) मनोहर जाणीने आदरवां ॥ २६ ॥

वल्लज स्त्री जननी तथा, तेहना कृत्यमां जूउं राग रे ॥ पडिक्कमणादिक
कृत्यमां, एम प्रीति जक्तिनो लाग रे ॥ एम० ॥ संवेग० ॥ २७ ॥

अर्थ—हवे अनुष्ठाननां लक्षण कहे बे. स्त्री तो बेहु बे, एक पोतानी जार्या ते पण स्त्रीजाति बे, तथा पोतानी(जननी के०)माता ते पण स्त्रीजाति बे. ए बेहु वल्लज बे, पण तेना कृत्यमां राग जूदो जूदो

छे. ते आवी रीते के स्त्री उपर प्रीतिराग छे अने माता उपर भक्तिनो राग छे. तेम पडिक्कमणादिक कृत्यमां पण प्रीति भक्तिनो राग विचारवो. ते आवी रीते के एक पडिक्कमणुं, बीजो काउस्सग्ग, त्रीजुं पच्चक्खाण, ए त्रणमां प्रीति अनुष्ठान छे, केमके एनी संगतथी आगल गुण वधे, माटे प्रीतिराग छे, अने एक सामायिक ते चारित्र अने बीजो चउविसत्थो ते प्रभुने वांदवुं, तथा त्रीजां वांदणां ते गुरुने वांदणां देवां, एम चारित्रधर्म तथा देव अने गुरु, ए त्रणमां भक्ति अनुष्ठान छे, माटे ए त्रण उपर भक्तिराग छे. एम इहलोक आशी प्रीति अने परलोक आशी भक्ति, ए बे अनुष्ठाननो लाग होय ॥ २७ ॥

वचन ते आगम आशरी, सहेजे थाये असंग रे ॥ चक्रभ्रमण जिम
दंडथी, उत्तर तदभावे चंग रे ॥ उत्तर० ॥ संवेग० ॥ २८ ॥ विष गरल
अनुष्ठान छे, तद्धेतु अमृत वली होय रे ॥ त्रिक तजवा दोय सेववा, ए
पांच भेद पण जोय रे ॥ ए० ॥ संवेग० ॥ २९ ॥

अर्थ—हवे त्रीजुं वचनानुष्ठान अने चोथुं असंगानुष्ठान कहे छे. जेम कुंभारना चक्रनुं भ्रमण दंडने योगे थाय, पछी पोतानी मेले सहेजे फर्या करे, तेम श्रीवीतराग भाषित आगममां जेम ज्ञानक्रियानां आलंबन प्ररूप्यां छे ते (आशरी के०) अनुसारे आज्ञा प्रमाणे धर्ममां प्रवर्तन करे ते वचनानुष्ठान जाणवुं, अने पछी उत्तर काले (तदभावे के०) तेने अभावे पण (चंग के०) मनोहर होय एटले जेने कोइनुं आलंबन नहीं, पण सहेजे एवुंज लक्षण थइ रहे ते असंगानुष्ठान जाणवुं ॥ २८ ॥ यतिधर्म मांहे पांच क्रिया कही छे ते कहे छे. पहेली विषक्रिया, बीजी गरलक्रिया, त्रीजी अनुष्ठानक्रिया, चोथी तद्धेतुक्रिया अने पांचमी अमृतक्रिया. ए पांच भेदे क्रिया जाणवी. ते मांहे विषक्रिया, गरलक्रिया अने अनुष्ठानक्रिया, ए (त्रिक के०) त्रण भेद तजवा, आदरवा योग्य नथी, जाणवा योग्य छे. ते आचरवाथी चारित्रीयो चारित्र हार

करे, भवपरंपरा वधारे, अने तद्धेतुक्रिया तथा अमृतक्रिया ए (दोइ के०) बे भेद ते (सेववा के०) आदरवा योग्य छे. ते आदरवाथी मुक्ति पमाडे, माटे ए क्रियाना पांच भेद पण जाणवाने अर्थे तेना जूदा जूदा अर्थ आगल वखाणशे ॥ २९ ॥

विषकिरिया ते जाणीए, जे अशनादिक उद्देश रे ॥ विष ततखिण मारे
यथा, तेम एहज भव फल लेश रे ॥ तेम० ॥ संवेग० ॥ ३० ॥ परभवे
इंद्रादिक ऋद्धिनी, इच्छा करतां गरल थाय रे ॥ ते कालांतर फल दीए,
मारे जिम हडकीयो वाय रे ॥ मारे० ॥ संवेग० ॥ ३१ ॥

अर्थ–हवे ए पांच क्रिया मांहे पहेली विषक्रिया, ते जे चारित्रीयो अशन, पानादिकने उद्देशीने चारित्र पाले, ज्ञानक्रियानो अभ्यास करे ते सर्व आहारादिकने अर्थे करे, कोइ गृहस्थ आवे ते वारे लोकदेखामणी क्रिया करे, ते गृहस्थ गया पछी कशी क्रिया करे नहीं, जयणाए न प्रवर्त्ते, अने ते गृहस्थ तो आचारनी शुद्धता जाणीने अशनादिकनी भक्ति करे ते विषक्रिया जाणीए. जेम विष खाधुं थकुं तत्काल मारे तेम ए क्रियाथी आ भव मांहेज अशन खावानुं लेश मात्र फल पामे. जेम झेर खावाथी शीघ्र फल मले तेम कपटक्रियानुं पण तरत फल मले एम जाणवुं ॥ ३० ॥ हवे गरलक्रियानुं लक्षण कहे छे. जेम कोइ चारित्रीयाने चारित्र पालतां पालतां चित्तना अध्यवसाय एवा थाय जे इंद्रनी पदवी तथा देवतादिक चक्रवर्त्ती प्रमुखनी राजलक्ष्मी पामीए अथवा धन, धान्यादिकनी इच्छा करतां गरलक्रिया थाय, ते गरलक्रिया कालांतरे फल आपे, हडकीया वायुनी परे. जेम कोइ प्राणी हडकेल जनावरे करड्यो होय, तेनो हडकवा त्रण वरस सुधी जागे. ते जे वारे हडकवा जागे ते वारे मरण पामे. तेम चारित्रीयो अति नियाणुं करे तो बे त्रण भवे ते वस्तु पामे, पण शुद्ध चारित्रनुं फल पामे नहीं, माटे ए गरलक्रिया त्याग करवारूप जाणवी ॥३१॥

लोक करे तिम जे करे, उठे वेसे संमूर्छिम प्राय रे ॥ विधि विवेक जाणे नहीं, ते अन्यानुष्ठान कहाय रे ॥ ते० ॥ संवेग० ॥ ३२ ॥ तद्धेतु ते शुद्ध रागथी, विधि शुद्ध अमृत ते होय रे ॥ सकल विधान जे आचरे, ते दीसे विरला कोय रे ॥ ते० ॥ संवेग० ॥ ३३ ॥

अर्थ—हवे त्रीजी अनुष्ठानक्रिया कहे छे. जेम कोइक अज्ञानी चारित्रीयो पारणा निमित्ते अथवा ग्रहण निमित्ते क्रिया करे, ते जेम बीजा लोक उठ बेस करे तेम ते पण उठ बेस संमूर्छिमनी परे करे. एतावता कोइ चारित्रीयो क्षुधित थको दीक्षा लीए तेने केवल एक अशननीज इच्छा रहे छे. ते मनरहित थको क्रिया करे, माटे संमूर्छिमनी उपमा दीधी, कारण के जे पोताना चित्तमां विधि विवेक कांइ जाणे नहीं जे आ रीते बेसवुं, आ रीते उठवुं, आ रीते पूंजवु इत्यादिक कांइ विधि जाणे नहीं, तथा विवेक ते गुरु, देव, ज्ञान, धर्माचार्य प्रमुखनो विनय करवो, गुरु सामे आ रीते जवुं, आववुं, बेसवुं इत्यादिक सर्व विधि जाणे तेने विवेक कहीए. ते विधि तथा विवेकने अजाणतो मनरहित जे क्रिया करे ते कांइ फलदायक जाणवी नहीं ॥ ३२ ॥ हवे चोथी तद्धेतुक्रिया कहे छे. चारित्रनो लेनारो वैराग्यवंत भद्रकपरिणामी देशना सांभली संसारनो सर्व भाव अनित्य जाणी संसारी वर्ग थकी विरक्त थइने चारित्र लीए, ते शुद्ध रागे वधते मनोरथे क्रिया करे, पण विधि शुद्ध होय नहीं, परंतु सरवाले तेथी विधि शुद्ध थाय, माटे ए क्रिया फलदायक जाणवी. हवे पांचमी अमृतक्रियानां लक्षण कहे छे. जे आगमोक्त विधि कह्यो छे ते प्रमाणे शुद्ध विधिए शुद्ध चित्तना अध्यवसायपणे करीने (सकल विधान के०) समस्त क्रियाना अनुष्ठाननी आचरणा करे एवा तो संसार मांहे कोइक विरला प्राणी दीसे छे, माटे पांच क्रिया मांहे अमृतक्रिया ते केवल अद्भुत सुरमणि समान छे, ए शुद्ध क्रिया आवेथी

संसारनो पार पामे, अने मोक्षनी प्राप्तिपूर्वक शुद्ध भावपणे रहे, पण ए क्रिया आव्या विना संसारनो निस्तार थतो नथी ॥ ३३ ॥

करण प्रीति आदर घणो, जिज्ञासा जाणनो संग रे॥ शुभ आगम निर्विघनता, ए शुद्ध क्रियानां लिंग रे ॥ ए० ॥ संवेग० ॥ ३४ ॥ द्रव्यलिंग अनंतां धर्यां, करी किरिया फल नवि लह्द्य रे ॥ शुद्ध क्रिया तो संपजे, पुग्गल आवर्त्तने अर्द्ध रे ॥ पुग्गल० ॥ संवेग० ॥ (पाठांतर) मारग अनुगति भाव जे, अपुनर्बंधकता लह्द्य रे ॥ किरिया नवि उपसंपजे, पुग्गल आवर्त्तने अर्द्ध रे ॥ पुग्गल० ॥ संवेग० ॥ ३५ ॥

अर्थ–हवे शुद्ध क्रियानां लक्षण कहे छे. जे क्रिया करवामां घणी प्रीति धरे, घणो घणो आदर करे, क्रियाना प्रयत्नने विषे निरंतर उद्यम करे, (जिज्ञासा के०) तत्त्व जाणवानी वांछना करे, तथा (जाणनो संग के०) जे जन शुद्ध क्रियाना जाण होय तेनो संग करे, पण विकथा अन्यदर्शनी प्रमुखनो सर्वथा संग न करे, अने (शुभ आगम के०) भलो जिन कथित आगम स्याद्वादपद्धतिरचनारूप रत्नवाक्यजडित एवा उत्तम सिद्धांतने विघ्नरहितपणे आदरे, हजारो काम मूकीने केवल एक आगमश्रुतपंथे खप करे, ए शुद्ध क्रियानां (लिंग के०) लक्षण जाणवां ॥ ३४ ॥ हवे शुद्ध क्रिया ते केवारे प्राप्त थाय ? ते कहे छे. यतिना वेषे उंघो, मुहपत्ति ग्रहण करवे करी ए रीते अनंती वार द्रव्यलिंग यतिना वेषे धर्यां. मेरु पर्वत जेवो ढगलो थाय, एटला उंघा, मुहपत्ति धर्यां, तथा क्रिया पण विशेषपणे विविध प्रकारनी करी, परंतु ते क्रियानुं फल तथा यतिपणानुं फल पाम्यो नहीं. शामाटे ? जे बोधबीज विना जेटली क्रिया, जेटलां लिंग, ते सर्व निष्फल छे. "भावशून्याः क्रिया न फलंतीति तत्त्वम् ॥ " ते माटे शुद्ध क्रिया तो ते वारे जीव पामे के

जे वारे अर्ध पुद्गलपरावर्त्त संसार बाकी रहे, "अंतो मुहुत्तमित्तं पि, फासिअं हुज्ज जेहिं संम्मत्तं ॥ तेसिं अवड्ढपुग्गल, परिअट्टो चेव संसारो ॥ १ ॥ " ते वारे अंतर्मुहूर्त्त प्रमाणे मात्र समकितने फरसी अर्ध पुद्गलपरावर्त संसार करे, तथा जेने समकित आवीने पाछुं जाय नहीं तो ते छासठ सागरोपम झाझेरा संसारमां रहे, पछी मोक्षे जाय ॥ ३५ ॥

अरिहंत सिद्ध तथा भला, आचारिज ने उवज्झाय रे ॥ साधु नाण दंसण चरि, तव नव पद मुगति उपाय रे ॥ तव० ॥ संवेग० ॥ ३६ ॥ ए नव पद ध्यातां थका, प्रगटे निज आतमरूप रे ॥ आतमदरिसण जेणे कर्युं, तेणे मूंद्यो भवभयकूप रे ॥ तेणे० ॥ संवेग० ॥ ३७ ॥

अर्थ—हवे मोक्षनो उपाय कहे छे. राग द्वेषरूप शत्रुने जीती घनघाती कर्मनो क्षय करी केवलज्ञान पाम्या ते अरिहंत. तथा आठ कर्मनो क्षय करी सिद्ध थया ते सिद्ध. पांच आचारने पालवे करी गच्छनिर्वाह करे ते भला आचार्य. अंगोपांग भणे, भणावे ते उपाध्याय. जीवनां सर्व कार्य साधवाने उत्तम कार्य करे ते साधु. जेथी यथार्थ वस्तु जणाय ते ज्ञान. समकित दर्शन पामवानां कारण धरे ते दर्शन. आठ कर्मना संचयने खाली करे ते चारित्र. निकाचित कर्ममल शोधीने दूर करे ते (तव के०) तप. ए नव पदनुं एकाग्र मन, वचन, कायाए करी ध्यान धरतां थका मोक्षप्राप्ति थाय, माटे एज मोक्षनो उपाय छे ॥ ३६ ॥ ए नव पदने ध्यातां थका पोताना आत्मानुं स्वाभाविक स्फटिक रत्न समान उज्ज्वल रूप प्रगट थाय. जेम स्फटिक रत्न निर्मल छे, पण उपाधियोगे एटले लालने संगे रक्त थाय, श्यामने संगे श्याम थाय, पण तेनी पोतानी मूल उज्ज्वलता न जाय, तेम आत्मा कर्मे लेपायो थको संसारी विभावी देखाय छे. तेने ए नव पदना

ध्यानथी कर्ममलरहित सहज पोतानो ज्ञान दर्शन चारित्ररूप उज्ज्वल गुण प्रगट थाय तेने आत्मदर्शन कहीए. ए आत्मदर्शन जेणे कर्युं तेणे (भव के०) संसारना भयरूप जे कूवो, ते (मूंद्यो के०) ढांक्यो, एटले तेणे संसार मर्यादारूप कर्यो, माटे सदा सर्वदा नव पदनुं ध्यान धरवुं ॥ ३७ ॥

क्षण अर्धे जे अघ टले, ते न टले भवनी कोडी रे ॥ तपस्या करतां
अति घणी, नहीं ज्ञान तणी छे जोडी रे ॥ नहीं० ॥ संवेग० ॥ ३८ ॥
आतमज्ञाने मगन जे, ते सवि पुद्गलनो खेल रे ॥ इंद्रजाल करी लेखवे,
न मिले तिहां देइ मन मेल रे ॥ न० ॥ संवेग० ॥ ३९ ॥

अर्थ–हवे ज्ञाननुं बहु मान करे छे. जे ज्ञानी पुरुष छे तेनुं एक घडीमां छ क्षण थाय एवा अर्ध क्षण मांहे जे (अघ के०) पाप टले ते अज्ञानीने भवनी कोडे पण न टले, अति घणी तपस्या करतां पण ज्ञाननी जोडे कांइ होय नहीं ॥३८॥ माटे जे प्राणी आत्मज्ञान मांहे मग्न थको संसारी दशाने विभाव करी लेखवे छे, अने सदा स्वभाव दशा मांहे मग्न थइ आत्मरमण करे छे ते देह, धन तथा इंद्रियनां सुख ते पुद्गलना खेल इंद्रजाल समान करी लेखवे छे. तिहां मननो मेल दइने तेहशुं मले नहीं. ते चित्त मांहे विचारे जे पुद्गले करी पुद्गल पोषवा ते ठीक नहीं. पुद्गलनो धर्म सडण पडण विध्वंसनरूप छे. तेमां हुं लंपट थयो, तेथी संसारमां अनंता काल सुधी पर्यटन कर्युं, पण हवे तो जिनोक्त वाणीथी पुद्गलने सारी पेठे दुःखदायी, बाजीगरनी बाजी सरखो जाण्यो, एटले बाजीगरनी बाजी साची होय तो पुद्गलनो खेल साचो होय, एवी रीते जाण्यो. तो जेम इंद्रजाल उपर पण अज्ञानी रक्त थाय तेम ए पुद्गल उपर पण अज्ञानीज रक्त थाय, परंतु ज्ञानी पुरुष तो आत्मज्ञान मांहेज मग्न रहे, पण पुद्गल साथे मन दइने मले नहीं ॥ ३९ ॥

जाण्यो ध्यायो आतमा, आवरणरहित होय सिद्ध रे ॥ आतमज्ञान ते दुःख हरे, एहीज शिवहेतु प्रसिद्ध रे ॥ एहीज० ॥ संवेग० ॥ ४० ॥ चोथे खंडे सातमी, ढाल पूरण थइ ते खास रे ॥ नव पद महिमा जे सुणे, ते पामे सुजश विलास रे ॥ ते० ॥ संवेग० ॥ ४१ ॥

अर्थ—माटे आत्माने ज्ञानीनां वचने करी जाण्यो, जाणीने तेनेज तद्रूपपणे क्षीरनीरवत् तथा अग्निलोहपिंडवत् ध्यायो तो ते ध्यानार प्राणी आठ कर्मना आवरणरहित थाय. आत्माना मूल गुण प्रगट करीने सिद्धपणुं पामे, माटे आत्माने आत्मज्ञानपणे रमण करतां तेज आत्मज्ञान ते सर्व दुःखनो हर्त्ता थाय, अने प्रसिद्धपणे तेज (शिव के०) मोक्षनो हेतु थाय, एम निःसंशयपणे जाणवुं, माटे मोक्षना वांछक प्राणीए आत्मपरिणति सुधारवी. "आत्मैव सुखदुःखकर्त्ता निजगुण-भोक्ता आत्मा आत्मनैवात्मानं पश्यति ॥ यदात्मात्मानं पश्यति तदात्मा सहजगुणधारकः स्यात् ॥ शुद्धस्वभावः उज्ज्वललोकाग्रे स्वतृतीयभागन्यूनावगाहनायां सर्वेसिद्धा वसंति" ॥ ४० ॥ ए चोथा खंडने विषे सुंदर सातमी ढाल पूरी थइ. ए नव पदनो महिमा जे प्राणी सांभळे ते प्राणी रुडा जशना विलासने पामे ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

इणी परे देइ देशना, रह्यो जाम मुनिचंद ॥ तव श्रीपाल ते विनवे, धरतो विनय अमंद ॥ १ ॥ भगवन ! कहो कुण कर्मथी, बालपणे मुज देह ॥ महारोग ए उपनो, कुण सुकृते हुवो छेह ॥ २ ॥

अर्थ—ए प्रकारे देशना दइने जे वारे मुनि मांहे चंद्रमा समान अजितसेन राजर्षि बोली रह्या ते वारे श्रीपाल घणो विनय धरतो थको मुनिने विनवे छे के ॥ १ ॥ (भगवन् के०) हे

ज्ञानवंत ! कहो, जे कया कर्मना पसायथी बालपणे मारे शरीरे ए महा अघोर रोग उपन्यो ? वली में जन्मांतरे शुं सुकृत कर्युं हतुं के जेथी ते रोग मट्यो ? ॥ २ ॥

कवण कर्मथी में लही, ठाम ठाम बहु ऋद्धि ॥ कवण कुकर्मे हुं पड्यो,
गुणनिधि जलनिधि मध्य ॥ ३ ॥ कवण नीच कर्मे हुउं, डुंबपणो मुनि-
राय ॥ मुजने ए सवि किम हुउं, कहीए करी सुपसाय ॥ ४ ॥

अर्थ–वली कया पुण्यना योगथी हुं ठेकाणे ठेकाणे बहु ऋद्धि पाम्यो ? वली हे गुणनिधि ! हे गुणसमुद्र ! हुं कया माठा कर्मना योगथी (जलनिधि के०) समुद्रमां पड्यो ? ॥ ३ ॥ वली हे मुनिराज ! कया नीच कर्मे करीने हुं डुंबपणाना कलंकने पाम्यो ? ए सर्व मारे केम थयुं ? ते मुजने रुडो पसाय करीने कहो ॥ ४ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ सांभरीया गुण गावा मुज मन हीरना रे ॥ ए देशी ॥

सांभलजो हवे कर्मविपाक कहे मुनि रे, कांइ कीधुं कीधुं कर्म न जाय
रे ॥ कर्मवशे होय सघलां सुख दुःख जीवने रे, कर्मथी बलीयो को नवि
थाय रे ॥ सांभलजो० ॥ १ ॥ भरतक्षेत्रमां नयर हिरण्यपुरे हुउं रे, मही-
पति महोटो ते श्रीकंत रे ॥ व्यसन तेहने लागुं आहेडा तणुं रे, कांइ
वारे वारे राणी एकंत रे ॥ सांभलजो० ॥ २ ॥

अर्थ–हवे अजितसेन राजर्षि कर्मनां फल कहे छे ते हे श्रोताजनो ! तमे सांभलजो. जे कांइ कर्म कर्युं होय ते भोगव्या विना जाय नहीं, माटे हे श्रीपाल ! जगत्त्रय मांहे जीवने सर्व दुःख ते कर्मना पसायथी थाय छे, पण कोइ जीव कर्मथी बलीयो नथी, माटे कर्म मोटुं छे करे छे, मुनि कहे छे जे हे श्रीपाल ! आ भरतक्षेत्र मांहे हिरण्यपुर नामे नगरे श्रीकांत नामे छीए, माटे क...

मोटो राजा थयो. तेने आहेडी रमवानुं व्यसन लाग्युं, ते जोइने तेनी राणी एकांतमां वारंवार वारती हती ॥ २ ॥

राणी तेहनी जाणो सुगुणा श्रीमती रे, समकित शीलनी रेख रे ॥
जिनधर्मे मति रुडी कूडी नहीं मने रे, दाखे दाखे शिख विशेष रे ॥
सांजलजो० ॥ ३ ॥ पियु तुजने आहेडे जावुं नवि घटे रे, जेहने केडे
छे नरकनी जीति रे ॥ धरणी ने परणी बे लाजे तुज थकी रे, मांडी जेणे
जीवहिंसानी अनीति रे ॥ सांजलजो० ॥ ४ ॥ मुख तृण दीधे अरि पण
मूके जीवतो रे, एहवो छे रुडो क्षत्रीनो आचार रे ॥ तृण आहार सदा
जे मृग पशु आचरे रे, तेहने मारे जे आहेडे ते गमार रे ॥ सांजलजो०
॥ ५ ॥ ससलां नासे पासे नहीं आयुध धरे रे, राणीजाया बाणी तेहने
केड रे ॥ जे लागे ते आगे दुःख लहेशे घणां रे, नाठाशुं बल न करे
क्षत्री वेड रे ॥ सांजलजो० ॥ ६ ॥

अर्थ—ते श्रीकांत राजानी जली गुणवंत श्रीमती नामे राणी छे. ते समकित अने शीयलनी रेखा सरखी छे. जैनधर्मने विषे जेनी रुडी मति छे, पण मनमां कपट नथी. एवी ते राणी राजाने कही कहीने घणी विशेष शिखामण दीए छे ॥ ३ ॥ हे स्वामिन्! तुजने आहेडी कर्म जवुं घटतुं नथी. शामाटे ? जे ए कर्मनी केडे नरकनी बीक छे, माटे हे स्वामिन्! (धरणी के०) पृथ्वी अने (परणी के०) जार्या ते हुं, ए बेहु तुजथी लज्जाने पामीए छीए, केमके जेणे आ जीवहिंसानी घणी अनीति मांडी छे ॥ ४ ॥ जे शत्रु होय ते पण सामो जे कोइ मुख मांहे तरणुं घाले तो तेने

जीवतो मूकी आपे एवो क्षत्रियनो रुडो व्यवहार छे, तो निरंतर (तृण के०) घासनो आहार करीने जे वनने विषे मृग पशु रहे छे तेने आहेडामां जे मारे ते गमार जाणवा ॥ ५ ॥ ससलां विचारां नासी जाय छे, पण पासे हथियार राखतां नथी, तो जे राणीना जाया बाणी पुरुष बाण हाथमां ग्रहण करीने जे पशुनी केडे लागीने बाणे करी मारे छे ते राणीना जाया आगल नरकादिकनां घणां दुःख पामशे. वली क्षत्रीजायो जे छे ते नाठानी पछवाडे केड करीने बल करे नहीं ॥६॥

अबलकुलाशी झखने निज द्रुम पीडतां रे, खगने मृगने तृणभक्षीने दोष रे ॥ हणतां नृपने न होय इम जे उपदिशे रे, तेणे कीधो तस हिंसक कुल पोष रे ॥ सांभलजो० ॥ ७ ॥ हिंसानी ते खिंसा सघले सांभली रे, हिंसा नवि रुडी किणही हेत रे ॥ आप संतापे पर संतापे पापीयो रे, आहेडी ते जाणो कुलमां केत रे ॥ सांभलजो० ॥ ८ ॥

अर्थ–पापशास्त्रना धारक ते राजाने एम उपदेश आपे छे के राजानी पृथ्वी मांहे जे जल छे तेनो राखनार राजा छे, माटे (अबल के०) निर्बल छे कुल जेमनुं एवा नाना मत्स्य तेमने मोटा (झख के०) मत्स्य ते राजाना हुकम विना (अशी के०) भक्षण करे छे तेने, तथा राजानी पृथ्वी मांहे उग्यां जे (द्रुम के०) वृक्ष तेमने पीडा उपजावनार एवां जे (खग के०) पक्षी तेने, तथा राजानी पृथ्वी मांहे उग्यां जे नवां (तृण के०) घास प्रमुख तेने भक्षण करतां एवां मृगलां प्रमुखने, ए सर्व राजाना गुनाहमां आव्यां, माटे राजानां अपराधी थयां, तेने हणतां थका राजाने कांइ दोष लागतो नथी, एम जे हिंसक कुगुरु उपदेशे छे ते तो पोताना हिंसक कुलने पोषण करे छे एम जाणवुं ॥ ७ ॥ वली हिंसानी (खिंसा के०) निंदा ते सर्व षड्दर्शन मांहे सांभलीए छीए, माटे कोइ कारणे पण हिंसा करवी रुडी नथी. पापी आहेडी ते पोताने पण संताप उप-

जावे अने जे जीवने हणवा धारे ते पर जीवने पण संताप उपजावे, ते कुल मांहे (केत के०) अरिष्टसूचक केतु ग्रह सरिखो कुलनो क्षय करनार जाणवो ॥ ८ ॥

घन परिजाउ रसातल विक्रम जे दुर्बल हणे रे, ए तो लेश्या कृष्णनो परिणाम रे ॥ भूंडी करणीथी जग अपजश पामीए रे, लीहालो खातां मुख होवे ते श्याम रे ॥ सांभलजो० ॥ ए ॥ एहवां राणीए वयण कह्यां पण रायने रे, चित्त मांहे नवि जाग्यो कोइ प्रतिबोध रे ॥ घन वरसे पण नवि भींजे मगसेलीयो रे, मूरखने हित उपदेशे होय क्रोध रे ॥ सांभलजो० ॥ १० ॥ अन्य दिवसे शत सात उल्लंठे परवर्यो रे, मृगयासंगी आव्यो गहन वन राय रे ॥ मुनि तिहां देखी कहे व्याधे बे पीड्यो कोढीयो रे, उल्लंठ ते मारे देइ घन घाय रे ॥ सांभलजो० ॥ ११ ॥

अर्थ—वली जे दुर्बल पशुने मारे तेनुं पराक्रम रसातल मांहे पेसी जाउ ! ए हिंसकपणुं तो कृष्ण लेश्यानुं आकरुं परिणाम जाणवुं. जेम (लीहालो के०) कोयलो खातां मोढुं श्याम थाय तेम भूंडी करणी करीए तेथी जगतने विषे अपजश पामीए ॥ ए ॥ एवां राणीए वचन कह्यां, पण राजाना चित्तने विषे कोइ प्रकारनो प्रतिबोध जाग्यो नहीं. जेम (घन के०) वरसाद वरसे थके मगसेलीयो पाषाण भींजे नहीं तेम राजाने प्रतिबोध लाग्यो नहीं. जेम मूर्खने हितशिक्षा देतां उलटो तेने क्रोध उपजे तेम ए दृष्टांते अहीं पण जाणवुं ॥ १० ॥ पछी अन्यदा दिवसे सातसें उल्लंठ पुरुषे परवर्यो थको मृगया रमतो थको राजा गहन वने आव्यो. तिहां रोगे पीड्यो एवो एक मुनि काउस्सग्गध्याने उभो छे, तेने जोइ राजा कहे छे, ए तो व्याधिथी पीड्यो कोढीयो छे. एम कहे थके (घन के०) आकरा घाए करीने उल्लंठ ते साधुने मारवा लाग्या ॥ ११ ॥

जिम ताके ते मुनिने तिम नृपने हुवे रे, हास्य तणो रस मुनिमन ते रस शांत रे ॥ करी उपसर्गने मृगयाथी वल्या सातसें रे, नृप साथे ते पहोता घर मन खांत रे ॥ सांभलजो० ॥ १२ ॥ अन्य दिवस मृग पूंठे धायो एकलो रे, राजा मृगलो पेठो नइतट रान रे ॥ भूलो नृप ते देखे नइतट साधुने रे, बोले नइजलमां मुनि झाली कान रे ॥ सांभलजो० ॥ १३ ॥ कांइक करुणा आवी कढाव्यो नीरथी रे, घेर आवीने राणीने कही वात रे ॥ सा कहे बीजानी पण हिंसा दुःख दीए रे, जनम अनंता दुःख दीए ऋषिघात रे ॥ सांभलजो० ॥ १४ ॥ राजा भाखे नवि करश्युं फिरी एहवुं रे, वीता केताइक वासर जाम रे ॥ गोंख थकी मुनि दीठो फिरतो गोचरी रे, विसारी राणीनी शिक्षा ताम रे ॥ सांभलजो० ॥ १५ ॥

अर्थ—हवे ते उल्लंठ जेम जेम मुनिने ताडना तर्जना करे छे तेम तेम राजाने मन मांहे हास्यरस उपजे छे, अने ते मुनिना मन मांहे शांतरस उपजे छे. ए रीते मुनिने उपसर्ग करीने सातसें जण मृगया रमीने पाछा वल्या. ते हर्ष पामता थका राजानी साथे घेर आव्या ॥ १२ ॥ वली अन्य दिवसे राजा हरण पछवाडे एकलो दोड्यो जाय छे. मृगलो नासीने नदीने कांठे रानमां पेठो, राजा भूलो पड्यो थको तिहां नदीने कांठे एक साधुने तेणे दीठा. ते वारे ते मुनिने कान झालीने नदीना पाणी मांहे झबकोल्या ॥ १३ ॥ वली कांइक राजाने करुणा आवी, तेथी मुनिने जलथी बहार काढ्या. पछी घेर आवीने ते मुनिना उपसर्गनी सर्व वात राणीने कही ते वारे राणीए कह्युं के हे स्वामिन् ! बीजा जीवोने हिंसा करी होय ते पण दुःख देवावाली

थाय, तो रुषिनी घात तो अनंता नव पर्यंत दुःखनी देवावाली होय तेमां तो शुंज कहेवुं ? ॥ १४ ॥
ते वारे राजा कहेवा लाग्यो जे हे राणी ! हवे फरीथी एवुं पाप कोइ वारे पण नहीं करशुं.
रली केटलाएक दिवस वीत्या पछी राजाए गोंखने विषे बेठा थका गोचरीए फरता एवा कोइ
एक मुनिने दीठा. ते वारे राणीनी शिखामण विसारीने ॥ १५ ॥

नगरी विटाली नीखे कहे नृप उद्धंठने रे, काढो बाहिर एहने ऊाली कंठ
रे ॥ राणीए दीठा गोंख थकी ते काढता रे, राजाने आदेशे लागा लंठ
रे ॥ सांनलजो० ॥ १६ ॥ राणी रुठी राजाने कहे शुं करो रे, पोतानुं
बोल्युं पालो न वचन्न रे ॥ मुनि उपसर्गे सर्गे जावुं दोहिलुं रे, नरके जावा
लाग्युं छे तुज मन्न रे ॥ सांनलजो० ॥ १७ ॥ नृप उपशमीयो नमीयो
मुनि तेडी घरे रे, राणी नाखे राजा ए अन्नाण रे ॥ मुनि उपसर्गे पाप
कस्युं इणे मोटकुं रे, ए छूटे ते कहीए कांइ विन्नाण रे ॥ सांनलजो० ॥ १८ ॥

अर्थ—राजा उद्धंठ पुरुषने कहेवा लाग्यो जे आ निक्षुक आपणी नगरी विटाले छे, माटे एने
गले ऊाली नगरीथी बहार काढी मूको. ते वारे राजाने आदेशे करी ते उद्धंठ पुरुष मुनिनुं गलुं
ऊाली बहार काढे छे, ते राणीए गोंख थकी दीठा ॥ १६ ॥ ते वारे राणी खीजीने कहेवा लागी
जे हे राजन् ! आ तमे शुं करो छो ? पोतानुं बोल्युं वचन पोतेज पालता नथी ? अने हुं जाणुं
छुं जे मुनिने उपसर्ग करे तेने स्वर्ग मांहे जवुं दोहिलुं छे, पण तमारुं मन तो नरक मांहे जवाने
लागेलुं छे, एम आ तमारुं कर्मज स्पष्ट कही आपे छे ॥ १७ ॥ एवां राणीनां वचन सांनली राजा
उपशांत थयो थको मुनिने घरने विषे तेडी पगे लाग्यो. ते वारे मुनिने राणी कहे छे जे आ

राजा अज्ञानी छे. मुनिने उपसर्ग करवे करीने एणे मोटुं पाप कर्युं छे, माटे ए पापथी छूटे एवुं कांइक (विन्नाण के०) विज्ञान एटले पाप टालवानुं प्रायश्चित्त कहो ॥ १८ ॥

सज्जन जे भूंडुं करतां रुडुं करे रे, तेहनां जगमां रहेशे नाम प्रकाश रे ॥
आंबो पथ्थर मारे तेहने फल दीए रे, चंदन आपे कापे तेहने वास रे
॥ सांभलजो० ॥ १९ ॥ मुनि कहे महोटा पातकनुं शुं पालणुं रे, तोपण
जो होय एहनो भाव उल्लास रे ॥ नव पद जपतां तपतां तेहनुं तप भलुं
रे, आराधे सिद्धचक्र होय अघनाश रे ॥ सांभलजो० ॥ २० ॥ पूजा तप
विधि शीखी आराध्युं नृपे रे, राणी साथे ते सिद्धचक्र विख्यात रे ॥
उजमणा मांहे आठे राणीनी सही रे, अनुमोदे वली नृपनुं तप शत
सात रे ॥ सांभलजो० ॥ २१ ॥

अर्थ—जेमके सज्जन तो तेने कहीए जे भूंडुं करतां पण रुडुं करे. तेनां नाम जगत्त्रय मांहे प्रकाशपणे रहेशे. भला माणसना गुण विषे दृष्टांत कहे छे. ते जेमके—आंबाने कोइ पथ्थर मारे छे तेने उलटुं आंबो फल आपे छे, तथा चंदनने जे कापे छे तेने चंदन पोतानो सुवास आपे छे ॥ १९ ॥ हवे मुनि कहे छे के हे राणी ! मोटुं पाप कर्युं छे, ते पाप मटाडवाने पालवानुं शुं कहीए ? तोपण जो ए राजानो उल्लास भाव होय तो कहुं छुं जे नव पदनो जाप जपतां थका तथा तेनुं भलुं तप तपतां थका ते तप पण भलुं छे. ए सिद्धचक्रने आराधे थके सर्व (अघ के०) पापनो नाश थाय ॥ २० ॥ ते वारे पूजा तथा तपनो विधि शीखीने राजाए राणीनी साथे प्रगटपणे ते सिद्धचक्रने आराध्या. तप पूरुं थयुं ते वारे तेनुं उजमणुं कर्युं. ते समे राणीनी आठ सखीउए राणीना तपनी अनुमोदना करी. वली सातसें उल्लंठे राजाना तपनी अनुमोदना करी ॥ २१ ॥

अन्य दिवस ते गया सिंह नृप गामडे रे, भ्राजी ते वलीया लेइ गोवग्ग
रे ॥ केड करीने सिंहे मास्या ते मरी रे, कोढी हुआ खत्री मुनि उवसग्ग
रे ॥ सांभलजो० ॥ २२ ॥ पुण्यप्रभावे राजा हुउ श्रीकंत तुं रे, श्रीमती
राणी मयणासुंदरी तुज रे ॥ कुष्ठिपणुं जलमज्जन डुंबपणुं तुम्हे रे, पाम्युं
ए मुनि आशातना फल गुज रे ॥ सांभलजो० ॥२३॥ सिद्धचक्र श्रीमती-
वयणे आराहीयुं रे, तेहथी पाम्यो सघलो ऋद्धिविशेष रे ॥ आठ
सखी राणीनुं तप अनुमोदीयुं रे, तेणे ते लघु देवी हुइ तुज शुभ वेष रे
॥ सांभलजो० ॥ २४ ॥ साप खाउ तुज आठमीए कह्युं शोक्यने रे, तेणे
सापे दंसी न टले पाप रे ॥ धर्मप्रशंसा करी राणा हुआ ते सातसें रे,
घातविधुर ते सिंह लीए व्रत आप रे ॥ सांभलजो० ॥ २५ ॥

अर्थ—ते वार पछी केटलाएक दिवसे ते राजा सातसें उल्लंठे परवस्यो सिंह राजाने गामडे गयो. ते गामने भांजीने सर्व गायोनो वर्ग लइने पाछा वल्या. ते वारे सिंह राजाए केरु करीने ते सातसेंने मास्या. ते मरीने क्षत्रियोना वंशमां उपन्या, पण मुनिने उपसर्ग कस्यो, तेथी ते सर्व कोढीया थया ॥ २२ ॥ पुण्यना प्रभावथी श्रीकांत राजा च्यवीने तुं श्रीपाल थयो. तारी श्रीमती राणी मरीने मयणासुंदरी थइ, अने कोढीयापणुं तथा जल मांहे रुबवापणुं तथा डुंबपणुं जे तुं पाम्यो ते सर्व मुनिनी आशातनानां फल छे ए गुह्य जाणवां ॥ २३ ॥ श्रीमती राणीने वचने करीने सिद्धचक्रनुं आराधन कस्युं, तेथी जिहां जिहां गयो तिहां तिहां सर्व ठेकाणे (ऋद्धिविशेष के०) विशेष संपदा पाम्यो. आठ सखीए तपनी अनुमोदना करी हती, तेणे करीने तारी नानी आठ स्त्रीउ

शुन्न वेषनी धरनारी थइ ॥ २४ ॥ आठमी सखीए शोक्यने कह्युं हतुं जे तुजने साप खाउ, तेथी तेने सापे करडी, माटे पाप कस्यां ते नोगव्या विना बूटे नहीं. तारा धर्मनी प्रशंसा करी हती, तेणे करी सातसें उल्लंठ ते राणा थया. सिंह राजाए (घात के०) शस्त्रना घाते करी सातसें उल्लंठने मास्या, ते घातथी (विधुर के०) बीतो थको (आप के०) पोतानी मेले (व्रत लीए के०) चारित्र लइने ॥ २५ ॥

मास अणसणे अजितसेन ते हुं हुउ रे, बालपणे तुज राज्य हस्युं ते राण रे ॥ बांधी पूरव वैरे तुज आगल धरे रे, पूरव अन्यासे मुज आव्युं नाण रे ॥ सांनलजो० ॥ २६ ॥ जाति संनारी संयम ग्रही लही उहिने रे, इहां आव्यो जेणे जेवां कीधां कर्म रे ॥ तेहने तेहवां आव्यां फल सुख दुःख तणां रे, सद्गुरु पाखे जाणे कुण ए मर्म रे ॥ सांनलजो० ॥ २७ ॥ चोथे खंके ढाल हुइ ए आठमी रे, एहमां गायो नव पद महिमा सार रे ॥ श्रीजिनविनये सुजश लहीजे एहथी रे, जगमां होवे निश्चे जयजयकार रे ॥ सांनलजो० ॥ २८ ॥

अर्थ–एक मासनुं अणसण करी तिहांथी च्यवीने हुं अजितसेन थयो. पाछले नवे तें मारुं राज्य लीधुं हतुं, माटे आ नवे में बालपणामां तारुं राज्य हरी लीधुं, अने सातसें उल्लंठने में मास्या हता, ते पूर्व नवना वैरथी ते सातसें राणाए बांधीने मुजने तारा मुख आगल धस्यो. वली पाछले नवे में चारित्र लीधुं हतुं, ते पूर्व अन्यासथी मुजने ज्ञान उदय आव्युं ॥ २६ ॥ तेथी जातिस्मरणज्ञान उपन्युं. तेना योगे पूर्व नव संनारीने संयम ग्रह्युं. ते चारित्र पालतां (उहिने के०) अवधिज्ञानने पामीने इहां तारी पासे आव्यो, माटे जेणे जेवां कर्म कस्यां हतां

नेने तेनां सुख दुःखनां फल उदय आव्यां. सद्गुरु विना एवा मर्मने बीजो कोण जाणे ? कोइ जाणे नहीं ॥ २७ ॥ चोथा खंमने विषे ए आठमी ढाल संपूर्ण थइ. ए ढाल मांहे सारभूत रुडो नव पदनो महिमा गायो छे. श्रीजिनराजना विनयथी भलो जश पामीजे. ए सिद्धचक्रना पसायथी जगत्त्रयने विषे निश्चे जयजयकार थाय ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

इम सांभली श्रीपाल नृप, चिंते चित्त मझार ॥ अहो अहो भवनाटके, लहीए इस्या प्रकार ॥ १ ॥ कहे गुरु प्रते हवणां नथी, मुज चारित्रनी सत्ति ॥ करी पसाय तिणे उपदिसो, उचित करण पडिवत्ति ॥ २ ॥ वलतुं मुनि भाखे नृपति, निश्चय गति तुं जोय ॥ करम भोग फल तुज घणुं, इह भव चरण न होय ॥ ३ ॥ पण नव पद आराधतां, पामीश नवमुं सग्गं ॥ नर सुर सुख क्रमे अनुभवी, नवमे भव अपवग्गं ॥ ४ ॥ ते सुणी रोमांचित हुउं, निज घर पहोतो भूप ॥ मुनि पण विहरंतो गयो, ठाणांतर अनुरूप ॥ ५ ॥

अर्थ–एम अजितसेन मुनिनी देशना सांभली श्रीपाल राजा पोताना चित्तने विषे चिंतवे छे के अहो ! इति आश्चर्ये ! जे संसारनाटकमां आवा प्रकारना प्रपंच पामीए छीए ? ॥ १ ॥ हवे श्रीपाल गुरु प्रत्ये कहे छे जे हमणां तो मुजमां चारित्र लेवानी शक्ति नथी, माटे मारा उपर कृपा करीने मारे योग्य प्रतिपत्ति करवाने कहो, एटले मुजथी बनी आवे एवो धर्म कहो ॥ २ ॥ वलतुं मुनि कहे छे जे हे राजन् ! तारी निश्चये गति तुं जो के हजी पण तारे भोगववा योग्य कर्मनुं फल घणुं बाकी छे, माटे तारे आ भवने विषे चारित्र उदय थशे नहीं ॥ ३ ॥ पण नव

श्री श्रीपाल राजानो रास

प्रकाशक—श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तक प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार, मुबइ.

શ્રીકાંત રાજા તેની શ્રીમતી રાણી અને મુનિ.

शास्त्री अक्षरना
पृष्ठांक १७३.



ગુજરાતી અક્ષરના
પૃષ્ઠાંક ૨૩૭.

તે વારે મુનિને રાણી કહે છે જે આ રાજા અજ્ઞાની છે મુનિને ઉપસર્ગ કરવે કરીને એણે મોટુ પાપ કરયુ છે, માટે એ પાપથી છૂટે એવુ કાંઇક વિજ્ઞાન એટલે પાપ ટાળવાનુ પ્રાયશ્ચિત્ત કહો.

લક્ષ્મી આર્ટ, ભાયખળા, મુંબઇ.

पदना आराधनथी तुं नवमा देवलोकने पामीश. पछी अनुक्रमें (नर के०) मनुष्यना अन (सुर क०) देवतानां सुख (अनुजवी के०) जोगवीने नवमा जवने विषे (अपवग्ग के०) मोक्षनुं सुख पामीश ॥ ४ ॥ ते सांजलीने श्रीपाल राजा रोमांचित थयो थको पोताने घेर गयो, अने मुनि पण तिहांथी विहार करता थका (अनुरूप के०) पोताने इच्छित एवा (ठाणांतर के०) अन्य स्थानके गया ॥५॥

॥ ढाल नवमी ॥ कंत तमाकु परिहरो ॥ ॥ ए देशी ॥

हवे नरपति श्रीपाल ते, निज परिवार संयुत्त ॥ मेरे लाल ॥ आराधे सिद्धचक्रने, विधि सहित ग्रही सुमुहुत्त ॥ मेरे लाल ॥ मननो महोटो मोजमां ॥ १ ॥ मयणासुंदरी त्यारे जणे, पूर्वे पूज्युं सिद्धचक्र ॥ मेरे लाल ॥ धन त्यारे थोडुं हतुं, हवणां तुं ऋद्धे शक्र ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥२॥ धन महोटे ठेटुं करे, धर्म उजमणुं तेह ॥ मेरे० ॥ (पाठांतर) जे करणी धर्मनुं तेह ॥ मेरे० ॥ फल पूरुं पामे नहीं, म म करजो तिहां संदेह ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ ३ ॥ विस्तारे नव पद तणी, तिणे पूजा करो सुविवेक ॥ मेरे० ॥ धननो लाहो लीजीए, राखो मोटी टेक ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ ४ ॥

अर्थ–हवे मोटा मननो धणी श्रीपाल राजा पोताना परिवारे संयुत थको विधि सहित रुडुं मुहूर्त्त लइने मोजमां एटले आनंदमां श्रीसिद्धचक्रने आराधे छे ॥ १ ॥ ते वारे मयणासुंदरी श्रीपाल राजाने कहे छे जे पूर्वे आपणे सिद्धचक्रने पूज्या हता ते वारे तो आपणी पासे धन थोडुं हतुं, अने हमणां तो ऋद्धिए करीने तुं (शक्र के०) इंद्र सरिखो छे ॥ २ ॥ माटे द्रव्य घणुं होय अने धर्मनी करणी निमित्ते जे पुरुष थोडुं द्रव्य वावरे ते प्राणी पूरुं फल पामे नहीं. तिहां कांइ पण संदेह करशो नहीं ॥ ३ ॥ ते माटे नव पद जे छे तेनी पूजा विस्तारे करी रुडा

विवेक सहित करो. धन पाम्या छो तेनो लाहो ल्यो. मनने विषे मोटी टेक राखीने पूजा करो ॥ ४ ॥

मयणा वयणां मन धरी, गुरुभक्ति शक्ति अनुसार ॥ मेरे० ॥ अरिहंतादिक नव पद भलां, आराधे ते सार ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ ५ ॥ नव जिनघर नव पडिमा भली, नव जीर्णोद्धार कराव ॥ मेरे० ॥ नानाविध पूजा करी, जिन आराधन शुभ भाव ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ ६ ॥ एम सिद्ध तणी प्रतिमा तणुं, पूजन त्रिहुं काल प्रणाम ॥ मेरे० ॥ तन्मय ध्याने सिद्धनुं, करे आराधन अभिराम ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ ७ ॥ आदर भगति ने वंदना, वेयावच्चादिक लग्ग ॥ मेरे० ॥ शुश्रूषा विधि साचवी, आराधे सूरि समग्ग ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ ८ ॥

अर्थ—ए प्रकारे मयणानां वचन मनमां धरीने (गुरु के०) मोटी छे भक्ति जेनी एवो जे श्रीपाल राजा, ते पोतानी शक्तिने अनुसारे सारभूत जे अरिहंतादिक भलां नव पद छे तेने आराधे ॥ ५ ॥ हवे श्रीपाल राजा नव पदनुं आराधन विस्तारपूर्वक करे छे. तेमां प्रथम अरिहंतपदनी भक्ति करे छे. तिहां नवनी संख्याए प्रासाद, बावन जिनालय नवां कराव्यां. तेमां नव अरिहंतनां बिंब नवां भरावीने स्थाप्यां. वली नव जीर्ण प्रासादना उद्धार कराव्या. तेनी त्रण भेदे, पांच भेदे, आठ भेदे, सत्तर भेदे, एकवीश भेदे, एकसो आठ भेदे, एम विविध प्रकारनी पूजा करी. ए रीते शुभ भावे करी जिनपद आराधे ॥ ६ ॥ हवे बीजा सिद्धपदनुं आराधन करे छे ते कहे छे. (एम के०) पूर्वे कहेला प्रकारे सिद्धनी प्रतिमाने पण त्रण काल पूजा प्रणाम करे छे. चेतनने निबिड आनंदना उद्यमे निरावरण कर्मांजनरहित एवा सिद्धने (तन्मय ध्याने के०) मन, वचन, कायानी एकाग्रताए करी मनोहर आराधन करे छे ॥ ७ ॥ हवे त्रीजा आचार्य-

पदनी नक्ति करे ঠे ते कहे ঠे. आदरनुं करवुं तथा नक्तिरागे वंदना द्वादशावर्त सहित साचवे ঠे, अने वेयावच्चादिक मांहे (लग्ग के०) लग्न एटले सावधान रहे ঠे, तथा शुश्रूषा, पर्युपासना, सेवना, अशनादिक वसती प्रमुख सर्व विधि साचवीने समग्र आचार्यनी सेवना करे ঠे. आचार्य ते गणना रक्षक माटे तेने विशेषे आराधे ঠे ॥ ८ ॥

अध्यापक नणतां प्रति, वसनाशन ठाण बनाय ॥ मेरे० ॥ द्विविध नक्ति
करतो थको, आराधे नृप उवझाय ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ ए ॥ नमन
वंदन अनिगमनथी, वसही अशनादिक दान ॥ मेरे० ॥ करतो वेयावच्च
घणुं, आराधे मुनिपद ठाण ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ १० ॥

अर्थ–हवे चोथा उपाध्यायपदनी नक्ति करे ঠे. तेमां घणा पांच संध्याए आगमना पाठ नणनारने अने नणावतां प्रत्ये (वसन के०) वस्त्र आपे ঠे, तथा (अशन के०) अन्न आपे ঠे, अने (ठाण के०) वसवानुं स्थानक बनावी आपे ঠे. धर्मशाला, पठनशाला प्रमुख करावे ঠे. एम (द्विविध के०) बे प्रकारे, ते मांहे एक पूर्वे कह्या उपचार ते द्रव्यथी अने बीजी नावथी मननी एकाग्रताए करी उपाध्यायपदनी नक्ति करतो थको पाठकपदने श्रीपाल राजा आराधे ঠे ॥ ए ॥ हवे पांचमा मुनिपदनी नक्ति करे ঠे ते कहे ঠे. तेमां मुनिने (अनिगमनथी के०) गुरु आवे त्यारे सन्मुख जइने (नमन के०) मस्तक नमाववुं, अने वंदन ते हाथ जोरुवा. एम साधुने नमन वंदन करतां विनय गुण वधे, विनयथी धर्मनी प्राप्ति थाय, धर्म पामवाथी ज्ञान पामे, ज्ञानथी मोक्षसुख पामे. तथा (वसही के०) वसती ते रहेवानुं स्थानक अने चार प्रकारे अशन प्रमुखनुं दान आपे ঠे, तेथी मुनि संयममार्ग मांहे निश्चल रहे. एम घणुं वैयावच्च करतो थको मुनिपदरूप स्थानकने आराधे ঠे ॥ १० ॥

तीर्थयात्रा करी अति घणी, संघपू[illegible]रहजत्त ॥ मेरे० ॥ आराधे दर्शन-पद भलुं, शासन उन्नति दृढ चित्त ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ ११ ॥ सिद्धांत लिखावी तेहने, पालन अर्चादिक हेत ॥ मेरे० ॥ नाणपदाराधन करे, सज्झाय उचित मन देत ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ १२ ॥ व्रत नियमादिक पालतो, विरतिनी भक्ति करंत ॥ मेरे० ॥ आराधे चारित्रधर्मने, रागी जतिधर्म एकंत ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ १३ ॥

अर्थ–हवे छठा दर्शनपदनुं आराधन करे छे ते कहे छे. ते ठेकाणे ठेकाणे अति घणी तीर्थयात्रा भक्तिए सहित करी तिहां स्नात्रपूजा, महोत्सव प्रमुख घणा कस्या, तथा संघपूजा स्वामिवात्सल्य करे, तथा (रहजत्त के०) रथयात्रा एटले कल्याणक प्रमुखना दिवसे प्रतिमाजीने रथमां स्थापी वाजित्रने समूहे तथा चतुर्विध संघे युक्त थको नगर मांहे गीत गायन प्रमुख धवलमंगल सहित गमन करे तेने रथयात्रा कहीए. ए रीते शासननी उन्नति दृढ चित्ते करी घणी शोभा वधारतो थको श्रीपाल राजा भलुं दर्शनपद आराधे छे ॥ ११ ॥ हवे सातमा ज्ञानपदनी भक्ति करे छे ते कहे छे. (पालन अर्चादिक हेत के०) सिद्धांतना पालन अर्चादिकने विषे छे हेत जेने एवो श्रीपाल राजा सिद्धांत लखावीने तेनी फलादिके करी पूजा करे छे, अने ज्ञाननां उपकरण जे पाटी, पोथी, ठवणी, सापडा, सापडी, वही, दस्तरी, ठेलीया, पूठां, रुमाल, हिंगलो अने मषी प्रमुख मेलवी ज्ञानपदनुं आराधन करे छे. वली पोतानी योग्यताए चित्त दइने सज्झाय करे, एम सातमे पदे ज्ञानपदनी भक्ति करे छे ॥ १२ ॥ हवे आठमा चारित्रपदनी भक्ति करे छे ते कहे छे. ते पोते लीधेलां बार व्रतने पालतो तथा गुरुमुखथी लीधा नियमने

पालतो विरतिनी एटले गृहस्थ व्रतधारी तथा यति चारित्रीयानी अन्न वस्त्रादिके करी द्रव्यथी भक्ति करे, तथा भावथी स्तुति वंदनादिक करे. एम निश्चलताए एकांत यतिधर्मनो रागी थको चारित्रधर्मने आराधे छे ॥ १३ ॥

तजी इच्छा इह परलोकनी, हुइ सघले अप्रतिबद्ध ॥ मेरे० ॥ षट् बाह्य
अभ्यंतर षट् करी, आराधे तवपद शुद्ध ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ १४ ॥
उत्तम नव पद द्रव्य भावथी, शुभ भक्ति करी श्रीपाल ॥ मेरे० ॥ आ-
राधे सिद्धचक्रने, नित पामे मंगलमाल ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ १५ ॥ इम
सिद्धचक्रनी सेवना, करे साडा चार ते वर्ष ॥ मेरे० ॥ हवे उजमणाविधि
तणो, पूरे तप उपनो हर्ष ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ १६ ॥

अर्थ—हवे नवमा तपःपदनी भक्ति करे छे ते कहे छे. ते इहलोक तथा परलोकनी इच्छा तजी सर्व स्थाने अप्रतिबद्धपणुं आदरी कर्म तपाववाने अर्थे शक्ति प्रमाणे छ प्रकारे बाह्य तप तथा छ प्रकारे अभ्यंतर तप करी "तपसा क्षीयते कर्म" इत्यादि वचन छे, माटे शुद्धपणे तपःपदनुं आराधन करे छे ॥ १४ ॥ एम उत्तम नव पदने द्रव्यथी तथा भावथी ए बे प्रकारे भली भक्ति करीने श्रीपाल राजा श्रीसिद्धचक्रने आराधे छे. तिहां द्रव्यथी पूजानां उपकरण प्रमुख अने भावथी आत्मवीर्योल्लास युक्त आराधन करतो थको नित्य प्रत्ये मांगलिकनी माला पामे छे ॥ १५ ॥ एम साडा चार वर्ष सुधी सिद्धचक्रनी सेवना करे, ते नव पदनुं तप जे वारे पूरुं थयुं ते वारे श्रीपाल राजाने उजमणानो विधि करवानो हर्ष उपन्यो, तेथी वीर्योल्लासपूर्वक उजमणुं करवा मांड्युं ॥ १६ ॥

चोथे खंडे पूरी थइ, ढाल नवमी चढते रंग ॥ मेरे० ॥ विनय सुजश
सुख ते लहे, सिद्धचक्र थुणे जे चंग ॥ मेरे० ॥ मननो० ॥ १७ ॥

अर्थ—ए चोथा खंडने विषे नवमी ढाल चढते रंगे पूरी थइ. जे (चंग के०) मनोहर सिद्धचक्रनी स्तवना करे ते विनय अने जला यशरूप सुखने पामे ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

हवे राजा निज राजनी, लछी तणे अनुसार ॥
उजमणुं तेह तप तणुं, मांडे अतिहि उदार ॥ १ ॥

राजा पोताना राज्यनी लक्ष्मीने अनुसारे ते तपनुं उजमणुं विधिए करी आदर सहित बहु मानथी करवा मांडतो हवो. ते उजमणानो विधि आगलनी ॥ १ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ जोलीडा हंसा रे विषय न राचीए ॥ ए देशी ॥

वेस्तीरण जिनभवने विरचीए, पुण्य त्रिवेदिक पीठ ॥
चंद्रचंद्रिका रे धवल भुवनतले, नव रंग चित्र विसीठ ॥ १ ॥

उजमणानो विधि कहे छे. (विस्तीरण जिनभवने के०) कोइ एक विस्तारवंत एवा अरिहंतना देरामां (पुण्य के०) जाणीए पुण्यनां पीठज रच्यां होय नहीं ? एवा त्रण गढरूप (त्रिवेदिक पीठ के०) त्रिवेदिका एटले त्रण पीठ स्वरूपे (विरचीए के०) रचीए एटले रचना करे, ते त्रण वेदिका उपरा उपर समोसरणनी पेरे रचीए. ते चंद्रचंद्रिका एटले उज्ज्वल जाणीए चंद्रमानी ज्योतिज होय नहीं ? एवी धवल एटले उज्ज्वल भुवनतले एटले भुवननी धरती तेने

थोइने नव रंग एटले आठ सफेद रंगनां चित्र विसीठ एटले विशेष्ट भलां चित्रामण सहित करे. इहां प्रसंगे श्रीअरिहंतादिक नव पदना वर्ण लखीए ठीए. श्रीअरिहंत धोले वर्णे ठे, श्रीसिद्ध गवान् राते वर्णे ठे, श्रीआचार्यजी पीले वर्णे ठे, श्रीउपाध्यायजी नीले वर्णे ठे, साधुजी श्याम ठे, अने शेष दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप, ए चार पद उजले वर्णे ठे ॥ १ ॥

तप उजमणुं रे इणी परे कीजीए, जिम विरचे रे श्रीपाल ॥ तपफल वाधे रे उजमणे करी, जेम जल पंकजनाल ॥ तप० ॥ २ ॥ पंच वरणनां रे शालि प्रमुख भलां, मंत्र पवित्र करी धान्य ॥ सिद्धचक्रनी रे रचना तिहां करे, संपूरण शुभ ध्यान ॥ तप० ॥ ३ ॥ अरिहंतादिक नव पदने विषे, श्रीफल गोल ठवंत ॥ सामान्ये घृत खंड सहित सवे, नृप मन अधिकी रे खंत ॥ तप० ॥ ४ ॥ जिनपद धवलुं रे गोलक ते ठवे, शुचि कर्केतन अठ ॥ चोत्रीश हीरे रे सहित विराजतुं, गिरुउं सुगुण गरिठ ॥ तप० ॥ ५ ॥

अर्थ–हे भव्य प्राणीउं ! तपनुं उजमणुं ते जेम श्रीपाल राजा (विरचे के०) रचे ठे ते रीते करवुं, अने तपनुं फल पण उजमणुं करे तेथी वधे. ते केनी पेठे ? तो के (जेम जल के०) पाणीए करीने जेम कमलनुं नाल वधे तेनी परे. अर्थात् जल विना जेम कमलनाल वधे नहीं तेम उजमणा विना व्रतफलप्राप्ति पण थाय नहीं ॥ २ ॥ पंच वर्णनां (शालि के०) चोखा प्रमुख उत्तम धान्य मेलवी तेने पवित्र मंत्रे मंत्रीने श्रीसिद्धचक्रनी रचना संपूर्णपणे शुभ ध्याने करीने करे, एटले जे जे वर्णे जे जे पद होय ते ते वर्णनुं तिहां धान्य भरवुं, एम नव पांखडीनुं कमल रचवुं ॥ ३ ॥ अरिहंतादिक नव पदने विषे श्रीफलना गोला काढी ते मांहे घृत तथा खांड भरीने

चोथे खंडे पूरी थइ, ढाल नवमी चढते रंग ॥ मेरे० ॥ विनय सुजश गुण ते लहे, सिद्धचक्र गुणे जे चंग ॥ मेरे० ॥ मनमो० ॥ १७ ॥

अर्थ—ए चोथा खंडने विषे नवमी ढाल चढते रंगे पूरी थइ. जे (चंग के०) मनोहर सिद्धचक्रनी स्तवना करे ते विनय अने जला यशरूप सुखने पामे ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

हवे राजा निज राजनी, लछी तणे अनुसार ॥
उजमणुं तेह तप तणुं, मांफे अतिहि उदार ॥ १ ॥

अर्थ—हवे श्रीपाल राजा पोताना राज्यनी लक्ष्मीने अनुसारे ते तपनुं उजमणुं विधिए करी अति मोटाइए आदर सहित बहु मानथी करवा मांफतो हवो. ते उजमणानो विधि आगलनी ढाल मांहे कहे छे ॥ १ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ जोलीमा हंसा रे विषय न राचीए ॥ ए देशी ॥

विस्तीरण जिनजवने विरचीए, पुण्य त्रिवेदिक पीठ ॥
चंद्रचंद्रिका रे धवल जुवनतले, नव रंग चित्र विसीठ ॥ १ ॥

अर्थ—हवे उजमणानो विधि कहे छे. (विस्तीरण जिनजवने के०) कोइ एक विस्तारवंत एवा श्रीअरिहंतना देरासरमां (पुण्य के०) जाणीए पुण्यनां पीठज रच्यां होय नहीं ? एवा त्रण गढरूप (त्रिवेदिक पीठ के०) त्रिवेदिका एटले त्रण पीठ स्वरूपे (विरचीए के०) रचीए एटले रचना करे, ते त्रण वेदिका उपरा उपर समोसरणनी पेरे रचीए. ते चंद्रचंद्रिका एटले उज्ज्वल जाणीए चंद्रमानी ज्योतिज होय नहीं ? एवी धवल एटले उज्ज्वल जुवनतले एटले जुवननी धरती तेने

धोइने नव रंग एटले आछा सफेद रंगनां चित्र विसीठ एटले विशिष्ट भलां चित्रामण सहित करे. इहां प्रसंगे श्रीअरिहंतादिक नव पदना वर्ण लखीए छीए. श्रीअरिहंत धोळे वर्णे छे, श्रीसिद्ध भगवान् राते वर्णे छे, श्रीआचार्यजी पीळे वर्णे छे, श्रीउपाध्यायजी नीळे वर्णे छे, साधुजी श्याम वर्णे छे, अने शेष दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप, ए चार पद उजळे वर्णे छे ॥ १ ॥

तप उजमणुं रे इणी परे कीजीए, जिम विरचे रे श्रीपाल ॥ तपफल वाधे रे उजमणे करी, जेम जल पंकजनाल ॥ तप० ॥ २ ॥ पंच वरणनां रे शालि प्रमुख भलां, मंत्र पवित्र करी धान्य ॥ सिद्धचक्रनी रे रचना तिहां करे, संपूरण शुभ ध्यान ॥ तप० ॥ ३ ॥ अरिहंतादिक नव पदने विषे, श्रीफल गोल ठवंत ॥ सामान्ये घृत खंड सहित सवे, नृप मन अधिकी रे खंत ॥ तप० ॥ ४ ॥ जिनपद धवलुं रे गोलक ते ठवे, शुचि कर्केतन अठ ॥ चोत्रीश हीरे रे सहित विराजतुं, गिरुउं सुगुण गरिठ ॥ तप० ॥ ५ ॥

अर्थ—हे भव्य प्राणीओ ! तपनुं उजमणुं ते जेम श्रीपाल राजा (विरचे के०) रचे छे ते रीते करवुं, अने तपनुं फल पण उजमणुं करे तेथी वधे. ते केनी पेठे ? तो के (जेम जल के०) पाणीए करीने जेम कमलनुं नाल वधे तेनी परे. अर्थात् जल विना जेम कमलनाल वधे नहीं तेम उजमणा विना व्रतफलप्राप्ति पण थाय नहीं ॥ २ ॥ पंच वर्णनां (शालि के०) चोखा प्रमुख उत्तम धान्य मेळवी तेने पवित्र मंत्रे मंत्रीने श्रीसिद्धचक्रनी रचना संपूर्णपणे शुभ ध्याने करीने करे, एटले जे जे वर्णे जे जे पद होय ते ते वर्णनुं तिहां धान्य भरवुं, एम नव पांखडीनुं कमल रचवुं ॥ ३ ॥ अरिहंतादिक नव पदने विषे श्रीफलना गोळा काढी ते मांहे घृत तथा खांड भरीने

...मानपणे ते पदना जेटला गुण छे ते पदना तेटला गोलक ते श्रीपाल राजा मनने ... (अधिकी खंत के०) अधिक उजमणानी खांते (ठवंत के०) मूके छे ॥ ४ ॥ पहेला जिन... (... के०) अरिहंतपदना बार गुण छे, तथा अरिहंतपद (धवलुं के०) धोळुं छे, माटे श्वेत चंदने रंगीने बार गोलक मूक्या. वली आठ महाप्रातिहार्यरूप आठ मूल गुण छे तेनां पवित्र कर्केतन ... रत्न मूक्यां. वली चोत्रीश अतिशय छे, माटे तिहां चोत्रीश हीराए सहित शोभायमान कर्यु. (गिरुउं के०) श्रेष्ठ, भले गुणे करी गरिठ ते मोटुं जे अरिहंतपद तेनी भक्ति करे छे ॥ ५ ॥

सिद्धपदे अरुण माणिक रातडां, वली इगतीस प्रवाल ॥ घुसृण विलपित गोलक तस ठवे, मूरति राग विशाल ॥ तप० ॥ ६ ॥ पण मणि पीत छत्रीश गोमेदके, सूरिपदे ठवे गोल ॥ नील रयण पचवीस पाठकपदे, ठवे विपुल रंगरोल ॥ तप० ॥ ७ ॥

अर्थ—हवे सिद्ध राते वर्णे अने आठ गुणे सहित छे, माटे तिहां (रातडां के०) रातां आठ माणिक स्थापे. वली बीजा एकत्रीश गुण छे, माटे प्रवालां एकत्रीश (ठवे के०) मूके. वली (घुसृण के०) राता बावनाचंदने विलेपन करेला रंगीत गोलक एकत्रीश ते सिद्धनी (मूरति के०) स्थापना आगल विशाल राग धरीने मूके छे ॥ ६ ॥ हवे आचार्यना पांच आचार छे, माटे पांच पुष्कराज नामक मणि रत्न स्थापे. वली छत्रीश गुण छे, माटे (पीत के०) पीलां छत्रीश गोमेदक रत्ने सहित पीले रंगे रंगीत करी छत्रीश गोलक घृत खांडे भरी मूके. वली (पाठक के०) उपाध्यायपदे पचीश गुण छे, माटे पचीश नीलां रत्न मूके, तथा नीले वर्णे रंगी पचीश गोलक (विपुल के०) घणा रंगरोले करी (ठवे के०) मूके ॥ ७ ॥

रिष्ट रतन सगवीस ते मुनिपदे, पंच रायपट अंक ॥ सगसठि इगवन्न सित्तरी पंचास ते, मुगता शेष निःशंक ॥ तप० ॥ ८ ॥ ते ते वरणे रे चीरादिक ठवे, नव पद तणे रे उद्देश ॥ बीजी पण सामग्री मोटकी, मांडे तेह नरेश ॥ तप० ॥ ए ॥ बीजोरां खारेक दाडिम ज्ञलां, कोहोलां सरस नारंग ॥ पूगीफल वली कलश कंचन तणा, रतनपुंज अति चंग ॥ तप० ॥ १० ॥ जे जे ठामे रे जे ठववुं घटे, ते ते ठवे रे नरिंद ॥ ग्रह दिक्-पालपदे फल फूलडां, धरे सवरण आनंद ॥ तप० ॥ ११ ॥

अर्थ—हवे मुनिपदे एटले साधुपदे सत्यावीश गुण छे, माटे रिष्टरत्न एटले श्याम पानां (सगवीस के०) सत्यावीश मूके. वली पंच महा व्रतना धणी छे, माटे पांच राजपट नामे रत्नविशेष श्याम वर्णे होय ते मूके. वली श्याम रंगे सत्यावीश गोलक ठवे. तथा दर्शनपदना (सगसठि के०) सम्सठ ज्ञेद छे, अने ज्ञानपदना (इगवन्न के०) एकावन ज्ञेद छे, तेमज चारित्रपदना (सित्तरी के०) सित्तेर ज्ञेद छे, तथा तपःपदना (पंचास के०) पचास ज्ञेद छे, माटे दर्शनपदे सम्सठ मोती अने सात गोलक स्थापे, तथा ज्ञानपदे एकावन मोती अने पांच गोलक स्थापे, तथा चारित्र-पदे सित्तेर मोती ने पांच गोलक, तपःपदे पचास मोती ने बार गोलक निःशंकपणे मूके ॥ ८ ॥ वली नव पदना जे जे वर्ण छे ते ते वर्णे ते ते वर्णनां ज्ञलां (चीरादिक के०) वस्त्रादिक (ठवे के०) स्थापे. तेने चंद्रवा उपर बांधे. आदि शब्दे पुष्पादिक जाणवां. ए रीते नव पदने उद्देशे नव पदना उजमणाने अर्थे बीजी पण मोटी सामग्री मांडे. जे नव नव वानां कह्यां छे ते सर्व आणीने पदे पदे स्थापे. एम श्रीपाल राजा चित्तनी उदारताए सर्व लोकने जिनशासननी उन्नति देखाडे छे

॥ ९ ॥ वली आटली वस्तु नव नवनी संख्याए मेले ते कहे छे के बीजोरां, खारेक, जलां दाडिम, कोहोलां, रसे सहित नारंगी, (पूगीफल के०) सोपारी, सोनाना कलश, अति मनोहर रत्नना पुंज ते ढगला, ए सर्व नव नवनी संख्याए मूके छे. एम जे देशमां जे फल, मेवा, सुखडी प्रमुख मले ते सर्व नव नवनी संख्याए लावीने श्रीसिद्धचक्रनुं जक्तिए करी उजमणुं करे ॥ १० ॥ एम श्रीपाल नव पदना मंडपने विषे जे जे ठेकाणे जे जे वस्तु स्थापवी घटे ते ते स्थानके ते ते वस्तु राजा स्थापे. नव ग्रह तथा दश दिक्पालने पदे फल तथा फूल आनंद सहित स्थापे. पोतपोताने वर्णे ज्यां जे जे वर्णनां घटे ते ते स्थापे ॥ ११ ॥

गुरु विस्तारे रे उजमणुं करी, न्हवण उत्सव करे राय ॥ आठ प्रकारी
रे जिनपूजा करे, मंगल अवसर थाय ॥ तप० ॥ १२ ॥ संघ तिवारे रे
तिलक माला तणुं, मंगल नृपने करेइ ॥ श्रीजिन माने रे संघे जे कह्युं,
मंगल ते शिव देइ ॥ तप० ॥ १३ ॥

अर्थ—एम (गुरु विस्तारे के०) मोटे विस्तारे उजमणुं करी उत्सवने अंते श्रीपाल राजा प्रभुना बिंबने न्हवण करावे. पछी जल, चंदन, फूल, धूप, दीप, अक्षत, फल अने नैवेद्य, ए अष्टप्रकारी पूजा करी, आरति उतारी मंगलदीपक प्रगट करे. ते वखते मंगलनो अवसर थाय ॥ १२ ॥ ते वारे सर्व संघ मलीने इंद्रमाला पहेराववानुं कुंकुमनुं तिलक करी उपर अक्षत चोडी राजाने मंगल करे. जे इंद्रमाला पहेरावी तेज मंगलतिलक ते श्रीसंघ करे. जे श्रीसंघ करे ते तीर्थंकर पण मान्य करे. नमो तित्थस्स. तीर्थ शब्दे संघनुं मंगल ते मोक्षपदनुं देवावालुं छे, माटे ए मंगल करवुं ॥ १३ ॥

तप उजमणे रे वीर्यउल्लास जे, तेहज मुक्तिनिदान ॥ सर्व अजव्ये रे तप पूरां कर्यां, पण नाव्युं प्रणिधान ॥ तप० ॥ १४ ॥ लघुकर्मीने रे किरिया फल दीए, सफल सुगुरु उवएस ॥ सर होये तिहां कूपखनन घटे, नहीं तो होय किलेश ॥ तप० ॥ १५ ॥ सफल हुउं सवि नृप श्रीपालने, ड्व्य जाव जस शुद्ध ॥ मत कोइ राचो रे काचो मत लेइ, साचो बिहुं नय बुद्ध ॥ तप० ॥ १६ ॥ चोथे खंडे रे दशमी ढाल ए, पूरण हुइ सुप्रमाण ॥ श्री जिन विनय सुजश जगति करी, पग पग होय कल्याण ॥ तप० ॥ १७ ॥

अर्थ–तपनुं उजमणुं ते आत्मवीर्योल्लासजावरूप डे. वीर्योल्लास विना जे करणी ते सर्व निरर्थक डे, माटे वीर्योल्लास तेज (निदान के०) निश्चे मुक्ति डे, नहीं तो सर्व अजव्ये पण तप तो अनंती वार पूरा कर्यां, पण समकित शुद्ध आव्या विना प्रणिधान शुद्ध आव्युं नहीं, एटले शुद्धोपयोगे वीर्योल्लास न थयो ॥ १४ ॥ लघुकर्मी जीव जे क्रिया करे ते फल आपे, जला गुरुना उपदेशथी ते सफल थाय. जेमके ज्यां पाणीनी सर होय तिहां कूवो खणवो घटे, पण सर न होय अने कूप खणवा जाय तो जलप्राप्ति न थाय, परंतु उलटो क्लेश थाय ॥ १५ ॥ ते सर्व उपदेश, तपानुष्ठान उजमणुं ते श्रीपाल राजाने फल सहित थयुं. जेना मनने विषे ड्व्य तथा जाव ए बेनी घणी शुद्धता डे तेने सर्व शुद्ध डे, माटे रे जव्य प्राणीउं ! कोइ काचो, एटले जे ड्व्यथीज शुद्ध करशुं एवो मत अंगीकार करी राचशो मां. साचो (बुद्ध के०) पंमित ते के जे ड्व्य अने जाव ए बेहु नयने साधे डे ॥ १६ ॥ ए चोथा खंडने विषे दशमी ढाल जले प्रमाणे

करी पूरी थइ. श्रीजिननो विनय कस्याथी, भलो जश कह्याथी तद्रूप भक्तिए करी पगले पगले कल्याण होय ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

नमस्कार कहे एहवा, हवे गंभीर उदार ॥ योगीसर पण जे सुणी, चमके हृदय मझार ॥ १ ॥

अथ श्री सिद्धचक्रनमस्कारः ॥ कवित्त ॥

जो धुरि सिरि अरिहंत, मूल दृढ पीठ पइठ्ठिउ ॥ सिद्ध सूरि उवज्झाय, साहु चिहुं पास गरिठ्ठिउ ॥ दंसण नाण चरित्त, तवहि पडिसाहा सुंदरु ॥ तत्तक्खर सरवग्ग, लद्धि गुरु पयदल डुंबरु ॥ दिसिवाल जक्ख जक्खिणि पमुह, सुर कुसुमेहिं अलंकिउ ॥ सो सिद्धचक्क गुरु कप्पतरु, अम्ह मनवंछिय फल दीउ ॥ २ ॥

अर्थ–हवे ते श्रीपाल राजा श्रीसिद्धचक्र आगल गंभीर उदार वचने करी नमस्कार कहे छे. जे सांभलीने योगीश्वर सरिखा पण हृदय मांहे चमत्कार पामे ॥ १ ॥ ते श्रीसिद्धचक्रने नमस्कार करतां कल्पवृक्षनी उपमा आपे छे के (जो धुरि के०) जेने धुरमां श्रीअरिहंतनी स्थापना छे ते सिद्धचक्ररूप कल्पवृक्षनी दृढ मूल पीठिकानुं प्रतिष्ठान छे एटले स्थानक छे, अने सिद्ध तथा सूरि, उपाध्याय अने साधु, ए चार पद, ते चारे पासे तेने (गरिठ्ठिउ के०) मोटी शाखारूप छे, वली दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप, ए चार पदरूप जेने (पडिसाहा के०) प्रतिशाखा ते सुंदर लघु शाखारूप छे, एटले मोटी शाखामांथी जे नीकले ते प्रतिशाखा जाणवी. वली तत्त्वाक्षर ते ॐ ह्रीं प्रमुख बीजाक्षर तथा (सरवग्ग के०) स्वर अक्षरनो वर्ग जे समूह

अकारादिक, ककारादिक, जले आदिक तथा (गुरु लद्धि के०) मोटी अठ्यावीश लब्धिरूप ते सर्व (पयदल डुंबरू के०) पत्र, दलना समूह छे जेमां तथा दश दिक्पाल अने चोवीश जक्ष जक्षणीउ, वली प्रमुख शब्दे लोकपाल, विमलेश्वर देवता तथा चक्केसरी देवी अने नव ग्रह इत्यादिक सुर एटले देवतारूप (कुसुमेहिं के०) फूले करी (अलंकिउ के०) अलंकृत शोभायमान छे एवुं सिद्धचक्ररूप (गुरु के०) मोटुं कल्पवृक्ष ते अमारा मनोवांछित प्रत्ये (दीउ के०) आपो. एतावता मोक्षसुखनी वांछा छे, माटे मोक्षनुं दायक सिद्धचक्ररूप कल्पवृक्ष छे, एम जाणी भव्य प्राणीए तेनी सेवना करवी ॥ इति मंगलम् ॥ २ ॥

नमस्कार कही उच्चरी, शक्रस्तव श्रीपाल ॥ नव पद स्तवन कहे मुदा,
स्वर पद वर्ण विशाल ॥ ३ ॥ मंगल तूर वजावते, नाचंते वर पात्र ॥
गायंते बहु विधि धवल, बिरुद पढंते छात्र ॥ ४ ॥ संघपूजा साहमिवछल,
करी तेह नरनाथ ॥ शासन जैन प्रभावतो, मेले शिवपुरसाथ ॥ ५ ॥

अर्थ–एम नमस्कार कहीने चैत्यवंदन करी (शक्रस्तव के०) नमुत्थुणंना पाठ उच्चारीने श्रीपाल (मुदा के०) हर्ष सहित नव पद स्तवन करे छे. तिहां " उपन्न सन्नाण महोमयाणं " इत्यादिक चैत्यवंदन कहे छे. ते केवी रीते ? तो के स्वर ते उच्च स्वर तथा पद अने (वर्ण के०) शुद्ध अक्षर तेणे करी (विशाल के०) विस्तीर्णपणे कहे छे ॥ ३ ॥ ए रीते तिहां मांगलिकनां वाजित्र वाजते थके, प्रधान पात्रो नाचते थके, घणा प्रकारनां (धवल के०) उज्ज्वल मंगल गावते थके अने छात्र ते भाट चारण विगेरे बिरुदावली (पढंते के०) बोलते थके ॥ ४ ॥ श्रीपाल राजा संघनी पूजा, स्वामिवात्सल्य इत्यादिक धर्मकृत्य करीने श्रीजिनशासननी प्रभावना करतो थको (शिवपुरसाथ के०) मोक्षना साथने मेलवतो हवो ॥ ५ ॥

पटदेवी परिवार अन्य, साथे अविहड राग ॥ आराधे सिद्धचक्रने, पामे
भवजल ताग ॥ ६ ॥ त्रिभुवनपालादिक तनय, मयणादिक संयोग ॥
नव निरुपम गुणनिधि हुआ, भोगवतां सुखभोग ॥ ७ ॥ गय रह सहस
ते नव हुआ, नव लख जच्च तुरंग ॥ पत्ति हुआ नव कोडि तस, राज-
नीति नवरंग ॥ ८ ॥ राज निकंटक पालतां, नव शत वरस विलीन ॥
थापी तिहुअणपालने, नृप हुउ नव पद लीन ॥ ९ ॥

अर्थ–पटदेवी जे मयणा तथा (अन्य के०) बीजी राणीउ अने पांच सखीउ शृंगारसुंदरीनी साथे श्रीपाले परणी छे, माटे ते पण स्त्रीउ छे, ते परिवारनी साथे (अविहड के०) अविचल राग धरतो बीजा पण घणा श्रावक, श्राविकाउनी साथे सिद्धचक्रने आराधे छे, जेथी संसारसमुद्रनो ताग एटले पार पामे ॥ ६ ॥ हवे श्रीपाल राजाने संसारना (सुखभोग के०) विषयसुख भोगवतां थका (मयणादिक के०) मयणासुंदरी प्रमुख स्त्रीउना (संयोग के०) संयोगथी (निरुपम के०) कोइनी पण जेने उपमा अपाय नहीं एवा अत्युत्तम अने (गुणनिधि के०) गुणोना भंडाररूप त्रिभुवनपाल जेमां मुख्य छे एवा नव तनय एटले पुत्र थया. अर्थात् पट्टराणी जे मयणासुंदरी तेने त्रिभुवनपाल नामे पुत्र थयो, अने बीजी आठ स्त्रीउने एक एक पुत्र थयो, एम सर्व मली मनोहर नव पुत्रो थया ॥ ७ ॥ नव हजार हाथी, तथा नव हजार रथ, अने नव लाख जातिवंत घोडा थया तथा पायदल लश्कर नव क्रोड संख्याए थयुं. ए रीते चतुरंगिणी सेना थइ. एम श्रीपाल राजानी राजनीति सर्व नवरंगी थइ ॥ ८ ॥ ए रीते (निकंटक के०) शत्रु रहित राज पालतां थका नवसो वर्ष (विलीन के०) वही गयां. पछी मयणानो पुत्र जे त्रिभुवनपाल, तेने

राजपाटे स्थापीने श्रीपाल राजा नव पदना ध्यान मांहे लयलीन थयो, एटले एकाग्र ध्याने ध्यातो थको नव पदनुंज ध्यान स्मरण करवा लाग्यो ॥ ए ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ श्रीसीमंधर साहेब आगे ॥ ए देशी ॥

त्रीजे भव वर थानक तप करी, जेणे बांध्युं जिननाम ॥ चोसठि इंद्रे
पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्रपद वंदो,
जिम चिर काले नंदो रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥

अर्थ–हवे श्रीपाल राजा नव पदनुं ध्यान केवी रीते करे छे? ते इहां एकेक पद पांच पांच गाथाए करी वर्णवे छे. तिहां प्रथम पांच गाथाए श्रीअरिहंतपदनुं वर्णन करे छे. जे भावि जिन थनार होय ते तीर्थंकरपणुं पामवानी पूर्वे त्रीजे भवे एटले शेष त्रण भव संसार रहे ते वारे (वर के०) प्रधान स्थानकनुं तप करीने एटले बधां मली श्रीअरिहंतादिक वीश स्थानक छे, तेमां कोइ एक पदनुं, कोइ बे पदनुं, कोइ त्रण पदनुं एम यावत् कोइक तो संपूर्ण वीशे पदोनुं सविस्तर विधिए शुद्ध भावे आराधन करीने जेणे निकाचितपणे (जिननाम के०) श्रीतीर्थंकर नामकर्म बांध्युं छे एवा, वली वीश भवनपतिना, बत्रीश व्यंतरना, बे ज्योतिषीना अने दश वैमानिकना, एम सर्व मली चोसठ इंद्र थया, तेणे पूजित वंदित एवा जे जिन एटले श्रीतीर्थंकर देव श्रीअरिहंत भगवंत प्रथम पदे छे तेने प्रणाम करीए. अरे भविजनो! तमे श्रीसिद्धचक्रपदने वंदो. जेम (चिर काले के०) घणा काल पर्यंत आनंदने पामो. जेणे रागद्वेषरूप अरि जे शत्रु तेने हण्या, माटे अरिहंत कहीए. इंद्रादिकने पूजवा योग्य थया, माटे अर्हंत कहीए. वली फरी संसारमां बीजरूप अवतरवुं नथी, माटे अरुहंत कहीए. ए त्रण नाम यथार्थ थयां छे जेने एवा श्रीअरिहंत ते नव पदमां प्रथम पदे छे ॥ १ ॥

जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पण अजुआलुं ॥ सकल
अधिक गुण अतिशय धारी, ते जिन नमी अघ टालुं रे ॥
भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ २ ॥

अर्थ—जेहने एटले जे श्रीजिनेश्वरने एक च्यवनकल्याणक, बीजुं जन्मकल्याणक, त्रीजुं दीक्षा-कल्याणक, चोथुं केवलज्ञानकल्याणक अने पांचमुं निर्वाणकल्याणक, ए पांच कल्याणकने दिवसे अंतर्मुहूर्त्त पर्यंत जिहां सर्वदा अंधकारज रहे छे एवा नरकने विषे पण अजुआलुं थाय, त्यांना सर्व जीवोने शाता थाय. वली (सकल के०) समस्त जे उत्तम गुण छे तेथी अधिक गुणना धारक छे. वली चोत्रीश अतिशयना धारक छे, तेनां नाम लखीए छीए. एक प्रस्वेद, मल, रोगे करी रहित अने शुभ गंध तथा अद्भुत रूप सहित शरीर होय. बीजो रुधिर अने मांस, ए बे गायना दुध जेवां उजलां होय, दुर्गंधता रहित सुगंध युक्त होय. त्रीजो आहार, निहार अदृश्य होय. चोथो श्वासोच्छ्वास कमलना गंधनी परे सौगंधिक होय. ए चार अतिशय सहजना जन्मथीज प्रभुने होय. हवे चार घातीकर्मना क्षयथी बीजा अगीयार अतिशय थाय छे ते कहे छे. प्रथम मात्र एक योजन प्रमाण समवसरण होय ते मांहे त्रण भुवनना लोक समाय. बीजो मनुष्य, तिर्यंच अने देवता सर्व पोतपोतानी भाषामां प्रभुनी धर्मावबोधक वाणी समजे. तथा एक जिहां प्रभु विचरता होय तिहां चारे बाजु पचीश योजन क्षेत्र मांहे पूर्वोत्पन्न रोग उपशमी जाय, बीजो मांहोमांहे वैरभाव मटी जाय. त्रीजो दुर्भिक्ष दुष्काल न होय. चोथो स्वचक्र परचक्रनो भय न होय. पांचमो मारी मरकी न होय. छठो ईति ते घणा विनाशकारक जीवजंतुनी उत्पत्ति न होय. सातमो अतिवृष्टि न होय. आठमो अनावृष्टि न होय. ए आठ अतिशय प्रभुना विहारक्षेत्र

आश्रयी कह्या, तेनी साथे आगलना बे मेलवतां दश थया, अने अगीयारमो प्रज्ञुनी पूंठे उद्योतमय जामंमल ऊलहलाट करतुं रहे. एवं अगीयार अतिशय क्षायिक जावथी होय. हवे उंगणीश अतिशय देवकृत होय ते कहे छे. एक मणिरत्नमय सिंहासन सहचारी होय. बीजो त्रण छत्र श्रीजिनेश्वरने मस्तके देखाय. त्रीजो इंद्रध्वज सदा आगल चाले. चोथो श्वेत चामरनां जोमां अणवींज्यां वींजाय. पांचमो सर्वदा धर्मचक्र आकाशमार्गे रह्युं चाले. छठो प्रज्ञुना शरीरथी बार गुणुं उंचुं एवुं अशोकवृक्ष प्रज्ञुनी उपर छाया करतुं साथे रहे. सातमो चतुर्मुखे शोजती देशना आपे. आठमो मणि, कनक अने रौप्यमय त्रण गढ होय. नवमो नव संख्याए सुवर्णमय कमलनी उपर प्रज्ञु चाले. दशमो कांटा अधोमुख थइ जाय. अगीयारमो संयम लीधा पछी केश, नख अने रोम वधे नहीं. बारमो इंद्रियना अर्थ पांचे मनोज्ञ होय. तेरमो सर्व ऋतु सुखदायिनी होय. चौदमो सुगंधी पाणीनी वृष्टि होय. पंदरमो जलस्थलनां उपजेलां पांचे वर्णनां फूल ते समवसरणमां जानु लगे उंधी बीटे पथराय. सोलमो पक्षी सर्व प्रदक्षिणा देतां फरे. सत्तरमो वायु सानुकूल होय. अढारमो वृक्ष सर्व नीचां नमीने प्रणाम करतां रहे. उंगणीशमो आकाशमां देवडुंडुजि वाजे. ए चार मूलना तथा अगीयार क्षायिक जावथी अने उंगणीश देवोना करेला मली चोत्रीश अतिशयना धरनार श्रीअरिहंत होय, (ते जिन के०) ते श्रीअरिहंतने (नमी के०) नमस्कार करीने मारां जवोजवनां (अघ के०) पापने टालुं ॥ २ ॥

जे तिहु नाण समग्ग उप्पन्ना, जोग करम खिण जाणी ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा
दीए जनने, ते नमीए जिन नाणी रे ॥ जविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३ ॥

अर्थ–वली जे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान, ए त्रण (नाण समग्ग के०) समग्र ज्ञान सहित आवीने गर्जने विषे उपन्या, एटले श्रीतीर्थंकर देव सर्वे देवगतिमांथी तथा नारकी-

जेटलो अवधि-
मांथी आवे ते वारे त्रण ज्ञाने करी सहित आवे. तिहां जे स्थानकथी आवे ते स्थानके
ज्ञाननो विषय होय तेटलेज विषये इहां पण तेमने अवधिज्ञान होय. ए रीते गृहस्थपणामां सर्व
तीर्थंकरोने मांहोमांहे ज्ञानमां तफावत जाणवो, माटे श्रीतीर्थंकरने भवप्रत्ययी ज्ञान छे, ते ज्ञाने
करी पोतानां भोगावली कर्मनो क्षय जाणीने गृहस्थपणानो त्याग करी नमो सिद्धस्स कही करेमि
भंते सामाइयं उच्चरी पांच महाव्रतनो उच्चार करी दीक्षा लइने भव्य, सुलभबोधी, परीतसंसारी
एवा भद्रक परिणामवाला जे जगनिवासी जन तेमने शिक्षा एटले शीखामण देवा माटे कर्म खपावी
केवलज्ञान पामी घणा जीवने बोधबीज पमाडी संसारसमुद्रना पार प्रत्ये पहोंचाडे. एवा जगदु-
पकारी जे श्रीजिन नाणी एटले ज्ञाने सहित ते अरिहंतने नमीए. ए नाणी केवा छे? तो के पोते
संसारसमुद्रथी तर्या अने बीजाने तारे एवा छे. एवी रीतनुं श्रीपाल राजा ध्यान धरे छे ॥ ३॥

महागोप महामाहण कहीए, निर्यामक सथवाह ॥ उपमा एहवी
जेहने छाजे, ते जिन नमीए उछाह रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ४ ॥

अर्थ—वली प्रभु केवा छे ? तो के महागोप, महामाहण, निर्यामक अने सार्थवाह, एवी चार
उपमा जेने छाजे छे ते (जिन के०) अरिहंतने पोताना हृदयमां घणोज उत्साह धरीने
नमीए एटले नमस्कार करीए एम श्रीपाल कहे छे. हवे ए चार उपमाना अर्थ कहे छे. जेम
गोप जे गोवालीया छे ते गायोने पाले छे, सर्प सावजना भयथी राखे छे, पर्वत अटवीने विषे
घणुं तृण चरावे छे, वली वन मांहे पाणी पीवरावे छे, एवुं रखोपुं करे छे, तेम इहां श्रीअरिहंतजी
पण छ जीवनिकायरूप गायोनो समूह तेने जन्म मरणादिकना भयथी उगारी मोक्ष नगर
प्रत्ये पहोंचाडे छे, माटे एमने महागोप कहीए. हवे महामाहण केवी रीते कहीए ? ते कहे
छे. साधु मुनिराज जे छकायनी रक्षा करे छे ते श्रीजिनेश्वरनां वचनथी करे छे, जगज्जंतुने

करुणारूप त्रण जगतमां दयानो पम्ह वजमावे ठे, माटे महामाहण एज शब्दनो निर्घोष ठे, तेथी महामाहण कहीए. तथा जेम कोइ सार्थवाहना आश्रयी प्राणी ते अत्यंत कष्टे उल्लंघन करवा योग्य एवी अटवीने पण तेना कही देखाडेला मार्गथी उल्लंघीने वांछित नगरे पहोंचे ठे, तेम जवरूप अटवीमां पडेला जीव पण श्रीजिनेश्वरना उपदेशेला मार्गे करी मोक्ष नगरे पहोंचे ठे, केमके अटवीरूप जवकांतार उल्लंघवानो मार्ग देखामनार श्रीजिनेंद्रज ठे, एटले संसाररूप अटवीने विषे अनादिनुं जे मिथ्यात्व अज्ञान तेणे मोहरूप तिमिरे करी मुंजित मार्गे जीवने पाड्यो ठे, ते श्रीजिने कहेला सम्यक्त्वदर्शने करी दीठो. पठी जले ज्ञाने करी पाम्यो जे चरणसित्तरी करणसित्तरीरूप निर्वाणनो मार्ग, तेणे करी शाश्वतुं निराबाधपणुं जिहां ठे एवा अजरामर स्थानक प्रत्ये प्राणी पामे, माटे सार्थवाह समान ठे. तथा जेम समुद्रमां कोइ एक वहाण परद्वीपे जाय ठे, तेमां बेठेला लोकोने ते वहाणनो चलावनार जे नाखुदो ठे ते समुद्रनो पार पमाडी चिंतित द्वीपे पहोंचाडे, तेम श्रीअरिहंत पण जवसमुद्रमां रहेला जव्य जीवोने जेम गर्जने परिपाके गर्ज प्रसव थाय तेम जव्यस्थितिने परिपाके अनादि मिथ्यात्वनो विरह थये थके श्रीजिनोपकारथी कर्मक्षय करावी चौदमा गुणठाणाने अंते एक समयमां सिद्धरूप पाटणे पहोंचाडे, माटे निर्यामक कहीए. ए चार उपमानो अर्थ कह्यो ॥ ४ ॥

आठ प्रातिहारज जस ठाजे, पांत्रीश गुण युत वाणी ॥ जे प्रतिबोध
करे जगजनने, ते जिन नमीए प्राणी रे ॥ जविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ५ ॥

अर्थ—वली जे श्रीअरिहंतने अशोकवृक्ष, देवकुसुमवृष्टि, योजनगामिनी दिव्य वाणी, चामरयुग्म, सिंहासन, जामंमल, देवडुंडुजि अने ठत्रत्रय, ए आठ महाप्रातिहार्य ते ठाजे ठे. वली

जेमनी पांत्रीश गुणे करी युक्त वाणी छे, ते वाणीए करीने जे जगतना जनने प्रतिबोध करे छे, हे जव्य प्राणीउं ! ते श्रीजिनेश्वरने विशेषे करी नमीए एटले नमस्कार करीए. इहां वाणीना पांत्रीश गुणनां नाम लखीए छीए. प्रथम जे स्थानके जे जाषा बोलवानो व्यवहार छे तिहां तेज जाषाने बोले, अर्द्धमागधी सहित बोले. बीजो उच्च स्वरे देशना आपे, जेथी एक योजन प्रमाण समवसरणमां बेठेला लोक सर्व सांजले. त्रीजो ग्रामिक तुछ जाषा न बोले, प्रौढ जाषा बोले. चोथो मेघनी परे गर्जारव सहित गंजीर वाणी बोले. पांचमो शब्दोपेत एटले पडछंदा सहित वाणी बोले, अने सांजलनारने जिन्न जिन्न शब्द जणाइ आवे तेम बोले. छठो सांजलनारने संतोषकारक मान सहित सरलता युक्त बोले. सातमो सांजलनार सहु जूदा जूदा पोतपोतानां हृदय मांहे एम समजे जे जगवान् अमनेज उद्देशीने बोले छे, एम सहुने बहुमान उत्पन्न करवावाली जाषा बोले. ए सात गुण शब्दाश्रयी जाणवा. आठमो घणा पुष्ट विस्तार अर्थ सहित बोले. नवमो पूर्वापर अविरोध एटले सरिखो मलतो अर्थ बोले. दशमो मोटाइनां वचन बोले के जेथी सांजलनारा एम कहे जे ए वचन एवा मोटा पुरुषथीज बोलाय, पण बीजाथी न बोलाय एम प्रशंसा करे, तथा अजिमत सिद्धांतोक्त बोले. अगीयारमो एवुं स्पष्ट बोले के जेथी कोइ पण सांजलनारने बिलकुल संदेह रहे नहीं. बारमो प्रजु जे अर्थनुं व्याख्यान करे तेने कोइ दूषण आपी शके नहीं. तेरमो जे विषय घणो सूक्ष्म अने बहु कठण होय ते विषय एवी रीते बोले के जेथी सांजलनारानां हृदय मांहे ते वात तुरत रमी जाय. चौदमो प्रस्तावोचित एटले जिहां जेवुं बोलवा योग्य होय तिहां तेवुं बोले, मांहोमांहे अर्थ मले एम बोले, वृद्धवादी गुरुने दृष्टांते. पंदरमो परमेश्वरने जे वस्तु विवक्षित छे तेज सिद्धांत लइ बोले अर्थात् षड् द्रव्य नव तत्त्व पुष्ट थवारूप अपेक्षा सहित बोले. सोलमो विषय, संबंध, प्रयोजन अने

अधिकारी सहित बोले. सत्तरमो पदरचनानी अपेक्षा लइ बोले. अढारमो नव तत्त्व ने षड्द्रव्यनी पटुता बोलवामां होय तेम बोले. उंगणीशमो एवी रीते स्निग्ध मधुर बोले के जेथी सांभलनारने घृत गोलथी पण मीठाश वधारे उपजे. वीशमो एवी चतुराइथी बोले के जे मांहे पारका मर्म जणाइ न आवे. एकवीशमो धर्म अर्थ प्रतिबद्ध बोले. बावीशमो उदारपणे दीपक जेवो प्रकाशकारी अर्थ बोले. त्रेवीशमो जे मांहे परनी निंदा तथा पोतानी मोटाइ दीठामां न आवे एम बोले. चोवीशमो जे बोलवाथी लोकोने एवो भास न थाय जे आ पुरुष सर्व गुण संपन्न छे एम बोले. पचीशमो कर्ता, कर्म, क्रिया, लिंग, कारक, काल अने विभक्तिउ सहित बोले. छवीशमो सांभलनारने विस्मय थाय, आश्चर्य उपजे एवुं बोले. सत्यावीशमो स्वस्थ चित्ते अति धीरता सहित बोले, पण उतावलानी परे न बोले. अठ्यावीशमो विलंब रहित बोले. उंगणत्रीशमो मननी भ्रांति रहित बोले. त्रीशमो वैमानिक, भवनपति, मनुष्य, तिर्यंच, सर्व पोतपोतानी भाषामां समजे तेम बोले. एकत्रीशमो जेम शिष्योने विशेष बुद्धि उपजवापणुं थाय तेम बोले. बत्रीशमो पदना अर्थने अनेकपणे विशेष आरोपण करी बोले. तेत्रीशमो सत्त्व प्रधानपणे एटले साहसिकपणे बोले. चोत्रीशमो पुनरुक्तिदोष रहित बोले. पांत्रीशमो सांभलनारने खेद श्रम न उपजे एवुं बोले. ए प्रभुनी वाणीना पांत्रीश गुण कह्या ॥ ५ ॥

समय पएसंतर अणफरसी, चरम तिभाग विशेष ॥ अवगाहन लही
जे शिव पहोता, सिद्ध नमो ते अशेष रे॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ६ ॥

अर्थ—हवे सिद्धपदनी स्तवना पांच गाथाए करे छे. जे एक समय विना बीजो समय फरसे नहीं, तेमज चौदमा गुणठाणाना अंतथी आकाशना असंख्याता प्रदेश छे, ते मध्ये जीव जे

प्रदेशनी श्रेणीए प्रवर्त्तन करे तेथी बीजा प्रदेशने (अणफरसी के०) फरसे नहीं, एटले सम-श्रेणीना प्रदेशने अंतरे रह्या जे बीजा प्रदेश तेमने फरस्या विना जे प्रदेशे सिद्ध थया तेज प्रदेशे समश्रेणीए एक समयमां सिद्धगति पामे. जे वारे तिहां पहोंचे ते वारे (चरम के०) छेल्ला शरीरनो (तिभाग के०) त्रीजो भाग विशेष घटे, एटले नव हाथनी काया होय तो छ हाथनी काया रहे, एवी अवगाहना लइने सिद्धगति पाम्या ते (अशेष के०) समस्त सिद्धने नमस्कार करो ॥ ६ ॥

पूर्वप्रयोग ने गतिपरिणामे, बंधनछेद असंग ॥ समय एक ऊरध
गति जेहनी, ते सिद्ध समरो रंग रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ७ ॥

अर्थ—एक पूर्वप्रयोग जे पूर्वे बलपणुं हतुं ते माटे, बीजुं जीवमां सहेजे गतिपरिणाम छे तेथी, त्रीजुं कर्मनो बंधनछेद थयो माटे, चोथुं अनादि प्रसंगी टल्यो, असंगी थया माटे, एक समय पर्यंत ऊर्ध्व गति छे, पछी अचल छे. हवे ए सिद्धगतिए पहोंचवाना चार दृष्टांतनो अर्थ कहे छे. तेमां धनुष्य चडावी बाण मूकवाने अवसरे पूर्वप्रयोग विधिए पणछनुं प्रेर्युं जेम बाण जाय तेम आत्मा पूर्वे कर्म सहित हतो ते सर्व कर्मनी एकसो अठावन प्रकृतिनो बंध, उदय, उदीरणा अने सत्तानो क्षय थाय, ते वारे जीव उंचो जाय, सिद्ध थाय, ते जीवनुं पूर्वप्रयोग-लक्षण कहीए. बीजो जेम अग्नि मांहेथी धूम्र नीकले ते तुरत उंचो चडे तेम आत्मा कर्मथी वेगलो थाय तो एनी गति पण उंची जवानी छे, माटे उंचो चडे तेने गतिपरिणाम स्वभाव कहीए. त्रीजो जेम एरंड वृक्षनां फल पाके ते आतपने योगे सुकाया पछी फाटे, ते वारे तेनुं बीज नीकले ते उंचुं उछले तेम भवरूप वन मांहे मनुष्यरूप वृक्ष छे, तेनुं समकितरूप स्थल

छे, अने व्रतरूप शाखा छे, भावनारूप प्रतिशाखा छे, अने घनघाती कर्मक्षयरूप फूल छे, तथा तेरमा अने चौदमा गुणठाणारूप फल ते शेष पंच्याशी प्रकृति सत्ताक्षयरूप आतपे करी आत्मा पुद्गलथी भिन्न थयो. ते बंधननो छेद थयो. ते वारे जीवनी गति ऊंची थाय, तेथी सिद्ध थाय. कर्मबंधननो छेद थयो, माटे तेने बंधनछेदयोग कहीए. चोथो जेम कुंभार प्रथम वेगथी चक्रने दंडे करी भमाडे, पछे कोइ हाथ न लगाडे तोपण ते चक्र पोतानी मेळे फर्या करे, तेम जीव असंगक्रियाने बळे कर्ममल रहित थइ रह्यो छे, अने उपाधिनां कारण सर्व मटी गयां छे, तेथी संग रहित थका जीवनी गति ऊंचीज होय. एम चार प्रकारे करी एक समय मांहे जेनी (ऊरध के०) ऊंची गति छे, पछी अचल छे ते सिद्धने तमे (रंग के०) हर्षे करी समरो, नमो ॥ ७ ॥

निर्मल सिद्धशिलानी उपरे, जोयण एक लोकंत ॥ सादि अनंत तिहां
स्थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणामो संत रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ८ ॥

अर्थ–(निर्मल के०) स्फटिक रत्नमयी मल रहित जातिवंत अर्जुन सोनानी जे सिद्धशिला ते उपरे उत्सेध अंगुलने माने करी एक योजनने अंते लोकनो अंत छे. ते योजनना चोवीश भाग करीए, तेमां त्रेवीश भाग हेठ पडता मूकीए अने उपरले चोवीशमे भागे सर्व सिद्धना जीव अवगाही रह्या छे. तिहां अनेक प्रकारनी अवगाहना छे. कोइ पलांठी वाळ्या सिद्ध थया तेनी तेवी अवगाहना. कोइ काउस्सग्गमुद्राए सिद्ध थया तेनी तेवी अवगाहना जाणवी. उत्कृष्ट पांचसें धनुष्य शरीरवाला सिद्ध थया, मध्यम सात हाथना शरीरवाला अने जघन्य बे हाथना शरीरवाला सिद्ध थया. ते जायगा ऊंचपणे त्रणसो तेत्रीश धनुष्य, एक हाथ ने चार अंगुल प्रमाण छे. तिहां सर्व

प्रदेशनी श्रेणीए प्रवर्त्तन करे तेथी बीजा प्रदेशने (अणफरसी के०) फरसे नहीं, एटले समश्रेणीना प्रदेशने अंतरे रह्या जे बीजा प्रदेश तेमने फरस्या विना जे प्रदेशे सिद्ध थया तेज प्रदेशे समश्रेणीए एक समयमां सिद्धगति पामे. जे वारे तिहां पहोंचे ते वारे (चरम के०) छेल्ला शरीरनो (तिभाग के०) त्रीजो भाग विशेष घटे, एटले नव हाथनी काया होय तो छ हाथनी काया रहे, एवी अवगाहना लइने सिद्धगति पाम्या ते (अशेष के०) समस्त सिद्धने नमस्कार करो ॥ ६ ॥

पूर्वप्रयोग नें गतिपरिणामे, बंधनछेद असंग ॥ समय एक ऊरध
गति जेहनी, ते सिद्ध समरो रंग रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ७ ॥

अर्थ–एक पूर्वप्रयोग जे पूर्वे बलपणुं हतुं ते माटे, बीजुं जीवमां सहेजे गतिपरिणाम छे तेथी, त्रीजुं कर्मनो बंधनछेद थयो माटे, चोथुं अनादि प्रसंगी टल्यो, असंगी थया माटे, एक समय पर्यंत ऊर्ध्व गति छे, पछी अचल छे. हवे ए सिद्धगतिए पहोंचवाना चार दृष्टांतनो अर्थ कहे छे. तेमां धनुष्य चडावी बाण मूकवाने अवसरे पूर्वप्रयोग विधिए पणछनुं प्रेर्युं जेम बाण जाय तेम आत्मा पूर्वे कर्म सहित हतो ते सर्व कर्मनी एकसो अठावन प्रकृतिनो बंध, उदय, उदीरणा अने सत्तानो क्षय थाय, ते वारे जीव उंचो जाय, सिद्ध थाय, ते जीवनुं पूर्वप्रयोगलक्षण कहीए. बीजो जेम अग्नि मांहेथी धूम्र नीकले ते तुरत उंचो चडे तेम आत्मा कर्मथी वेगलो थाय तो एनी गति पण उंची जवानी छे, माटे उंचो चडे तेने गतिपरिणाम स्वभाव कहीए. त्रीजो जेम एरंड वृक्षनां फल पाके ते आतपने योगे सुकाया पछी फाटे, ते वारे तेनुं बीज नीकले ते उंचुं उछले तेम भवरूप वन मांहे मनुष्यरूप वृक्ष छे, तेनुं समकितरूप स्थल

तेने सर्व जिह्न मली पूछवा लाग्या के तुं क्यां गयो हतो ? ते वारे तेणे कह्युं के हुं नगरमां गयो हतो. तेमणे पूछ्युं के तिहां खावा पीवानुं शुं मलतुं हतुं ? तथा नगरनां स्थानक केवां हतां ? वस्त्र केवां हतां ? एम पूछवा लाग्या, पण ते जिह्न तेमने कांइ कही शके नहीं, पोते मनमां सर्व जाणे, पण समजावी शके नहीं, ए दृष्टांते. तथा जेम कोइक मुंगाने गोल खवरावीने तेनो स्वाद पूछीए तो ते संज्ञाए बतावे, पण कही शके नहीं, तेम श्रीसिद्धनां सुखने पण (उपमा विण भव मांहे के०) जगत मांहे कोइ चीजनी उपमा दइने वर्णन करी शकाय नहीं. ते सिद्धनां सुखने (नाणी के०) केवलज्ञानी पुरुष जाणे खरा, पण तेनुं मुखथी वर्णन करी शके नहीं, एवा सुखनो अनुभव करनारा जे श्रीसिद्ध भगवान् ते मुजने उल्लास प्रत्ये आपो ॥ ए ॥

ज्योतिशुं ज्योति मिली जस अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतम-
राम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ भविका॥सिद्धचक्र० ॥ १०॥

अर्थ—वली सिद्ध केवा छे ? तो के जेनी ज्योति मांहे ज्योति मली रही छे. एक सिद्धनी अवगाहना मांहे (अनुपम के०) जेनी उपमा आवेज नहीं एवी अनंता सिद्धनी ज्योति दीपकने दृष्टांते मली रही छे, एटले जेम एक ओरडा मांहे एक दीवानो प्रकाश समाइ रह्यो छे, तेमां वली बीजा अनेक दीपक करीए तो तेनो प्रकाश पण तेमांज समाइ जाय, ए दृष्टांते जाणवुं. वली संसार संबंधी सकल उपाधि विरमी छे एवा तथा जेमना आत्माना मूल गुण साक्षात् प्रगट थया छे, माटे आत्मारामरूप ने (रमा के०) मोक्षलक्ष्मी तेना (पति के०) स्वामी एवा जे सिद्ध तेने (समरो के०) स्मरण करो. ते सिद्ध सहज स्वगुणरूप समाधिनुं

सिद्ध आश्रयी अनादि अनंत स्थिति छे अने एक सिद्ध आश्रयी सादि अनंत स्थिति छे जेनी एवा जे सिद्ध तेने हे (संत के०) सज्जन पुरुषो ! तमे प्रणाम करो. ते सिद्धनी अवगाहनाना अगीयार भेद आवश्यकनिर्युक्ति मांहे कह्या छे. तेमांनो अगीयारमो कर्मक्षयना सिद्धनो भेद ए सिद्धने छे एवा सिद्धने नमो, जेम मोक्षसुखने पामो ॥ ८ ॥

जाणे पण न शके कही पुरगुण, प्राकृत तिम गुण जास ॥ उपमा विण
नाणी भव मांहे, ते सिद्ध दीयो उल्लास रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ९ ॥

अर्थ—वली ते सिद्ध केवा छे ? तो के जेम (प्राकृत के०) भिल्ल छे ते (पुर के०) नगरना गुण जाणे छे, पण मुखथी कही शके नहीं, एटले जेम कोइ एक नगरनो राजा एकदा वक्र-शिक्षित अश्वे चढी अटवीमां गयो, पछी वाग खेंचवाथी हाथ दुःखवा लाग्या ते वारे लगाम मूकी दीधी, तेथी घोडो पण उभो रह्यो, ते वारे राजा नीचे उतरी अश्वने वृक्षनी छायाए बांधी पोते पण छायामां बेठो, पण तृषा घणी लागी छे, एटलामां एक भिल्ल वनमांथी आव्यो, तेनी पासेथी राजाए हाथनी संज्ञाए पाणी माग्युं. भिल्ले विचार्युं जे आ कोइक भलो माणस देखाय छे, एम धारी पाननो दडीयो करी पाणी भरी लाव्यो. राजाए पाणी पीधुं अने प्राण रह्या, तेथी खुशी थयो, एटलामां राजानी सेना पण पगले पगले चालती तिहां आवी पहोती, ते पण राजाने जोइ आनंद पामी, प्रधानादिके भोजन मुख आगल मूक्युं. राजा ते भिल्लने जमाडी वस्त्र पहेरावीने तेने साथे तेडी नगरमां आव्यो. तिहां एक मंदिरमां भिल्लने राख्यो, घणा सेवक तेनी पासे राख्या, भिल्ल पण गोखमां बेसी नगरना तमासा जोया करे, मेवा मीठाइनां भोजन करे, चुवा चंदननां विलेपन करे, केटलाएक दिवसो पछी ते भिल्ल पोताना संबंधी पासे गयो,

तेने सर्व जिह्व मली पूछवा लाग्या के तुं क्यां गयो हतो ? ते वारे तेणे कह्युं के हुं नगरमां गयो हतो. तेमणे पूछ्युं के तिहां खावा पीवानुं शुं मलतुं हतुं ? तथा नगरनां स्थानक केवां हतां ? वस्त्र केवां हतां ? एम पूछवा लाग्या, पण ते जिह्व तेमने कांइ कही शके नहीं, पोते मनमां सर्व जाणे, पण समजावी शके नहीं, ए दृष्टांते. तथा जेम कोइक मुंगाने गोल खवरावीने तेनो स्वाद पूछीए तो ते संज्ञाए बतावे, पण कही शके नहीं, तेम श्रीसिद्धनां सुखने पण (उपमा विण भव मांहे के०) जगत मांहे कोइ बीजनी उपमा दइने वर्णन करी शकाय नहीं. ते सिद्धनां सुखने (नाणी के०) केवलज्ञानी पुरुष जाणे खरा, पण तेनुं मुखथी वर्णन करी शके नहीं, एवा सुखनो अनुभव करनारा जे श्रीसिद्ध भगवान् ते मुजने उल्लास प्रत्ये आपो ॥ ए ॥

ज्योतिशुं ज्योति मिली जस अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतम-
राम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ १० ॥

अर्थ—वली सिद्ध केवा छे ? तो के जेनी ज्योति मांहे ज्योति मली रही छे. एक सिद्धनी अवगाहना मांहे (अनुपम के०) जेनी उपमा आवेज नहीं एवी अनंता सिद्धनी ज्योति दीपकने दृष्टांते मली रही छे, एटले जेम एक ओरडा मांहे एक दीवानो प्रकाश समाइ रह्यो छे, तेमां वली बीजा अनेक दीपक करीए तो तेनो प्रकाश पण तेमांज समाइ जाय, ए दृष्टांते जाणवुं. वली संसार संबंधी सकल उपाधि विरमी छे एवा तथा जेमना आत्माना मूल गुण साक्षात् प्रगट थया छे, माटे आत्मारामरूप ने (रमा के०) मोक्षलक्ष्मी तेना (पति के०) स्वामी एवा जे सिद्ध तेने (समरो के०) स्मरण करो. ते सिद्ध सहज स्वगुणरूप समाधिनुं

स्थानक छे, जे माटे जीवने अनादि कालनां लागेलां जे आठ प्रकारनां कर्म, तेने शोषव्यां, धम्यां, तेथी सिद्ध थया. ते सिद्धनां सुख केवां छे ? तो के यावन्मात्र जेटला देवताना समूह छे ते सर्वना त्रणे कालनां सुख एकठां करीए, पिंडीभूत करीने तेने वली अनंतगुणां करीए, तेथी पण सिद्धनां सुख अनंतगुणां छे. एम पांच गाथाए करीने श्रीसिद्धपदनी स्तवना श्रीपाल राजाए करी ॥ १० ॥

पंच आचार जे सूधा पाले, मारग भाखे साचो ॥ ते आचारिज
नमीए तेहशुं, प्रेम करीजे जाचो रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ११ ॥

अर्थ–हवे त्रीजा आचार्यपदनी स्तवना पांच गाथाए करी करे छे. जे पोते ज्ञान भणे, परने ज्ञान भणावे, पोते ज्ञान लखे, परने ज्ञान लखवानो उद्यम करावे, पोते ज्ञानभंडारा करे, परने ज्ञानभंडारा करावे, ज्ञानवंत देखीने तेनी उपर राग धरे, ते ज्ञानाचार कहीए. तथा पोते समकित पाले, बीजाने समकित पलावे, समकितथी पडतो होय तेने वचनकथने करी फरी समकितमां दृढ करे, तेने दर्शनाचार कहीए. तथा चारित्र पोते पाले, बीजाने पलावे, चारित्र पालता होय तेने अनुमोदे, ते चारित्राचार कहीए. तथा बार प्रकारनुं तप पोते करे, परने तप करावे, जे तप करतो होय तेने अनुमोदन आपे, ते तपाचार कहीए. तथा ए पूर्वोक्त ज्ञानादि चार प्रकारना आचारने विषे विशेष शक्ति फोरवे, पडिक्कमणुं, पडिलेहण प्रमुखने विषे वीर्य गोपवे नहीं, ते पांचमो वीर्याचार कहीए. ए पंचविध आचारने जे सूधा एटले निरतिचारपणे पाले, वली श्रीजिनोक्त दयारूप पुण्यमय धर्म तेनो साचो एटले सत्य मार्ग भाखे ते आचार्य कहीए, तेने नमीए, अने (तेहशुं के०) तेमनी साथे धर्मनो जाचो प्रेम करीजे, केमके तेथी आचार पामीए ते माटे ॥ ११ ॥

वर छत्रीश गुणे करी सोहे, युगप्रधान जन मोहे ॥ जग बोहे न रहे खण कोहे, सूरि नमुं ते जोहे रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ १२ ॥ नित अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहीं विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारिज नमीए, अकलुष अमल अमाय रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ १३ ॥

अर्थ—वली आचार्य केवा छे ? तो के (वर के०) प्रधान एवा पंचेंद्रियना निग्रह आदिक छत्रीश गुण जे आचार्यना छे तेणे करी शोभे छे. वली युगप्रधान पदवीना धरनार, द्वादशांगीना जाण, सर्व जनने मोह पमाडनार तथा (जग बोहे के०) सर्व जगतना जनने बोधे, एटले प्रतिबोध आपवामां समर्थ, तथा (न रहे खण कोहे के०) एक क्षणमात्र पण जे क्रोधमां रहेता नथी, एटले क्षणमात्र पण क्रोध धरता नथी, एवा (सूरि के०) आचार्य, तेने (जोहे के०) परखीने हुं नमुं छुं ॥ १२ ॥ वली (नित के०) निरंतर भव्य जीवने उपकारबुद्धिए शुद्ध अप्रमत्त धर्मनो उपदेश आपे छे, केमके प्रमाद जे छे ते जीवने संसारमां पर्यटन करावनारो छे, माटे प्रमादने दूर करी अप्रमादपणे प्रवर्त्तताने अंतर्मुहूर्त्तमां संसारनो भय मटी जाय. तथा वली राजकथा, देशकथा, भोजनकथा अने स्त्रीकथा, ए चार प्रकारनी विकथा अथवा सम्यक्त्व ढीलणीया अने चारित्र ढीलणीया, ए बे प्रकारनी विकथा, ते जेने करवी नथी, सर्वदा चारित्र अने सम्यक्त्वनी पुष्टिज करे छे, तेमज सोल कषाय अने नव नोकषाय, ए पचीश कषाय जेने नथी, वली सर्वदा शुद्ध आचार पालवाने तत्पर रहे छे ते आचार्यने नमीए. ते केवा छे ? तो के अकलुष एटले डोलाशपणुं अर्थात् कलुषभाव तेणे करी रहित, तथा अमल एटले कोइ प्रकारनुं श्रद्धामां मलिनपणुं जेने नथी, तथा अमाय एटले कपट, माया, ईर्ष्या अने मत्सर, तेणे रहित छे ॥ १३ ॥

जे दीए सारण वारण चोयण, पडिचोयण वली जनने ॥ पट्टधारी गछ- थंभ आचारय, ते मान्या मुनिमनने रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ १४ ॥
अछमीए जिनसूरज केवल, चंदे जे जगदीवो ॥ भुवनपदारथ प्रगटन पटु ते, आचारय चिरं जीवो रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ १५ ॥

अर्थ—वली जे आचार्य चार प्रकारनी शिक्षा दीए छे ते कहे छे. एक तो जे साधु क्रिया अनुष्ठानमां तत्पर थकाने भूल पडे तेने संभारी आपे ते सारणा कहीए. बीजी जे साधु खोटी क्रिया करता होय तथा खोटुं भणता होय तेने वारे ते वारणा जाणवी. त्रीजी साधुउने क्रिया करवामां प्रेरणा करे ते चोयणा जाणवी. चोथी साधुने प्रमाद करता जाणी तिरस्कारपूर्वक आकरे वचने करी विशेष प्रेरणा करे ते पडिचोयणा जाणवी. ए चार प्रकरनी शिक्षा आपी लोकोने धर्मकरणीमां विशेष प्रकारे जोडे. वली पट्टधारी एटले सौधर्मपट्टपरंपराना धरनारा, तथा गछ जे गण, साधुनो समुदाय तेने थंभ समान एटले गछना स्तंभभूत एवा आचार्य भगवान् ते महा- मुनिराजोनां मनने विशेषे मान्या छे ॥ १४ ॥ वली श्रीआचार्य भगवान् केवा छे ? तो के जेम जगतमां सूर्यनां किरणोनो जे वारे प्रसार होय ते वारे अंधकारनां पडलो सर्व दूर थइ जाय छे, अने जे वारे सूर्य अस्त थइ जाय ते वारे चंद्रमानो प्रकाश अंधकारने दूर करे छे. वली कृष्ण- पक्षमां जे वारे चंद्रमानो प्रकाश पण न होय ते वारे दीपक पण अंधकारने विनाश करे छे, तेम इहां पण साक्षात् भावतीर्थंकर जे वारे विद्यमान विचरता होय ते वारे ते केवलज्ञानरूप सूर्ये करी रूपी अरूपी पदार्थने प्रगट करता रहे, तेथी मिथ्यात्वरूप अंधकारनो प्रसार न होय, अने जे वारे (अछमीए जिनसूरज के०) जिन जे श्रीतीर्थंकर देवरूप सूर्य ते अस्त थाय, एटले

श्रीतीर्थंकर निर्वाणपद पाम्या पछी (केवलचंदे के०) केवलज्ञानना धारक सामान्य केवलीरूप चंद्र करी जगतमां प्रकाश रहे, अने जे वारे केवली भगवान्रूप चंद्रमानो प्रकाश न होय ते वारे (जे जगदीवो के०) जगतने विषे मिथ्यात्वरूप अंधकार दूर करवाने दीपक समान जे आचार्य प्रभु छे तेज प्रकाशकर्त्ता छे, एटले जगतमां अज्ञानरूप अंधकारना प्रसारने दूर करवा माटे श्रीआचार्य जे छे ते दीपक समान छे, माटे ते भुवनपदारथ एटले त्रण भुवनना पदार्थने प्रगटन एटले प्रगट स्पष्ट (पटु के०) चतुराइथी कहेवाने ते समर्थ छे, एवा श्रीआचार्य भगवान् ते (चिरं जीवो के०) घणा काल लगे विद्यमान रहो. ए रीते प्राभाविक शासनना शोभाकारक श्रीआचार्यजीनी स्तुति श्रीपाल राजा करे छे ते पांच गाथाए कही ॥ १५ ॥

द्वादश अंग सज्झाय करे जे, पारंग धारक तास ॥ सूत्र अरथ विस्तार रसिक ते, नमो उवझाय उल्लास रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ १६ ॥ अर्थ सूत्रने दानविभागे, आचारय उवझाय ॥ भव त्रणे लहे जे शिवसंपद, नमीए ते सुपसाय रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ १७ ॥

अर्थ—हवे पांच गाथाए करीने श्रीउपाध्यायपदनी स्तवना करे छे. जे श्रीआचारांगादि द्वादश अंग एटले बार अंग छे तेनुं सज्झाय ध्यान निरंतर करे छे तथा ए द्वादशांगी जे गणिपिटक तेना अर्थना पारंगामी छे, अने तेना रहस्यना धारणहार छे, वली सूत्रथी तथा अर्थथी ते द्वादशांगीनो विस्तार करवाने रसिक थका पोते भणे, बीजाने भणावे, एवा श्रीउपाध्यायजीने उल्लास सहित एटले चित्तना हर्षथी नमो एटले नमस्कार करो ॥ १६ ॥ जे सूत्र अने अर्थरूप ज्ञानदाननी वहेंचणने विभागे श्रीआचार्यजी जे तीर्थंकरनी पेरे अर्थनुं दान करे, अने उपाध्यायजी

सूत्रनुं दान करे. ए रीते आचार्य अने उपाध्यायनी मर्यादा छे. एवा गुणवंत विधि क्रियाकारक जे श्रीआचार्य उपाध्याय, ते त्रण भवने अंते एटले तेहीज भवे अथवा त्रीजे भवे शिवसंपद जे मोक्षरूप लक्ष्मी, तेने (लहे के०) पामे. एवा भला पसायना करनार तेने चित्तनी प्रसन्नताए त्रिविध एकाग्रपणे करी नमस्कार करीए ॥ १७ ॥

मूरख शिष्य निपाइ जे प्रभु, पहाणने पल्लव आणे ॥ ते उवझाय सकल
जन पूजित, सूत्र अरथ सवि जाणे रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ १८ ॥
राजकुंवर सरिखा गणचिंतक, आचारिजपद जोग ॥ जे उवझाय सदा
ते नमतां, नावे भवभय शोग रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ १९ ॥
बावनाचंदनरस सम वयणे, अहित ताप सवि टाले ॥ ते उवझाय नमीजे
जे वली, जिनशासन अजुआले रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ २० ॥

अर्थ—वली जे श्रीउपाध्याय ते मूर्ख शिष्य होय तेने भणावीने पंडित करे, माटे जाणीए पत्थरने अंकुरा आणी नवपल्लव करे छे. ते उपाध्याय समस्त जन पूजित एटले पूजवा योग्य, सूत्र तथा अर्थ सर्वने जाणे एवा छे ॥ १८ ॥ वली उपाध्याय केवा छे? तो के राजकुंवर सरिखा गणचिंतक एटले जेम राजा न होय ते वारे युवराजा होय ते राज्यभार चलावे, तेम श्रीतीर्थंकरने अभावे आचार्य गणचिंतक कह्या छे,ते श्रीआचार्यना पद एटले पाटे थापवा योग्य एवा जे श्रीउपाध्यायजी तेने (सदा के०) निरंतर नमतां थका भव जे संसार तेना भयनो शोक आवे नहीं ॥ १९॥ जेम पित्तविकार तापादिकनो पराभव थयो होय तेने बावनाचंदनने रसे करी सिंच्यो थको सर्व ताप दूर थइ जाय, तेम श्रीउपाध्यायजी पण जे प्राणी अनादि काल मिथ्यात्व, अवि-

रति, कषायरूप अहितना करनारा तापे तप्त थइ रह्या छे तेमने बावनाचंदनना रस सदृश शीतल वचने करीने शीतलता उपजावी तेओना अहितरूप सर्व तापने टाले, अने सर्वने शीतलता उपजावे, ते उपाध्यायने नमीजे. वली जे श्रीजिनशासनने अजुआले छे एटले उद्योत करे छे. ए रीते पांच गाथाए करी श्रीउपाध्यायपदनी स्तुति करी ॥ २० ॥

जिम तरुफूले भमरो बेसे, पीडा तस न उपाये ॥ लइ रसने आतम
संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाये रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ २१ ॥
पंच इंद्रि ने कषाय निरुंधे, षटकायक प्रतिपाल ॥ संयम सत्तर प्रकारे
आराधे, वंदुं तेह दयाल रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ २२ ॥

अर्थ–हवे पांच गाथाए करी साधुपद वर्णवे छे. जेम कोइ सुगंध वृक्षनां फूल छे, तेनी वासनाए आग्रहतो भमरो आवी बेसे छे, पण ते भमरो फूलने पीडा न उपजावे, ते फूलमांथी थोडोक रस लइने फरी बीजा फूले जइने ते फूलनो रस लीए, एम थोडो थोडो रस लइने पोताना आत्माने संतोषे, पण फूलने किलामणा उपजावे नहीं, तेम मुनिराज पण गोचरीए जाय छे ते वारे बेंतालीश दोषरहित शुद्ध आहार जोइने फरी फरीने घरघरथी थोडी थोडी भिक्षा लावे, तेथी गृहस्थने पण अंतराय न थाय, कोइ किलामणा न उपजे, अने साधु पण संयममार्गनो निर्वाह करवाने अर्थे आहार लइ निरस त्याज्य तुच्छ आहारे करी आत्मानो पोष करे ॥ २१ ॥ वली साधु केवा छे? तो के जे पंचेंद्रिय अने चार कषायने निरुंधे छे पाठांतरे (पंचेंद्रिने जे नित्य जीते के०) पांच इंद्रियने जे नित्य एटले निरंतर जीपे, तथा पृथ्वी आदिक छकायना जीवोनी रक्षा करे छे, माटे तेना प्रतिपालन करनारा जाणवा. तथा सत्तर प्रकारे संयमने आराधे. ते दयाल एटले दयावंत महामुनिने हुं वांदुं छुं ॥ २२ ॥

अढार सहस शीलांगना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥ मुनि महंत
जयणा युत वांदी, कीजे जन्म पवित्र रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ २३ ॥
नवविध ब्रह्म गुपति जे पाले, बारसविह तप शूरा ॥ एहवा मुनि
नमीए जो प्रगटे, पूरव पुण्य अंकुरा रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ २४ ॥

अर्थ—वली अढार हजार शीलांग रथना धोरी एटले ते रथने चलाववाने माटे वृषभ समान छे. एनो विस्तार पूर्वे देशनानी ढालमां कह्यो छे तिहांथी जाणवो. वली कोइनुं चलाव्युं चाले नहीं एवुं अचल छे आचाररूप चरित्र जेमनुं एवा महंत एटले मोटा मुनि ते जयणा युक्त छे, केमके मुनिराज जे छे ते क्रिया कलापमां सुतां, बेसतां, उठतां, आहार लेतां, आवतां, जातां, मल मूत्र परठवतां सदा जयणा सहित विचरे छे, तेमने वांदीने पोतानो जन्मारो पवित्र करीए अथवा एवा मुनिने जयणा युक्त वांदीने जन्म पवित्र करीए ॥ २३ ॥ वली जे नव प्रकारे नव वाडरूप ब्रह्मचर्यनी गुप्ति पाले छे. ते गुप्तिनां नाम कहे छे. प्रथम जे वस्तिमां स्त्री, पशु, पंडग ते नपुंसक होय एवी वस्तिमां रहे नहीं, बीजी स्त्रीनी कथा वार्त्ताने सरागपणे सांभले नहीं, स्त्रीनी साथे एकांते एकलो वात न करे. त्रीजी जे भूमिकाने विषे अथवा मांची, पाट, पाटलो, ढोलीयो इत्यादिक जे आसन उपर स्त्री बेठेली होय ते आसन उपर बे घडी सुधी बेसे नहीं, तेमज जे श्रावक ब्रह्मचारी होय ते पण तिहां बे घडी लगण बेसे नहीं. चोथी स्त्रीनां अंगोपांग तथा इंद्रियोने सरागपणे जुवे नहीं. पांचमी भींत परिअच त्राटी प्रमुखने आंतरे जिहां स्त्री तथा पुरुष शयन करतां होय, हास्य विनोद करतां होय, कामभोगनी क्रीडा करतां होय तिहां रहे नहीं. छठी पूर्वे संसारी अवस्थामां जे कांइ स्त्रीनी साथे कामभोग विलासादिक सेव्या होय ते संभारे नहीं.

सातमी परिमित मात्र आहार करे. आठमी अतिमात्रा ते सरस पुष्टिकारक आहार लीए नहीं. अत्यंत घणो आहार करे नहीं एटले पेट भरी जमे नहीं. नवमी शरीरने विषे आभूषणादिक पहेरी शोभा करे नहीं. ए नव प्रकारे ब्रह्मचर्यनी वाडरूप गुप्ति छे ते पाळे. तथा बार प्रकारनी तपस्या करवाने शूरवीर छे. एवा गुणवंत महामुनीश्वर पंचम गतिना साधक, संसारदुःखवारक, सदा धर्मध्यानमां सावधान, सर्व जीवना रक्षक तेमने नमीजे. जो पूर्व जन्मनां संचेलां पुण्यना अंकुरा प्रगटे तो एवा मुनिराजनी जोगवाइ मळे ॥ २४ ॥

सोना तणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने ॥ संयम खप करता
मुनि नमीए, देश काळ अनुमाने रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ २५ ॥

अर्थ—वळी जेनी सोनानी परे परीक्षा देखाय छे, एटले ॥ यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते, निघर्षणछेदनतापताडनैः ॥ जेम सोनानी परीक्षा निघर्षण ते कसोटी उपर घसवुं, छेदन करवुं, तपाववुं अने हथोडादिके ताडन करवुं, ए चार प्रकारे करीए तेम तेम चढते वाने देखाय, तेम मुनिने पण कोइ मिथ्यात्वी छेदन, भेदन, तापन, ताडनादिक करे तोपण ते दिवसे दिवसे चढते वाने देखाय, एवा देश काळने अनुमाने शुद्ध संयमनो खप करता एटले हमणांना काळ प्रमाणे आत्मार्थी निःशल्यवान् एवा महामुनिने नमीए. अहीं कोइ कहेशे के एवाज साधु होय ते वारे तेने नमीए, सेवा करीए, पण बीजाने नहीं. त्यां तेने उत्तर कहे छे के कदापि आ काळमां कोइ क्रियाए शिथिल होय तोपण जे जे योग्य, ज्ञानवंत, शुद्ध मार्गना प्ररूपक, सावद्य योगथी दूर रहेला, व्यवहारमार्गे आश्रयी एवा वक्तापणाना गुण जोइने ते मुनिनी सेवा करीए, तेना मुखथी पंचांगी प्रमाणे आगम सांभळवानो खप करीए, केमके तेवा साधु उपदेश देवाने योग्य छे. एम पांच गाथाए साधुपदनी स्तवना करी ॥ २५ ॥

शुद्ध देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम ॥ जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन नाम रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ २६ ॥
मल उपशम क्षय उपशम क्षयथी, जे होय त्रिविध अभंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजे, जिनधर्मे दृढ रंग रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ २७ ॥

अर्थ–हवे पांच गाथाए करी सम्यक्त्वदर्शन वर्णवे छे. शुद्ध देव ते अढार दूषण रहित एवा श्रीअरिहंत जाणवा, अने शुद्ध गुरु ते पंच महाव्रतना पालक, दशविध यतिधर्मना धारक, शुद्ध मार्गना देखाडनारा एवा सुसाधु जाणवा, तथा शुद्ध धर्म ते दया मूल विनय विवेक सहित श्रीकेवलिभाषित जाणवो. ए त्रण तत्त्वनी परीक्षाने करवे करी सद्दहणाना एटले श्रद्धाना परिणाम सहित जे समकित पामीजे तेनुं नाम समकितदर्शन कहीए. ते समकितदर्शनने नमीजे एटले प्रणमीए, कारण के एक समकित शुद्ध छे तो सर्व शुद्ध छे. समकित विना सर्व छार उपर लीपणा समान जाणवुं ॥ २६ ॥ प्रथम मल जे मोहनीय कर्म तद्रूप मल तेनी सात प्रकृति, तेमां चार प्रकृति अनंतानुबंधीनी, पांचमी मिथ्यात्व मोहनी, छठी मिश्र मोहनी अने सातमी समकित मोहनी, ए सात प्रकृतिना उपशम एटले उपशमे करीने उपशम समकित थाय. बीजुं (क्षय उपशम के०) ते पूर्वोक्त मोहनीय कर्मनी जे सात प्रकृति छे, तेमांथी जे उदय आवी ते क्षय पामी, अने जे उदय नहीं आवी ते उपशमी, पण प्रदेशोदयपणे छे. एम सात प्रकृतिना क्षय अने उपशमथी क्षयोपशम समकित कहीए. त्रीजुं (क्षयथी के०) ए साते प्रकृतिनो संपूर्ण क्षय थवाथी क्षायिक समकित कहीए. एवी रीते समकित ते त्रिविध एटले कोइने उपशम, कोइने क्षयोपशम अने कोइने क्षायिक, ए त्रण प्रकारे अभंग रूपे होय. ते सम्यक्त्वदर्शनने नमीजे

एटले नमस्कार करीए. जे प्राणीनो श्रीजिनधर्मने विषे दृढ रंग होय ते प्राणी समकित चोखुं राखे. ए समकित आठ्याथी मुक्तिनी प्राप्ति सुगम थाय. घणामां घणुं संसारमां रहे तोपण ते जीव अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तनथी वधारे रहे नहीं ॥ २७ ॥

पंच वार उपशमीय लहीजे, खय उवशमीय असंख ॥ एक वार खायिक
ते समकित, दर्शन नमीए असंख रे ॥ भविका० ॥ सिद्धचक्र० ॥ २८ ॥ जे
विण नाण प्रमाण न होये, चारित्रतरु नवि फलीयो ॥ सुख निर्वाण न
जे विण लहीए, समकितदर्शन बलीयो रे ॥ भविका० ॥ सिद्धचक्र० ॥ २९ ॥

अर्थ—ते संसार मांहे भवनी परंपरा करतां पांच वार उपशम समकित लहीजे, अने क्षयोपशम समकित तो असंख्यात वार आवे अने वली पाछुं जाय, माटे ते असंख्यात वार लहीए, तेमज जे क्षायिक समकित छे ते तो आखी भवपरंपरामां एकज वार लहीए एटले पामीए. ए एक जीव आश्रयी कह्युं. एवा समकितदर्शन धरनारा जीव सदा सर्वदा असंख्याता पामीए, तेने नमीए एटले वंदीए ॥ २८ ॥ वली जे समकित विना (नाण के०) ज्ञान ते प्रमाण न होय, केमके समकित विना जे ज्ञान होय ते अज्ञानपणेज परिणमे, माटे अज्ञान जाणवुं. जे कारण माटे समकित रहितने अवधिज्ञान ते पण विभंगपणे होय. वली समकित विना चारित्ररूप (तरु के०) वृक्ष ते पण फलीभूत थाय नहीं, अंगारमर्दकाचार्यनी परे निष्फल चारित्र थाय, माटे सम्यक्त्व सहित चारित्र ते तद्भव मोक्षफल आपे. जो तेम न बने तोपण सात, आठ भव तो उल्लंघेज नहीं, माटे समकितज प्रधान छे. वली जे समकित विना निर्वाण जे मोक्ष तेनां अक्षय सुख पण न पामीए. ते माटे सर्व मांहे सम्यक्त्वदर्शन ते घणुंज बलीयुं छे, माटे ज्ञान, दर्शन, चारित्रमय देव, गुरु दृढतापणे करे ॥ २९ ॥

सडसठि बोले जे अलंकरीयुं, ज्ञान चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्शन ते नित
प्रणमुं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भविका० ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३० ॥ भक्ष
अभक्ष न जे विण लहीए, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे
विण लहीए, ज्ञान ते सकल आधार रे ॥ भविका० ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३१ ॥
प्रथम ज्ञान ने पछी अहिंसा, श्रीसिद्धांते भाख्युं ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञान म
निंदो, ज्ञानीए शिवसुख चाख्युं रे ॥ भविका० ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३२ ॥

अर्थ—वली जे समकित चार सद्दहणा आदिक सडसठ बोले करी अलंकरीयुं एटले भूषित छे, शोभतुं छे, तथा ज्ञान अने चारित्रनुं मूल पण ए समकितज छे, कारण के समकित विना ज्ञान, चारित्र सर्व व्यर्थ छे. ते समकितदर्शनने नित्य प्रत्ये हुं प्रणाम करुं छुं, जे माटे ते शिव-पंथ जे मोक्षमार्ग तेनुं अनुकूल छे, एटले तेनुं सहायभूत छे. इहां समकितना सडसठ बोलनां नाम समकित पचीशी तथा सडसठ बोलनी सद्यायादिक ग्रंथोमां छपाइ गयां छे, माटे अहीं लख्यां नथी. एम पांच गाथाए सम्यक्त्वनी स्तवना करी ॥ ३० ॥ हवे पांच गाथाए करी सातमुं ज्ञानपद वर्णवे छे. (भक्ष के०) खावा योग्य, निरवद्य, निर्दूषण, सचित्त मिश्र दोष रहित ते अने अभक्ष ते बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनंतकाय प्रमुख वस्तु जाणवी. ए भक्षाभक्षनो विचार ते जे विना न लहीए एटले न जाणीए, तथा पेय ते पाणी, छाश, दुध प्रमुख पीवा योग्य वस्तु अने अपेय ते मदिरा ताडी प्रमुख न पीवा योग्य वस्तु, ते संबंधी विचार, तथा कृत्य ते यति अने गृहस्थने दिनकरणी प्रमुख जे करवा योग्य छे ते, अने अकृत्य ते लोक विरुद्ध प्रमुख न करवा योग्य जे कार्य ते ज्ञान विना न लहीए एटले न पामीए, माटे ज्ञान ते ए (सकल के०) सर्व वस्तु जाणवानो आधार छे, परंतु ज्ञान विना तो चक्षु रहित

आंधला सरखा जाणवा ॥ ३१ ॥ वली प्रथम ज्ञान अने पछी अहिंसा, ते ज्ञाने करी ज्ञानी जाणे ते वारे दया पाले. ज्ञान विना अहिंसानो मार्ग समजाय नहीं, एम श्रीजिनोक्त सिद्धांत एटले आगम मांहे चाख्युं छे, कह्युं छे. ते माटे ज्ञानने वंदो, ज्ञानने कोइ निंदशो मां. जे ज्ञानमां लयलीन हता ते ज्ञानीएज शिवसुख एटले मोक्षसुख चाख्युं छे ॥ ३२ ॥

सकल क्रियानुं मूल ते श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहीए ॥ तेह ज्ञान नित नित
वंदीजे, ते विण कहो किम रहीए रे ॥ भविका० ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३३ ॥
पांच ज्ञान मांहे जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक तेह ॥ दीपक परे त्रिभुवन
उपगारी, वली जिम रवि शशी मेह रे ॥ भविका० ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३४ ॥

अर्थ—समस्त क्रियानुं मूल ते श्रद्धा छे एटले प्रतीति छे, पण श्रद्धा विना क्रिया चोखी कहेवाय नहीं. ते श्रद्धानुं मूल पण ज्ञानज कहीए, कारण के ज्ञान विना श्रद्धा पण बेसे नहीं. एवुं जे ज्ञान तेने नित्य नित्य वांदीजे. ते ज्ञान भवदुःखनुं छेदनार छे, माटे कहो के ते ज्ञान विना एक क्षणमात्र पण केवी रीते रही शकीए ? ॥ ३३ ॥ ते ज्ञान पांच प्रकारनुं छे. एक मतिज्ञान, बीजुं श्रुतज्ञान, त्रीजुं अवधिज्ञान, चोथुं मनःपर्यवज्ञान अने पांचमुं केवलज्ञान. ते मांहे जे (सदागम के०) श्रुतज्ञान छे ते सर्वमां अधिक छे, ते स्वमत अने परमतनुं प्रकाशक छे, अथवा ए श्रुतज्ञान जे छे ते स्व एटले पोतानुं अने पर एटले बीजां जे चार ज्ञान तेनुं प्रकाशक छे, एटले पांचे ज्ञान एनाथी जाण्यां जाय. वली दीपकनी पेरे त्रण भुवनने विषे उपकारी छे, एटले जेम अंधकारमां दीपक प्रगट थाय ते वारे घटपटादिक पदार्थ सर्व देखाइ आवे, तेम श्रुतज्ञानथी त्रण भुवनमां रह्या जे जीवाजीवादि पदार्थ ते सर्व जाणवामां आवे. वली जेम रवि जे सूर्य अने शशी एटले चंद्रमा तथा मेह एटले मेघ, ए त्रणे उपकारी छे, एटले सूर्य प्रकाश करे

छे, चंद्रमा उद्योत करे छे अने शीतलता पण उपजावे छे, तथा मेघ वरसे छे, पण ते कोइ प्रत्यु-
पकार कराववानी वांछा राखता नथी, तेम श्रुतज्ञानना आधारे जीव संसार निस्तार पामे छे ॥ ३४ ॥

लोक ऊरध अध तिर्यग ज्योतिष, वैमानिक ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट
सवि जेहथी, ते ज्ञाने मुज शुद्धि रे ॥ भविका० ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३५ ॥
देशविरति ने सरवविरति जे, गृही यतिने अभिराम ॥ ते चारित्र जगत
जयवंतुं, कीजे तास प्रणाम रे ॥ भविका० ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३६ ॥

अर्थ—वली लोक ते चौद राजलोक, तेमां संभूतलाथी ऊरध एटले उंचा सात राजमां (वैमानिक ने सिद्ध के०) बार देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तरविमान, ए सर्व वैमानिक देव कहेवाय अने सिद्धशिलानी उपर सिद्धना जीव छे, तथा (अध के०) नीचे सात राजलोकमां वाणव्यंतर, व्यंतर, भुवनपति, सात नरकपृथ्वी छे, अने तिर्यग ते तिर्छालोक, तेमां पीस्तालीश लाख योजनने विषे मनुष्यक्षेत्र छे तथा बीजा स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत असंख्याता द्वीप, समुद्र ए सर्व एक राजमां छे, एमां ज्योतिषी देवो पण छे, ए सर्व लोक शब्दे चौद राजलोक जाणवा, तेमज अलोक अनंतो छे. तेना सर्व भाव जे ज्ञानथी प्रगट थाय एवुं निर्मल शुद्ध प्रकाशक जे ज्ञान, तेणे करी मारी पण शुद्धि थाय. एवी रीते श्रीपाल राजा ज्ञाननी स्तवना करे छे. ए ज्ञानपद कह्युं ॥ ३५ ॥ हवे पांच गाथाए करी आठमुं चारित्रपद वखाणे छे. देशविरति चारित्र ते गृहस्थने होय, अने सर्वविरति चारित्र ते (यतिने के०) साधुने होय. एवां ए बे प्रकारनां चारित्र ते गृहस्थ तथा मुनिने अभिराम एटले मनोहर होय, तिहां देशविरति चारित्रवालो उत्कृष्टथी बारमा देवलोक सुधी जाय, अने सर्वविरति चारित्रवालो उत्कृष्टपणे मोक्षे जाय. ते चारित्र जगतमां जयवंतुं वर्त्ते छे. जे चारित्रनी देव मनुष्य प्रमुख सेवा करे छे (तास के०) ते चारित्रने प्रणाम करीए ॥३६॥

तृण परे जे षट् खंड सुख छंडी, चक्रवर्त्ती पण वरीयो ॥ ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मन मांहे धरीयो रे ॥ भविका० ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३७ ॥ हुआ रांकपणे जेह आदरी, पूजित इंद नरिंदे ॥ अशरणशरण चरण ते वंदुं, पूर्युं ज्ञान आनंदे रे ॥ भविका० ॥ सिद्धचक्र० ३८ ॥ बार मास पर्याये जेहने, अनुत्तरसुख अतिक्रमीए ॥ शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते उपर, ते चारित्रने नमीए रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३९ ॥

अर्थ–वली चक्रवर्त्ती सरखाए पण षट् खंडना सुखने तरणानी पेरे छांडीने जे चारित्रने वर्युं छे एटले आदर्युं छे ते चक्रवर्त्ती गोचरी गया थका कोइ तर्जना करे तोपण तेथी लगारमात्र खेद पामे नहीं. एवुं चारित्र ते अक्षय सुख जे निराबाध मोक्षनां सुख, तेनुं कारणभूत छे, तेने में मारा मन मांहे धर्युं छे ॥ ३७ ॥ वली जे चारित्रने रांकपणे आदरी एटले रांक सरखा पण आदरीने चारित्रमां मन स्थिर करता थका संप्रति राजावत् इंद्र अने नरिंद्र जे राजा तेणे पूजित एटले पूजन करेला (हुआ के०) थया, माटे संसारथी बीता जे प्राणी, जेने कोइ शरण नथी एवा अशरणने शरणरूप जे (चरण के०) चारित्र तेने हुं वांदुं छुं. ते चारित्र ज्ञाने सहित आनंदे पूरित छे, ते प्रत्ये वांदुं छुं ॥ ३८ ॥ वली जे चारित्रना पर्याय ते चढते अध्यवसाये बार मासना जेटला समय थाय तेटलां समयस्थान उल्लंघ्यां, ते वारे ते चारित्रीयाने जे स्वरूपना रमणनुं सुख थाय ते सुख अनुत्तरविमानना देवताना सुखने पण अतिक्रमीए एटले अतिक्रमी जाय छे, अर्थात् तेना करतां पण अधिक सुख ते चारित्रीयाने थाय छे. पछी (ते उपर के०) ते उपरांत चारित्र (शुक्ल शुक्ल के०) उज्ज्वल उज्ज्वल परिणामे (अभिजात्य के०) तरतमादि योग युक्त गुण सहित होय. ते चारित्रने नमीए ॥ ३९ ॥

चय ते आठ कर्मनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुत्ते
जाख्युं, ते वंदु गुणगेह रे ॥ जविका ॥ सिद्धचक्र० ॥४०॥ जाणंता त्रिहुं
ज्ञाने संयुत, ते जव मुगति जिणंद ॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप
शिवतरुकंद रे ॥ जविका० ॥ सिद्धचक्र० ॥ ४१ ॥ करम निकाचित पण
खय जाइ, खिमा सहित जे करतां ॥ ते तप नमीए जेह दीपावे, जिन-
शासन उजमंतां रे ॥ जविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ४२ ॥

अर्थ—हवे चारित्र शब्दनो अर्थ कहे छे. चय एटले ज्ञानावरणीयादिक जे आठ कर्म तेनो संचय एटले घणी प्रकृतिनुं एकठुं थवुं तेने संचय कहीए. तेने जे (रिक्त के०) खाली करे (तेह के०) तेनुं नाम चारित्र कहीए. एवुं नाम निर्युक्तिमां जाख्युं छे, ते चारित्रने हुं वंदु छुं. ते चारित्र (गुणगेह के०) गुणनुं घर छे. ए चारित्रपद कह्युं ॥ ४० ॥ हवे पांच गाथाए करी तपः-पदनुं वर्णन करे छे. (जिणंद के०) श्रीतीर्थंकर देव अनंता थया, वली अनंता थशे, ते सर्व मति, श्रुत अने अवधि, ए त्रण ज्ञाने करी संयुक्त थका माताना उदरमां आवी उपजे छे. ते जन्म्या पछी अवधिज्ञाने करी जाणता थका छे जे अमे आ जवमांज मोक्ष जइशुं तोपण जे तीर्थंकर शेष कर्मप्रकृति खपाववाने अर्थे तपने आदरे छे, अनेक प्रकारनां तप करीने सर्व कर्मने खपावे छे, एवुं ए तप छे ते तप शिवतरु एटले मोक्षरूप वृक्षनो (कंद के०) कांदो एटले मूलस्कंध जाणवुं ॥ ४१ ॥ वली क्षमाए करी सहित तप करतां थका निकाचित निबिड आकरां जे कर्म, ते सर्व क्षय थइ जाय, ते तपने नमीए, जे तपने (उजमंतां के०) एटले उजमणुं करतां थका श्रीजिनशासनने दीपावे ॥ ४२ ॥

आमोसही पमुहा बहु लब्धि, होवे जास प्रभावे ॥ अष्ट महासिद्धि नव निधि प्रगटे, नमीए ते तप भावे रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ४३ ॥

अर्थ—वली (जास के०) जे तपना प्रभावथी (आमोसही के०) आमर्शौषधि प्रमुख घणी लब्धिउं उपजे छे. ते लब्धिउं सर्व मली अठ्यावीश छे. तेनां नाम कहे छे. प्रथम जे ऋषीश्वरना हस्तपादस्पर्श मात्रे करी रोग जाय ते आमर्शौषधि लब्धि जाणवी. बीजी जे मुनिराजना मल मूत्रे करी रोग जाय तेने वप्पौषधि, विट्पुरीष लब्धि कहीए. त्रीजी जे ऋषीश्वरनो श्लेष्म औषधिरूप होय तेने खेलौषधि लब्धि कहीए. चोथी जे ऋषीश्वरना शरीरनुं प्रस्वेदजल औषधिरूप होय तेने जलौषधि लब्धि कहीए. पांचमी जे ऋषीश्वरनां केश, रोम, नखादिक ए सर्व औषधिरूप होय, सर्व प्रकारना रोग निवारवाने समर्थ होय अने सुगंध युक्त होय तेने सर्वौषधि लब्धि कहीए. छठी जे एकज वारे सघली इंद्रियोए सांभलवानी शक्ति होय अथवा एक इंद्रिये करी सर्व इंद्रियोना व्यापार लेवानी शक्ति होय अथवा बार योजनमां चक्रवर्त्तीनुं कटक होय, ते कटकमां जे वारे एकज समये सर्व जातिनां वाजित्र वाजे ते वारे ते समकाले वाजतां एवां सर्व प्रकारनां वाजित्रोना शब्दने जूदा जूदा जाणी शके ते शक्तिने संभिन्नश्रोत्रलब्धि कहीए. सातमी अवधिज्ञानवालानी जे जाणवानी शक्ति तेने अवधिज्ञानरूप लब्धि कहीए. आठमी जेथी मनःपर्यवज्ञाने करी सामान्य मात्र जाणे, एटले आ अमुक जीवे मन मांहे घट चिंतव्यो छे एटलुंज जाणे, पण ए घट केवो अने क्यांनो हतो इत्यादिक न जाणे, अथवा अढीद्वीपना मनुष्यनां मन संबंधी बादर पर्याय जाणे तेने ऋजुमति लब्धि कहीए. नवमी एवुं जाणे जे एणे घट चिंतव्यो छे ते सोनानो छे अने पाटलीपुरनो नीपन्यो छे, अथवा अढीद्वीप संबंधी मनुष्यनां जे मन, तेना सूक्ष्म पर्याय जाणे तेने विपुलमति लब्धि कहीए. दशमी चारण लब्धि बे प्रकारे छे, एक जंघाचारण अने बीजी विद्याचारण, एने चारण-

लब्धि कहीए. अगीयारमी जेथी दाढा विष युक्त होय तेने आशीर्विष लब्धि कहीए. ते एक जातिआशीर्विष अने बीजी कर्मआशीर्विष ए बे प्रकारे छे. तेमां वली जातिआशीर्विष ते सर्प, वींछी, देडकां अने मनुष्य, ए चार प्रकारे जाणवी, अने कर्मआशीर्विष तो तिर्यंच तथा मनुष्यनेज होय, माटे तिर्यंच अने मनुष्य आश्रयी बे प्रकारे छे. ए तप अने क्रिया अनुष्ठानादिके करी उपजे छे, ते सर्पादिकनी पेरे सर्पादिके करी अनेराने विणासे तेने आशीर्विष लब्धि कहीए. बारमी केवलज्ञानप्राप्ति तेने केवल लब्धि कहीए. तेरमी श्रीगणधरने गणधरपणानी लब्धि कहीए. चौदमी पूर्वधरने पूर्वधर अथवा श्रुतज्ञान लब्धि कहीए. पंदरमी श्रीतीर्थंकरने तीर्थंकर लब्धि कहीए, अथवा समोसरणनी रचना करी तीर्थंकर जेवो महिमा करी देखाडे ते ऋषीश्वरने तीर्थंकर लब्धि कहीए. सोलमी जेथी चक्रवर्त्तीपणुं पामे, अथवा चक्रवर्त्तीनी राजऋद्धि करी देखाडे तेने चक्रवर्त्तीपणानी लब्धि कहीए. सत्तरमी बलदेवने अथवा जे बलदेवनी ऋद्धि फोरवे तेने बलदेवपणानी लब्धि कहीए. अढारमी वासुदेवने अथवा वासुदेवनी ऋद्धि जे ऋषि फोरवे तेने वासुदेवपणानी लब्धि कहीए. ओगणीशमी जेनी वाणीमां दुध साकर करतां पण वधारे मीठाश उपजे तेने क्षीराश्रव तेमज मध्वाश्रव, घृताश्रव तथा इक्षुरसाश्रव लब्धि कहीए. वीशमी जे ऋषिना कोठा मांहे पेटीनी परे समस्त सूत्रार्थ निश्चलरूप ऋद्धि भरी होय तेने कोष्टक लब्धि कहीए. एकवीशमी पदानुसारिणी लब्धि त्रण प्रकारे छे. एक जेनी धुरला पदनो अर्थ अथवा धुरलुं पद सांभलीने छेल्ला पद पर्यंत अर्थनी विचारणाने विषे मोटी बुद्धि होय तेने अनुश्रुतपदानुसारिणी लब्धि कहीए. बीजी छेल्ला पदना अर्थने सांभलवे करी प्रतिकूल पदे करी धुरला पद सुधी विचारणा करवामां जेनी चतुराइ होय ते प्रतिकूलपदानुसारिणी लब्धि जाणवी. त्रीजी तेने मध्य पद एटले वचलुं एक पद सांभलवाथी पहेला अने छेल्ला पदनुं विज्ञान थइ जाय छे तेने उभयपदानुसारिणी लब्धि कहीए. एम पदानुसारिणी लब्धि त्रण प्रकारे जाणवी. बावीशमी जेम कर्षणी

रुमी रीतें कसायेली नूमिने विषे बीज वावे, पछी ते बीज अनेक बीजनुं आपनार थाय, तेम ज्ञानावरणीयादिक क्षयोपशमना अतिशयथी एक अर्थरूप बीजने सांजलवे करी अनेक अर्थरूपी बीजोनुं जाणपणुं जे लब्धिथी होय तेने बीजबुद्धि लब्धि कहीए. त्रेवीशमी क्रोधना अधिकपणाथी पोताना शत्रुने सुखे बालवाने समर्थ एवी अग्निनी ज्वाल मूकवानी जे शक्ति तेने तेजोलेश्या लब्धि जाणवी. ते अनेक योजनने आश्रित वस्तुविशिष्टने बाले, अने षष्ठ तपे करी पारणे कुल्माषना बाकुलानी एक मूठी अने उपर चलू जर उष्ण पाणीने लीए तेने छ महीनामां उपजे छे. चोवीशमी आहारक शरीर करवानी जे शक्ति ते आहारक लब्धि. पचीशमी शीत एवुं जे एक प्रकारनुं तेज ते तेजोलेश्याने हणवाने माटे तेना उपर मूकवानी जे शक्ति ते शीतलेश्या लब्धि जाणवी. छवीशमी विष्णुकुमारनी परे वैक्रियशरीर करवानी शक्ति ते वैक्रिय लब्धि जाणवी. ते अणुत्व महत्व इत्यादि अनेक प्रकारे छे. सत्यावीशमी अंतराय कर्मना क्षयोपशमथी थोडुं पण अन्न कोइए निक्षाए करी आप्युं छतां ते लब्धिवंत पुरुष पोते जमे तो खोट आवे, परंतु बीजा हजारो महात्मा जो ते अन्न जमवा बेसे तो खूटे नहीं, एवी जे शक्ति तेने अक्षीणमहानसी लब्धि कहीए. ए गौतमादिकने प्रसिद्धपणे हती. अठ्यावीशमी जे शक्तिथी संघ प्रमुखनुं काम पडे ते वारे चक्रवर्त्तीनी सेनाने पण चूर्ण करे ते पुलाक लब्धि जाणवी. ए अठ्यावीश लब्धि कही. वली ते तपने प्रजावे करी अणिमादिक आठ महासिद्धि प्रगट थाय छे, तेनां नाम कहे छे. प्रथम जेथी झीणा छिद्र मांहे पेसे, अथवा कमलना नाल मांहे पेसीने चक्रवर्त्तीनी ऋद्धि विस्तारे ते अणिमा सिद्धि जाणवी. बीजी मेरु थकी पण मोटुं शरीर करवानी शक्ति ते महिमा सिद्धि जाणवी. त्रीजी वायुथी पण अत्यंत हलकुं शरीर करवानी शक्ति ते लघिमा सिद्धि जाणवी. चोथी वज्रादिकथी पण नारे शरीर करवे करीने इंद्रादिकनो पण पराजय करे ते गरिमा सिद्धि जाणवी. पांचमी नूमि उपर बेठां थका सूर्यमंडला-

दिकने स्पर्श करवानी शक्ति ते कामवशाइत्व सिद्धि जाणवी. छठी जल उपर भूमिकानी पेरे चाले, अने भूमि मांहे पाणीनी पेरे डुबकी खाय ते प्राकाम्य सिद्धि जाणवी. सातमी त्रण लोकनुं ठकुराइपणुं भोगवे, अथवा तीर्थंकरनी किंवा इंद्रनी ऋद्धि विस्तारे ते ईशित्व सिद्धि जाणवी. आठमी सर्व जीवोने वश करवानी जे शक्ति ते वशित्व सिद्धि जाणवी. ए रीते आठ महासिद्धि कही छे. तथा ते तपना प्रभावथी नव निधि प्रगट थाय छे. तेनां नाम महापद्म, पद्म, पांडुक, नैसर्प, पिंगल, सर्वरत्नक, काल, महाकाल अने माणवक, ए प्रकारे जाणवां. ए पूर्वे कहेला पदार्थनी जे तपथी प्राप्ति थाय छे ते तपने भावे करी नमीए ॥ ४३ ॥

फल शिवसुख महोटुं सुर नर वर, संपत्ति जेहनुं फूल ॥ ते तप सुरतरु
सरिखुं वंदुं, शम मकरंद अमूल रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ४४ ॥ सर्व
मंगल मांहि पहेलुं मंगल, वरणवीए जे ग्रंथे ॥ ते तपपद त्रिहुं काल
नमीजे, वर सहाय शिवपंथे रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ४५ ॥

अर्थ—हवे तपने कल्पवृक्षनी उपमाए स्तवे छे. मोक्षनां सुख पामवां तेरूप जेनुं मोटुं फल छे तथा (सुर के०) देवतानी गति अने (नर के०) मनुष्यनी गतिरूप जे (वर के०) प्रधान संपत्ति एटले संपदा ते जेनुं फूल छे. एम ते तप ते सुरतरु एटले कल्पवृक्ष सरिखुं मनोवांछितनुं देनारुं छे, तेने हुं वांदुं छुं, नमस्कार करुं छुं. ते तपरूप वृक्षनो (शम के०) शमतारूप अमूलक मकरंद एटले फूलनो रस छे एवुं जे तप, ते कस्याथी घन एटले निबिड कर्मने शिथिल करे ॥ ४४ ॥ वली लौकिक तथा लोकोत्तर जे मांगलिकनां कारण छे, अथवा मंगल जे छे ते सर्व मंगल मांहे पहेलुं मुख्य मंगल ते तप छे. जे सर्व ग्रंथे तप मंगलनुं वर्णन करीए छीए. जे माटे श्री आवश्यक मांहे पण छेल्लुं तप मंगल कह्युं छे. सर्व ग्रंथ मांहे आद्य, मध्य अने अंत्य, ए त्रण

मंगल जोइए. तिहां आद्य मंगल ते ग्रंथनी पूर्त्ति माटे कराय छे अने मध्य मंगल ते ग्रंथनी स्थिरता माटे कराय छे तथा अंत्य मंगल ते परंपराए विस्तार माटे कराय छे. ते माटे तप ते मुख्य मंगल जाणवुं. ते तपःपदने मोटुं महिमावंत जाणीने भूत, भावी ने वर्त्तमान, ए त्रणे काल नमीजे. जे (शिवपंथे के०) मोक्षपंथे जतां (वर के०) प्रधान (सहाय के०) सखाइ जाणवुं, एटले सहायी जाणवुं. ए पांच गाथाए तपःपद वखाण्युं ॥ ४५ ॥

इम नव पद थुणतो तिहां लीणो, हुउ तनमय श्रीपाल ॥ सुजश विलास छे चोथे खंडे, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ४६ ॥

अर्थ—एम एकेका पदनी पांच पांच गाथाए करी जे रीते इहां नव पदनुं वर्णन कर्युं तेवीज रीते ए अरिहंतादिक नव पदने (थुणतो के०) स्तवतो थको श्रीपाल राजा नव पदना ध्यान मांहे लीन थयो थको तन्मय थयो. ए चोथा खंडमां भला यशनोज विलास छे, अथवा श्रीयशोविजयजी कवीश्वर कहे छे के चोथा खंडने विषे ए अगीयारमी ढाल पूरी थइ ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

इम नव पद थुणतो थको, ते ध्याने श्रीपाल ॥ पाम्यो पूरण आउखे, नवमो कल्प विशाल ॥ १ ॥ राणी मयणा प्रमुख सवि, माता पण शुभ ध्यान ॥ आउखे पूरे तिहां, सुख भोगवे विमान ॥ २ ॥

अर्थ—ए रीते नव पदने थुणतो थको तेज ध्याने करीने ध्यानमां लयलीन थयो थको श्रीपाल राजा संपूर्ण आउखे (विशाल के०) मोटो एवो (नवमो कल्प के०) नवमो देवलोक तेने पाम्यो, एटले नवमा देवलोकमां जे उत्कृष्टायु छे तेने पूर्णायु कहीए, ते आउखे तिहां उपन्यो ॥ १ ॥ वली मयणा प्रमुख सर्वे नवे राणी तथा श्रीपालनी माता कमलप्रभा, ते पण शुभ ध्यानमां

रह्या थका तिहांज नवमा देवलोके पूर्ण आउखे उपन्यां, अथवा सर्व आयु पूर्ण करीने तिहां उपन्यां. तिहां विमाननां सुख नोगवे छे ॥ २ ॥

नरनव अंतर स्वर्ग ते, चार वार लही सर्व ॥ नवमे नव शिव पामशे, गौतम कहे निर्गर्व ॥ ३ ॥ ते निसुणी श्रेणिक कहे, नव पद उल्लसित नाव ॥ अहो नव पद महिमा वडो, ए छे नवजलनाव ॥ ४ ॥ वलतुं गौतम गुरु कहे, एक एक पद नत्ति ॥ देवपाल मुख सुख लह्यां, नव पद महिम तहत्ति ॥ ५ ॥ किं बहुना मगधेश तुं, इक पद नक्ति प्रनाव ॥ होइश तीर्थंकर प्रथम, निश्चय ए मन नाव ॥ ६ ॥

अर्थ—तिहांथी वली नरनव पामीने वली स्वर्गे जशे. एम चार वार देवपणुं ने चार वार मनुष्यपणुं पामी छेल्लो नवमो मनुष्यनव पामीने नव राणीउं, माता तथा पोते सर्व मली अगीयारे जण शिव जे निरुपद्रव मोक्षस्थानक तेने पामशे. ए प्रकारे श्रेणिक राजानी आगल गर्व रहित एवा श्रीगौतमस्वामी श्रीपालनो वृत्तांत कहेता हवा ॥ ३ ॥ ते श्रीगौतमस्वामीनां वचन सांनलीने नव पदने विषे उल्लास पाम्यो छे नाव जेनो एवो श्रेणिक राजा कहे छे के अहो ! इति आश्चर्ये! ए नव पदनो महिमा जुउ. केवो मोटो छे? ए नव पद जे छे ते संसार-समुद्रमां नाव समान छे ॥ ४ ॥ वलता श्रीगौतम गुरु कहेता हवा के एकेका पदनी नक्ति करवाना महिमाथी देवपाल प्रमुखे सुख लह्यां, पाम्यां, तीर्थंकरगोत्र बांध्युं. ते विचारामृतसंग्रह ग्रंथ मांहे एकेका पदना वर्णने वीश दृष्टांत विस्तारे कथा सहित वखाण्यां छे, एवो नव पदनो महिमा तहत्ति एटले सत्य छे ॥ ५ ॥ हे मगधेश! एटले मगध देशना अधिपति! किं बहुना एटले

घणुं शुं कहीए ? तुं एक समकित पदनी भक्तिने प्रभावे करी आवती चोवीशीमां पद्मनाभ एवे नामे प्रथम तीर्थंकर थइश. ए निश्चयथी मनने विषे भाव, एटले भावना कर ॥ ६ ॥

गौतमवचन सुणी इस्यां, उठे मगध नरिंद ॥ वधामणी आवी तदा,
आव्या वीर जिणंद ॥ ७ ॥ देवे समवसरण रच्युं, कुसुमवृष्टि तिहां
कीध ॥ अंबर गाजे दुंदुभि, वर अशोक सुप्रसिद्ध ॥ ८ ॥ सिंहासन मांड्युं
तिहां, चामर छत्र ढलंत ॥ दिव्य ध्वनि दीए देशना, प्रभु भामंडलवंत
॥ ए ॥ वधामणी देइ वांदवा, आव्यो श्रेणिक राय ॥ वांदी बेठो परखदा,
उचित थानके आय ॥ १० ॥ श्रेणिक उद्देशी कहे, नव पद महिमा वीर ॥
नव पद सेवे बहु भविक, पाम्या भवजलतीर ॥ ११ ॥

अर्थ—एवां गौतमस्वामीनां वचन सांभलीने मगध देशनो राजा श्रेणिक तिहांथी उठ्यो. (तदा के०) ते वारे वधामणी आवी जे श्रीवीर जिनेश्वर आव्या छे ॥ ७ ॥ देवताए समवसरण रच्युं, तथा कुसुमनी वृष्टि करी, आकाशमां देवदुंदुभिनो गर्जारव थाय छे. जिहां प्रधान एवुं अशोकवृक्ष सुप्रसिद्ध छे ॥ ८ ॥ तिहां सिंहासन मांड्युं छे, चामर ढली रह्यां छे, त्रण छत्र मस्तके बिराजे छे. तिहां भामंडलवंत एवा जे प्रभु ते दिव्य ध्वनिए देशना आपे छे. ए कुसुमवृष्टिथी मांडीने दिव्य ध्वनि पर्यंत प्रभुनां आठ प्रातिहार्य कह्यां ॥ ए ॥ तिहां श्रेणिक राजा पण वधामणीयाने वधामणी दइने प्रभुने वांदवाने माटे आव्यो. ते वांदीने पर्षदाने विषे उचित एटले योग्य स्थानके आवीने बेठो ॥ १० ॥ वीर भगवान् पण श्रेणिक राजाने उद्देशीने नव पदनोज महिमा कहे छे के ए नव पद सेव्याथी घणा भव्य जीव संसारसमुद्रनो (तीर के०) कांठो पाम्या छे ॥११॥

आराधननुं मूल जस, आतमभाव अभेद ॥ तिणे नव पद छे आतमा, नव पद मांहे तेह ॥ १२ ॥ ध्येय समापत्ति हुये, ध्याता ध्यान प्रमाण ॥ तिण नव पद छे आतमा, जाणे कोइ सुजाण ॥ १३ ॥ लही असंगक्रियाबले, जस ध्याने जिणे सिद्धि ॥ तिणे तेहवुं पद अनुभव्युं, घट मांहि सकल समृद्धि ॥ १४ ॥

अर्थ–(जस के०) जेनुं एटले जे नव पदनुं मूल आराधन तो निश्चये आत्मभाव छे, एटले ए नव पदनुं आराधन जे करवुं तेनुं मूल भेद रहित आत्मभावज जाणवो. ते माटे नव पद ते आत्माज छे, अने नव पद मांहे पण एज आत्मा छे ॥ १२ ॥ जे वस्तु ध्याववा योग्य छे तेने ध्येय कहीए. ते ध्येयनी समापत्ति ते संपूर्णता थये एटले सम्यक् प्रकारे पामवे करीने ध्याता जे ध्यानारो जीव, तेनुं ध्येय वस्तुनुं जे ध्यान, तेनुं प्रमाणपणुं थाय. जे माटे ध्येयपूर्त्ति विना ध्याननी पूर्त्ति नहीं, ध्याताना ध्याननुं जे प्रमाण ते ध्येय समाप्ते होय. ते माटे ए नव पद तेज आत्मा छे. ए कोइ सुजाण होय ते जाणे ॥ १३ ॥ शुक्लध्यानना चोथा पायाने ध्याने असंगक्रिया (लही के०) पामीने ते असंगक्रियाने बले करी ए नव पद मांहेला (जस ध्याने के०) जे पदना ध्यान आराधनथी जेणे सिद्धि पामी ते प्राणीए तेवुंज पद अनुभव्युं एटले भोगव्युं, माटे निश्चय नये घटमांज सकल समृद्धि छे ॥ १४ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ स्वामी सीमंधर उपदिशे ॥ ए देशी ॥

अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जाय रे ॥
भेद छेद करी आतमा, अरिहंतरूपी थाय रे ॥ १ ॥

अर्थ–इहां प्रथम गौतमस्वामीए निश्चय नय आश्रयीने व्यवहार देशना दीधी हती, ते हवे

करवाथी तथा मुंमन करवाथी, केशलोच करवाथी शुं थाय ? एथी कांइ परमार्थ नथी ॥ ६ ॥ हवे सम्यक्त्वपद वर्णवे छे. शम, संवेग, आदि शब्दथी निर्वेद, अनुकंपा अने आस्तिक्यता, ए पांच गुण ते क्षय तथा उपशमे जे आवे, तेथी जे सम्यक्त्वदर्शन प्रगटे तेने सम्यक्त्व-दर्शन कहीए, ते आत्माज जाणवो, एम निश्चये विचारवुं, पण अमे समकिती छीए एवुं नाम धराव्याथी शुं थाय ? ॥ ७ ॥

ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थाय रे ॥ तो होये एहज आतमा, ज्ञान अबोधता जाय रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ जाणो चारित्र ते आतमा, निज स्वभाव मांहि रमतो रे ॥ लेश्या शुद्ध अलंकस्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इच्छारोधे संवरी, परिणति समता योगे रे ॥ तप ते एहीज आतमा, वरते निज गुण भोगे रे ॥ वीर० ॥ १० ॥

अर्थ—हवे ज्ञानपद वखाणे छे. ज्ञानावरणीय कर्म जे छे तेनी पांच प्रकृति छे. ते मांहेली केटलीएक क्षय थाय, केटलीएक प्रकृति उपशम थाय तो ए आत्मा तेज (ज्ञान के०) ज्ञान-रूप (होय के०) थाय, अने अबोधता होय ते जती रहे ॥ ८ ॥ हवे आठमुं चारित्रपद वर्णवे छे. आत्मा विभावथी विरम्यो, निज स्वभावमां एटले पोताना आत्मस्वभावमां रमण करतो शुद्ध लेश्याए अलंकस्यो एटले शुक्ल लेश्याए विभूषित थको फरी मोहरूप वनने विषे भमतो नथी तो तेज आत्मा ते चारित्र जाणवुं ॥ ९ ॥ हवे नवमुं तपःपद वखाणे छे. समतारूप थइ समताना योगमां आत्मानी परिणति थाय तो स्वपरिणतिने योगे संवर गुणने आदरतो इच्छानो रोध करे, पोताना मूल गुणने भोगे एटले भोगववे वर्त्ततो कषायना कंडक घटाडतो समता अने क्षमाना कंडक वृद्धिमंता करे तो तप ते एहीज आत्मा जाणवो ॥ १० ॥

अने पांचमुं सुमेरुपीठ. हवे एनुं विवरण लखीए छीए. प्रथम विद्यापीठ तेनो मंत्र बार पदनो वर्द्धमान विद्या प्रमुख सूरिमंत्र सवा कोटि जापपूर्वक जपतो साधने साधतो कोटिश्रुतनो जाण थाय. बीजुं सौभाग्यपीठ ते तेज पूर्वोक्त मंत्र विधिपूर्वक आराधवे करी सकल जनने वल्लभ, आदेय वचन सूरि होय. त्रीजुं लक्ष्मीपीठ ते तेज मंत्राराधने राजादि वश होय, महिमावंत होय. चोथुं मंत्रराजप्रयोगपीठ ते मंत्र आराधने सर्व ईति ते उपद्रव, कामण, मोहन, वश्यादि होय. पांचमुं सुमेरुपीठ ते इंद्रादिकने मान्य होय, गौतमादिकनी पेरे लब्धिवंत होय, अजेय होय ॥ ४ ॥

तप सज्झाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ए आतमा,
जगबंधव जगभ्राता रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ अप्रमत्ते जे नित रहे, नवि हरखे
नवि शोचे रे ॥ साधु सूधा ते आतमा, शुं मुंड्ये शुं लोचे रे ॥ वीर०
॥ ६ ॥ शम संवेगादिक गुणा, खय उपशम जे आवे रे ॥ दर्शन तेहज
आतमा, शुं होय नाम धरावे रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥

अर्थ—हवे चोथुं उपाध्यायपद कहे छे. तपस्या जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट भेदे करवामां तथा सज्झाय ध्यानमां सदा रक्त छे, राता छे, द्वादशांगीना ध्याता छे एवा जे उपाध्याय तेनुं ध्यान करतां थका ए आत्मा तेज उपाध्यायपणुं पामे. ते उपाध्याय केवा छे ? तो के जगतना बंधव एटले संबंधी, मित्र तुल्य अने जगतना भ्राता एटले भाइ तुल्य एवा उपगारी श्रीउपाध्यायजी ते निश्चयथी आत्माज छे ॥ ५ ॥ हवे पांचमुं साधुपद वर्णवे छे. जे नित्य प्रत्ये अप्रमत्तपणे एटले सातमे गुणठाणे रहे, प्रमादनी आचरणा न करे, वली स्तवना करवाथी हर्ष पण न करे, अने उपद्रव करवाथी शोच पण न करे एवा सूधा साधु ते निश्चे आत्माज जाणवो, पण साधुनो वेश धारण

करवाथी तथा मुंडन करवाथी, केशलोच करवाथी शुं थाय ? एथी कांइ परमार्थ नथी ॥ ६ ॥ हवे सम्यक्त्वपद वर्णवे छे. शम, संवेग, आदि शब्दथी निर्वेद, अनुकंपा अने आस्तिक्यता, ए पांच गुण ते क्षय तथा उपशमे जे आवे, तेथी जे सम्यक्त्वदर्शन प्रगटे तेने सम्यक्त्वदर्शन कहीए, ते आत्माज जाणवो, एम निश्चये विचारवुं, पण अमे समकिती छीए एवुं नाम धराव्याथी शुं थाय ? ॥ ७ ॥

ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थाय रे ॥ तो होये एहज
आतमा, ज्ञान अबोधता जाय रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ जाणो चारित्र ते आतमा,
निज स्वभाव मांहि रमतो रे ॥ लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि
भमतो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इच्छारोधे संवरी, परिणति समता योगे रे ॥
तप ते एहीज आतमा, वरते निज गुण भोगे रे ॥ वीर० ॥ १० ॥

अर्थ—हवे ज्ञानपद वखाणे छे. ज्ञानावरणीय कर्म जे छे तेनी पांच प्रकृति छे. ते मांहेली केटलीएक क्षय थाय, केटलीएक प्रकृति उपशम थाय तो ए आत्मा तेज (ज्ञान के०) ज्ञानरूप (होय के०) थाय, अने अबोधता होय ते जती रहे ॥ ८ ॥ हवे आठमुं चारित्रपद वर्णवे छे. आत्मा विभावथी विरम्यो, निज स्वभावमां एटले पोताना आत्मस्वभावमां रमण करतो शुद्ध लेश्याए अलंकर्यो एटले शुक्ल लेश्याए विभूषित थको फरी मोहरूप वनने विषे भमतो नथी तो तेज आत्मा ते चारित्र जाणवुं ॥ ९ ॥ हवे नवमुं तपःपद वखाणे छे. समतारूप थइ समताना योगमां आत्मानी परिणति थाय तो स्वपरिणतिने योगे संवर गुणने आदरतो इच्छानो रोध करे, पोताना मूल गुणने भोगे एटले भोगववे वर्त्ततो कषायना कंडक घटाडतो समता अने क्षमाना कंडक वृद्धिमंता करे तो तप ते एहीज आत्मा जाणवो ॥ १० ॥

आगम नोआगम तणो, जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमजावे थिर होजो, परजावे मत राचो रे ॥ वीर० ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी, घट मांहे ऋद्धि दाखी रे ॥ तिम नव पद ऋद्धि जाणजो, आतमराम छे साखी रे ॥ वीर० ॥ १२ ॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नव पद मुख्य ते जाणो रे ॥ एह तणे अवलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वीर० ॥ १३ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथे खंडे पूरी रे ॥ वाणी वाचक जश तणी, कोइ नये न अधूरी रे ॥ वीर० ॥ १४ ॥

अर्थ—माटे आगम ते सिद्धांत जाणवा, ते श्रुतज्ञान छे, अने नोआगम ते एक श्रुतज्ञान विना चार ज्ञान जाणवां. अथवा आगम ते ज्ञानीअनुपयोगी अने नोआगम ते ज्ञानीउपयोगी एम आगम नोआगम ए वेना भेद जाणी ए बेनो जाव ते साचो जाणो. ते साचो जाणीने चंचलता मटाडी आत्मजावे थिर होजो, परजावमां राचशो मां. इहां आगमथी जावनिक्षेपो लइने ए नव पद कह्यां छे. जे अरिहंतने उपयोगे ते ध्याने परिणम्यो ते जीवने ऋजुसूत्र नये अरिहंत कहीए. ते माटे अरिहंतपदने ध्यावतो अरिहंतपदवी नीपजावतो ते अरिहंत कहीए. एम नवे पदनी जावना करवी ॥ ११ ॥ माटे (सकल के०) सर्व जे अष्ट एटले अणिमा, लघिमा प्रमुख आठ सिद्धि तेनी समृद्धि एटले परिपूर्णता ते घट मांहे (दाखी के०) देखाडी छे, तेम ए नव पदनी ऋद्धि पण घट मांहेज जाणजो, एनो आत्माराम चिदानंद साक्षी छे ॥ १२ ॥ मोक्षसाधन करवाना तथा आत्मा शुद्ध थवाना असंख्याता योग (जिन के०) श्रीवीतराग देवे कह्या छे. ते सर्व मांहे ए नव पद ते मुख्य जाणो, जे माटे ए नव पदने आलंबने जे आत्मध्यान करवुं तेज

प्रमाण छे ॥ १३ ॥ एवी चोथा खंडने विषे बारमी ढाल पूर्ण थइ छे. (वाचक के०) उपाध्याय श्रीयशोविजयजी कहे छे के श्रीतीर्थंकरकथित वाणी ते नैगमादिक सात नय मांहेला कोइ नये पण अधूरी नथी, सर्वे नये सम्मत छे. अथवा मारी वाणी ते कोइ नये अधूरी नथी. एम बे प्रकारे अर्थ कवीश्वरे सूचव्यो छे. अथवा वाणी "वाचक जश तणी, कोइ थइ न अधूरी रे" एवो पाठ पण केटलीएक प्रतोमां लखेलो छे ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

वचनामृत जिन वीरनां, निसुणी श्रेणिक नूप ॥ आनंदित पहोतो घरे, ध्यातो शुद्ध स्वरूप ॥ १ ॥ कुमतितिमिर सवि टालतो, वर्द्धमान जिन-जाण ॥ नविककमल पडिबोहतो, विहरे महियल जाण ॥ २ ॥ ए श्रीपाल नृपतिकथा, नव पद महिम विशाल ॥ नणे गुणे जे सांनले, तस घर मंगलमाल ॥ ३ ॥

अर्थ–हवे एवां श्रीवीर जिनेश्वरनां अमृत समान वचन सांनलीने श्रेणिक राजा श्रीवीरने नमी आनंदित थको पोताने घेर पहोतो, चित्तमां शुद्ध स्वरूप चिदानंदघनने ध्यातो थको प्रवर्त्ते छे ॥ १ ॥ अने कुमतिरूप (तिमिर के०) अंधकार ते सर्वेने टालतो, (जिन के०) सामान्य केवलीने विषे (जाण के०) सूर्य सरखो, संपूर्ण षड्द्रव्यना स्वरूपनो जाण एवो श्रीवर्द्धमान स्वामी ते नविकरूप कमलने प्रतिबोध देतो (महियल के०) महीतल जे पृथ्वीतल तेने विषे विचरे छे ॥ २ ॥ जेमां (विशाल के०) मोटो नव पदनो महिमा छे एवी ए श्रीपाल राजानी कथा तेने जे प्राणी नणे, गुणे अने सांनले तेना घरने विषे मांगलिकनी माला थाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ थुणीयो थुणीयो रे प्रभु तुं सुरपति जिन थुणीयो ॥ ए देशी ॥

तूठो तूठो रे मुज साहिब जगनो तूठो ॥ ए श्रीपालनो रास करतां, ज्ञान अमृतरस वूठो रे ॥ मुज० ॥ १ ॥ पायसमां जिम वृद्धिनुं कारण, गोयमनो अंगुठो ॥ ज्ञान मांहि अनुभव तिम जाणो, ते विण ज्ञान ते जूठो रे ॥ मुज० ॥ २ ॥ उदकपयोमृतकल्पज्ञान तिहां, त्रीजो अनुभव मीठो ॥ ते विण सकल तृषा किम भांजे, अनुभव प्रेम गरीठो रे ॥मुज०॥३॥

अर्थ—हवे आ रासनो प्रारंभ कर्यो हतो ते कार्य पूर्ण थयुं. तेनो आनंद उपन्यो, तेथी कवीश्वर अनुभवज्ञाननी महत्तापूर्वक हर्षनां वचन कहे छे के मुजने जगतनो साहेब जे श्रीजिनेश्वर ते संतुष्ट थयो. ए श्रीपालनो रास करतां ज्ञानरूप अमृतरसनो वरसाद थयो ॥ १ ॥ (पायसमां के०) खीर मांहे जेम श्रीगौतमस्वामीनो अंगुठो वृद्धिनुं कारण छे, जेणे खीरना एक पडघामांथी पंदरसें ने त्रण तापसने भोजन कराव्युं, तेम ज्ञान मांहे पण अनुभवज्ञान ते वृद्धिनुं कारण जाणो. ते अनुभवज्ञान विना जे ज्ञान छे ते जूठो एटले मिथ्या जाणवुं, माटे अनुभवज्ञान मोटुं छे ॥ २ ॥ ज्ञान त्रण प्रकारनुं छे. एक व्याकरणादि, शब्दशास्त्र, काव्यशास्त्र ते नव रसादिकनां शास्त्र इत्यादिक लौकिक शास्त्र तथा प्राकृत, चरित्रानुवाद, कथानक, चोपाइ, रास, भाषा प्रमुख ते (उदक के०) उदककल्पज्ञान एटले पाणी सरखुं ज्ञान जाणवुं. जेम पाणी पीधे थके तृषा मटे, पण थोडी वार पछी वली लागे, तेम ग्रंथ सांभले, भणे, वांचे तिहांसुधी रस उपजे, पण पछी कांइ नहीं. तथा बीजुं आगम सूत्र सिद्धांतनुं उपयोगरहितपणे ज्ञान ते पयःकल्पज्ञान एटले दुध सरखुं जाणवुं. जेम दुधनुं पान कर्याथी तृषा अने क्षुधा बेहु मटी जाय, परंतु केट-

लेक काले फरी उदय थाय. त्रीजुं अमृतकल्पज्ञान ते श्रद्धापूर्वक आगमज्ञान भेदभाव धारीने उपयोगसहितपणे वर्त्तन ते जेम अमृतपान करवाथी क्षुधा, तृषा, रोग, शोक, उपद्रव अने व्याधि प्रमुख सर्व दूर थइ जाय, फरी पाछा उदय आवेज नहीं, तेनी समान त्रीजुं अनुभवज्ञान मीठुं छे, तेथी अनुभवज्ञान विना सकल अनादि कालनी भवभ्रमणरूप तृषा किम भांजे ? माटे अनुभवनो प्रेम ते गरीठो एटले मोटो, वडेरो छे ॥ ३ ॥

प्रेम तणी परे शीखो साधो, जोइ सेलडी सांठो ॥ जिहां गांठ तिहां रस नवि दीसे, जिहां रस तिहां नवि गांठो रे ॥ मुज० ॥ ४ ॥ जिनही पाया तिनही छिपाया, ए पण एक छे चीठो ॥ अनुभव मेरु छिपे किम महोटो, ते तो सघले दीठो रे ॥ मुज० ॥ ५ ॥ पूरव लिखित लिखे सवि लेइ, मसी कागल ने कांठो ॥ भाव अपूरव कहे ते पंडित, बहु बोले ते बांठो रे ॥ मुज० ॥ ६ ॥

अर्थ—माटे जेम सांसारिक प्रेमने जोडवुं, देवुं, लेवुं करी एकपणुं करे, ते प्रेमनी परे अनुभवने शीखो, साधो, शेलडीना सांठानुं दृष्टांत जोइने. जेम शेलडीना सांठा मांहे जिहां गांठ होय तिहां रस देखाय नहीं, अने जिहां रस होय तिहां गांठ न होय. एनी परे अनुभव प्रेम पण जाणवो. एटले जिहां कर्मरूप गांठ छे तिहां अनुभवरस नथी, अने जिहां अनुभवरस छे तिहां कर्मरूप गांठ नथी ॥ ४ ॥ कोइक कहे छे के अनुभवनो रस जेणे पाम्यो तेणेज छिपाव्यो, माटे प्रगट देखाय नहीं. ए कहेवत पण एक चीठो एटले कागलनी चीठीप्राय छे, केमके अनुभवरूप मोटो मेरु पर्वत ते छिपायो केम छिपे? ते तो सघले दीठो छे, एटले सर्वत्र छे. एवुं जिनवचनथी जाणवुं. वस्तुतः दीठामां आवे, पण जेणे पाम्यो ते तेनोज आत्मा जाणे, परंतु बीजो कोइ न जाणे ॥ ५ ॥ मसी ते शाइ,

कागल अने काठो ते कलम ए त्रण चीज लइने पूरव लिखित एटले पूर्वे लखेलां जे पानां पोथां होय तेने जोइने सर्व कोइ लखी नाखे ते तो सुगम छे, पण जे पूर्वे कोइए लख्या न होय एवा अपूर्व जाव कहे ते पंमित जाणवो, अने जे वहु बोले एटले घणुं बोले ते लबारू जाणवो ॥ ६ ॥

अवयव सवि सुंदर होय देहे, नाके दीसे चाठो ॥ ग्रंथज्ञान अनुजव विण तेहवुं, शुक जिस्यो श्रुतपाठो रे ॥ मुज० ॥ ७ ॥ संशय नवि जांजे श्रुतज्ञाने, अनुजव निश्चय जेठो ॥ वादविवाद अनिश्चित करतो, अनुजव विण जाय हेठो रे ॥ मुज० ॥ ८ ॥ जिम जिम बहुश्रुत बहुजनसंमत, बहुल शिष्यनो शेठो ॥ तिम तिम जिनशासननो वयरी, जो नवि अनुजव नेठो रे ॥ मुज० ॥ ए ॥

अर्थ—वली एक दृष्टांत कहे छे के (देहे के०) शरीरने विषे अंगोपांगादिक सर्व अवयव सुंदर होय अने नाके चाठुं होय ते जेम खराब देखाय, एटले सर्व अवयवनी शोजा ते कुशोजा जेवी थाय, तेम ग्रंथ घणाय जाण्या होय, ग्रंथनुं ज्ञान सबल होय, परंतु अनुजव न होय तो ते कंठशोषनी परे निरर्थक जाणवुं. जेम (शुक के०) पोपट ते अज्ञानी थको मनुष्यनी प्रेरणाए अचरे अचरे राम इत्यादिक शुक पाठ करे तेम कंठशोष जाणवो ॥ ७ ॥ जेने अनुजवनुं ज्ञान न होय ते श्रुतज्ञाने करी मनना संशय जांजी शके नहीं, माटे निश्चयथी अनुजवज्ञान ते (जेठो के०) ज्येष्ठ मोटुं जाणवुं. वाद ते स्वधर्मनी चर्चारूप अने विवाद ते परमतखंमनरूप एवा वादविवादमां पण अनिश्चित एटले वितंडावाद ते खोटो वाद करतां अनुजव विना हारे, हेठो पडे, जोंठो पडे, अथवा सजामां नीचुं जोवुं पडे ॥ ८ ॥ जेम जेम बहुश्रुत होय एटले घणुं जण्यो होय, अने बहुजनसंमत एटले घणा जनने मान्य होय, तथा (बहुल शिष्यनो के०) घणा शिष्यनो शेठो

एटले श्रेष्ठ स्वामी होय तेम तेम ते जिनशासननो वैरी जाणवो. जो नेट अनुभव न होय तो, माटे अनुभवनी मुख्यता छे ॥ ए ॥

माहरे तो गुरुचरणपसाये, अनुभव दिल मांहि पेठो ॥ ऋद्धि वृद्धि प्रगटी
घट मांहि, आतमरति हुइ बेठो रे ॥ मुज० ॥ १० ॥ उग्यो समकित
रवि झलहलतो, भरमतिमिर सवि नाठो ॥ तगतगता दुर्नय जे तारा,
तेहनो बल पण घाठो रे ॥ मुज० ॥ ११ ॥ मेरुधीरता सवि हर लीनी,
रह्यो ते केवल भाठो ॥ हरी सुरघट सुरतरुकी शोभा, ते तो माटी काठो रे
॥ मुज० ॥ १२ ॥ हरव्यो अनुभव जोर हतो जे, मोहमल्ल जग लूंठो ॥
परि परि तेहना मर्म देखावी, भारे कीधो भूंठो रे ॥ मुज० ॥ १३ ॥

अर्थ—मारे तो निज गुरुचरणप्रसादथी अनुभव दिल मांहि एटले चित्त मांहे पेठो, एटले प्रतिष्ठित थयो. हवे ऋद्धि अने वृद्धि सर्व मारा घट मांहे प्रगटी, तेथी आत्मरति शातामय थइ बेठो. ए कविनां वचन गर्वित छे. वली एवुं पण जाणीए छीए जे अनुभववंत जीवने होय तेज सूचव्यां हशे, पण सूत्रानुसारे एम जणातुं नथी ॥ १० ॥ जे वारे समकितरूप सूर्य झलहलतो घटमां उग्यो ते वारे भ्रमरूप (तिमिर के०) अंधकार जे हतो ते सर्व नाठो. वली सूर्य उग्याथी तगतगता तारानुं बल जेम घटी जाय तेम इहां (दुर्नय के०) माठा नयरूप जे तारा हता तेनुं बल जे तेज ते पण (घाठो के०) विघटित थयुं, एटले क्षय पाम्युं ॥ ११ ॥ अनुभवज्ञानीए मेरु पर्वतनी धीरता जे हती ते सर्वे हरी लीधी ते वारे ते केवल भाठो एटले पथ्थर समान रह्यो, वली सुरघट जे कामकुंभ तथा सुरतरु जे कल्पवृक्ष तेनी शोभा पण सर्व हरी लीधी ते वारे ते सुरघट तो केवल माटी समानज रह्यो, अने सुरतरु ते (काठो के०) काष्ठ समान रह्युं ॥ १२ ॥

वली जगतमां मोहरूप मल्ल ते (जूंगो के०) महापराक्रमी छे, तेनुं जे जोर हतुं ते अनुजवे हरव्यो एटले दृगाव्युं, दृगावीने पछी ते मोहना परे परे मर्म देखावी एटले तेनां छिद्र हतां ते सर्व प्रगट करी देखाडीने तेने चारे जूंगो कीधो, एटले अत्यंत भ्रष्ट कीधो, फरी ढूकडो न आवे एवो कीधो. एवो अनुजव आतमा साथे लीन थयो जे कोइनो दूर कस्यो पण दूर न थाय ॥ १३ ॥

अनुजव गुण आव्यो निज अंगे, मिट्यो रूप निज माठो ॥ साहिब सन्मुख सुनजर जोतां, कोण थाये उपरांठो रे ॥ मुज० ॥ १४ ॥ थोडे पण दंजे दुःख पाम्या, पीठ अने महापीठो ॥ अनुजववंत ते दंज न राखे, दंज धरे ते धीठो रे ॥ मुज० ॥ १५ ॥ अनुजववंत अदंजनी रचना, गायो सरस सुकंठो ॥ जाव सुधारस घट घट पीयो, हुउं पूरण उत-कंठो रे ॥ मुज० ॥ १६ ॥

अर्थ—अनुजवना गुण जे वारे पोताने अंगे आव्या ते वारे (निज के०) पोतानुं जे अनादि कालनुं जवपरंपरा करवारूप माठुं रूप हतुं ते मट्युं. जे वारे पोतानो साहेब ते सुनजर एटले जली नजरे करी सन्मुख जोतां थका बीजो कोण उपरांठो एटले पराङ्मुख थाय ? ॥ १४ ॥ थोडो पण दंज जो पीठे अने महापीठे कस्यो तो ते दुःख पाम्या, धर्ममां कपट कस्युं तेथी स्त्रीवेदपणुं पाम्या, ते माटे जे अनुजववंत प्राणी होय ते (दंज के०) कपट न राखे, अने जे दंज राखे ते धीठो एटले मूर्ख शठ जाणवो ॥ १५ ॥ अनुजववंत ते (अदंज के०) अकपटी कपट रहित तेनी रचना तेने रसे करी सहित जले कंठे करी गायो. एनी मध्यगत जे जाव तद्रूप सुधारस एटले जे अमृत समान रस तेने घट घट पीयो. ते पीतां (उतकंठो के०) उत्सुक अर्थात् तरष

पामेला एवा तमे पूरण एटले तृप्त थाओ. अथवा अमृत समान रस छे तेने तमे घट घट पीयो अने पीतां पूर्ण उत्कंठित थाओ ॥ १६ ॥

॥ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥ ते तरीया रे भाइ ते तरीया ॥ ए देशी ॥

तपगछनंदन सुरतरु प्रगट्या, हीरविजय गुरुराया जी ॥ अकबरशाहे जस उपदेशे, पडह अमारि वजाया जी ॥ १ ॥ हेम सूरि जिनशासनमुद्राए, हेम समान कहाया जी ॥ जाचो हीरो जे प्रभु होतां, शासन सोह चढाया जी ॥ २ ॥ तास पटे पूर्वाचल उदयो, दिनकर तुल्य प्रतापी जी ॥ गंगाजल निर्मल जस कीरति, सघले जग मांहि व्यापी जी ॥ ३ ॥ शाह सभा मांहे वाद करीने, जिनमत थिरता थापी जी ॥ बहु आदर जस शाहे दीधो, बिरुद सवाइ आपी जी ॥ ४ ॥

अर्थ—तपगछरूप नंदनवनने विषे सुरतरु एटले कल्पवृक्ष समान श्रीहीरविजय गुरुराजजी प्रगट थया. जेमना उपदेशथी बादशाह अकबरशाहे अमारीनो पडह वजडाव्यो ॥ १ ॥ ते प्रभु श्रीहीरविजय सूरि तो श्रीजिनशासनरूप मुद्रा एटले वींटी तेने विषे जाचो हीरो एटले जात्यवंत हीरा समान होता हवा. जेणे जिनशासननी घणी शोभा चढावी. ते वखते हेम सूरि ते श्रीजिनशासनरूप मुद्रामां हेम समान कहेवाणा ॥ २ ॥ ते श्रीहीरविजय सूरिना पाटरूप पूर्वाचल एटले उदय पर्वतने विषे दिनकर एटले सूर्य तुल्य प्रतापवंत एवा जेमनी कीर्त्ति गंगाजलनी परे निर्मल एवी जगतमां सर्वत्र व्यापी रही ॥ ३ ॥ वली जेमणे शाह एटले बादशाहनी सभा मांहे वाद करीने सर्व अन्य दर्शनोनुं खंडन करी एक सत्यपणे श्रीजिनमतनी स्थिरता स्थापन करी, तेथी जेमने बादशाहे घणो आदर आप्यो, अने बिरुद सवाइ एटले जगद्गुरुनी पदवी आपी ॥ ४ ॥

श्रीविजयदेव सूरि तस पटधर, उदया बहु गुणवंता जी ॥ जास नाम दश
दिशि छे चावुं, जे महिमाए महंता जी ॥ ५ ॥ श्रीविजयप्रभ तस पट-
धारी, सूरि प्रतापे छाजे जी ॥ एह रासनी रचना कीधी, सुंदर तेहने राजे
जी ॥ ६ ॥ सूरि हीर गुरुनी बहु कीरति, कीर्त्तिविजय उवझाया जी ॥
सीस तास श्रीविनयविजय वर, वाचक सुगुण सोहाया जी ॥ ७ ॥ विद्या
विनय विवेक विचक्षण, लक्षण लक्षित देहा जी ॥ सोभागी गीतारथ
सारथ, संगत सखर सनेहा जी ॥ ८ ॥

अर्थ—एवा श्रीविजयसेन सूरि थया. वली तेमने पाटे बहु गुणवंत एवा श्रीविजयदेव सूरीश्वर उदय पाम्या. जेमनुं नाम दश दिशाने विषे (चावुं के०) प्रख्यात छे तथा जे महिमाए करी महंता एटले मोटा हता, अथवा जे महिमां एटले पृथ्वीमां महंता एटले मोटा हता ॥ ५ ॥ तेमना पटधारी श्रीविजयप्रभ सूरि ते सूरि एटले पंडित अने प्रतापी एटले तेजस्वी अर्थात् सूर्य जेवा तेजस्वी प्रतापे करी छाजता थया. तेमना सुंदर एटले मनोहर राज्यमां आ श्रीपाल राजाना रासनी रचना कीधी ॥ ६ ॥ ते पूर्वोक्त बहु कीर्त्तिना धरनारा सूरि श्रीहीरविजय गुरुनी साक्षात् रूपवती बहु कीर्त्तिज जाणे होय नहीं ? एवा श्रीकीर्त्तिविजयजी उपाध्याय थया. तेमना (वर के०) प्रधान शिष्य (वाचक के०) उपाध्यायपणाना रुडा गुणे करी शोभायमान श्रीविनयविजयजी थया ॥ ७ ॥ ते विद्याए करी, विनये करी तथा विवेके करी विचक्षण थया. जेनुं (देह के०) शरीर ते उत्तम लक्षणे करी लक्षित हतुं. वली सौभाग्यवंत, गीतार्थना समूहने विषे सार्थकपणुं छे जेमनुं एवा एटले गीतार्थपणाने सार्थक करनारा, वली जेनी संगत एटले सोबत ते सखर एटले सारी हती, रुडी हती, वली रुडा स्नेहवाला हता ॥ ८ ॥

संवत् सत्तर अडत्रीसा वरसे, रही रानेर चोमासे जी ॥ संघ तणा आग्रहथी मांड्यो, रास अधिक उल्लासे जी ॥ ए ॥ सार्द्ध सप्त शत गाथा विरची, पहोता ते सुरलोके जी ॥ तेहना गुण गावे छे गोरी, मिली मिली थोके थोके जी ॥ १० ॥ तास विश्वासभाजन तस पूरण, प्रेम पवित्र कहाया जी ॥ श्रीनयविजय विबुधपयसेवक, सुजशविजय उवझाया जी ॥ ११ ॥ भाग थाकतो पूरण कीधो, तास वचन संकेते जी ॥ तिणे वली समकितदृष्टि जे नर, तेह तणे हित हेते जी ॥ १२ ॥ जे भावे ए भणशे गुणशे, तस घर मंगलमाला जी ॥ बंधुर सिंधुर सुंदर मंदिर, मणिमय झाकझमाला जी ॥ १३ ॥

अर्थ–ते श्रीविनयविजयजी उपाध्याये संवत् सत्तरसें ने आडत्रीशाना वर्षमां श्रीरानेर (रांदेर) गामने विषे चोमासुं रहीने श्रीसंघना आग्रहथी आ रासने अधिक उल्लासे करवा मांड्यो ॥ ए ॥ तेनी (सार्द्ध के०) पचास अने (सप्त शत के०) सातसें एटले सातसें पचास गाथा (विरची के०) रचीने श्रीविनयविजयजी उपाध्याय देवलोके पहोता. जेना गुणने (गोरी के०) स्त्रीउ ते थोके थोके मली मलीने गाय छे ॥ १० ॥ ते श्रीविनयविजयजी उपाध्यायना विश्वासना भाजनरूप, वली संपूर्ण प्रेमवंतनुं पवित्र बिरुद कहेवरावता एवा जे श्रीनयविजय पंडितना पदकमलना सेवक रुडा यशोविजयजी उपाध्याय ॥ ११ ॥ तेमने श्रीविनयविजय उपाध्यायजीए आ रास पूर्ण करवाने कहेलुं हतुं, माटे तेमना वचननो संकेत हतो, तेणे करीने तथा वली समकितदृष्टि जे नर तेना हितने (हेते के०) कारणे आ रासनो जे थाकतो एटले अधूरो रहेलो भाग, ते पूर्ण

कीधो ॥ १२ ॥ ग् श्रीसिद्धचक्रजीना रासने भावे करीने जे प्राणी भणशे गुणशे तेना घरने विषे मांगलिकनी माला थशे तथा ते (वंधुर के०) उन्नत मोटा एवा (सिंधुर के०) हाथी पामशे, (सुंदर के०) रुडां मंदिर पामशे, तथा मणिरत्ने जडाव एवा झाकझमाल एटले मुकुट कुंडल आभूषणादिक पामशे ॥ १३ ॥

देह सबल ससनेह परिछद, रंग अभंग रसाला जी ॥
अनुक्रमे तेह महोदय पदवी, लहेशे ज्ञान विशाला जी ॥ १४ ॥

अर्थ—वली सबल एटले बलवान् देह पामशे, स्नेहाली पर्षदा पामशे तथा अभंगपणे रसाल एवा (रंग के०) आनंद पामशे, ते प्राणी अनुक्रमे महोदय एटले मोक्षपदवी पामशे, तथा (विशाला के०) मोटुं ज्ञान पामशे ॥ १४ ॥

इति श्रीमन्महोपाध्यायश्रीकीर्त्तिविजयगणिशिष्योपाध्यायश्रीविनयविजयगणिविरचिते श्री-
श्रीपालचरित्रे प्राकृतप्रबंधे तन्मध्ये उपाध्यायश्रीयशोविजयगणिपूरितेऽयं चतुर्थः
खंडः संपूर्णः ॥ तत्समाप्तौ समाप्तः श्रीपालरासः ॥ सर्व खंड चार, तत्र प्रथम-
खंडे ढाल अगीयार, द्वितीयखंडे ढाल आठ, तृतीयखंडे ढाल आठ,
चतुर्थखंडे ढाल चौद, सर्व ढाल एकतालीश, तन्मध्ये गाथा
॥ १२५१ ॥ ग्रंथाग्रंथ श्लोक ॥ १८२५ ॥

॥ इति श्रीपालरासस्य बालावबोधे चतुर्थः खंडः समाप्तः ॥ ४ ॥ तत्समाप्तौ समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥ बालावबोधसंख्या ७३००, मूलश्लोकसंख्या १८२५, सर्वसंख्या ॥ ९१२५ ॥

॥ इहां प्रसंगथी उजमणानो विधि लखीए छीए. साढा चार वर्षे एकाशी आंबिले नव ओली पूर्ण थाय ते वारे उजमणुं करे. ते हालना प्रवर्त्तन मुजब विशाल श्रीजिनेश्वरना भुवनने विषे अथवा जे कोइ मोटुं विस्तारवंत उजमणुं करता होय ते पोताना घरने विषे शुद्ध निरवद्य विस्तारवंत मोकली जगाने सुशोभित करी तिहां श्रीसिद्धचक्रजीना मंडपनी रचना करे, ते आ प्रमाणे केः—प्रथम तो वचमां अरिहंतपदने श्वेत धान्यमय स्थापे, अने पूर्व दिशाए सिद्धपदने रक्त धान्यमय स्थापे, वली दक्षिण दिशे आचार्यपदने पीतवर्ण धान्यमय स्थापे,तथा पश्चिम दिशे उपाध्यायपदने नीलवर्ण धान्यमय स्थापे,अने उत्तर दिशाए साधुपदने श्यामवर्ण धान्यमय स्थापे.पछी चार विदिशिने विषे दर्शन,ज्ञान,चारित्र अने तप, ए चार पदने श्वेतवर्ण धान्यमय स्थापे. ते मांहे उत्तर पूर्व वचे ईशान खूणे दर्शनपद स्थापवुं अने पूर्व दक्षिण वचे अग्नि खूणे ज्ञानपद स्थापवुं, तथा दक्षिण पश्चिम वचे नैर्ऋत्य खूणे चारित्रपद स्थापवुं, वली पश्चिम उत्तर वचे वायव्य खूणे तपःपद स्थापवुं.ए रीते नव पांखडीनुं कमल करी नव पदनी स्थापना करीए.पछी त्रण वेदिका युत पीठिकानी रचना करीए.ते मांहे पहेली वेदिका रक्तवर्ण धान्यमयी, बीजी पीतवर्ण धान्यमयी अने त्रीजी श्वेतवर्ण धान्यमयी. तिहां पहेली वेदिकाने पांचवर्ण धान्यना कांगरा,बीजी वेदिकाने रक्तवर्ण धान्यना कांगरा अने त्रीजी वेदिकाने पीतवर्ण धान्यना कांगरा करे. इत्यादि प्रकारपूर्वक. वली ते उपरे नव गढ प्राकार करे, धान्यना रंग तथा पदना रंग कह्या ते रीते करी मांडीने जे वस्तुओ ढोवीए एटले चढावीए ते वस्तुनां नाम सामान्य प्रकारे नीचे लखीए छीए.

नव देरासर.	नव धर्मशाला.	नव कलश.	नव धोतीयां.
नव जीर्णोद्धार.	नव मुकुट.	नव कटोरी.	नव अंगलूहणां.
नव जिनबिंब.	नव झरमर.	नव चंदनना कटका.	नव मुखकोश.
नव सिद्धचक्रना गटा.	नव तिलक.	नव केशरनां पडिकां.	नव रकाबी.
नव सिद्धचक्रनी पीठिका	नव सिंहासन.	नव वालाकूंची.	नव घंटडी.

नव नोकरवाली.
नव थापना.
नव ध्यानमनी.
नव त्रांबाकुंडी.
नव अष्टमांगलिक.
नव आरती.
नव धूपधाणां.
नव मंगलदीपक.
नव चंद्रवा, नव पुंठीयां.
नव तोरण.
नव वासकुंपी.
नव कांबली.
नव पठेडी, नव छत्र.
नव चामर.
नव मोरपिछिनी.
नव वाटकी, नव कचोलां.
नव थाली, नव पूंजणी.
नवकेशरघसवानाउंरशीया
नव दीवी, नव बाजोठ.
नव ध्वजा, नव घंट.

नव झूमणां.
नव हांडा, नव त्रांबडी.
नव स्थापनानां उपकरण.
नव वाटका.
नव अगरवत्ती.
नव वरास, नव अगर.
नव प्याला.
नव प्रभावना.
हीरा चोत्रीश.
चुनीउं राती एकत्रीश.
पीरोजी पीले वर्णे छत्रीश.
चुनीउं नीली पचीश.
चुनीउं काले वर्णे सत्या-
वीश अथवा पांच.
मोती नंग २३०.
रूपानो वरग १००.
सोनेरी वरग १००.
लाखीणो हार एक.
श्रीफलना गोटा पंचवर्णी
नव ग्रहनी स्थापना.

हवे ज्ञाननां उपकरण.
नव श्रीपालना रास.
बीजां नव नव पुस्तको.
गणणानी टीप नव.
नव रुमाल, नव पाठां.
नव ठवणी, नव कवली.
नव सापडा सापडी.
नव लेखण.
नव चाकु.
नव कतरणी.
नव झाबला.
नव झाबली.
नव खडीया.
नव हिंगलोनां वासण.
नव पाटली.
नव उंलीया.
नव पाटी.
नव पुस्तक राखवाना
झाबला.
नव दोरा.

नव चावली.
नव वासक्षेपना वाटवा.
नव वतरणां.
नव कांबी.
हवे चारित्रनां उपकरण.
नव पात्रां.
नव पडला.
नव झोली.
नव चोलपट्टा.
नव संथारीयां.
नव कांबली उंघानी.
नव कपडां.
नव डांडा.
नव उंघा.
नव मुहपत्ति.
नव कल्पसूत्र.
नव तरपणी.
नव चरवला.
नव चरवलानी डांडी.
इति उजमणानो विधि.

॥ शुद्धि पत्रक ॥

पानुं	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध	पानुं	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
१८	१२	पाख्या	पाख्यो	१३६	१५	साथव	साथवा
३३	३२	रूपसुदरी	रूपसुंदरी	१४१	११	पोताना	पोतानां
४६	१०	आयुष्व	आयुष्य	१४३	१३	रहि	रही
५०	१७	पड्यो	पड्या	१४४	३	सन्य	सैन्य
५०	३३	वहेंजी	वहेंची	१४५	१५	उपकारनो	परउपकारनो
५८	२	वेधसां	वेधसा	१५०	३	जे	भव जे
६२	३४	पूजाए	पूजा	१५४	३७	मतिसार	मतिसागर
६३	३०	महात्म्यनुं	माहात्म्यनुं	१५६	२३	तश	तस
७२	३५	बब्रकूटना	बब्बरकूटना	१६३	५	त्रीजो	त्रीजुं
७९	२४	पधारो	पाधरो	१६७	२५	भरतां	करतां
८३	२०	रह्यो	रह्या	१६८	१०	पूंजवु	पूंजवुं
८५	११	रूमाडोल	रूमझोल	१६८	१६	क्रिया	चोथी क्रिया
८६	२८	आयीयो	आवीयो	१७०	१६	भगवन	भगवन्
८६	३२	केवलशुं	केलवशुं	१७१	१८	जे कोइ	जो कोइ
८७	१३	एकी	एक	१७३	१७	राणीन	राणीनां
९१	३४	पुरुषने	उत्तम पुरुषने	१७५	२१	अपवग्ग	अपवर्ग
९४	१८	निमित्तिशास्त्र	निमित्तशास्त्र	१७९	३४	उदशे	उद्देशे
१०६	८	नवनिध	नवविध	१८५	५	बेठेला	बेठेला
१०७	३१	कुंवरीना	कुंवरना	१८६	२९	प्रणामो	प्रणमो
११०	१	श्रीसिद्धचक्रजीना	श्रीसिद्धचक्रजीनो	१९५	१७	एटले	उजमतां एटले
१२३	५	सैम्यना	सैन्यना	१९९	२८	सिद्धगुण खाणी	सिद्ध गुणखाणी
१२३	२४	मीठीश	मीठाश				
१३३	२७	साम	सामः	२०१	३२	अधंकार	अंधकार

॥ इति श्री नव पद महिमावर्णनरूप

॥ श्रीश्रीपाल राजानो रास समाप्त ॥

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay
Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck, 225-231, Mandvi, Sackgalli, Bombay